मरने के बाद क्या होगा?

idara

मौलाना मुहम्मद आशिक़ इलाही बुलन्दशहरी (रह०)

मरने के बाद क्या होगा?

मरने के बाद क्या होगा?

मौलाना मुहम्मद आशिक इलाही बुलन्दशहरी (रह०)
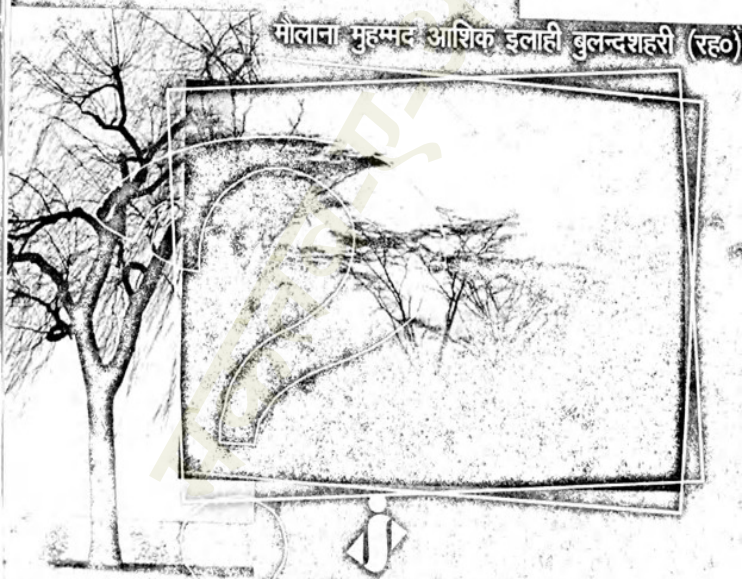
Marne ke Baad Kiya Hoga?

प्रकाशन : 2014

ISBN: 81-7101-482-8

TP-308-14

Published by Mohammad Yunus for

IDARA IMPEX

D-80, Abul Fazal Enclave-I, Jamia Nagar
New Delhi-110 025 (India)
Tel.: +91-11-2695 6832 & 085888 33786
Fax: +91-11-6617 3545 Email: **info@idara.in**
Online Store: **www.idarastore.com**

Retail Shop: **IDARA IMPEX**
Shop 6, Nizamia Complex, Gali Gadrian, Hazrat Nizamuddin
New Delhi-110013 (India) Tel.: 085888 44786

विषय-सूची

अहवाले बर्ज़ख़

हालाते जहन्नम

मैदाने हश्र

ख़ुदा की जन्नत

मौलाना मुहम्मद आशिक़ इलाही बुलन्दशहरी (रह०)

अहवाले बर्ज़ख़

Ahwale Barzakh

मौलाना मुहम्मद आशिक़ इलाही बुलन्दशहरी (रह०)

प्रकाशन : 2014

ISBN: 81-7101-478-X

TP-308-14

Published by Mohammad Yunus for

IDARA IMPEX

D-80, Abul Fazal Enclave-I, Jamia Nagar
New Delhi-110 025 (India)
Tel.: +91-11-2695 6832 & 085888 33786
Fax: +91-11-6617 3545 Email: **info@idara.in**
Online Store: **www.idarastore.com**

Retail Shop: **IDARA IMPEX**
Shop 6, Nizamia Complex, Gali Gadrian, Hazrat Nizamuddin
New Delhi-110013 (India) Tel.: 085888 44786

विषय-सूची

بسم الله الرحمن الرحيم

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ هُدَاةِ الدِّيْنِ الْمَتِيْنِ وَمَنْ تَبِعَهُمْ
بِاِحْسَانٍ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ ط

अल्हमदु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन वस्सलातु अ़ला ख़ैरि ख़ल्क़िही सैयिदिना मुहम्मदिन सैयिदिल मुर्सलीन व अ़ला आलिही व सहबिही हुदातिद्दीनिल मतीन व मन तबि अ़हुम बिइहसानिन इला यौमिद्दीन।

हज़रत मुहम्मद ﷺ की हदीसों को पढ़ने से साफ़ मालूम होता है कि मरने वाले को देखने में हम भले ही मुर्दा समझते हैं लेकिन सच तो यह है कि वह ज़िंदा होता है। यह दूसरी बात है कि उसकी ज़िंदगी हमारी इस ज़िंदगी से बिल्कुल अलग होती है।

प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया है कि मुर्दे की हड्डी तोड़ना ऐसा ही है जैसे ज़िंदगी में उसकी हड्डी तोड़ी जाए। एक बार प्यारे नबी ﷺ ने हज़रत उम्र बिन हज़्म ؓ को एक क़ब्र से तकिया लगाये हुए बैठे देखा तो फ़रमाया कि इस क़ब्र वाले को तकलीफ़ न दो।[1]

जब इंसान मर जाता है तो इस दुनिया से निकल कर बर्ज़ख़ की दुनिया में चला जाता है चाहे अभी उसे क़ब्र में भी न रखा जाए या आग में भी न जलाया जाये। उसमें समझ होती है। अल्लाह के रसूल ﷺ ने

1. मिश्कात शरीफ़

फ़रमाया कि जब मुर्दा (चारपाई वग़ैरह) पर रख दिया जाता है और उसके बाद क़ब्रिस्तान ले जाने के लिए लोग उसे उठाते हैं तो अगर वह नेक था तो कहता है कि मुझे जल्द ले चलो और अगर वह नेक नहीं था तो घर वालों से कहता है कि हाय मेरी बर्बादी! मुझे कहां ले जाते हो? (फिर फ़रमाया) कि इंसान के सिवा हर चीज़ उसकी आवाज़ सुनती है। अगर इंसान उसकी आवाज़ सुन ले तो ज़रुर बेहोश हो जाये।[1]

मौत के बाद से क़ियामत क़ायम होने तक हर आदमी पर जो ज़माना गुज़रता है उसको **बर्ज़ख़** कहा जाता है। **बर्ज़ख़** का मतलब है पर्दा और आड़। चूंकि यह ज़माना दुनिया और आख़िरत के दर्मियान एक आड़ होता है इसलिए उसे **बर्ज़ख़** कहते हैं।

चूंकि इंसान खुद अपने मुर्दों को दफ़न किया करते हैं इसलिए हदीसों में बर्ज़ख़ के आराम या अज़ाब के बारे में क़ब्र ही के लफ़्ज (शब्द) आते हैं। इसका यह मतलब नहीं कि जिन इंसानों को आग में जला दिया जाता है या पानी में बहा दिया जाता है, वह बर्ज़ख़ में ज़िंदा नहीं रहते। सच तो यह है कि अज़ाब व सवाब का तअ़ल्लुक़ रूह से है और यह बात भी याद रहे कि अल्लाह तआ़ला जले हुए ज़र्रों (कणों) को भी जमा करके अज़ाब व सवाब देने की ताक़त रखता है। हदीस शरीफ़ में आया है कि (पहले ज़माने में) एक आदमी ने बहुत ज़्यादा गुनाह किये। जब वह मरने लगा तो उसने अपने बेटों को वसीयत की कि जब मैं मर जाऊं तो मुझे जला देना और मेरी राख को आधी धरती में बिखेर देना और आधी समुद्र में बहा देना। यह वसीयत करके उसने कहा कि अगर खुदा मुझ पर क़ादिर हो गया और उसने इसके बावजूद भी मुझे ज़िंदा कर लिया तो मुझे ज़रूर ही ज़बरदस्त अज़ाब देगा जो (मेरे अलावा) सारी दुनिया में और किसी को न देगा। जब वह मर गया तो उसके बेटों ने ऐसा ही किया जैसा कि उसने वसीयत की थी। फिर अल्लाह तआ़ला ने समुद्र को हुक्म दिया कि इस आदमी के जिस्म के ज़र्रों को जमा

1. बुख़ारी शरीफ़

कर दो। समुद्र ने अपने अंदर के सारे ज़र्रों को जमा कर दिया और इसी तरह धरती को भी हुक्म दिया। उसने भी उस आदमी के जिस्म के सारे ज़र्रों को जमा कर दिया। सारे ज़र्रे जमा फ़रमाकर अल्लाह तआला ने उसे ज़िंदा फ़रमा दिया। फिर उस से फ़रमाया कि तूने ऐसी वसीयत क्यों की? उसने अ़र्ज़ किया, ऐ मेरे पालनहार! तेरे डर से मैंने ऐसा किया और आप ख़ूब जानते हैं। इस पर अल्लाह तआला ने उसे बख़्श दिया।[1]

हदीस शरीफ़ की रिवायत से यह भी मालूम होता है कि मोमिन बंदे बर्ज़ख़ में एक दूसरे से मुलाक़ात भी करते हैं और इस दुनिया से जाने वाले से यह भी पूछते हैं कि फ़्लां का क्या हाल है और किस हालत में है।

हज़रत सईद बिन जुबैर ﷺ फ़रमाते हैं कि जब मरने वाला मर जाता है तो बर्ज़ख़ में उसकी औलाद उसका इस तरह स्वागत करती है जैसे दुनिया में किसी बाहर से आने वाले का स्वागत किया जाता है। और हज़रत साबित बिनानी (रह०) फ़रमाते थे कि जब मरने वाला मर जाता है तो बर्ज़ख़ की दुनिया में उसके रिश्तेदार-नातेदार जो पहले मर चुके हैं, उसे घेर लेते हैं और वे आपस में मिलकर उस खुशी से भी ज़्यादा खुश होते हैं जो दुनिया में किसी बाहर से आने वाले से मिलकर होती है।[2]

हज़रत कैस बिन कबीसा ﷺ फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया कि जो आदमी ईमान वाला नहीं होता, उसे मुर्दों से बात-चीत करने की इजाज़त नहीं दी जाती। किसी ने अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! क्या मुर्दे बात-चीत भी करते हैं? फ़रमाया, हां। और एक दूसरे से मुलाक़ात भी करते हैं।[3]

हज़रत आइशा (रज़ि०) फ़रमाती हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया कि जो आदमी अपने (मुसलमान) भाई की (क़ब्र की) ज़ियारत (दर्शन) करता है और उससे मानूस (परिचित) होता है, यहां तक कि ज़ियारत करने वाला उठकर चला जाता है।[4]

1. बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़
2. इब्ने अबिद्दुन्या
3. इब्ने हब्बान
4. इब्ने अबिद्दुन्या

हज़रत उम्मे बिश्र (रजि०) फ़रमाती हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ से मैंने अ़र्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! क्या मुर्दे आपस में एक दूसरे को पहचानते हैं? आपने फ़रमाया, तेरा भला हो! रूहे मुतमइन्नः (वह रूह जिसे इत्मीनान हासिल हो) जन्नत में हरे परिंदों की शक्ल में होती है (अब तू ख़ूब समझ ले) कि परिंदे अगर आपस में एक दूसरे को पहचानते हैं तो रूहें भी आपस में एक दूसरे को पहचानती हैं।[1]

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ कहते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया कि जो आदमी क़ुरआन मजीद पढ़ना शुरू करे और पूरा किये बिना मर जाए तो क़ब्र में एक फ़रिश्ता उसे क़ुरआन शरीफ़ पढ़ाता है। चुनांचे वह अल्लाह से इस हाल में मुलाक़ात करेगा कि उसे पूरा क़ुरआन मजीद हिफ़्ज़ (याद) होगा।[2]

जो लोग भले कामों में ज़िंदगी बिताते हैं और वह मरने के बाद की ज़िंदगी का यक़ीन रखते हैं। इस दुनिया में उनका मन नहीं लगता और मौत को यहां की ज़िंदगी के मुक़ाबले में अच्छा समझते हैं। और जो लोग यहां की ज़िंदगी को बुराईयों में गुज़ारते हैं, वे मौत से घबराते हैं। सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक ने अबू हाज़िम (रह०) से पूछा कि यह बताइए कि हम मौत से क्यों घबराते हैं? उन्होंने फ़रमाया, इसलिए घबराते हैं कि तुमने दुनिया को आबाद और आख़िरत को बर्बाद किया है; इसलिए आबादी से वीराने में जाना पसंद नहीं करते। सुलैमान ने कहा : सही है, आप सच कहते हैं।

जिस आदमी को क़ब्र की ज़िंदगी का यक़ीन हो और अपने अच्छे कामों के बदले वहां अच्छे हाल में रहने की उम्मीद हो और यह समझता हो कि इस दुनिया के दोस्त-साथी-रिश्तेदार को छोड़कर चला जाऊंगा तो बर्ज़ख़ में रिश्तेदार और जान पहचान वाले मिल जायेंगे तो फिर मौत से क्यों घबराये और इस जिंदगी को बर्ज़ख़ की ज़िन्दगी पर क्यों बेहतर समझे? अल्लाह के

---

1. इब्ने सअ़द 2. शौक़े वतन

रसूल ﷺ ने फ़रमाया :

يُحِبُّ الْإِنْسَانُ الْحَيٰوةَ وَالْمَوْتُ خَيْرٌ لِّنَفْسِهٖ

युहिब्बुल इंसानुल हया त वल मौतु ख़ैरुल्लि नफ़्सिः

'इंसान ज़िंदगी को प्यारा रखता है हालांकि मौत उसके लिए बेहतर है (शर्त यह कि वह ईमान वाला हो और उसके काम अच्छे हों।)

कुछ रिवायतों में यह भी है कि प्यारे नबी ﷺ ने मौत को मोमिन का तोहफ़ा बताया है[1]। और यह भी फ़रमाया है कि इंसान मौत को नापसंदीदा समझता है, हालांकि मौत फ़ित्नों से बेहतर है कि जितनी जल्दी मौत आ जाएगी, उतनी ही जल्दी दुनिया के फ़ित्नों से बच जायेगा।[2]

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया कि इंसान के दुनिया से इंतिक़ाल करने की मिसाल ऐसी है जैसे बच्चा माँ के पेट की तंगी और अंधेरे से निकल कर दुनिया के आराम व राहत में आ जाता है।[3] मतलब यह कि मोमिन के लिए मौत बड़ी अच्छी चीज़ है। बस शर्त यह है कि नेक अमल करने वाला हो और उसने अपने और अल्लाह के दर्मियान मामला ठीक रखा हो। जो बंदे नेक कामों में ज़िंदगी गुज़ारते हैं वे मौत को इस ज़िंदगी पर बढ़ावा देते हैं और यहां मुसीबतों और परेशानियों से निकल कर जल्द-से- जल्द अमन व अमान और राहत व चैन वाली हमेशा की ज़िंदगी में जाना चाहता है।

हज़रत अबू हुरैरः रज़ि० ने एक बार किसी से पूछा कि कहां जा रहे हो? उन्होंने जवाब दिया कि बाज़ार का इरादा है। फ़रमाया : हो सके तो मेरे लिए मौत ख़रीदते लाना। मतलब यह था कि हमें इस दुनिया में रहना पंसद नहीं

---

1. मिश्कात
2. अहमद
3. हकीम तिर्मिज़ी

है। अगर क़ीमत से भी मौत मिले तो ख़रीद लें।

हज़रत ख़ालिद बिन मअ्दान ﷺ फ़रमाते थे कि अगर कोई आदमी कहे कि जो आदमी सबसे पहले फ़्लां चीज़ छू ले तो वह उसी वक़्त मर जाएगा तो मुझसे पहले कोई भी उस चीज़ को नहीं छू सकता। हां, अगर मुझसे ज़्यादा कोई दौड़ सकता हो और मुझसे पहले पहुंच जाए तो और बात है।[1]

اَللّٰهُمَّ حَبِّبِ الْمَوْتَ اِلَيَّ وَاِلٰى مَنْ يَّعْلَمُ اَنَّ سَيِّدَنَا مُحَمَّدًا صَلَّى اللهُ
تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ۔

अल्लाहुम्म म हब्बिबिल मौ त इलै य व इला मैंय्यअ्लमु अन्न न सैयिदना मुहम्मदन सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम अ़ब्दु क व रसूलुक।

इस प्राक्कथन के बाद अब हम अहवाले बर्ज़ख़ लिखना शुरू करते हैं।

والله ولي التوفيق وهو خير عون وخير رفيق

वल्लाहु वलीय्युत्तौफ़ीक़ि व हु व ख़ैरु औनिन व ख़ैरुर्रफ़ीक़

---

1. शर्हुस्सुदूर

بسم الله الرحمن الرحيم

मोमिन का रुत्बा
मौत के वक़्त और मौत के बाद

हज़रत बरा बिन आज़िब ﷺ फ़रमाते हैं कि एक दिन हम अल्लाह के रसूल ﷺ के साथ एक अंसारी के जनाज़े में क़ब्रिस्तान गये। जब क़ब्र तक पहुंचे तो देखा कि अभी क़ब्र नहीं बनायी जा सकी है; इस वजह से नबी करीम ﷺ बैठ गये और हम भी आपके आस-पास (अदब के साथ) इस तरह बैठ गये कि जैसे हमारे सरों पर परिंदे बैठें हैं।[1]

अल्लाह के रसूल ﷺ के मुबारक हाथ में एक लकड़ी थी जिससे ज़मीन कुरेद रहे थे (जैसे कोई दुखी आदमी किया करता है) आपने मुबारक सर उठाकर फ़रमाया कि क़ब्र के अज़ाब से पनाह मांगो। दो या तीन बार यही फ़रमाया। फिर फ़रमाया कि बेशक जब मोमिन बंदा दुनिया से जाने और आख़िरत का रुख़ करने को होता है तो उसकी तरफ़ आसमान से फ़रिश्ते आते हैं, जिनके सफ़ेद चेहरे सूरज की तरह रौशन होते हैं। उनके साथ जन्नती कफ़न होता है और जन्नत की ख़ुश्बू होती है। यह फ़रिश्ते इतने होते हैं कि जहां तक उसकी नज़र पहुंचे, वहां तक बैठ जाते हैं। फिर (हज़रत) **म ल कुल मौत** (मौत का फ़रिश्ता) तशरीफ़ लाते हैं यहां तक कि

---

1. यानि इस तरह ख़ामोश, दम साधे बैठ गये जैसे कि हम में हरकत ही नहीं रही। परिंदा बे-हरकत चीजों पर बैठता है। सहाबा किराम (रज़ि०) की यह हालत हदीस पाक सुनने के वक़्त ऐसी ही होती थी।

उसके पास बैठ जाते हैं और फ़रमाते हैं कि ऐ पाक रूह! अल्लाह की मग्फ़िरत और उसकी रज़ामंदी की तरफ निकल कर चल। चुनांचे उसकी रूह इस तरह आसानी से निकल आती है जैसे मशकीज़ा (छोटी मशक) में से (पानी का) क़तरा बहता हुआ बाहर आ जाता है। तो उसे हज़रत म ल कुल मौत ﷺ ले लेते हैं। उनके हाथ में लेते ही दूसरे फ़रिश्ते (जो दूर तक बैठे होते हैं) पल भर भी उनके हाथ में नहीं छोड़ते, यहां तक कि उसे लेकर उसी कफ़न और ख़ुश्बू में रख कर आसमान की तरफ़ चल देते हैं। उस ख़ुश्बू के बारे में ईशाद फ़रमाया कि ज़मीन पर जो अच्छी से अच्छी ख़ुश्बू पायी गई है, उस-जैसी वह ख़ुश्बू होती है।

फिर फ़रमाया कि उस रूह को लेकर फ़रिश्ते (आसमान की तरफ़) चढ़ने लगते हैं और फ़रिश्ते की जिस टोली पर भी इनका गुज़र होता है, वह कहते हैं कि यह कौन पाक रूह है। वह उसका अच्छे से अच्छा नाम लेकर जवाब देते हैं। जिससे दुनिया में बुलाया जाता था कि फ़्लां का बेटा फ़्लां है। इसी तरह पहले आसमान तक पहुंचते हैं और आसमान का दरवाज़ा खोलने के लिए कहते हैं और आसमान का दरवाज़ा खोल दिया जाता है और वह इस रूह को लेकर ऊपर चले जाते हैं; यहां तक कि सातवें आसमान पर पहुंच जाते हैं। हर आसमान के क़रीबी फ़रिश्ते दूसरे आसमान तक उसे विदा करते हैं। जब सातवें आसमान तक पहुंच जाते हैं तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि मेरे बन्दे को 'इल्लीयीन की किताब' (नेकों के दफ़्तर) में लिख दो और उसे ज़मीन पर वापस ले जाओ। क्योंकि मैंने इंसान को ज़मीन ही से पैदा किया है और उसी में लौटा दूंगा और उसी से उनको दोबारा निकाल लूंगा। चुनांचे उसकी रूह उसके जिस्म में वापस कर दी जाती है। इसके बाद दो फ़रिश्ते (मुन्किर और नकीर) उसके पास आते हैं, जो आकर उसे बिठाते हैं और उससे सवाल करते हैं कि तेरा रब कौन है। वह जवाब देता है मेरा रब अल्लाह है। फिर उससे पूछते हैं कि तेरा दीन क्या है? वह जवाब देता है मेरा दीन इस्लाम है। फिर उससे पूछते हैं कि यह कौन साहब हैं जो तुम्हारे अंदर भेजे गये? वह कहता है कि वह अल्लाह के रसूल ﷺ हैं। फिर उससे

पूछते हैं कि तेरा अ़मल क्या है? वह कहता है कि मैंने अल्लाह की किताब पढ़ी सो उस पर ईमान लाया और उसकी तस्दीक़ की। इसके बाद एक मुनादी (आवाज़ देने वाला) आसमान से आवाज़ देता है (जो अल्लाह का मुनादी है कि मेरे बन्दे ने सच कहा सो उसके लिए जन्नत के बिछौने बिछा दो और उसको जन्नत के कपड़े पहना दो और उसके लिए जन्नत की तरफ़ दरवाज़ा खोल दो। चुनांचे जन्नत का दरवाज़ा खोल दिया जाता है जिसके ज़रिये जन्नत का आराम और ख़ुश्बू भीतर आती रहती है और उसकी क़ब्र इतनी फैला दी जाती है जहां तक उसकी नज़र पहुंचे। इसके बाद बहुत ही ख़ूबसूरत चेहरे वाला, बेहतरीन कपड़ों वाला, (और) पाक ख़ुश्बू वाला एक आदमी उसके पास आकर कहता है कि ख़ुशी की चीज़ों की ख़ुशख़बरी सुन ले। यह तेरा वह दिन है जिसका तुमसे वादा किया जाता था। वह कहता है तुम कौन हो? तुम्हारा चेहरा सच में चेहरा कहने के क़ाबिल है और इस क़ाबिल है कि अच्छी ख़बर लाए। वह कहता है मैं तेरा भला अ़मल हूं।

इसके बाद वह (ख़ुशी में) कहता है कि ऐ रब! क़ियामत क़ायम फ़रमा। ऐ रब! क़ियामत क़ायम फ़रमा ताकि मैं[1] अपने बाल-बच्चों और माल में पहुंच जाऊं।

काफ़िर की ज़िल्लत

और बिलाशुबहः जब काफ़िर बन्दा दुनिया से जाने और आख़िरत का रुख़ करने को होता है तो स्याह चेहरों वाले फ़रिश्ते आसमान से उसके पास आते हैं, जिनके साथ टाट होते हैं और उसके पास इतनी दूर तक बैठ जाते हैं जहां तक उसकी नज़र पहुंचती है। फिर म ल कुल मौत तश्रीफ़ लाते हैं, यहां तक कि उसके सर के पास बैठ जाते हैं, फिर कहते हैं कि ऐ ख़बीस (दुष्ट) जान, अल्लाह की नाराज़ी की तरफ़ निकल। म ल कुल मौत का यह हुक्म सुनकर रूह उसके जिस्म में इधर उधर भागी फिरती है। इसलिए

1. इससे जन्नत की हूरें और जन्नत की नेमतें मुराद हैं।(मिर्क़ात)

म ल कुल मौत उसकी रूह को उसके जिस्म से इस तरह निकालते हैं कि जैसे बोटियां भुनने की सीख़ भीगे हुए ऊन से साफ़ की जाती है (यानि काफ़िर की रूह को जिस्म से ज़बरदस्ती इस तरह निकालते हैं जैसे भीगा हुआ ऊन कांटेदार सीख़ पर लिपटा हुआ हो और उसको ज़ोर से खींचा जाए) फिर उसकी रूह को म ल कुल मौत (अपने हाथ में) ले लेते हैं और उनके हाथ में लेते ही दूसरे फ़रिश्ते पलक झपकने के बराबर भी उनके पास नहीं छोड़ते। यहां तक कि फ़ौरन उनसे लेकर टाटों से लपेट देते हैं। (जो उनके पास होते हैं) और उन टाटों मे ऐसी बदबू आती है जैसी कभी किसी बहुत सड़ी हुई मुर्दा लाश से धरती पर बदबू फूटी हो। वे फ़रिश्ते उसे लेकर आसमान की तरफ़ चढ़ते हैं। और फ़रिश्तों के जिस गिरोह पर भी पहुंचते हैं। वे कहते हैं कि यह कौन ख़बीस रूह है? वे उसका बुरे से बुरा नाम लेकर कहते हैं, जिससे वह दुनिया में बुलाया जाता था कि फ़्लां का बेटा फ़्लां है, यहां तक कि वह उसे लेकर पहले आसमान तक पहुंचते हैं और दरवाज़ा खुलवाना चाहते हैं, मगर उसके लिए दरवाज़ा नहीं खोला जाता है। जैसा कि अल्लाह जल्ल ल शानुहू ने फ़रमायाः—

لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ اَبْوَابُ السَّمَآءِ وَلَا يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ حَتّٰى يَلِجَ الْجَمَلُ
فِيْ سَمِّ الْخِيَاطِ (سورۂ اعراف)

ला तुफ़त्तहु लहुम अब्वाबुस्समाइ व ला यद्ख़ुलू नल जन्न न त हत्ता यलि जल ज म लु फ़ी सम्मिल ख़्रियात।

—सूरः आराफ़

'उनके लिए आसमान के दरवाज़े न खोले जाएंगें। और न वे कभी जन्नत में दाख़िल होंगे। जब तक ऊंट सूई क़े नाके में न चला जाए (और ऊंट सूई के नाके में जा नहीं सकता इसलिए वे भी जन्नत में नहीं जा सकते)।'

फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि इसको सिज्जीन की किताब (बुरे

आमालनामे के दफ़्तर) में लिख दो, जो सबसे नीचे ज़मीन में है। चुनांचे उसकी रूह (वहां से) फेंक दी जाती है। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह आयत पढ़ी :

وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللّٰهِ فَكَأَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَاءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ أَوْ تَهْوِي بِهِ
الرِّيحُ فِي مَكَانٍ سَحِيقٍ (سورہ حج)

व मैंयुश्रिक बिल्लाहि फ़ क अन्नमा ख़र्र र मिनस्समाइ फ़ तख़ त फ़ुहुत्तैरु औ तह्वी बिहिर्रीहु फ़ी मकानिन सहीक़।

—सूरः हज

'और जो आदमी अल्लाह के साथ शिर्क करता है, गोया वह आसमान से गिर पड़ा। फिर चिड़ियों ने उसकी बोटियों नोच लीं या हवा ने उसको बहुत दूर की जगह में ले जाकर फेंक दिया।'

फिर उसकी रूह उसके जिस्म में लौटा दी जाती है और उसके पास दो फ़रिश्ते (मुन्किर और नकीर) आते हैं और बिठा कर पूछते हैं कि तेरा रब कौन है? वह कहता है, हाय! हाय! मुझे पता नहीं। फिर उससे पूछते हैं कि तेरा दीन क्या है? वह कहता है, हाय! हाय! मुझे पता नहीं। फिर उससे पूछते हैं कि यह आदमी कौन हैं, जो तुम्हारे पास भेजे गये? वह कहता है, हाय! हाय! मुझे पता नहीं। जब यह सवाल और जवाब हो चुकते हैं तो आसमान से एक मुनादी आवाज़ देता है कि इसने झूठ कहा।[1] इसके नीचे आग बिछा दो और इसके लिए दोज़ख़ का दरवाज़ा खोल दो। चुनांचे दोज़ख़ का दरवाज़ा खोल दिया जाता है और दोज़ख़ की गर्मी और गर्म लू आती

1. यानि इसको अपने रब की ख़बर है लेकिन यह उसको मानता न था और जिस दीन (धर्म) पर था उसे भी जानता है और हज़रत मुहम्मद ﷺ के नबी होने को भी जानता है लेकिन अ़ज़ाब से बचने के लिए अपने को अनजान ज़ाहिर कर रहा है।

रहती है और क़ब्र उस पर तंग कर दी जाती है, यहां तक कि उसकी पसलियां भिंचकर आपस में इधर की उधर चली जाती हैं और उसके पास एक आदमी आता है जो बद-सूरत और बुरे कपड़े पहने हुए होता है। उसके जिस्म से बुरी बदबू आती है । वह आदमी उससे कहता है कि मुसीबत की ख़बर सुन लो। यह वह दिन है जिसका तुझसे वादा किया जाता था। वह कहता है, तू कौन है? सच में, तेरी शक्ल ऐसी है कि तू बुरी ख़बर सुनाये। वह कहता है कि में तेरा बुरा अ़मल हूं। यह सुनकर वह (इस डर से कि में क़ियामत में यहां से ज़्यादा अज़ाब में गिरफ़्तार हूंगा) यह कहता है कि 'ऐ रब! क़ियामत क़ायम न कर।'[1]

एक रिवायत में है कि जब मोमिन की रूह निकलती है तो आसमान और ज़मीन के बीच का हर फ़रिश्ता और वे सब फ़रिश्ते जो आसमान में हैं, सब उस पर रहमत भेजते हैं और उसके लिए आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और वह दरवाज़े वाले अल्लाह से दुआ करते हैं कि उसकी रूह को हमारे तरफ़ ले कर चढ़ाया जाए और काफ़िर के बारे में फ़रमाया कि उसकी जान रगों समेत निकाली जाती है और आसमान और ज़मीन के बीच का हर फ़रिश्ता और वह सब फ़रिश्ते जो आसमान में हैं, सबके सब लानत भेजते हैं और उसके लिए आसमान के दरवाज़े बंद कर दिए जाते हैं और हर दरवाज़े वाले अल्लाह से दुआ करते हैं कि उसकी रूह को हमारी तरफ़ से लेकर न चढ़ाया जाए![2]

मोमिन का क़ब्र में नमाज़ का ध्यान

हज़रत जाबिर ﷺ फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जब मोमिन को क़ब्र में दाख़िल कर दिया जाता है तो उसको ऐसा मालूम होता है, जैसे सूरज छिप रहा हो, तो जब उसकी रूह लौटाई जाती है तो आखें मलता हुआ उठकर बैठता है और (फ़रिश्तों से) कहता है

1. मिश्कात शरीफ़ 2. मिश्कात

मि मुझे छोड़ दो; मैं नमाज़ पढ़ता हूं।[1]

मुल्ला अली क़ारी लिखते हैं कि गोया वह उस वक़्त अपने आप को दुनिया में ही समझता है कि सवाल और जवाब को रहने दो, मुझे फ़र्ज़ अदा करने दो; वक़्त ख़त्म हुआ जा रहा है; मेरी नमाज़ जाती रहेगी।

फिर लिखते हैं कि यह बात वही कहेगा जो दुनिया में नमाज़ का पाबंद था और उसको हर वक़्त नमाज़ का ख़्याल लगा रहता था।

इससे बे-नमाज़ियों को सबक़ हासिल करना चाहिए और अपने हाल का इससे अंदाज़ा लगायें और इस बात को ख़ूब सोचें कि जब अचानक सवाल होगा तो कैसी परेशानी होगी।

क़ब्र में मोमिन का बे-ख़ौफ़ होना और उसके सामने जन्नत पेश होना

हज़रत अबू हुरैरः ؓ फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बे-शुबहः मुर्दा अपनी क़ब्र में पहुंचकर बे-ख़ौफ़ और इत्मीनान के साथ बैठता है। फिर उससे सवाल किया जाता है कि (तू दुनिया में) किस दीन में था? वह जवाब देता है कि मैं इस्लाम में था। फिर उससे सवाल होता है कि (तेरे अक़ीदे में) यह कौन है, (जो तुम्हारी तरफ भेजे गये)? वह जवाब देता है कि मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ हैं जो हमारे पास अल्लाह के पास से खुले-खुले मोज्ज़े लेकर आये, तो हमने उनकी तस्दीक़ की। फिर उससे पूछा जाता है कि क्या तूने अल्लाह को देखा है? वह जवाब देता है कि (दुनिया में) कोई आदमी अल्लाह को नहीं देख सकता (फिर मैं कैसे देख लेता?)

फिर उसके सामने दोज़ख़ की तरफ़ एक रौशनदान खोला जाता है (जिसके ज़रिए) वह दोज़ख़ को देखता है कि आग के अंगारे आपस में एक दूसरे को खाये जाते हैं। (जब वह दोज़ख़ का मंज़र देख लेता है) तो उससे

1. इब्ने माजा

कहते हैं कि देख अल्लाह ने तुझे किस मुसीबत से बचाया? फिर उसके सामने जन्नत की तरफ़ एक रौशनदान खोला जाता है (जिसके ज़रिए) वह जन्नत की रौनक़ और जन्नत की दूसरी चीज़ें देख लेता है। फिर उससे कहा जाता है कि यह (जन्नत) तेरा ठिकाना है। तू यक़ीन ही पर ज़िंदा रहा और यक़ीन पर ही तुझे मौत आयी और यक़ीन ही पर तू क़ियामत के दिन (क़ब्र से) उठेगा। इन्शाअल्लाह तआ़ला (अगर अल्लाह ने चाहा)।

फिर फ़रमाया कि नाफ़र्मान डरा और घबराया हुआ अपनी क़ब्र में बैठता है। उससे सवाल होता है कि तू दुनिया में किस दीन में था? वह जवाब देता है कि मुझे पता नहीं। फिर उससे (हुज़ूर ﷺ के बारे में) सवाल होता है कि (तेरे अ़क़ीदे में) ये कौन हैं? वह कहता है कि इस बारे में मैंने वही कहा जो और लोगों ने कहा। फिर उसके सामने जन्नत की तरफ़ रौशनदान खोला जाता है, जिसके ज़रिए वह उसकी रौनक़ और उसके अंदर की दूसरी चीज़ें देख लेता है। फिर उससे कहा जाता है कि देख! (तूने ख़ुदा की नाफ़रमानी की) ख़ुदा ने तुझे किस नेमत से महरूम किया। फिर उसके दोज़ख़ की तरफ़ एक रौशनदान खोला जाता है जिसके ज़रिए वह दोज़ख़ को देख लेता है कि आग के अंगारे एक दूसरे को खाये जाते हैं। फिर उससे कहा जाता है कि यह तेरा ठिकाना है। तू शक ही पर ज़िंदा रहा और शक ही पर तुझे मौत आयी। और अल्लाह ने चाहा तो क़ियामत को भी इसी शक पर उठेगा।[1]

मोमिन से फ़रिश्तों का कहना कि दुल्हन की तरह सो जा और मुनाफ़िक़ व काफ़िर को ज़मीन का भींचना

हज़रत अबू हुरैरः ؓ फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जब मैयत को क़ब्र में रख दिया जाता है तो उसके पास दो फ़रिश्ते आते हैं, जिनका रंग स्याह और आंखें नीली होती हैं, जिनमें से एक

1. मिश्कात

को मुन्किर और दूसरे को नकीर कहा जाता है। वह दोनों उससे पूछते हैं कि तू क्या कहता है उन साहब के बारे में (जो तुम्हारी तरफ़ भेजे गये?) वह अगर मोमिन हैं तो जवाब देता है कि वह अल्लाह के बंदे और उसके रसूल हैं। मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद (जिसकी इबादत की जाए) नहीं और बे-शुबहः मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ अल्लाह के बंदे और उसके रसूल हैं। यह सुनकर वे दोनों कहते हैं कि हम तो जानते हैं कि तू ऐसा ही जवाब देगा। फिर उसकी क़ब्र सत्तर हाथ वर्ग चौड़ी कर दी जाती है। फिर रौशन कर दी जाती है। फिर उससे कह दिया जाता है कि (अब तू) सो जा। वह कहता है कि मैं तो अपने घर वालों में (अपना हाल) बताने के लिए जाता हूं। वे कहते हैं कि (यहां आकर जाने का क़ानून नहीं है।) तू सो जा जैसा कि दुल्हन सो जाती है, जिसे उसके शौहर के सिवा कोई नहीं उठा सकता। (चुनांचे वह आराम से क़ब्र में रहता है) यहां तक कि अल्लाह उसे क़ियामत के दिन उस जगह से उठायेगा।

और अगर मरने वाला मुनाफ़िक़ (या काफ़िर) होता है तो वह मुन्किर-नकीर को जवाब देता है कि मैंने जो लोगों को कहते सुना, वही कहा (इससे ज़्यादा मैं नहीं जानता)। वे दोनों कहते हैं कि हम तो ख़ूब जानते थे कि तू ऐसा ही जवाब देगा। फिर ज़मीन से कहा जाता है कि उसको भींच दे। चुनांचे ज़मीन उसको भींच देती है, जिससे उसकी पस्लियाँ इधर की उधर चली जाती हैं। फिर वह क़ब्र के अंदर अ़ज़ाब में रहता है, यहाँ तक कि (क़ियामत को) ख़ुदा ही उसे वहां से उठायेगा।[1]

इन हदीसों से मालूम हुआ कि ईमान वाले बर्ज़ख़ की दुनिया में इत्मीनान से होंगे और उनके होश व हवास सही रहेंगे। यहाँ तक कि उन को नमाज़ का ध्यान होगा और फ़रिश्तों के सवाल का जवाब देने में बेख़ौफ़ होंगे और जब अपना अच्छा हाल देख लेंगें तो घर वालों को ख़ुशख़बरी देने

1. तबरानी वग़ैरह, शीके वतन के हवाले से

के लिए फ़रिश्तों से कहेंगे कि 'मैं अभी नहीं सोता। घर वालों को ख़बर करने जाता हूं।' और बहुत ज़्यादा ख़ुशी में अपना भला अंजाम देखकर फ़ौरन ही क़ियामत क़ायम होने का सवाल करेंगे ताकि जल्द-से-जल्द जन्नत में पहुंचें। जिस पर अल्लाह का करम हो, उसके होश व हवास बाक़ी रहते हैं और उससे अल्लाह जल्ल ल शानुहू सही जवाब दिलाते हैं। जैसा कि सूरः इब्राहीम में फ़रमाया :

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ.

युसब्बितुल्लाहुल्लज़ी न आमनू बिल क़ौलिस्साबिति फ़िल हयाति-द्दुन्या व फ़िल आख़िरः। *सूरः इब्राहीम*

'ईमान वालों को अल्लाह इस पक्की बात यानि (कलिमा तैयबा) से दुनिया व आख़िरत में मज़बूत रखता है।'

हज़रत उमर ﷺ से अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया कि ऐ उमर 'उस वक़्त तुम्हारा क्या हाल होगा जबकि लोग तुम को क़ब्र में रखकर और मिट्टी डाल कर चले आएंगे। फिर तुम्हारे पास क़ब्र के मुम्तहिन (इम्तिहान लेने वाले) आएंगे जिनकी आवाज़ सख़्त गरज की तरह होगी और जिनकी आंखें नज़र उचक लेने वाली बिजली की तरह होंगी। सो वे तुमको हिला डालेंगे और तुमसे हाकिमों-जैसी बात-चीत करेंगे। बताओ उस वक़्त तुम्हारा क्या हाल होगा? हज़रत उमर ﷺ ने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! क्या उस वक़्त हमारी अक़्ल हमारे साथ होगी? आप ने इर्शाद फ़रमाया: हां! इसी तरह तुम्हारी अक़्लें तुम्हारे पास होंगी, जैसी आज हैं। यह सुनकर हज़रत उमर ﷺ ने अर्ज़ किया कि बस तो मैं निमट लूंगा।'

1. तबरानी वग़ैरह, शौक़े वतन के हवाले से

बज़र्ख़ वालों का मोमिन से पूछना कि फ़्लां का क्या हाल है?

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ रिवायत फरमाते हैं कि हज़रत रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया कि जब फ़रिश्ते मोमिन की रूह को लेकर (उन) मोमिनों की रूहों के पास ले जाते हैं (जो पहले से जा चुके हैं) तो वह रूहें उसके पहुंचने पर ऐसी ख़ुश होती हैं कि (इस दुनिया में) तुम भी अपने किसी ग़ायब के आने पर इतना ख़ुश नहीं होते। फिर उससे पूछते हैं कि फ़्लां का क्या हाल है? फ़्लां का क्या हाल है? फिर वे (ख़ुद ही आपस में) कहते हैं कि अच्छा अभी ठहरो, फिर पूछ लेना। छोड़ दो ज़रा आराम करने दो चूंकि दुनिया के ग़म में मुब्तला था। फिर (वह बताने लगता है कि फ़्लां इस तरह है, फ़्लां इस तरह है और) वह किसी शख़्स के बारे में कहता है जो उससे पहले मर चुका था कि वह तो मर गया। क्या तुम्हारे पास नहीं आया? यह सुनकर वे कहते हैं कि (जब वह दुनिया से आ गया और हमारे पास नहीं आया तो) ज़रूर उसको दोज़ख़ में पहुंचा दिया गया।[1]

बर्ज़ख़ वालों पर ज़िंदों के अ़मल पेश होते हैं

तबरानी की रिवायत में यह भी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुबहः तुम्हारे अ़मल तुम्हारे रिश्तेदारों और ख़ानदान वालों के सामने पेश किये जाते हैं जो आख़िरत में पहुंच चुके हैं। अगर तुम्हारा अ़मल नेक हो तो वे ख़ुश होते हैं और ख़ुदावन्द-करीम से दुआ़ करते हैं कि ऐ अल्लाह! यह आप का फ़ज़्ल और रहमत है सो आप अपनी नेमत इस पर पूरी फ़रमा दीजिए और इसी पर इसको मौत दीजिए और अगर बुरा अ़मल उनके सामने पेश होता है तो कहते हैं कि ऐ अल्लाह! इसके दिल में नेकी डाल दे जो तेरी रिज़ा (ख़ुशी) और तेरे क़ुर्ब[2] की वजह बन जाए।[3]

---

1. अहमद, नसाई
2. क़रीब होना
3. शौक़े वतन

क़ब्र का मोमिन को दबाना ऐसा होता है जैसे मां बेटे का सिर दबाती है

हज़रत सईद बिन मुसैयिब ﷺ से रिवायत है कि हज़रत आइशा (रजि०) ने हुज़ूरे अक़दस ﷺ से अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! जब से आपने मुन्किर-नकीर की (डरावनी) आवाज़ और क़ब्र के भींचने का ज़िक्र फ़रमाया है, उस वक़्त से मुझे किसी चीज़ से तसल्ली नहीं होती है (और दिल की परेशानी दूर नहीं होती)। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि ऐ आइशा! मुन्किर-नकीर की आवाज़ मोमिनों के कानों में ऐसी होगी जैसे (एक सुरीली आवाज़ कानों में भली मालूम होती है जैसे) आंखों में सुरमा लगाने से आंखों को लज़्ज़त महसूस होती है और मोमिनों को क़ब्र का दबाना ऐसा होता है जैसे किसी के सिर में दर्द हो और उसकी ममता भरी मां धीरे-धीरे अपने बेटे का सिर दबाती है और वह उससे आराम व राहत पाता है और (याद रख) ऐ आइशा! अल्लाह के बारे में शक करने वालों के लिए बड़ी ख़राबी है। और वे क़ब्र में इस तरह भीचें जाएंगे जैसे अंडे पर पत्थर रखकर दबा दिया जाए।[1]

ज़मीन व आसमान का मोमिन से मुहब्बत करना और उसकी मौत पर रोना

हज़रत अनस ﷺ का ब्यान है कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि हर इंसान के लिए आसमान के दो दरवाज़े हैं। एक दरवाज़े से उसका अमल चढ़ता और दूसरे दरवाज़े से उसका रिज़्क उतरता है। जब मोमिन मर जाता है तो दोनों दरवाज़े उसके (मरने पर) रोते हैं।[2]

हज़रत इब्ने उमर ﷺ हज़ूरे अक़दस ﷺ से रिवायत करते हैं कि आपने फ़रमाया बेशक जब मोमिन मर जाता है तो उसके मरने पर क़ब्रिस्तान अपने आप को सजा लेते हैं। इसलिए इनमें का कोई हिस्सा ऐसा नहीं होता,

1. शौक़ वतन के हवाले से 2. तिर्मिज़ी शरीफ़

जो यह तमन्ना न करता हो कि यह मुझ में दफ़न हो।[1]

हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ फ़रमाते थे कि मोमिन के मरने पर 40 दिन तक ज़मीन रोती है।[2]

हज़रत अ़ता अल-ख़ुरासानी ﷺ फ़रमाते थे कि बंदा ज़मीन के किसी हिस्से में सज्दा करता है; यह हिस्सा क़ियामत के दिन उसके हक़ में गवाही देगा और उसके मरने के दिन रोयेगा।[3]

सदक़ा जारिया[4] और औलाद वग़ैरह की तरफ़ से इस्तिग़फ़ार का नफ़ा

हज़रत अबू उमामा ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुब्हः मरने के बाद जो चीज़ें मोमिन को उसकी नेकियों से पहुंचती हैं उनमें से एक इल्म है जिसको उसने फैलाया हो या नेक औलाद छोड़ी हो या कोई क़ुरआन शरीफ़ वरसे[5] में छोड़ गया हो या मस्जिद बनवा गया हो या कोई-मुसाफ़िरख़ाना बना गया हो या नहर जारी कर गया हो या अपनी ज़िंदगी व तन्दुरुस्ती की हालत में अपने माल में से ऐसा सदक़ा कर गया हो जिसका सवाब मरने के बाद भी पहुंचता हो[6]।

और हज़रत अबु हुरैरः ﷺ से यह भी रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुबहः अल्लाह तआ़ला नेक बन्दे का दर्जा जन्नत में बुलंद फ़रमा देगा। वह कहेगा कि ऐ ख़ुदा। यह दर्जा मुझे कैसे मिला? अल्लाह जल्ल ल शानुहू फ़रमायेंगे तेरी औलाद ने तेरे लिए इस्तिग़फ़ार की जिसकी वजह से यह मर्तबा तुझ को मिला।[7]

---

1. इब्ने अ़साकिर
2. हाकिम वग़ैरह
3. अबू नुऐम, शौके वतन के हवाले से
4. ऐसा सद्क़ा या भला काम जिससे लोग बराबर फ़ायदा उठाते रहें
5. विरासत
6. मिश्कात
7. मिश्कात

एक रिवायत में है कि क़ियामत के दिन कुछ आदमियों के साथ पहाड़ों के बराबर नेकियां होंगी। वह यह देखकर अर्ज़ करेगा कि ये मुझे कहां से मिलीं? इर्शाद होगा; तेरी औलाद के इस्तिग़फ़ार की वजह से तुझे यह दी गई है।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि मैयत अपनी क़ब्र में बस ऐसी ही (मुहताज) होती है, जैसे कोई डूबता हुआ (फिर फ़रमाया कि) वह दुआ के इन्तिज़ार में रहती है जो उसके बाप या माँ या भाई या दोस्त की तरफ़ से उसे पहुंच जाए। जब उसे (इनमें से किसी की) दुआ पहुंचती है तो सारी दुनिया और जो कुछ दुनिया में है, इस सबसे ज़्यादा उसको वह दुआ प्यारी होती है और बेशक ज़मीन वालों की दुआ अल्लाह तआला क़ब्र वालों पर पहाड़ों के बराबर सवाब दाख़िल फ़रमाते हैं और बेशक ज़िंदों का हदिया मुर्दों के लिए उनके वास्ते इस्तिग़फ़ार[2] करना है।[3]

मोमिन को म ल कुल मौत का सलाम

हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि हज़रत रसूले करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जब म ल कुल मौत ख़ुदा के मक़बूल बन्दे के पास आते हैं तो उसको सलाम करते हैं। और यों इर्शाद फ़रमाते हैं :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَاوَلِيُّ ثُمَّ فَاخْرُجْ مِنْ دَارِكَ الَّتِيْ خَرَّبْتَهَا اِلَى دَارِكَ الَّتِيْ عَمَّرْتَهَا.

अस्सलामु अलै क या वल्यियु सुम्म म फ़ख़रुज मिन दारिकल्लती ख़र्रब्तहा इला दारिकल्लती अम्मर्तहा०

(शर्हुस्सुदूर)

1. शौक़े वतन के हवाले से
2. मग़्फ़िरत चाहना
3. मिश्कात

'तुम पर सलाम हो ऐ अल्लाह के दोस्त! उठो और इस घर से निकलो, (जिसे तुमने नफ़्स की ख़्वाहिशों को क़ुर्बान करके बर्बाद किया है) और उस घर को चलो जिसे तुमने (इबादत करके) आबाद किया है।'

मोमिन का दुनिया में रहने से इन्कार करना और उसको बशारत मिलना

हज़रत इब्ने जुरैज ﷺ से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने हज़रत आइशा (रजि०) से इर्शाद फ़रमाया कि जब मोमिन (मरते वक़्त) फ़रिश्तों को देखता है तो फ़रिश्ते उससे कहते हैं कि क्या हम तुमको दुनिया में वापस कर दें और रूह क़ब्ज़ न करें? वह कहता है, क्या मुझे ग़मों और फ़िक्रों की जगह छोड़ जाना चाहते हो? अब मैं तो नहीं रहता। मुझे अल्लाह तआला के पास ले चलो।[1]

हज़रत ज़ैद बिन असलम ﷺ फ़रमाते हैं कि मौत के वक़्त मोमिन के पास फ़रिश्ते आकर उसे ख़ुशख़बरी सुनाते हैं और उससे कहते हैं कि तुम जहां जा रहे हो, वहां जाने से डरो नहीं। इसलिए उसका डर जाता रहता है और उससे यह भी कहते हैं कि दुनिया और दुनिया वालों (से जुदा होने) पर रंज न करो और जन्नत की ख़ुशख़बरी सुन लो। इसलिए वह इस हाल में मरता है कि इस दुनिया में ख़ुदा उसकी आखें ठंढी कर देता है।[2]

शहीदों से अल्लाह का ख़िताब

हज़रत मसरूक़ ताबई (रह०) रिवायत करते हैं कि हमने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ से इस आयत की तफ़सीर[3] पूछी :

---

1. इब्ने जरीर वग़ैरह
2. इब्ने अबी हातिम
3. व्याख्या, टीका

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللهِ اَمْوَاتًا ط بَلْ اَحْيَاءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ ط

व ला तह्सबन्नल्लज़ी न क़ुतिलू फ़ी सबीलिल्लाहि अम्वाता। बल् अह्याउन इन्द रब्बिहिम युर्ज़क़ून।

'और जो लोग अल्लाह की राह में क़त्ल किये गये उनको मुर्दा मत समझो, बल्कि वह ज़िंदा हैं। अपने रब के क़रीबी लोग हैं। उनको रोज़ी मिलती है।'

तो हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ ने फ़रमाया कि हम इसकी तफ़सीर रसूले खुदा ﷺ से मालूम कर चुके हैं। फिर फ़रमाया कि शहीद की रूहें हरे रंग के परिंदों के पोटों में हैं। उनके लिए अ़र्श इलाही के नीचे क़न्दील लटके हुए हैं। वे जहां चाहें जन्नत में चलती फिरती हैं, फिर इन क़न्दीलों में आकर ठहर जाती हैं। अल्लाह तआ़ला ने उनसे फ़रमाया कि तुम कुछ चाहते हो? उन्होंने अ़र्ज़ किया कि हम क्या चाहें? हालांकि जहां चाहते हैं; जन्नत में चलते-फिरते हैं। चुनांचे तीन बार खुदा ने उनसे यही सवाल व जवाब फ़रमाया। सो जब उन्होंने यह समझ लिया कि जब तक हम जवाब न देंगे, सवाल होता ही रहेगा। तो उन्होंने यह अ़र्ज़ किया कि हम यह चाहते हैं कि हमारी रूहें हमारे जिस्मों में वापस कर दी जाएं यहां तक कि हम दोबारा तेरी राह में क़त्ल कर दिए जाएं। सो जब दुनिया के परवरदिगार ने उनसे मालूम कर लिया कि उनको कोई ज़रूरत नहीं तो छोड़ दिए गये (और फिर उनसे सवाल नहीं किया गया) यानी वहां की कोई चीज़ उन्होंने तलब न की और सवाल किया तो दुनिया में वापसी का सवाल किया जो क़ानून के ख़िलाफ़ है इसलिए फिर उनसे सवाल न किया गया।'

रूहों का हरे परिंदों के पोटों में होना शहीदों के साथ ख़ास नहीं है बल्कि दूसरे मोमिनों की रूहें भी उन परिंदों के पोटों में जन्नत की सैर करती

1. मुस्लिम शरीफ़

हैं। जैसा कि हज़रत काब बिन मालिक ﷺ की रिवायत में है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि :

ان ارواح المؤمنين فى طير خضر تعلق بشجر الجنة. (مشكوة)

इन्न न अर्वाहुल मुअ्मिनी न फ़ी तैरिन ख़ुज़र तअ्लुक़ु बि श ज रिल-जन्न: *—मिश्कात*

'बिला शुब्हा ईमान वालों की रूहें हरे परिंदों के अंदर होती हैं जो जन्नत के पेड़ों से खाती-पीती हैं।'

मुल्ला अ़ली क़ारी (रह०) 'मिर्क़ात शरहे मिश्कात' में लिखते हैं कि एक हदीस में है कि बिला शुब्हा ईमान वालों की रूहें परिंदों के पोटों में जन्नत के फल खाती और पानी पीती फिरती हैं और अ़र्श के नीचे सोने की क़न्दीलों में आराम करती हैं।

शहादत की तकलीफ़ चींटी के काटे के बराबर होती है

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि शहीद क़त्ल होने की तकलीफ़ बस इतनी ही महसूस करता है जैसे तुम चींटी के काटे की तकलीफ़ महसूस करते हो।[1]

क़ब्र के अ़ज़ाब की तफ़सीलात

अह्ले सुन्नत वल जमाअ़त के अक़ीदे में क़ब्र का अ़ज़ाब हक़ है। जिस तरह सालेह (नेक, भले) ईमान वालों को क़ब्र में आराम मिलता है और ख़ुशी के साथ क़ियामत तक रहना होता है। उसी तरह काफ़िरों और बदकारों को क़ब्र में अ़ज़ाब होता है। बहुत-सी हदीसों से यह बात साबित होती है।

हज़रत आइशा (रज़ि०) के पास एक यहूदी औरत आयी और उसने

---

1. मिश्कात शरीफ़

उनके सामने क़ब्र के अ़ज़ाब का ज़िक्र किया और कहा कि:—

أَعَاذَكِ اللّٰهُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ

अ आज़किल्लाहु मिन अ़ज़ाबिल क़ब्र।

यानि तुझे अल्लाह क़ब्र के अ़ज़ाब से पनाह में रखे।

हज़रत आइशा (रज़ि०) ने आँहज़रत ﷺ से इसके बारे में सवाल किया तो आप ﷺ ने फ़रमाया:—

نَعَمْ عَذَابُ الْقَبْرِ حَقٌّ

न अम अज़ाबुल कब्र हक्क़।

हां क़ब्र का अ़ज़ाब हक़ है

हज़रत आइशा (रजि०) फ़रमाती हैं कि इसके बाद हज़रत रसूले करीम ﷺ ने जब भी नमाज़ पढ़ी, क़ब्र के अ़ज़ाब से ज़रूर अल्लाह की पनाह मांगी।[1]

हज़रत उस्मान ग़नी ؓ जब किसी क़ब्र के पास खड़े होते तो इतना रोते कि दाढ़ी मुबारक तर हो जाती थी। सवाल किया गया कि आप जन्नत व दोज़ख़ के ज़िक्र करके नहीं रोते और क़ब्र को देखकर (इतना) रोते हैं। हज़रत उस्मान ؓ ने जवाब दिया कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया है कि बेशक क़ब्र आख़िरत की मंज़िलों में से पहली मंज़िल है, सो अगर उससे निजात पाई तो इसके बाद की मंज़िलें इससे ज़्यादा आसान हैं और अगर इससे निजात न पायी तो इसके बाद की मंज़िलें इससे ज़्यादा सख़्त हैं।[2]

क़ब्र में अ़ज़ाब देने वाले अज़दहे

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने

1. बुख़ारी व मुस्लिम
2. तिर्मिज़ी शरीफ

इर्शाद फ़रमाया कि क़ब्र में काफ़िर पर ज़रूर 99 अज़दहे मुक़र्रर कर दिए जाते हैं जो क़ियामत तक उसे डसते रहते हैं। उनके ज़हर का यह हाल है कि अगर उनमें से एक भी ज़मीन पर फुंकार मार दे तो ज़मीन बिल्कुल सब्ज़ी न उगाये।[1]

यानी उनके ज़हर का यह असर है कि उनमें से एक अज़दहा भी अगर एक बार ज़मीन की तरफ़ फुंकार मार दे तो उसके ज़हर के असर से ज़मीन में घास का एक तिनका भी उगने के क़ाबिल न रहे। आजकल के लड़ाई के सामान जैसे एटमबम वग़ैरह देखकर नबी करीम ﷺ के इस इर्शाद के समझने में ज़रा भी झिझक महसूस करने की गुंजाइश नहीं रहती।

क़ब्र में अज़ाब की वजह से मैयत का चीख़ना और लोहे के गुर्ज़ों से उसका मारा जाना

हज़रत बरा बिन आज़िब ؓ की एक रिवायत में है कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जब काफ़िर जवाब देता है कि हाय! हाय!! मुझे पता नहीं! तो आसमान से मुनादी[2] आवाज़ देता है कि इसने झूठ कहा, इसके नीचे आग बिछा दो और इसे आग का पहनावा पहना दो और इसके लिए दोज़ख़ का एक दरवाज़ा खोल दो। चुनांचे दरवाज़ा खोल दिया जाता है जिससे दोज़ख़ की गर्मी और सख़्त लू आती रहती है और उसकी क़ब्र तंग कर दी जाती है यहां तक कि उसकी पस्लियां इधर से उधर हो जाती हैं, फिर उसके अज़ाब देने के लिए एक (अज़ाब देने वाला) मुक़र्रर कर दिया जाता है जो अंधा और बहरा होता है। उसके पास लोहे का गुर्ज़ होता है, जिसकी हक़ीक़त यह है कि अगर वह पहाड़ पर मार दिया जाए तो पहाड़ मिट्टी हो जाय। (फिर इर्शाद फ़रमाया कि) उस गुर्ज़ को एक बार मारता है तो उसकी आवाज़ को इंसान और जिन्नात के अलावा पूरब-पश्चिम के दर्मियान की सारी मख़्लूक़ सुनती है। एक बार मारने से वह मिट्टी हो जाता है फिर रूह

1. दारमी
2. मुनादी (आवाज़ देने वाला)

लौटा दी जाती है।[1]

बुख़ारी और मुस्लिम की एक रिवायत में है कि इस गुर्ज़ के मारे जाने से वह ज़ोर से चीख़ता है कि इंसान और जिन्नात के सिवा उसके क़रीब की हर चीज़ उसकी चीख़ व पुकार सुनती है।

सवालः यहां यह बात मालूम करने की है कि इंसानों और जिन्नों को मैयत के मारने और उसके चीख़ने की आवाज़ क्यों नहीं सुनाई जाती?

तो इसका जवाब यह है कि इंसानों और जिन्नों को बर्ज़ख़ की दुनिया से वास्ता पड़ता है। अगर उनको क़ब्र का अ़ज़ाब दिखा दिया जाए या कानों से वहां के मुसीबत के मारे हुओं की चीख़ व पुकार की आवाज़ सुना दी जाए जो ईमान ले आयें और नेक अ़मल करने लगें, हालांकि ख़ुदा के यहां ग़ैब पर ईमान मोतबर (जिसपर भरोसा किया जाए) है। सिर्फ़ रसूलुल्लाह ﷺ की बात सु नकर मानें, इसी को ईमान फ़रमाया गया है।

إِنَّ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ○

इन्नल्लज़ी न यख़्शौ न रब्बहुम बिलग़ैबि लहुम मग़ि फ़ रतुंव अज्रुन कबीर।

'बिला शुबहा जो लोग अपने रब से बिना देखे डरते हैं, उनके लिए मग़्फ़िरत है और बड़ा अज्र है।'

अगर दोज़ख़, जन्नत और बर्ज़ख़ के हालात आंखों से दिखा दिए जाएं तो फिर 'ग़ैब पर ईमान' न रहे और सब मान लें और मोमिन हो जायें मगर ख़ुदा के यहां आंखों से देखे हुए पर ईमान लाने का एतबार नहीं है, क्योंकि उस वक़्त अ़ज़ाब के फ़रिश्ते नज़र आते हैं।

فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ إِيمَانُهُمْ لَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا (مؤمن)

1. अहमद व अबूदाऊद

फ़लम यकु यनफ़उहुम ईमानुहुम लम्मा रऔ बअ्सना।

—मोमिन

'सो उनको उनका ईमान लाना फ़ायदेमंद न हुआ जबकि उन्होंने हमारा अ़ज़ाब देख लिया।'

जब क़ियामत को उठ खड़े होंगे और फिर जन्नत-दोज़ख़ आंख से देख लेंगे तो सब ही ईमान ले आएंगे और रसूलों की बातों की तसदीक़ कर लेंगे, मगर उस वक़्त का ईमान और तस्दीक़ मोतबर नहीं है।

इंसानों को क़ब्र के अ़ज़ाब के न दिखाने और उसकी आवाज़ न सुनाने में यह मस्लहत भी मालूम होती है कि इंसान उसको बर्दाश्त नहीं कर सकते। अगर क़ब्र के अ़ज़ाब का हाल आंखों से देख लें या कानों से सुन लें तो बेहोश हो जाएं, जैसा कि हज़रत अबू सईद ﷺ की रिवायत में है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि नाफ़रमान की मैयत को जब लोग उठाकर चलते हैं तो वह कहता है, हाय मेरी बर्बादी! मुझे कहां ले जा रहे हो? उसकी इस आवाज़ को इंसान के सिवा हर चीज़ सुनती है और अगर इंसान सुन ले तो बेहोश हो जाए।[1]

हाँ, अल्लाह ने अपने रसूल ﷺ को बर्ज़ख़ की चीज़ें न सिर्फ़ बता दीं, बल्कि दिखा भी दीं, चूंकि आप में उन्हें देखकर बर्दाश्त करने की ताक़त मौजूद थी। यहां तक कि दोज़ख़ के मंज़र को देखकर भी आपके हँसनें-बोलने और सहाबा (रज़ि०) के साथ उठने-बैठने और खाने-पीने में फ़र्क़ न आता था। हज़रत अबू ऐयूब ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूल ख़ुदा ﷺ एक मर्तबा सूरज डूबने के बाद (मदीना मुनव्वरा से) बाहर तशरीफ़ ले गये। आपने एक आवाज़ सुनी (जो भयानक आवाज़ थी) उसको सुनकर आप ﷺ ने फ़रमाया कि यहूदियों को उनकी क़ब्रों में अ़ज़ाब हो रहा है।[2]

हज़रत ज़ैद बिन साबित ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ एक मर्तबा अपने ख़च्चर पर सवार होकर क़बीला बनू नज्जार के एक बाग़ में तशरीफ़

1. बुख़ारी शरीफ़ 2. बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़

ले जा रहे थे और हम भी आपके साथ थे कि अचानक आपका ख़च्चर बिदक गया और ऐसा बिदका कि क़रीब था कि आप ﷺ को गिरा दे। वहीं पांच या छः क़ब्रें थीं। उनके बारे में रसूलुल्लाह ﷺ ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि इन क़ब्र वालों को कौन पहचानता है? एक शख़्स ने अर्ज़ किया, मैं पहचानता हूं। आप ﷺ ने उससे पूछा यह कब मरे थे? उसने कहा कि शिर्क के ज़माने में मरे थे। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि इंसानों को क़ब्रों में अज़ाब दिया जाता है, सो अगर मुझे डर न होता कि तुम आपस में दफ़्न करना छोड़ दोगे तो मैं ख़ुदा से ज़रूर दुआ करता कि तुमको (भी) इस क़ब्र के अज़ाब कुछ हिस्सा सुना दे, जिसे मैं सुन रहा हूं।[1]

चुग़ली करने और पेशाब से न बचने से अज़ाबे क़ब्र होता है

हज़रत इब्ने अ़ब्बास رضي الله عنه से रिवायत है कि हज़रत रसूले करीम ﷺ का दो क़ब्रों पर गुज़र हुआ। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया इनको अज़ाब हो रहा है और किसी बड़े मुश्किल काम की वजह से अज़ाब नहीं हो रहा है (बल्कि ऐसी मामूली बातों पर, जिनसे बच सकते थे)।

फिर आप ﷺ ने उन दोनों के गुनाहों की तफ़सील बताई कि इन दोनों में एक पेशाब करने में पर्दा नहीं करता था (और एक रिवायत में है कि पेशाब से बचता न था) और यह दूसरा चुग़ली करता फिरता था। फिर आप ﷺ ने एक तर टहनी मंगा कर बीच में से उसको चीर कर आधी एक क़ब्र में गाड़ दी और आधी दूसरी क़ब्र में। सहाबा (रज़ि०) ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! आपने ऐसा क्यों किया? इर्शाद फ़रमाया कि शायद इन दोनों का अज़ाब इस टहनी के सूखनें तक हल्का कर दिया जाए।[2]

1. मुस्लिम
2. मिश्कात शरीफ़, इसकी तशरीह (व्याख्या) में कुछ उलमा ने फ़रमाया है कि तर टहनी के तस्बीह ख़ुदावंदी में लगे रहने की वजह से अज़ाब हल्का होने की उम्मीद पर आप ﷺ ने ऐसा किया।

कुछ ख़ास कामों पर ख़ास अज़ाब

बुख़ारी शरीफ़ में एक लंबी रिवायत है, जिसमें अल्लाह के रसूल ﷺ का एक ख़्वाब रिवायत किया गया है, जिसमें बर्ज़ख़ की दुनिया में ख़ास-ख़ास अज़ाबों का ज़िक्र है। आप ﷺ ने फ़रमाया कि मैंने आज रात ख़्वाब देखा है कि दो आदमी मेरे पास आए और मेरा हाथ पकड़ कर मुझको एक मुक़द्दस (पाक) ज़मीन की तरफ़ ले चले। देखता क्या हूं कि एक आदमी बैठा हुआ है और दूसरा खड़ा है और उसके हाथ में लोहे का ज़ंबूर है। उस बैठे हुए शख़्स के कल्ले को उससे चीर रहा है, यहां तक कि गुद्दी तक जा पहुंचता है, फिर दूसरे कल्ले के साथ भी यही मामला करता है और पहला कल्ला उसका ठीक हो जाता है, वह फिर उस पहले कल्ले के साथ ऐसा करता है। मैंने पूछा, यह क्या बात है? वे दोनों आदमी बोले, आगे चलो। हम आगे चले, यहां तक कि एक ऐसे शख़्स पर गुज़र हुआ जो लेटा हुआ है और उसके पत्थर से उस लेटे हुए आदमी का सर बहुत ज़ोर से फोड़ता है जब वह पत्थर उसके सिर पर दे मारता है, तो पत्थर लुढ़क कर दूर जा गिरता है। जब वह उसको उठाने के लिए जाता है, जो अभी तब लौटकर उसके पास आने भी नहीं पाता कि उसका सिर जैसा था, वैसा ही हो जाता है और फिर उसको उसी तरह फोड़ता है। मैंने पूछा, यह क्या है? वे दोनों बोले, आगे चलो। यहां तक कि हम एक ग़ार पर पहुंचे जो तन्दूर की तरह था और ऊपर बहुत तंग था, नीचे से चौड़ा था। उसमें आग जल रही थी और उसमें बहुत से नंगे मर्द और औरतें भरे हुए थे, जिस वक़्त वह आग ऊपर को उठती, तो उसके साथ वे सब ऊपर को उठ आते थे, यहां तक कि क़रीब निकलने को हो जाते। फिर जिस वक़्त आग बैठती तो वे सब भी नीचे चले जाते। मैंने पूछा यह क्या है? वे दोनों बोले, आगे चलो। हम दोनों आगे चले, यहां तक कि एक ख़ून की नहर पर पहुंचे। उसके बीच में एक शख़्स खड़ा था और नहर के किनारे पर एक शख़्स है, जिसके सामने बहुत-से पत्थर पड़े हैं। वह नहर के अंदर वाला शख़्स नहर के किनारे की तरफ़ आता है। जिस वक़्त वह

निकलना चाहता है, यह किनारे वाला शख़्स उसके मुंह पर पत्थर मारकर हटा देता है। मैंने पूछा यह क्या है? वे दोनों बोले, आगे चलो। हम आगे चले, यहां तक कि एक हरे-भरे बाग़ में आ पहुंचे। उसमें एक बड़ा पेड़ है और उसके नीचे एक बूढ़ा आदमी है और उसके बच्चे हैं। उस पेड़ के क़रीब एक और आदमी बैठा हुआ है और उसके सामने आग जल रही है, जिसे वह धौंक रहा है। फिर वह दोनों मुझको चढ़ाकर पेड़ के ऊपर ले गये। वहां एक घर पेड़ के बीच में बहुत उम्दा था, उसमें मुझे दाख़िल कर दिया। मैंने उस घर से अच्छा घर कभी नहीं देखा। उसमें बहुत से मर्द, बूढ़े, जवान, औरतें और बच्चे थे, फिर उससे बाहर लाकर और ऊपर ले गये, वहां एक जवान थे। मैंने उन आदमियों से कहा कि तुमने मुझको तमाम रात फिराया। अब बताओ कि ये सब क्या राज़ की बातें थीं। उन्होंने कहा, वह जो आपने देखा था जिसके कल्ले चीरे जाते थे वह आदमी झूठा है, जो झूठी बातें ब्यान करता था और वे बातें दुनिया में मशहूर हो जाती थीं। उसके साथ क़ियामत तक यों ही करते रहेंगे और जिसका सर फोड़ते हुए देखा, वह आदमी है कि अल्लाह तआला ने उसको क़ुरआन का इल्म दिया। रात को उससे ग़ाफ़िल होकर सो रहा था और दिन को उस पर अ़मल न किया। क़ियामत तक उसके साथ यही मामला रहेगा; और जिनको आपने आग के ग़ार में देखा वे ज़िना करने वाले लोग हैं; और जिनको ख़ून की नहर में देखा, वे सूद खाने वाले थे और पेड़ के नीचे जो बढ़े शख़्स थे, वह इब्राहीम ؑ थे और आग धौंक रहा था; वह दारोग़ा दोज़ख़ का मालिक है। पहला घर जिसमें आप दाख़िल हुए, वह आम मुसलमानों का है और दूसरा घर शहीदों का है। और मैं जिब्रील हूं और यह मीकाईल हैं। फिर बोले सर ऊपर उठाइये। मैं ने सर उठाया तो मेरे ऊपर एक सफ़ेद बादल नज़र आया बोले कि यह आपका घर है। मैंने कहा कि मुझे छोड़ दो, मैं अपने घर में दाख़िल हो जाऊं। बोले, अभी आपकी उम्र बाक़ी है, पूरी नहीं हुई। अगर पूरी हो चुकी होती तो अभी चले जाते।[1]

1. मिश्कात शरीफ़

फ़ायदा: जानना चाहिए कि नबियों का ख़्वाब वह्य होता है। ये तमाम वाक़िए सच्चे हैं। इस हदीस से कई दूसरी चीज़ों का हाल मालूम हुआ। एक झूठ का कि कैसी सख़्त सज़ा है, दूसरे आलिम बेअमल का, तीसरे ज़िना, चौथे सूद का। खुदा सब मुसलमानों को इन कामों से बचाये रखे। (आमीन)

ज़मीन का मैयत से बात करना

हज़रत अबू सईद खुदरी ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि एक दिन रसूले खुदा ﷺ बाहर तशरीफ़ लाये तो आप ﷺ ने लोगों को देखा कि खिलखिला कर हंस रहे हैं; जिसकी वजह से दांत बाहर निकले हुए हैं। उनका यह हाल देखकर आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि ख़बरदार! बिला शुबहः अगर तुम लज़्ज़तों को काटने वाली चीज़ यानि मौत को बहुत ज़्यादा याद करते तो तुमको मैं इस हाल में न देखता, इसलिए तुम लज़्ज़तों को काटने वाली चीज़ यानी मौत को कसरत से याद किया करो, क्योंकि क़ब्र पर कोई दिन ऐसा नहीं गुज़रता, जिस दिन वह यह न कहता हो कि मैं परायेपन का घर हूं और मैं तन्हाई का घर हूं और मैं मिट्टी का घर हूं और में कीड़ों का घर हूं।

फिर फ़रमाया कि जब मोमिन बन्दा दफ़न कर दिया जाता है, तो उस से क़ब्र कहती है कि मुबारक हो, तू अपने ही घर आया। समझ ले। बेशक तू मुझे उन सबसे ज़्यादा महबूब था, जो मुझ पर चलते हैं। सो जब तू आज मेरे सुपुर्द कर दिया गया है और मेरे पास आ गया है तो अब मेरा सुलूक देखेगा कि मैं तेरे साथ क्या अच्छा सुलूक करती हूं। इसकी जहां तक नज़र पहुंचती है, वहां तक क़ब्र फैल जाती है और उसके लिए जन्नत का एक दरवाज़ा खोल दिया जाता है। और जब फ़ाजिर या काफ़िर बन्दा दफ़न कर दिया जाता है, तो उससे क़ब्र कहती है कि तेरा आना बुरा आना है तू मुझे सबसे मब्ग़ूज़ (नापसंदीदा, दुश्मन) था सो अब जब तू मेरे सुपुर्द कर दिया गया है और आज मेरे बस में आ गया है, अब तू देखेगा कि तुझ से क्या

मामला करती हूं। इसके बाद वह उसे इस तरह भींचती है कि उसकी दायीं पस्लियां बायीं पस्लियों में और बायीं पस्लियां दायीं पस्लियों में घुस जाती हैं। इसको हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने इस तरह ज़ाहिर फ़रमाया कि अपने मुबारक हाथ की उंगलियां दूसरे हाथ की उंगलियों में दाख़िल फ़रमाई।[1]

क़ब्र के अज़ाब से बचे रहने वाले

हज़रत मुहम्मद ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, जब मैयत को क़ब्र में रख दिया जाता है तो दफ़न करने के बाद जब लोग वापस होते हैं, तो वह उनके जूतों की आवाज़ सुनता है, सो अगर वह मोमिन होता है तो नमाज़ उसके सिरहाने आ जाती है और रोज़े उसके दाहिनी तरफ़ आ जाते हैं और ज़कात उसके बायीं तरफ़ आ जाती है और (नफ़्ल काम जो किए थे, जैसे) सद्क़ा, नफ़्ल नमाज़ और लोगों के साथ जो नेकी और भलाई की, वह उसके पैरों की तरफ़ आ जाती है। अगर उसके सिरहाने की तरफ़ से अज़ाब आता है तो नमाज़ कहती है कि मेरी तरफ़ से जगह न मिलेगी, फिर उसकी दाहिनी तरफ़ से अज़ाब आता है तो रोज़े कहते हैं कि हमारी तरफ़ से जगह न मिलेगी, फिर बायीं तरफ़ से अज़ाब आता है, तो भले काम, सदक़ा और एहसान के काम जो लोगों के साथ किये थे, वे कहते हैं कि हमारी तरफ़ से जगह न मिलेगी।[2]

सूरः मुल्क और अलिफ़-लाम-मीम सज्दा पढ़ने वाला

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ؓ से रिवायत है कि प्यारे नबी ﷺ के एक सहाबी ؓ ने एक क़ब्र पर ख़ेमा लगाया और उनको पता न था कि यह क़ब्र है। (ख़ेमे में बैठे-बैठे) अचानक देखते क्या हैं कि इसमें एक इंसान है जो सूरः *तबारकल्लज़ी बियदिहिल मुल्क* पढ़ रहा है। पढ़ते-पढ़ते उसने पूरी सूरः ख़त्म कर दी। यह वाक़िया उन्होंने हज़रत रसूले करीम ﷺ की ख़िदमत

1. मिश्कात
2. तर्ग़ीब

में अ़र्ज़ किया तो आप ﷺ ने फ़रमाया कि यह सूरः अ़ज़ाब रोकने वाली है (और) इसको अल्लाह के अ़ज़ाब से बचा रही है।[1]

हज़रत अबू हुरैरः رضي الله عنه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि बिला शुबहा क़ुरआन में एक सूरः है जिसकी 30 आयतें हैं। उसने एक शख़्स की सिफ़ारिश की। यहां तक कि वह बख़्श दिया गया। फिर फ़रमाया कि वह सूरः *तबारकल्लज़ी बियदिहिल मुल्क* है।[2]

हज़रत ख़ालिद बिद मेअ़्दान (ताबई) रह० सूरः *तबारकल्लज़ी बियदिहिल मुल्क*' और सूरः 'अलिफ़-लाम-मीम सज्दा' के बारे में फ़रमाया करते थे कि ये दोनों सूरतें अपने पढ़ने वालों के लिए क़ब्र में अल्लाह से झगड़ेंगी और दोनों में से हर एक कहेगी कि ऐ अल्लाह! अगर मैं तेरी किताब में से हूं तो इसके हक़ में मेरी सिफ़ारिश क़ुबूल फ़रमा और अगर मैं तेरी किताब में से नहीं हूं तो मुझे अपनी किताब से मिटा दे। यह भी फ़रमाते थे कि परिंदों की तरह अपने पढ़ने वाले पर फैला देंगी और उसे क़ब्र के अ़ज़ाब से बचा लेंगी।[3]

इन दोनों सूरतों को क़ब्र के अ़ज़ाब से बचाने में बड़ा दख़ल है। जैसा कि इस रिवायत से ज़ाहिर हुआ। आँहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ इन दोनों सूरतों को पढ़े बग़ैर न सोते थे।[4]

फ़ायदाः जिस तरह सूरः *अलिफ़-लाम-मीम* और सूरः मुल्क क़ब्र के अ़ज़ाब से बहुत ज़्यादा बचाने वाली हैं, उसी तरह चुग़लख़ोरी करना और पेशाब से न बचना, दोनों काम क़ब्र के अ़ज़ाब में बहुत ज़्यादा डाल देने वाले हैं।

पेट के मर्ज़ में मरने वाला

हज़रत सुलैमान बिन सरूर رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने

1. मिश्कात शरीफ़
2. मिश्कात
3. मिश्कात
4. मिश्कात शरीफ़

इर्शाद फ़रमाया कि जिसको उसके पेट (के मर्ज़) ने क़त्ल किया, उसको क़ब्र में अज़ाब न दिया जाएगा।[1]

पेट के कई मर्ज़ हैं। इनमें से जो भी मौत की वजह बन जाए, उसको क़ब्र में अज़ाब न होगा। हर एक को हदीस का मज़मून शामिल है, जैसे प्यास का मर्ज़, हैज़ा, पेट का दर्द वग़ैरह।

जुमा की रात या जुमा के दिन मरने वाला

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जो भी मुसलमान जुमे के दिन या जुमे की रात में मरता है, उसको ख़ुदा क़ब्र के फ़ित्ने से बचाये रखता है।[2]

रमज़ान में मरने वाला

हज़रत अनस बिन मालिक ؓ फ़रमाते थे कि बिलाशुब्हा रमज़ान के महीनों में मुर्दों से क़ब्र का अज़ाब उठा लिया जाता है।[3]

जो मरीज़ होकर मरे

हज़रत अबू हुरैरः ؓ रिवायत करते हैं कि आँहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि जो मर्ज़ की हालत में मरा, वह शहीद मरा या (फ़रमाया) वह क़ब्र के फ़ित्ने से बचा दिया जाएगा और सुबह-शाम उसे जन्नत की रोज़ी मिलती रहेगी।

मुजाहिद और शहीद

हज़रत मिक़दाम बिन मअ़्दी कर्ब ؓ से रिवायत है कि आँहज़रत

1. अहमद व तिर्मिज़ी
2. अहमद व तिर्मिज़ी
3. बैहक़ी

सैयदे आलम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह के पास शहीद के लिए छः इनाम हैं:—

1) ख़ून का पहला कतरा गिरते ही बख़्श दिया जाता है और जन्नत में जो उसका ठिकाना है, वह उसे दिखाया जाता है,

2) और वह क़ब्र के अज़ाब से बचा दिया जाता है,

3) और वह बड़ी घबराहट से बचा रहेगा (जो सूर फूंके जाने के वक़्त लोगों के होगी),

4) उसके सर पर इज़्ज़त का ताज रखा जाएगा, जिसका (एक-एक) याक़ूत दुनिया और जो कुछ दुनिया में है, उस सबसे बेहतर होगा,

5) बेहतर हूरे ऐन[1] उसके जोड़े के लिए दी जाएंगी, और

6) और सत्तर रिश्तेदारों के हक़ में उसकी सिफ़ारिश क़ुबूल की जाएगी।

हज़रत सलमान फ़ारसी ؓ रिवायत फ़रमाते हैं कि आँहज़रत ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया है कि अल्लाह तआला के रास्ते में इस्लामी मुल्क की सरहद तक हिफ़ाज़त करने वाला अगर (इसी हालत में) मर गया, तो जो अ़मल वह करता था, उसका सवाब उसके लिए बराबर (क़ियामत तक) जारी रखा जाएगा और उसकी रोज़ी जारी रहेगी (जो शहीदों के लिए जारी रहती है) और क़ब्र में फ़ित्ना डालने वालों से अमन में रहेगा।[2]

हज़रत अबू ऐय्यूब ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स दुश्मन से लड़ा और फिर क़दम जमाये रहा यहाँ तक की मक़्तूल हो गया (यानि शहीद हो गया) या फिर ग़ालिब हो गया, तो क़ब्र के अंदर फ़ित्ने में न डाला जाएगा।[3]

---

1. बड़ी-बड़ी आखों वाली हूरें
2. तिर्मिज़ी, इब्ने माजा
3. मिश्कात शरीफ़

एक शख़्स को ज़मीन ने क़ुबूल न किया

हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि एक शख़्स आंहज़रत ﷺ का कातिब[1] था। वह इस्लाम से फिरकर मुश्रिकों से जा मिला। तो हुज़ूर अक़दस ﷺ ने उसके हक़ में बद-दुआ फ़रमायी कि उसको ज़मीन क़ुबूल न करेगी। इसके बाद जब वह मर गया तो हज़रत अबू तल्हा ﷺ उस क़ब्र की तरफ़ तशरीफ़ ले गये तो उसे क़ब्र से बाहर पड़ा हुआ पाया। यह देखकर उन्होंने वहां के लोगों से यह मालूम फ़रमाया कि माजरा क्या है? तो उन्होंने बताया कि उसको हमने कई बार दफ़न किया, मगर हर बार उसको ज़मीन ने बाहर फेंक दिया, इसलिए हमने बाहर ही छोड़ दिया।[2]

कुछ उस्तादों से इस किताब के लिखने वाले ने यह वाक़िआ सुना है कि एक आ़लिम की क़ब्र किसी ज़रूरत से खोदी गई जो मदीना मुनव्वरा में थी तो उसमें एक लड़की की लाश निकली। देखने वालों में से कुछ लोग इस लड़की को पहचानते थे और उनको मालूम था कि यह फ़्लां ईसाई की लड़की है। चुनांचे उन्होंने वहां पहुंच कर उसके मां-बाप से उसका हाल पूछा और क़ब्र मालूम की, तो उन्होंने क़ब्र भी बताई और यह कहा कि यह दिल से मुसलमान थी और मदीना मुनव्वरा में मरने की ख़्वाहिश रखती थी। फिर उसकी क़ब्र खुदवाकर देखी गई, तो उस में उस आ़लिम की लाश निकली। जिसकी क़ब्र में वह लड़की मदीना मुनव्वरा में देखी गई थी। फिर उस आ़लिम की बीवी से उनका अ़मल मालूम किया तो उसने बताया कि वह बड़े नेक आदमी थे। यह बात ज़रूर थी कि वह यों कहा करते थे कि ईसाई मज़हब में यह बात बड़ी आसानी की है कि उनके यहां जनाबत का गुस्ल[3] ज़रूरी नहीं है। इसी वजह से वह उस लड़की की क़ब्र में पहुंचाये गये।

---

1. लिखने वाला
2. बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़
3. बीवी के साथ सोहबत करने की नापाकी का नहाना

बर्ज़ख़ में सुबह-शाम जन्नत या दोज़ख़ का पेश होना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रिवायत करते हैं कि आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुबहा जब तुममें से कोई मर जाता है तो सुबह-शाम उसका ठिकाना जन्नत या दोज़ख़ उसके सामने पेश किया जाता है। अगर वह जन्नती है तो सुबह-शाम जन्नत पेश की जाती है और अगर वह दोज़ख़ी है तो सुबह-शाम उसके सामने दोज़ख़ पेश की जाती है और उसका ठिकाना दिखा कर उससे कहा जाता है कि यह तेरा ठिकाना है। (फिर फ़रमाया कि) क़ियामत के दिन तक (जब कि ख़ुदा उसे क़ब्र से उठायेगा), हर सुबह-शाम ऐसा ही होता रहेगा।[1]

आँहज़रत ﷺ पर उम्मत के आमाल पेश किये जाते हैं

हज़रत अब्दुल्ला बिन मस्ऊद ﷺ रिवायत करते हैं कि आँहज़रत ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरी ज़िंदगी तुम्हारे लिए बेहतर है और मेरी वफ़ात तुम्हारे लिए बेहतर है, तुम्हारे आमाल मुझपर पेश होंगे। पस जो भलाई (तुम्हारी तरफ़ बेहतर से पेश की जाएगी, जिसे) मैं देखूंगा तो उसपर अल्लाह की तारीफ़ करूंगा और जो कोई बुराई देखूंगा (जो तुम्हारी तरफ़ से पेश की जाएंगी) तो तुम्हारे लिए अल्लाह तआला से मग़्फ़िरत की दुआ करूंगा।[2]

रौज़ा-ए-मुत्तह्हरा के पास दरूद व सलाम पढ़ा जाए तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ुद सुनते हैं और जो कोई दूर से दरूद व सलाम भेजे, उसको फ़रिश्ते पहुंचा देते हैं

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि आँहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने फ़रमाया कि जो कोई मुझपर मेरी क़ब्र के पास पढ़ेगा, मैं उसको

1. बुख़ारी व मुस्लिम
2. जमउल फ़वाइद

सुनूंगा और जो कोई मुझ पर दूर से दरूद भेजे, वह दरूद मुझे पहुंचा दिया जाता है।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि बिला शुब्हा अल्लाह के बहुत से फ़रिश्ते हैं जो ज़मीन में गश्त लगाते फिरते हैं (और) मेरी उम्मत का सलाम मेरे पास पहुंचाते हैं।[2]

दुनिया में क़ायदा है कि मौजूद लोग आपस में एक दूसरे को सलाम करते हैं और जो दूर होते हैं, उनको डाक से या आदमी की ज़रिए सलाम भेजते हैं। अल्लाह तआला ने अपनी कामिल (पूरी) रहमत से यह सिलसिला जारी रखा है कि जो मुसलमान अपने नबी ﷺ पर दूर से सलाम भेजे, तो उसको फ़रिश्तों के ज़रिए पहुंचा देते हैं।

इन हदीसों से जहां यह मालूम होता है कि आँहज़रत ﷺ को बर्ज़ख़ी ज़िंदगी में भी अपनी उम्मत से तअल्लुक़ बाक़ी है और यह कि अल्लाह तआला ने इस उम्मत को यह शर्फ़ (बुजुर्गी, बुलन्दी) बख़्शा है कि फ़रिश्ते को इस काम के लिए मुक़र्रर फ़रमाया है कि उम्मतियों का सलाम फ़ख़्रे कायनात मुहम्मद ﷺ को पहुंचा दें। वहां यह भी मालूम हुआ कि गो हज़रात अंबिया-ए-किराम ज़िंदा हैं, लेकिन ख़ुदा की पनाह! हर जगह न हाज़िर हैं, न सब कुछ देख रहे हैं और न दूर की बात को सुनते हैं। जब नबियों (अलैहिमुस्सलाम) के बारे में यह साबित है कि हर जगह न हाज़िर हैं, न देख सकते हैं और न हर आवाज़ सुनने वाले हैं तो उन औलिया-अल्लाह के बारे में ऐसा ख़्याल करना तो बिल्कुल ही ग़लत और बिद्अत होगा, जो अल्लाह के चुने हुए बुजुर्ग- पैग़म्बरों के सहाबियों (साथियों) से भी कम दर्जे के हैं।

1. बैहक़ी
2. हाकिम, नसाई शरीफ़ वग़ैरह

नबियों की बर्ज़ख़ी ज़िंदगी

हज़रात अंबिया किराम (अलै०) इस दुनिया से तशरीफ़ ले जाने के बाद भी ज़िंदा ही हैं। माना कि शहीदों के बारे में क़ुरआन शरीफ़ में आया है कि इनको मुर्दा मत कहो, लेकिन नबियों के बारे में भी हदीस की-बहुत सी रिवायतों से साबित है कि इस दुनिया से चले जाने के बाद भी ज़िन्दा ही हैं।

मशहूर मुहद्दिस[1] अ़ल्लामा बैहक़ी (रह०) और मशहूर मुसन्निफ़[2] अ़ल्लामा सुयूती रह० ने इस मौज़ू[3] पर एक-एक रिसाला (किताब) लिखा है और 'हयातुल अंबिया' (नबियों की ज़िंदगी) को साबित किया है।

अ़ल्लामा सुयूती (रह०) ने अपने फ़त्वे में लिखा है कि—

'प्यारे नबी ﷺ और दूसरे तमाम अंबिया किराम के क़ब्रों में ज़िंदा होने की दलीलों के साथ हमको क़तई जानकारी है और इस बारे में तवातुर[4] की हदीसें भी पहुंच चुकी हैं।

इमाम क़ुर्तबी ने अपनी किताब 'तज़्किरा' में फ़रमाया है कि हज़रात अंबिया-ए-किराम की मौत का हासिल इतना समझो कि वे हमारी नज़रों से छिपा दिए गये हैं और उनका हाल हमारी निस्बत ऐसा है जैसे फ़रिश्तों का हाल है (कि हम फ़रिश्तों को देख नहीं सकते हैं)।

मुहद्दिस बैहक़ी (रह०) ने फ़रमाया कि हज़रात अंबिया-ए-किराम की रूहें क़ब्ज़ करने के बाद फिर वापस कर दी गयीं इसलिए वे अपने रब के हुज़ूर में ज़िंदा हैं जैसा कि शहीद ज़िंदा हैं।

हज़रत अनस رضي الله عنه से रिवायत है कि आँहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने

---

1. हदीस के माहिर 2. लेखक
3. विषय
4. बीच की कड़ियों में से किसी रावी को छोड़े बग़ैर

फ़रमाया कि अंबिया ﷺ ज़िंदा हैं, अपनी क़ब्रों में नमाज़ पढ़ते हैं।[1] यह नमाज़ तकलीफ़े शरई की वजह से नहीं है, बल्कि लज़्ज़त हासिल करने के लिए हैं।

हज़रत अबूदर्दा ﷺ से रिवायत है कि आँहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने फ़रमाया कि जुमा के दिन मुझ पर दरूद ज़्यादा-से-ज़्यादा भेजा करो क्योंकि यह दिन मश्हूद है, जिसके मानी यह हैं कि इसमें फ़रिश्तों का आना (ज़्यादा-से-ज़्यादा) होता है, (फिर इर्शाद फ़रमाया कि) बेशक तुम में से जो भी आदमी मुझ पर दरूद भेजता है, उसका दरूद मेरे सामने पेश होता रहता है जब तक कि वह उसमें लगा हुआ हो। सवाल किया गया कि या रसूलुल्लाह! वफ़ात के बाद क्या होगा? इर्शाद हुआ कि वफ़ात के बाद मुझ पर दरूद पेश किया जाता रहेगा, क्योंकि उस आलम (दुनिया) में जाकर भी अल्लाह के रसूल ﷺ ज़िंदा रहते हैं और यह ज़िंदगी रूहानी नहीं होती बल्कि जिस्मानी होती है। (क्योंकि) बेशक अल्लाह ने ज़मीन पर यह हराम फ़रमा दिया है कि नबियों के जिस्मों को खा जाये। अल्लाह का नबी ज़िंदा रहता है और उसको रोज़ी भी दी जाती है।[2]

इस मुबारक हदीस से मालूम हुआ कि हज़रात अंबिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम इस दुनिया से इन्तिक़ाल फ़रमा कर जिस्मानी ज़िंदगी के साथ ज़िंदा हैं और रोज़ी भी पाते हैं। यह रोज़ी उसी दुनिया के मुनासिब है। शहीदों के बारे में भी रोज़ी का मिलना आया है, लेकिन हज़रात अंबिया-ए-किराम (अलै०) की ज़िंदगी और उनका रोज़ी दिया जाना शहीदों के मुक़ाबले में कामिल (पूर्ण) है। हज़रत शाह अब्दुल हक़ साहब मुहद्दिस देहलवी (रह०) ने 'अश्अतुल्लमआत' शरह मिश्कात में लिखा है:—

'नबियों की ज़िंदगी का ऐसा मस्अला है, जिस पर सबका इत्तिफ़ाक़

1. अबुयाला
2. इब्ने माजा

(सहमत) है, किसी को इसमें इख़्तिलाफ़ नहीं और यह हयाते जिस्मानी है जैसा कि दुनिया में थी। उनकी ज़िंदगी रूहानी या मानवी (अर्थ निरूपित) न समझी जाए।'

हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि एक बार हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ मक्के और मदीने के बीच सफ़र कर रहे थे। आपने एक वादी (घाटी) के बारे में पूछा कौन-सी वादी है? मौजूद लोगों ने जवाब दिया कि यह 'वादी-ए-रिज़्क़' (यानी रोज़ी की घाटी है) आपने इर्शाद फ़रमाया कि गोया मैं देख रहा हूं मूसा ﷺ की तरफ़। यह फ़रमाकर उनके रंग और बालों की हालत कुछ ब्यान फ़रमाई (और फ़रमाया कि वह) इस हाल में (नज़र आ रहे) हैं कि अपनी दोनों उंगलियां दोनों कानों में दिए हुए हैं (और) अपने रब के नाम का तल्बियः[1] ज़ोर-ज़ोर से पढ़ते हुए इस वादी से गुज़र रहे हैं।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ फ़रमाते हैं कि इसके बाद हम और आगे चले यहां तक कि एक वादी आयी। उसके बारे में फ़ख़्रे दो आ़लम ﷺ ने सवाल फ़रमाया कि यह कौन-सी वादी है? हाज़िर लोगों ने जवाब दिया कि यह वादी 'हरशा' (नामी) है या बजाए 'हरशा' के 'लुफ़्त' कहा। आँहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि गोया मैं यूनुस ﷺ को देख रहा हूं कि सुर्ख़ ऊटंनी पर सवार हैं उनके जिस्म पर उनका जुब्बा है और उनकी ऊंटनी की लगाम पेड़ की छाल की है। तल्बियः पढ़ते हुए उस घाटी से गुज़र रहे हैं।[2]

इस मुबारक हदीस से साबित हुआ कि आंहज़रत ﷺ ने हज़रत मूसा ﷺ और हज़रत यूनुस ﷺ को तल्बियः पढ़ते हुए देखा, मालूम हुआ कि हज़रात अंबिया किराम की बर्ज़ख़ी ज़िंदगी इतनी कामिल और इतनी बुलंद है कि इस दुनिया में तशरीफ़ ला सकते हैं और हज की ज़रूरी रस्में अदा कर

1. लब्बैक व सादैक कहना
2. मुस्लिम शरीफ़

सकते हैं और उनका देखा जाना भी मुम्किन है। कुछ बुज़ुर्गों से जो यह नक़्ल किया गया है कि उन्होंने आंहज़रत ﷺ को बेदारी में देखा तो यह झुठलाने की चीज़ नहीं है। अगर कोई तस्दीक़ न करे तो झुठलाना भी मुनासिब नहीं है। मे'राज शरीफ़ का वाक़िया जो हदीस की किताबों में आया है, उसी में यह भी है कि सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि मैंने मूसा, ईसा और इब्राहीम (अलै०) को खड़े हुए नमाज़ पढ़ते देखा। इतने में नमाज़ का वक़्त आ गया तो मैं उनका इमाम बना।[1]

उस वक़्त आँहज़रत ﷺ अपनी दुनियावी ज़िंदगी ही में थे और जिन नबियों को आपने नमाज़ पढ़ाई, वे बर्ज़ख़ी ज़िंदगी में थे। हज़रत ईसा ﷺ गो इस दुनिया में नहीं हैं, मगर बर्ज़ख़ी ज़िंदगी में भी नही हैं बल्कि उनकी यही दुनिया की ज़िंदगी उस वक़्त तक जारी मानी जाएगी, जब तक कि दोबारा तशरीफ़ ला कर वफ़ात न पा जाएं।

उहुद के कुछ शहीदों के जिस्म वर्षों के बाद भी सही-सालिम पाये गये

मुअत्ता इमाम मालिक (रह०) में है कि उम्रू बिन जमूह ﷺ और अ़ब्दुल्लाह बिन उम्रू ﷺ की क़ब्र को पानी के बहाव ने खोद दिया था। ये दोनों अंसारी थे और उहुद की लड़ाई में शहीद हुए थे और एक ही क़ब्र में दोनों को दफ़्न कर दिया गया था। जब पानी ने क़ब्र खोद डाली तो दूसरी जगह दफ़्न करने के लिए उनकी क़ब्र खोदी गई तो इस हालत में पाये गये कि उनके जिस्मों में ज़रा भी फ़र्क़ न आया था और ऐसा लगता था कि जैसे कल ही वफ़ात पाई है। यह वाक़िया उस वक़्त का है जबकि उहुद की लड़ाई

1. मुस्लिम शरीफ़
2. मुख़्तसर तज़्किरा अल-कुर्तबी

को 46 साल गुज़र चुके थे।

हज़रत मुआविया ﷺ ने अपने अमीर होने के ज़माने में मदीना तैयबा में नहर निकालने का इरादा फ़रमाया तो उसकी गुज़रगाह में उहुद का क़ब्रिस्तान पड़ गया। हज़रत मुआविया ﷺ ने एलान फ़रमा दिया कि अपने-अपने रिश्तेदारों की लाशें यहां से उठाकर दूसरी जगह कर लें। जब इस मक़सद से लाशें निकाली गयीं तो बिल्कुल अपनी असली हालत पर तर-व-ताज़ा मालूम होती थीं। उसी वक़्त यह वाक़िया पेशा आया कि खुदाई करते हुए हज़रत हम्ज़ा (रज़ि०) के क़दम मुबारक में कुदाल लग गई तो उसी वक़्त ख़ून जारी हो गया। यह वाकिया उहुद की लड़ाई के पचास साल के बाद का है।[1]

उहुद के शहीदों के अलावा और भी उम्मत के दूसरे बुज़ुर्गों के बारे में सियर[1] व तारीख़ की किताबों से यह साबित है कि दफ़्न करने के बाद जब वर्षों के बाद देखे गये, तो उनके जिस्मों में कोई तबदीली न हुई थी। हज़रात अंबिया-ए-किराम (अलै०) के बारे में तो हदीस शरीफ़ में क़तई फ़ैसला है कि उनके जिस्मों को ज़मीन गला नहीं सकती लेकिन किसी ग़ैर नबी को भी अल्लाह तआ़ला यह शर्फ़ बख़्शें तो उनकी रहमत और क़ुदरत से कुछ नामुम्किन नहीं है :—

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ خَيْرَ الْحَيَاتِ وَخَيْرَ الْمَمَاتِ وَاَنْ تَغْفِرَلِیْ وَتَرْحَمَنِیْ
وَاَنْ تَتُوْبَ عَلَیَّ اِنَّكَ اَنْتَ رَبِّیْ۔ اَنْتَ مَوْلَایَ وَاَنْتَ لِیْ نِعْمَ الْوَكِيْلَ
وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ سَيِّدِنَا وَسَنَدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ
وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ ط

अल्लाहुम्म म इन्नी अस्अलु क ख़ैरल हयाति व ख़ैरल ममाति व अन् तग़्फ़िर ली व तर्हमनी व अन ततू ब अ़लै

1. सीरत, जीवन-चरित्र

य इन्न क अन्त रब्बी अन्त मौला य व अन त ली निअ्‌म्ल वकील व सल्लल्लाहु तआला अला ख़ैरि ख़ल्क़िही सैयिदिना व स न दिना व मौलाना मुहम्म्दिंव व आलिही व सह्‌बिही अज्मईन।

हालाते जहन्नम

मौलाना मुहम्मद आशिक़ इलाही बुलन्दशहरी (रह०)

हालाते जहन्नम

Haalat-e-Jahannam

मौलाना मुहम्मद आशिक इलाही बुलन्दशहरी (रह०)

प्रकाशन : 2014

ISBN: 81-7101-479-8

TP-308-14

Published by Mohammad Yunus for

IDARA IMPEX

D-80, Abul Fazal Enclave-I, Jamia Nagar
New Delhi-110 025 (India)
Tel.: +91-11-2695 6832 & 085888 33786
Fax: +91-11-6617 3545 Email: info@idara.in
Online Store: www.idarastore.com

Retail Shop: **IDARA IMPEX**
Shop 6, Nizamia Complex, Gali Gadrian, Hazrat Nizamuddin
New Delhi-110013 (India) Tel.: 085888 44786

विषय-सूची

अपनी बात

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ، نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० नहमदुहू व नुसल्ली अ़ला रसूलिहिल करीम० अम्मा बअ़्दः–

इस किताब में नाचीज़ ने जहन्नम के हालात क़ुरआन की आयतों और नबी करीम की हदीसों से लेकर उर्दू (और अब हिंदी) में क़लमबंद किये हैं। लिखने की वजह यह है कि मुसलमानों की ज़ुबान पर यों तो दोज़ख़ का ज़िक्र आता ही रहता है, मगर इससे बचने और महफ़ूज़ रहने के कामों और हरकतों से इसलिए ग़ाफ़िल हैं कि इसके दिल हिला देने वाले अ़ज़ाब और उन मुसीबतों से बेख़बर हैं जो दोज़ख़ियों पर गुज़रेंगी।

मुझे यक़ीन है कि जो मुसलमान इस किताब को ध्यान से पढ़ेंगे और क़ुरआन की आयतों और नबी करीम की हदीसों को सच्चा जानते हुए दोज़ख़ का मुराक़बा (अवलोकन) करेंगे, वे आसानी से गुनाहों से बच सकेंगे और फिर उनका नफ़्स नेकियों के करने में ज़्यादा रोक भी न बनेगा। ख़ुदा करे दीन की दूसरी किताबों के तरह यह किताब भी मुसलमानों को दीनदार बनने में मदद दे और उनमें ज़्यादा से ज़्यादा मक़बूल हो। **(आमीन)**

पढ़ने वालों से दरख़्वास्त है कि अपनी नेक दुआओं में इस नाचीज़ को न भुलें।

–मुहम्मद आ़शिक़ इलाही बुलंदशहरी

ग़फ़ीअ़न्हु

इस किताब के दो हिस्से हैं—

(1) 'दोज़ख़ के हालात' (2) 'दोज़ख़ियों के हालात'

पहले दोज़ख के हालात लिखता हूँ फिर दोज़ियों के हालात लिखे जाएंगे।

والله الموفق وهُو يهدى السبيل

वल्लाहुल मुवफ़्फ़िक़ु व हु व यहदिस्सबील

(1) दोज़ख़ के हालात

दोज़ख़ की गहराई

हज़रत अबू मूसा अश्अरी ﷺ रसूले ख़ुदा ﷺ से रिवायत करते हैं कि आपने ﷺ (दोज़ख़ की गहराई ब्यान करते हुए) फ़रमाया – अगर एक पत्थर जहन्नम में डाला जाए तो जहन्नम की तह में पहुंचने से पहले सत्तर साल तक गिरता चला जाएगा।

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ का ब्यान है कि हम रसूले ख़ुदा ﷺ की बरकती ख़िदमत में बैठे हुए थे कि हमने किसी चीज़ के गिरने की आवाज़ सुनी। रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया क्या तुम जानते हो कि यह (आवाज़) क्या है? हमने अर्ज़ किया- अल्लाह और उसके रसूल ही ख़ूब जानते हैं। आप ﷺ ने

फ़रमाया यह एक पत्थर है जिसको ख़ुदा ने जहन्नम के मुंह पर (तह में गिरने के लिए) छोड़ा था और वह सत्तर साल तक गिरते-गिरते अब दोज़ख़ की तह में पहुंचा है। यह उसके गिरने की आवाज़ है। —मुस्लिम

दोज़ख़ की दीवारें

रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया है कि दोज़ख़ को चार दीवारें घेरे हुए हैं : जिनमें हर दीवार की चौड़ाई चालीस साल की दूरी रखती है।

यानी दोज़ख़ की दीवारें इतनी मोटी हैं कि सिर्फ़ एक दीवार की चौड़ाई तय करने के लिए चालीस साल ख़र्च हों।

दोज़ख़ के दरवाज़े

क़ुरआन शरीफ़ में दोज़ख़ के दरवाज़ों के बारे में फ़रमाया :

وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ لَهَا سَبْعَةُ اَبْوَابٍ ۭ لِكُلِّ بَابٍ مِّنْهُمْ جُزْءٌ مَّقْسُوْمٌ ۝ (حجر ١٤)

व इन्न न जहन्न न म लमौइदुहुम अजमईन। लहा सब्अ़तु अब्वाब। लिकुल्लि बाबिम मिन्हुम जुज़्उम मक़सूम।

'और उन सबसे जहन्नम का वादा है जिसके सात दरवाज़े हैं। हर दरवाज़े के लिए उन लोगों के अलग-अलग हिस्से हैं।' (सूरः हिज्र, पारः 14)

रसूले ख़ुदा ﷺ ने कहा कि दोज़ख़ के सात दरवाज़े हैं, जिनमें से एक उसके लिए हैं जो मेरी उम्मत पर तलवार उठाये। —मिश्कात

दोज़ख़ की आग और अंधेरा

अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया कि दोज़ख़ को एक हज़ार साल तक धोंका गया तो उसकी आग लाल हो गई; फिर एक हज़ार साल तक धोंका गया जो उसकी आग सफ़ेद हो गई; फिर एक हज़ार साल तक धोंका गया

तो उसकी आग काली हो गई; चुनांचे दोज़ख़ अब काली अंधेरे वाली है।

—तिर्मिज़ी

एक रिवायत में है कि वह अंधेरी रात की तरह काली है और दूसरी रिवायत में है कि उसकी लपट से उसकी रौशनी नहीं होती। —तर्ग़ीब

यानी हमेशा अंधेरा ही रहता है।

बुख़ारी व मुस्लिम की एक रिवायत में है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया, तुम्हारी यह आग (जिसको तुम जलाते हो) दोज़ख़ की आग का सत्तरवां हिस्सा है। सहाबा رضي الله عنهم ने अर्ज़ किया- (जलाने को तो) यही बहुत है। आप ﷺ ने फ़रमाया (हां इसके बावजूद) दुनिया की आगों से दोज़ख़ की आग गर्मी में 69 दर्जा बढ़ी है और एक रिवायत में है कि दोज़ख़ी अगर दुनिया में जाएं तो उनको नींद आ जाए। —तर्ग़ीब

क्योंकि दोज़ख़ की आग के मुक़ाबले में दुनिया की आग बहुत ही ज़्यादा ठंडी है। इसलिए उसमें उनको दोज़ख़ के मुक़ाबले आराम मालूम होगा।

दोज़ख़ के अज़ाब का अंदाज़ा

रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया, दोज़ख़ियों में सबसे हल्का अज़ाब उस शख़्स पर होगा, जिसकी दोनों जूतियां और तस्मे आग के होंगे; जिनकी वजह से ज़्यादा लज़्ज़त और ऐश में रहता था, पकड़कर एक बार दोज़ख़ में ग़ोता दिया जाएगा फिर उससे पूछा जाएगा : ऐ इब्ने आदम! (आदम की औलाद) क्या तूने कभी नेमत देखी है? क्या कभी तुझे आराम नसीब हुआ है? इसपर वह कहेगा, ख़ुदा की क़सम! ऐ रब नहीं! (मैंने कभी आराम नहीं पाया) फिर फ़रमाया कि क़ियामत के दिन एक ऐसे जन्नती को जो दुनिया में तमाम इंसानों से ज़्यादा मुसीबत में रहा था, उसे पकड़कर जन्नत में ग़ोता दिया जायेगा फिर उससे पूछा जाएगा, ऐ इब्ने आदम! कभी तूने मुसीबत देखी है? क्या कभी तुझपर सख़्ती गुज़री है? वह कहेगा, ख़ुदा क़सम, ऐ रब! मुझपर कभी सख़्ती नहीं गुज़री और मैंने कभी मुसीबत नहीं देखी।

दोज़ख़ की सांस

रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया — जब बड़ी गर्मी हो तो ज़ुह्र की नमाज़ देर से पढ़ा करो क्योंकि गर्मी की सख़्ती दोज़ख़ की तेज़ी की वजह से होती है। (फिर फ़रमाया कि) दोज़ख़ ने अपने रब के दरबार में शिकायत की कि (मेरी तेज़ी बहुत बढ़ गयी है, यहां तक कि) मेरे कुछ हिस्से दुसरे हिस्से को खाये जाते हैं (इसलिए मुझे इजाज़त दी जाए कि किसी तरह गर्मी हल्की करू) चुनांचे अल्लाह तआला ने उसको दो बार सांस लेने की इजाज़त दी। एक सांस सर्दी के मौसम में और एक गर्मी के मौसम में। इसलिए गर्मी जो तुम महसूस करते हो; दोज़ख़ की लू का असर है (जो सांस के साथ बाहर आती है) और सख़्त सर्दी जो महसूस करते हो, दोज़ख़ के ठंढे हिस्से का असर है। —बुख़ारी शरीफ़

मुस्लिम की एक रिवायत में है कि दोपहर को हर दिन दोज़ख़ दहकाया जाता है।

फ़ायदा : दोज़ख़ के सांस लेने से गर्मी बढ़ जाना तो समझ में आता है, लेकिन सर्दी का बढ़ना में समझ में नहीं आता। सच बात तो यह है कि गर्मी में दोज़ख़ सांस बाहर फेंकती है और इस तरह दुनिया में गर्मी बढ़ जाती है और सर्दी में सांस अंदर लेती है और इस तरह दुनिया की तमाम गर्मी खींच लेती है, इस वजह से सर्दी बढ़ जाती है।

कुछ उलमा ने इसकी यह तशरीह[1] की है कि दोज़ख़ में जलाने ही का अज़ाब नहीं है, बल्कि ठंढक का अज़ाब भी है। उम्मते मुहम्मदी ﷺ के मशहूर अह्ले कश्फ़ बुज़ुर्ग[2] हज़रत अब्दुल अज़ीज़ दब्बाग़ रह० का ब्यान है कि जिन्नात को आग का अज़ाब नहीं दिया जाएगा, क्योंकि आग उनकी

1. व्याख्या

2. ऐसे बुज़ुर्ग जो कश्फ़ व करामात वाले हों (ग़ैर मामूली तरीक़े से कुछ ऐसी बातें जान लेना जो आम इंसान न समझ सके, उसे कश्फ़ कहते हैं।)

तबीअत है, बल्कि उनको बेहद ठंढक का अज़ाब दिया जाएगा। जिन्नात दुनिया में भी सर्दी से बेहद डरते हैं और सर्द हवा से जंगली गधों की तरह बदहवास होकर भागते हैं। फ़रमाते थे कि पानी में न शैतान दाख़िल हो सकता है, न कोई जिन्न जा सकता है। अगर कोई उनको पानी में डाल दे तो बुझकर फ़िना हो जाएंगे। यह भी फ़रमाते हैं कि क़ातिलों को शैतान के साथ ठंढक का अज़ाब दिया जाएगा। यहां पहुंचकर ज़रा सबक़ हासिल करने वाली आँख खोलिए कि इस दुनिया की मामूली सर्दी और गर्मी को इंसान नहीं बर्दाश्त कर सकता जो दोज़ख़ की सांस से पैदा होती है फिर भला दोज़ख़ की असली गर्मी और सर्दी कैसे बर्दाश्त करेगा। *फ़अ्तबिरू या उलिल अब्सार।* कितने अफ़सोस की जगह है कि करोड़ों इंसान ऐसे हैं जो इस दुनिया की मामूली सर्दी और गर्मी से बचने का एहतमाम करते हैं मगर दोज़ख़ से बचने का उनको कुछ ध्यान नहीं।

दोज़ख़ का ईंधन

क़ुरआन हकीम में अल्लाह फ़रमाते हैं :

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ . (تحريم)

या ऐयुहल्लज़ी न आमनू क़ू अन्फ़ु सकुम व अहलीकुम नारौं वक़ूदुहन्नासु वल्हिजारः —सूरः तहरीम

'ऐ ईमान वालो! अपने आपको और अपने घर वालों को दोज़ख़ की आग से बचाओ जिसका ईंधन इंसान और पत्थर हैं।'

फ़ायदा : पत्थर से क्या मुराद है? इसके मुताबिक़ हज़रते इब्ने मस्ऊद का इर्शाद है कि पत्थर जो दोज़ख़ का ईंधन हैं, वह किब्रीत (यानी गंधक) के पत्थर हैं जो ख़ुदा ने क़रीब वाले आसमान में उसी दिन पैदा फ़रमाये थे। फिर फ़रमाया : ये पत्थर कुफ़्फ़ार (के अज़ाब)

के लिए तैयार फ़रमाये हैं। —हाकिम

इन पत्थरों के अलावा मुश्रिकों की वे मूर्तियां भी दोज़ख़ में होंगी जिनकी वह पूजा किया करते थे। चुनांचे सूरः अंबिया में है :

إِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ ۖ أَنتُمْ لَهَا وَارِدُونَ

इन्नकुम वमा तअ्बुदू न मिन दूनिल्लाहि ह स बु जहन्नम। अन्तुम लहा वारिदून।

'ऐ मुश्रिको! बेशक तुम और तुम्हारे वे माबूद, जिनकी ख़ुदा के सिवा पूजा करते हो, सब दोज़ख़ में झोंके जाओगे और तुम सब उसमें दाखिल होगे।'

दोज़ख़ के तब्क़े

पहले गुज़र चुका है :

لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ ۖ لِّكُلِّ بَابٍ مِّنْهُمْ جُزْءٌ مَّقْسُومٌ

लहा सब्अ़तु अब्वाब। लिकुल्लि बाबिम मिन्हुम जुज़्उम मक़सूम।

इस आयत की तफ़सीर में मुअल्लिफ़ ब्यानुल क़ुरआन क़ुद्दस सिर्रहू लिखते हैं कि कुछ लोगों ने कहा है- सात तब्क़े मुराद हैं, जिनमें तरह-तरह के अ़ज़ाब हैं। जो जिस अ़ज़ाब का हक़दार होगा उसी तब्क़े में दाख़िल होगा, चूंकि हर तब्क़े का दरवाज़ा अलग-अलग है, इसलिए 'सात दरवाजों' के नाम से याद किया। और कुछ लोगों ने कहा है कि सात दरवाज़े ही मुराद हैं और मक़सद यह ब्यान करना है कि दोज़ख़ में दाख़िल होने वालों की ज़्यादती की वजह से एक दरवाज़ा काफ़ी न होगा, इसलिए सात दरवाज़े बनाये गये हैं।

अ़ल्लामा इब्ने कसीर क़ुद्दस सिर्रहू ने हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वज्ह : का इर्शाद नक़ल किया है आपने *'सब्अ़तु अब्वाबिन'* (सात दरवाजों) के

मुतअ़ल्लक़ हाथों से इशारा करके फ़रमाया कि दोज़ख़ के दरवाज़े इस तरह हैं यानी ऊपर नीचे। इस इर्शाद से भी यही मालूम होता है कि नीचे-ऊपर जहन्नम के सात तब्क़े हैं और हर तब्क़े का अलग-अलग दरवाज़ा है। और क़ुरआन हकीम की आयत :

إِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ فِى الدَّرْكِ الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ (نساء)

इन्नल मुनाफ़िक़ी न फ़िद्दर्किल अस्फ़लि मिन्नार।

'बिला शुब्हा मुनाफ़िक़ दोज़ख़ के सबसे नीचे के तब्क़े में जायेंगे' — से भी यही बात मालूम होती है कि जहन्नम के कई तब्क़े हैं। बुज़ुर्गों ने इन तब्क़ों के नाम और इन तब्क़े वालों की तफ़सील इस तरह बताई है कि सबसे नीचे का तब्क़ा - मुनाफ़िक़ों, फिरऔन और उसके मददगार का है, जिसका नाम 'हाविय:' है और दूसरा तब्क़ा जो हाविय: के ऊपर है, मुश्रिकों के लिए है जिसका नाम 'जहीम' है। फिर जहीम के ऊपर तीसरा तब्क़ा 'सक़र' जो बे-दीन फ़िर्क़ा 'साइबीन' के लिए है। चौथा तब्क़ा जो सक़र से ऊपर है 'नतय' है, वह इब्लीस और उसके ताबेदारों के लिए है, उसी पर पुलसिरात क़ायम होगी और गो सब तब्क़ों के लिए 'जहन्नम' आता है लेकिन असल में इसी तब्क़े का नाम जहन्नम है। यह भी लिखा है कि जहन्नम के तब्क़ों के हर दरवाज़े से दूसरे दरवाज़े तक सात सौ वर्ष की दूरी है।

दोज़ख़ की एक ख़ास गरदन

रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया क़ियामत के दिन दोज़ख़ से एक गरदन निकलेगी जिसकी दो आखें होंगी और दो कान होंगे जिनसे सुनती होगी और एक ज़ुबान होगी जिससे बोलती होगी। वह कहेगी मैं तीन शख़्सों पर मुसल्लत की गई हूँ– (1) हर सरकश ज़िद्दी पर, (2) हर उस शख़्स पर जिसने अल्लाह के साथ कोई दूसरा माबूद ठहराया और (3) तस्वीर बनाने वाले पर। –तिर्मिज़ी

आग के सुतूनों में बन्द कर दिए जाएंगे

نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ○ الَّتِىْ تَطَّلِعُ عَلَى الْاَفْـِٕدَةِ ○ اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ
فِىْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ

नारुल्लाहिल मू क़ दतुल्लती तत्तलिउ अ़लल अफ़्इदः। इन्नहा अ़लैहिम मु'स दतुन फ़ी अ़ म दिम मुमद्ददः।

'(हुतमः) सुलगायी हुई अल्लाह की वह आग है जो दिलों तक जा पहुंचेगी। वह आग उन पर लम्बे-लम्बे सुतूनों में बन्द कर दी जायेगी।'

दुनिया में किसी को आग लगाती है तो दिल तक पहुंचने से पहले ही उसकी रूह निकल जाती है, लेकिन दोज़ख़ में चूंकि मौत ही न आयेगी इसलिए सारे बदन के साथ दिलों पर भी आग चढ़ी बैठी होगी और ख़ूब जलायेगी। आग बन्द कर दी जाएगी यानी दोज़ख़ियों के दोज़ख़ में भर कर आग से दरवाज़े बन्द कर दिए जाएंगे क्योंकि उसमें उनको हमेशा रहना होगा। निकलना तो नसीब ही न होगा। लम्बे-लम्बे सुतूनों का मतलब यह है कि आग के इतने-इतने बड़े शोले होंगे जैसे सुतून होते हैं और दोज़ख़ी उसमें बन्द होंगे। —ब्यानुल क़ुरआन

दोज़ख़ पर मुक़र्रर फ़रिश्तों की तादाद

अलैहा तिस् अ़ त अशर عليها تسعة عشر

'दोज़ख़ पर उन्नीस फ़रिश्ते मुक़र्रर होंगे।' —मुद्दस्सिर

फ़ायदा : इन उन्नीस में से एक मालिक है और बाक़ी ख़ाज़िन (ख़ज़ान्ची) हैं और गो दोज़ख़ियों को सज़ा देने के लिए उनमें का एक फ़रिश्ता भी काफ़ी है मगर तरह-तरह के अ़ज़ाब देने और अ़ज़ाब के इन्तज़ाम के लिए 19 फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं जिनके मुतअ़ल्लिक सूरः तहरीम में है—

عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّايَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآاَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَايُؤْمَرُوْنَ

अलैहा मलाइकतुन गिलाजुन शिदादुल ला यअ्सूनल्ला ह मा अ म र हुमे व यफ़अलू न मा युअ्मरून।

'उस पर सख़्त और मज़बूत फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं जो अल्लाह की (ज़रा), नाफ़रमानी उसके हुक्म में नहीं करते और जो हुक्म होता है वही करते हैं।'

'ब्यानुल क़ुरआन' में दुर्रे मंसूर से नक़ल किया है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया कि दोज़ख़ पर मुक़र्रर फ़रिश्तों में से हर एक की तमाम जिन्नों व इन्सानों के बराबर ताक़त है।

दोज़ख़ का ग़ैज़ व ग़ज़ब, चीख़ना-चिल्लाना और दोज़ख़ियों को आवाज़ देकर बुलाना और दोज़ख़ियों का तंग जगहों में डाला जाना

وَلِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ اِذَآ اُلْقُوْا فِيْهَا سَمِعُوْا لَهَا شَهِيْقًا وَّهِيَ تَفُوْرُ تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ (ملك ٢٩)

व लिल्लज़ी न क फ़ रू बिरब्बिहिम अ़ज़ाबु जहन्नम व बिअ्सल मसीर। इज़ा उल्कू फ़ीहा समिऊ लहा शहीक़ौं व हि य तफ़ूर। तकादु तमैयज़ु मिनल ग़ैज़। —सूरः मुल्क

'और जो लोग अपने रब का इन्कार करते हैं उनके लिए दोज़ख़ का अज़ाब है और वह बुरी जगह है। जब ये लोग उसमें डाले जाएंगे तो उसकी एक बड़ी ज़ोर की आवाज़ सुनेंगे और वह इस तरह जोश मारता होगा जैसे अभी ग़ुस्से की वजह से फट पड़ेगा।'

हज़रत हकीमुल उम्मत क़ुद्दुस सिर्रहू 'ब्यानुल क़ुरआन' में लिखते हैं

कि या तो अल्लाह तआला उसमें समझ और ग़ुस्सा[1] पैदा कर देगा। हक़ का ग़ज़ब जिन पर हुआ है उन पर उसको भी ग़ुस्सा आयेगा या मिसाल देकर समझाना मक़सूद है कि ऐसा मालूम होगा जैसे दोज़ख़ को ग़ुस्सा आ रहा है—

إِذَا رَأَتْهُم مِّن مَّكَانٍ بَعِيدٍ سَمِعُوا لَهَا تَغَيُّظًا وَزَفِيرًا ۞ وَإِذَا أُلْقُوا مِنْهَا
مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِينَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُورًا ۞ (فرقان)

इज़ा रअतुहुम मिम मकानिम बईद। समिऊ लहा तग़ैयुजौं व ज़फ़ीरा। व इज़ा उल्क़ू मिन्हा मकानन ज़ैयिक़म मुक़र्रनी न दऔ हुनालि क सुबूरा।

'जब वह (दोज़ख़) उनको दूर से देखेगा तो (वह देखते ही इतना ग़ज़बनाक होकर जोश मारेगा कि) वे लोग (दूर ही से) उसका जोश व ख़रोश सुनेंगे और जब वह उसकी किसी तंग जगह में हाथ-पांव पकड़ कर डाल दिए जाएंगे तो वहां मौत ही मौत पुकारेंगे।'

फ़ायदा : अभी जहन्नम दोज़ख़ियों से सौ साल के फ़ासले पर होगा कि उसकी नज़र उन पर पड़ेगी और उनकी नज़रें उस पर पड़ेगी। वह देखते ही पेच व ताब खायेगा और जोश व ख़रोश से आवाज़ें निकालेगा जिनको व सुन लेंगे और जब उसमें धकेल दिये जायेंगे तो मौत को पुकारेंगे यानी जैसे दुनिया में किसी मुसीबत के वक़्त कहते हैं, हाय मर गये!

इब्न अबी हातिम की एक रिवायत में है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने *'इज़ा रअतहुम'* को पढ़कर दोज़ख़ की दो आखें साबित फ़रमायीं। —इब्न कसीर

अगरचे दोज़ख़ बहुत बड़ी जगह है, लेकिन अ़ज़ाब के लिए दोज़ख़ियों को तंग-तग जगहों में रखा जाएगा। कुछ रिवयतों में ख़ुद रसूले ख़ुदा ﷺ से इसकी तफ़सीर नक़ल की गयी है कि जिस तरह दीवार में कील गाड़ी जाती

1. दूसरी बहुत-सी रिवायतों से भी मालूम होता है कि दोज़ख़ और जन्नत को अल्लाह पाक समझ दे देंगे। (अल्लाह ही बेहतर जानता है)

है, उसी तरह दोज़ख़ियों को देज़ख़ में ठूंसा जाएगा। —इब्न कसीर

تَدْعُوا مَنْ اَدْبَرَ وَتَوَلّٰى ○ وَجَمَعَ فَاَوْعٰى ○ (معارج)

तद्‌ऊ मन अद ब र व तवल्ला। व ज म अ़ फ़औआ़। —मआ़रिज

'दोज़ख़ उस शख़्स को (ख़ुद) बुलायेगा जिसने (दुनिया में हक़ से) पीठ फेरी होगी और (ताअ़त से) बेरुख़ी की होगी और (माल) जमा किया होगा फिर उठा-उठा कर रखा होगा।'

इब्ने कसीर में है कि जिस तरह जानवर दाना खोज कर चुगता है उसी तरह दोज़ख़ हश्र के मैदान से बुरे लोगों को एक-एक करके देख-भाल के चुन लेगा। इस आयत में माल जमा करने वालों वालों का ज़िक्र है। हज़रत क़तादा رضي الله عنه इसकी तफ़सीर फरमाते थे कि जिसने जमा करने में हलाल व हराम का ख़्याल न रखा और ख़ुदा के फ़रमान के बावजूद ख़र्च न करता था, वह शख़्स मुराद है।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन हकीम इस आयत के डर की वजह से कभी थैली का मुंह ही बंद न करते थे। हज़रत हसन बसरी (रह०) फ़रमाते थे कि ऐ इब्न आदम! तू ख़ुदा का डरावा सुनता है और फिर माल समेटता है। रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया—

'क़ियामत के दिन इंसान को बकरी के बच्चे की तरह (यानी ज़िल्लत की हालत में) लाकर ख़ुदा के सामने खड़ा कर दिया जाएगा। अल्लाह जल्ल ल शानुहू उससे फ़रमायेंगे : क्या मैंने तुझको माल नहीं दिया? बता तूने (उसके शुक्रिए में) क्या किया? इस पर जवाब देगा, ऐ मेरे परवरदिगार! मैंने जमा किया और ख़ूब बढ़ाया और जितना था उससे कहीं ज़्यादा छोड़ा, इसलिए मुझे इजाज़त दीजिए कि इस सबको ले आऊं। गर्ज़ यह कि वह बंदा ऐसा होगा कि उसने कुछ ख़ैर आगे न भेजी होगी, इसलिए उसको दोज़ख़ में पहुंचा दिया जाएगा। —तिर्मिज़ी

और यह भी इर्शाद फ़रमाया कि दुनिया उसका घर है जिसका कोई

घर नहीं है और उसका माल है जिसका कोई माल नहीं और दुनिया के लिए वह जमा करता है जिसके पास कुछ भी अक़्ल न हो। —तिर्मिज़ी

बैहक़ी ने शोबुल ईमान में मर्फ़ूअ्[1] हदीस नक़ल की है कि जब मरने वाला मर जाता है तो फ़रिश्ते कहते हैं की उसने आख़िरत में क्या भेजा है और इंसान कहते हैं कि उसने दुनिया में क्या छोड़ा है?

दोज़ख़ की बागें और उसके खींचने वाले फ़रिश्ते

हज़रत इब्ने मस्ऊद ﵁ फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया कि उस दिन दोज़ख़ को लाया जाएगा जिसकी सत्तर हज़ार बागें होंगी और हर बाग पर सत्तर हज़ार फ़रिश्ते मुक़र्रर होंगे जो उसको खींच रहे होंगे।

—मुस्लिम शरीफ़

हाफ़िज़ अब्दुल अज़ीज़ मुन्ज़री ﵀ ने 'अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब' में हज़रत इब्ने अब्बास ﵁ का इर्शाद नक़ल फ़रमाया है कि मान लीजिए अगर इस वक़्त फ़रिश्ते दोज़ख़ की बागें छोड़ दें तो हर नेक व बद को अपने घेरे में ले ले।

दोज़ख़ के सांप और बिच्छू

रसूले ख़ुदा ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बेशक दोज़ख़ में बड़ी लम्बी गरदनों वाले ऊंटों के बराबर सांप हैं (जिनके ज़हरीले माद्दे की हक़ीक़त यह है कि) एक बार जब उनमें से एक सांप डसेगा दोज़ख़ी चालीस साल तक उसकी जलन महसूस करता रहेगा। (फिर फ़रमाया) और बेशक दोज़ख़ में पालान से लदे हुए ख़च्चर की तरह बिच्छू हैं (जिनके ज़हरीले माद्दे की हक़ीक़त यह है कि) एक बार जब उनमें से एक बिच्छू डसेगा तो दोज़ख़ी चालीस तक उसकी जलन महसूस करता रहेगा। —अहमद

1. ऐसी हदीस जिसके सब रावी (सच्चे) हों और कहीं कोई रावी छूटता न हो।

क़ुरआन शरीफ़ में है :

زِدْنَاهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ

ज़िद्नाहुम अ़ज़ाबन फ़ौक़ल अ़ज़ाब।

यानी 'हम उनके लिए अ़ज़ाब बढ़ा देंगे उस शरारत के बदले जो वे करते थे।'

हज़रत इब्ने मस्ऊद ﷺ ने इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाया कि आग के आ़म अ़ज़ाब के अलावा उनके लिए यह अ़ज़ाब बढ़ा दिया जाएगा कि इन पर बिच्छू मुसल्लत किए जाएंगे, जिनके कीलें (बड़े दांत) लम्बी-लम्बी खजूरों के बराबर होंगे। —तर्ग़ीब

दोज़ख़ में मौत न आयेगी और अ़ज़ाब हल्का न होगा

क़ुरआन हकीम में इर्शाद है :

لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ (زخرف)

ला युफ़त्तरु अ़न्हुम व हुम फ़ीही मुब्लिसून। —ज़ुख़रुफ़

'उनका अ़ज़ाब हल्का न किया जाएगा और वे उसी में मायूस पड़े रहेंगे।'

दूसरी जगह इर्शाद है :

لَا يُقْضَىٰ عَلَيْهِمْ فَيَمُوتُوا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُم مِّنْ عَذَابِهَا (فاطر)

ला युक़्ज़ा अ़लैहिम फ़यमूतू व ला युख़फ़्फ़फ़ु अ़न्हुम मिन अ़ज़ाबिहा। —फ़ातिर

'न तो उनकी क़ज़ा (मौत) आयेगी कि मर ही जाएं और न दोज़ख़ का अ़ज़ाब ही उनसे हल्का किया जायेगा।'

यानी दोज़ख़ में यह भी नहीं हो सकता कि अ़ज़ाब में पड़े-पड़े मौत ही आ जाए और अ़ज़ाब से बच जाएं, बल्कि वहां बेइंतिहा तकलीफ़ होने पर भी ज़िंदा रहेंगे। हदीस में है कि जब जन्नती जन्नत में पहुंच जाएंगे और दोज़ख़ी दोज़ख़ में जा चुकेंगे (और दोज़ख़ से कोई जन्नत में जाने वाला बाक़ी न रहेगा), तो दोज़ख़ और जन्नत के दर्मियान (मेंढे की सूरत में) मौत लायी जाएगी। इसके बाद एक पुकारने वाला पुकारेगा कि ऐ जन्नत वालो! अब मौत न आयेगी और ऐ दोज़ख़ वालो! अब मौत न आयेगी। इस ऐलान के सुनने से जन्नत वालों की ख़ुशी बढ़ जायेगी और दोज़ख़ वालों का रंज बढ़ जायेगा। —बुख़ारी व मुस्लिम

दोज़ख़ की आवाज़ *'हल मिम मज़ीद'*

يَوْمَ نَقُوْلُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَئْتِ وَتَقُوْلُ هَلْ مِنْ مَّزِيْدٍ (ق)

यौ म नक़ूलु लिजहन्न म हलिम तलअ्ति व तक़ूलु हम मिम् मज़ीद। —*सूरः क़ाफ़*

'जिस दिन हम कहेंगे दोज़ख़ से, क्या तू भर चुकी? वह कहेगी कि क्या कुछ और भी है?' —तर्जुमा शैख़ुल हिंद रह०

हदीस शरीफ़ में है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जहन्नम में दोज़ख़ी डाले जाते रहेंगे और दोज़ख़ *'हल मिम मज़ीद'* (क्या और भी है?) कहता जाएगा और सब दोज़ख़ी दाख़ील हो जाएंगे, जब भी न भरेगा, यहां तक कि अल्लाह उस पर अपना क़दम शरीफ़ रख देंगे जिसकी वजह से दोज़ख़ सिमट जाएगा और यूँ अ़र्ज़ करेगा : क़ई क़ई बिइज़्ज़तिक व क र मिक (बस, बस! आप की इज़्ज़त और करम का वास्ता देता हूं।)—मिश्कात

सब्र करने पर भी अ़ज़ाब से रिहाई न होगी

दुनिया में तरीक़ा है कि सब्र करने से मुसीबत के बाद राहत नसीब

हो जाती है मगर दोज़ख़ के अज़ाब के बारे में इर्शाद है :

اِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوْٓا اَوْلَا تَصْبِرُوْا سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ○ (طور)

'इस्लौहा फ़स्बिरू औ ला तस्बिरू। सवाउन अ़लैकुम इन्नमा तुज्ज़ौ न मा कुन्तुम तअ़्मलून' —सूरः तूर

'दोज़ख़ियों से कहा जाएगा : इसमें दाख़िल हो जाओ फिर सब्र करो या न करो, तुम्हारे हक़ में दोनों बराबर हैं जैसा कि तुम करते थे वैसा ही तुम्हें बदला दिया जाएगा।'

दोज़ख़ियों का खाना-पीना

ज़रीअ़ यानी आग के कांटे

تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ، لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ لَّا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِىْ مِنْ جُوْعٍ،

तुस्क़ा मिन ऐनिन आनियः। लै स लहुम तआ़मुन इल्ला मिन ज़रीअ़। ला युस्मिनु व ला युग्नी व ला मिन जूअ़। —ग़ाशियः

'दोज़ख़ियों को खौलते हुए चश्में का पानी मिलेगा और सिवाए झाड़-काटों वाले खाने के इनके लिए कुछ खाना न होगा। जो न ताक़त देगा, न भूख दूर करेगा।' —ग़ाशियः

साहिबे मिर्क़ात लिखते है कि 'ज़रीअ़' हिजाज़ में एक कांटेदार पेड़ का नाम है जिसकी ख़बासत (बेमज़ा, बदबूदार होने) की वजह से जानवर भी पास नहीं फटकते। अगर जानवर खा ले तो मर जाए। फिर लिखते हैं : यहां 'ज़रीअ़' से आग के कांटे मुराद हैं जो एलवे से कड़वे, मुर्दा से ज़्यादा बदबूदार और आग से ज़्यादा गर्म होंगे और जिनको बहुत ज़्यादा खाने के

बाद भी भूख दूर न होगी।

ग़िस्लीन (घावों का धोवन)

فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هٰهُنَا حَمِيْمٌ، وَّلَاطَعَامٌ اِلَّا مِنْ غِسْلِيْنٍ، لَايَاْكُلُهٗۤ اِلَّا الْخَاطِئُوْنَ○ (الحاقة)

फ़लै स लहुल यौ म हाहुना हमीम। व ला तआमुन इल्ला मिन ग़िस्लीन। ला यअ्कुलुहू इल्ललख़ातिऊन। —हाक़्क़ः

'आज उसका कोई दोस्त नहीं और न कुछ खाने को ही है सिवाए घावों के धोवन के जिसे सिर्फ़ गुनाहगार खाते हैं।'

ज़क़्क़ूम (सेंढ)

اِنَّ شَجَرَةَ الزَّقُّوْمِ طَعَامُ الْاَثِيْمِ كَالْمُهْلِ يَغْلِىْ فِى الْبُطُوْنِ كَغَلْيِ الْحَمِيْمِ○ (دخان)

इन्न न शजर तज़्ज़क़्क़ूम। तआमुल असीम। कलमुह्लि यग्ली फ़िल बुतून। क ग़ल्यिल हमीम। —सूरः दूख़ान

'बेशक गुनाहगार का खाना पिघले हुए तांबे जैसा ज़क़्क़ूम का पेड़ है जो पेटों में गरम पानी की तरह खौलेगा।'

ثُمَّ اِنَّكُمْ اَيُّهَا الضَّآلُّوْنَ الْمُكَذِّبُوْنَ○ لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ○ فَمَالِئُوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ○ فَشَارِبُوْنَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيْمِ○ فَشَارِبُوْنَ شُرْبَ الْهِيْمِ○ هٰذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّيْنِ○

सुम्म म इन्नकुम ऐयुहज़्ज़ाल्लुनल मुकज़्ज़िबून। ल आकिलू न मिन श ज रिम मिन ज़क़्क़ूम। फ़मालिऊ न मिनहल बुतून। फ़शारिबू न अलैहि मिनल हमीम। फ़शारिबू न शुर्बलहीम। हाज़ा नुज़ुलुहुम यौमद्दीन। —सूरः वाक़िअः

'फिर ऐ झुठलाने वाले गुमराह लोगो! तुम ज़क्कूम के पेड़ खाओगे और उससे अपने पेट भर लोगे। फिर ऊपर से खौलता हुआ पानी पियोगे जैसे प्यासे ऊंट पीते हैं। क़ियामत के दिन इस तरह उनकी मेहमानी होगी।'

إِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِيْ أَصْلِ الْجَحِيْمِ طَلْعُهَا كَأَنَّهُ رُءُوْسُ الشَّيٰطِيْنِ○

इन्नहा श ज र तुन फ़ी अस्लिल जहीम। तलउहा क अन्नहू रुऊसुश्शयातीन। —*सूरः साफ़्फ़ात*

'असल में वह (ज़क्कूम) एक पेड़ है जो दोज़ख़ की जड़ में से निकलता है। इसके फल ऐसे हैं जैसे सापों के फल।'

फ़ायदा : ज़क्कूम का तर्जुमा सेंढ किया जाता है जो मशहूर कड़वा पेड़ है। लेकिन यह सिर्फ़ समझाने के लिए है। क्योंकि वहां की हर चीज़ कड़वाहट और बदबू वग़ैरह में यहां की चीजों से कहीं ज़्यादा बुरी है और खौलता हुआ पानी पियेंगे और वह भी थोड़ा बहुत नहीं बल्कि प्यासे ऊटों की तरह ख़ूब ही पियेंगे।

أَعَاذَنَا اللّٰهُ تَعَالٰى مِنَ الزَّقُّوْمِ وَالْحَمِيْمِ وَسَائِرِ أَنْوَاعِ عَذَابِ الْجَحِيْمِ

अआ ज़ नल्लाहु तआला मिनज़्ज़क़्क़ूम वल हमीम व साइरि अन्वाइ अज़ाबल जहीम।

रसूले ख़ुदा ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया, अगर ज़क़्क़ूम का एक क़तरा (बूंद) भी दरिया में टपका दिया जाए तो वह यक़ीनी तौर पर तमाम दुनिया वालों के खाने बिगाड़ डाले (यानी सब कड़वे हो जाएं)। अब बताओ कि उसका क्या हाल होगा जिसका खाना ही ज़क़्क़ूम होगा। —तिर्मिज़ी व इब्ने हब्बान वग़ैरह

हाकिम की रिवायत में है कि ख़ुदा की क़सम! अगर ज़क़्क़ूम का एक क़तरा दुनिया के दरियाओं में डाल दिया जाए तो वह यक़ीनन तमाम दुनिया वालों की ग़िज़ाएं कड़वी कर दे; तो बताओ उसका क्या हाल होगा जिसका खाना ही ज़क़्क़ूम होगा। —तर्ग़ीब

गस्साक़

لَايَذُوْقُوْنَ فِيْهَا بَرْدًا وَّلَاشَرَابًا اِلَّا حَمِيْمًا وَّغَسَّاقًا

ला यज़ूक़ू न फ़ीहा बर्दों व ला शराबन इल्ला हमीमों व ग़स्साक़ा।

—सूरः नबा

'वह उस दोज़ख़ में खौलते हुऐ पानी और ग़स्साक़ के अलावा किसी ठंढक और पीने की चीज़ का मज़ा तकन चख सकेंगे।'

रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया : अगर ग़स्साक़ का एक डोल दुनिया में डाल दिया जाए तो तमाम दुनिया वाले सड़ जाएं। —तिर्मिज़ी व हाकिम

ग़स्साक़ क्या चीज़ है? इसके बारे में उम्मत के बुज़ुर्गों के अलग-अलग क़ौल हैं। साहिबे मिर्क़ात ने चार क़ौल नक़ल किए हैं—

1. दोज़ख़ियों के पीप और उनका धोवन है।
2. दोज़ख़यों के आंसू मुराद हैं।
3. दोज़ख़ का ठंढक वाला अज़ाब मुराद है और
4. ग़स्साक़ सड़ी हुई और ठंढी पीप है जो ठंढक की वजह से पी न जा सकेगा (मगर भूख की वजह से मजबूरन पीनी पड़ेगी) बहरहाल ग़स्साक़ बुरी चीज़ है।

अल्लहुम्मा अईज़ना मिन्हु।

माइन कल्मुह्ल (कीट)

وَاِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوْا بِمَآءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِى الْوُجُوْهَ ۚ بِئْسَ الشَّرَابُ وَسَآءَتْ مُرْتَفَقًا (كهف)

व इंयस्तग़ीसू न युग़ासू बिमाइन कल्मुह्लि यश्विल वुजूह। बिअ्सश्शराब। व साअत मुर्तफ़क़ा। *—सूरः कहफ़*

'और अगर प्यास से तड़पकर फ़रयाद करेंगे तो उनको ऐसा पानी

दिया जाएगा जो तेल की तलछट (कीट) की तरह होगा जो चेहरों को भून डालेगा। क्या ही बुरा पानी होगा और दोज़ख़ क्या ही बुरी जगह है?'

माइन सदीद (पीप का पानी)

وَيُسْقَىٰ مِن مَّاءٍ صَدِيدٍ يَتَجَرَّعُهُ وَلَا يَكَادُ يُسِيغُهُ وَيَأْتِيهِ الْمَوْتُ مِن
كُلِّ مَكَانٍ وَمَا هُوَ بِمَيِّتٍ

व युस्क़ा मिम माइन सदीद। य त जर्रउहू व ला यकादु युसीग़ुहु व यअ्तीहिल मौतु मिन कुल्लि मकानिउँ वमा हु व बिमैयित।

'उस (दोज़ख़ी) को पीप का वह पानी पिलाया जायेगा जिसको वह घूंट-घूंट कर के पियेगा और उसको गले से मुश्किल से उतार सकेगा और उसको हर तरफ़ से मौत (आती हुई) नज़र आयेगी, मगर वह मरेगा नहीं।'

यानी हर तरफ़ से तरह-तरह के अज़ाब देखकर समझेगा कि अब मैं मरा, अब मरा। मगर वहां मौत न होगी कि मरकर ही पाप कट जाए और अज़ाब से रिहाई हो सके।

हमीमुन (खौलता हुआ पानी)

وَسُقُوا مَاءً حَمِيمًا فَقَطَّعَ أَمْعَاءَهُمْ

व सुक़ू माअन हमीमन फ़ क़ त अ़ अम् आअहुम। —मुहम्मद

'और दोज़ख़ियों को खौलता हुआ पानी पिलाया जाएगा तो उनकी आंतों के टुकड़े-टुकड़े कर डालेगा।

तआ़मुन ज़ी ग़ुस्सतिन (गले में अटकने वाला खाना)

إِنَّ لَدَيْنَا أَنكَالًا وَجَحِيمًا وَطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَعَذَابًا أَلِيمًا

इन्न न लदैना अन्कालौं व जहीमौं व तआ़मन ज़ा ग़ुस्सतिउं व

अज़ाबन अलीमा। —*सूरः मुज़्ज़म्मिल*

'बेशक (इन काफ़िरों के लिए) हमारे पास बेड़ियाँ और आग का ढ़ेर और गले में अटक जाने वाला खाना और दर्दनाक अज़ाब है।'

हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ फ़रमाते थे कि *'तआमुन ज़ा ग़ुस्सतिन'* एक कांटा होगा जो गले में अटक जाएगा। न बाहर निकलेगा, न नीचे उतरेगा। —तर्ग़ीब

हज़रत अबूदर्दा ﷺ रसूले ख़ुदा ﷺ से रिवयत फ़रमाते हैं कि आपने फ़रमाया : दोज़ख़ियों को (इतनी ज़बरदस्त) भूख लगा दी जाएगी जो अकेली ही उस अज़ाब के बराबर होगी जो उनके भूख के अलावा हो रहा होगा, इसलिए वे खाने के लिए फ़र्याद करेंगे। इस पर उनको ज़रीअ़ का खाना दिया जायेगा; जो न मोटा करे, न भूख दूर करे, फिर दोबारा खाना तलब करेंगे तो उनको *'तआमुन ज़ा ग़ुस्सतिन'* (गले में अटकने वाला खाना) दिया जाएगा जो गलों में अटक जाएगा। उसके उतारने के लिए उपाय सोचेंगे तो याद करेंगे कि दुनिया में पीने की चीज़ों को मांगते थे। चुनांचे खौलता हुआ पानी लोहे की संडासियों के ज़रिए उनके सामने कर दिया जायेगा। वे संडासियां जब उनके चेहरों के करीब होंगी तो उनके चेहरों को भून डालेंगी। फिर जब पानी पेटों में पहुंचेगा तो पेट के अन्दर की चीज़ों (यानी आंतों वग़ैरह) के टुकड़े-टुकड़े कर डालेगा। —मिश्कात

हज़रत अबू उमामा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने *'युस्क़ा मिम माइन सदीदीं य त जर्र उ हू'* पढ़कर फ़रमाया *'माइन सदीद'* (पीप का पानी) जब दोज़ख़ी के मुंह के क़रीब किया जाएगा तो वह उससे नफ़रत करेगा फिर और क़रीब किया जायेगा तो चेहरे को भून डालेगा और उसके सर की खाल गिर पड़ेगी। फिर जब उसे पियेगा तो अंतड़ियां काट डालेगा और आख़िर में पाख़ाना की जगह से बाहर निकल जायेगा। इसके बाद रसूले ख़ुदा ﷺ ने यह आयतें पढ़ीं।

अज़ाब के अलग-अलग तरीके

दोज़ख़ की आग और उसकी कड़ी गर्मी, सांप, बिच्छू, खाने-पीने की चीज़ें, अंधेरा यह सब कुछ अज़ाब ही होगा मगर यह जो कुछ अब तक ज़िक्र किया गया, दोज़ख़ के अज़ाब से थोड़-सा अलग है। क़ुरआन व हदीस से मालूम होता है कि इन तरीक़ों के अलावा और भी बहुत से तरीकों से अज़ाब दिया जाएगा जिनमें से कुछ नीचे लिखे जाते हैं :

सह्र (खौलता हुआ)

يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوْسِهِمُ الْحَمِيْمُ يُصْهَرُ بِهٖ مَافِيْ بُطُوْنِهِمْ وَالْجُلُوْدُ

युसब्बु मिन फ़ौक़ि रुऊसिहिमुल हमीम। युस्हरु बिही मा फ़ी बुतूनिहिम वल्जुलूद। —*सूरः हज*

'उनके सरों पर जलता-जलता पानी डला जाएगा जिसकी तेज़ी से उनके पेट में से और खाल में से सब कुछ गलकर बाहर निकल जाएगा।'

रसूले ख़ुदा ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बेशक खौलता हुआ पानी ज़रूर दोज़ख़ियों के सरों पर डाला जाएगा जो उनके पेट में पहुंचकर कर उन तमाम चीज़ों को काट देगा जो उनके पेटों के अंदर हैं और आख़िर में क़दमों से निकल जाएगा। इसके बाद फिर दोज़ख़ी को वैसा ही कर दिया जाएगा जैसा था। फिर इर्शाद फ़रमाया कि आयत में जो लफ़्ज़ 'युस्हरू' है उसका यही मतलब है। —तिर्मिज़ी, बैह्की

मक़ामिउ (गुर्ज़)

وَلَهُمْ مَّقَامِعُ مِنْ حَدِيْدٍ ۔ كُلَّمَآ اَرَادُوْٓا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ
اُعِيْدُوْا فِيْهَا وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۔ (حج)

व लहुम मक़ामिउ मिन हदीद। कुल्लमा अरादू ऐंयख़्रुजू मिन्हा

मिन ग़म्मिन उइदू फ़ीहा व ज़ूक़ू अज़ाबल हरीक़। —सूरः हज

'और दोज़ख़ियों (को मारने के लिए) लोहे के गुर्ज़ हैं। वे लोग जब भी दोज़ख़ की घुटन से निकलना चाहेंगे, फिर उसी में धकेल दिए जाएंगे और उनसे कहा जाएगा कि जलने का अज़ाब चखते रहें।'

रसूले ख़ुदा ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि (दोज़ख़ का) लोहे का एक गुर्ज़ ज़मीन पर रख दिया जाए तो अगर उसको तमाम जिन्न और इंसान मिलकर उठाना चाहें तो नहीं उठा सकते। —अहमद, अबू याला

और एक रिवायत में है कि जहन्नम के लोहे का गुर्ज़ अगर पहाड़ पर मार दिया जाए तो वह यक़ीनी तौर पर रेज़ा-रेज़ा[1] होकर राख हो जाएगा। —तर्ग़ीब

खाल पलट दी जाएगी

كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُوْدُهُمْ بَدَّلْنٰهُمْ جُلُوْدًا غَيْرَهَا لِيَذُوْقُوا الْعَذَابَ (نساء)

कुल्लमा नज़िजत जुलूदुहुम बद्दलनाहुम जुलूदन ग़ैरहा लियज़ूक़ुल अज़ाब।

'जब एक बार उनकी खाल जल चुकेगी तो हम उसकी जगह दूसरी नयी खाल पैदा कर देंगे ताकि अज़ाब चखते ही रहें।'

हज़रत हसन बसरी (रह०) से नक़ल किया है कि दोज़ख़ियों को हर दिन सत्तर हज़ार बार आग जलायेगी। हर बार जब आग जलायेगी तो कहा जायेगा- जैसे थे वैसे ही हो जाओ। चुनांचे वे हर बार वैसे ही हो जायेंगे। —तर्ग़ीब व तर्हीब

1. कण-कण

अलग-अलग सज़ाएं

इल्म छिपाने वाले की सज़ा

रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया : जिससे कोई इल्म की बात पूछी गयी और उसने जानते हुए (न बतायी बल्कि) उसको छिपा लिया तो उसके मुंह में आग की लगाम लगायी जाएगी। —मिश्कात शरीफ़

शराब या नशे वाली चीज़ पीने वाले की सज़ा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : मेरे रब ने क़सम खाई है कि मुझे अपनी इज़्ज़त की क़सम है, मेरे बन्दों में से जो भी बन्दा शराब का कोई घूंट पियेगा तो उसको उतनी ही पीप पिलाऊंगा और बन्दा मेरे डर से शराब छोड़ेगा, उसको पाक-साफ़ हौज़ों से पिलाऊंगा। —अहमद

मुस्लिम शरीफ़ की एक रिवायत में है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया ख़ुदा ने अपने ज़िम्मे यह अहद कर लिया है कि जो कोई नशेदार चीज़ पीएगा क़ियामत के दिन ज़रूर उसको 'तीनतुल ख़बाल' में से पिलायेगा। सहाबा ﷺ ने अर्ज़ किया 'तीनतुल ख़बाल' क्या है? इर्शाद फ़रमाया : दोज़ख़ियों का पसीना या दोज़ख़ियों के जिस्मों का निचोड़। —मिश्कात

हज़रत अबू मूसा अश्अ़री ﷺ से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया : जिसकी आ़दत शराब पीने की थी और वह इसी हाल में मर गया तो अल्लाह तआ़ला उसको 'नहरुल ग़ोता' से पिलाएंगे। अ़र्ज़ किया गया 'नहरुल ग़ोता' किया है? इर्शाद फ़रमाया : एक नहर है जो ज़िना कराने वाली औ़रतों की शर्मगाहों से जारी होगी। —अहमद व इब्ने हब्बान

बेअ़मल वाइज़ों की सज़ा

रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया है कि जिस रात मुझको मे'राज करायी गई, मैंने ऐसे लोग देखे जिनके होंठ आग की क़ैंचियों से काटे जा रहे थे।

मैंने पूछा : ऐ जिब्रील ﷺ! ये कौन लोग हैं? उनहोंने कहा : ये आपकी उम्मत को वे वाइज़[1] हैं जो लोगों की भलाई का हुक्म करते हैं और अपने आप को भूल जाते हैं और अल्लाह की किताब पढ़ते हैं लेकिन अ़मल नहीं करते। —मिश्कात शरीफ़

बुख़ारी और मुस्लिम में है कि रसूले खुदा ﷺ ने फ़रमाया : क़ियामत के दिन एक शख़्स को लाया जायेगा फिर उसको दोज़ख़ में फेंक दिया जाएगा। उसकी अंतड़ियां आग में जल्दी से निकल पड़ेंगी फिर वह उसमें इस तरह घूमेगा जिस तरह गधा चक्की को लेकर घूमता है। उसका हाल देखकर दोज़ख़ी उसके पास जमा हो जाएंगे और उससे कहेंगे कि ऐ फ़लां! तुझे क्या हुआ है? क्या तू हमको भलाई का हुक्म न करता था और बुराई से न रोकता था वह कहेगा हां तुमको भलाई का हुक्म करता था मगर खुद न करता था और तुमको बुराई से रोकता था, मगर उसको ख़ुद करता था।

सोने-चांदी के बर्तन इस्तेमाल करने वालों की सज़ा

रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया : जिसने सोने या चांदी के बर्तन में या किसी ऐसे बर्तन में कुछ खाया-पिया, जिसमें सोने या चांदी का हिस्सा हो वह अपने पेट में दोज़ख़ की आग भरता है। —दारे क़ित्नी

फ़ोटोग्राफ़र की सज़ा

रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया है कि अल्लाह के नज़दीक सबसे सख़्त अ़ज़ाब तस्वीर बनाने वालों पर होगा। —बुख़ारी व मुस्लिम

और इर्शाद फ़रमाया कि तस्वीर बनाने वाला दोज़ख़ में होगा। उसकी बनाई हुई तस्वीर के बदले एक जान बना दी जाएगी जो उसको दोज़ख़ में अ़ज़ाब देगी। —बुख़ारी व मुस्लिम

इस रिवायत के बाद हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ ने फ़रमाया अगर तुझे बनानी ही है तो पेड़ और बेजान चीज़ की तस्वीर बना ले। —मिश्कात

1. वाज़ व नसीहत करने वाले

खुदकुशी[1] करने वाले की सज़ा

रसुले खुदा ﷺ ने फ़रमाया : जिसने पहाड़ से गिरकर खुदकुशी कर ली तो वह दोज़ख़ की आग में होगा। उसमें हमेशा[2] (चढ़ता और गिरता) रहेगा और जिसने ज़हर पीकर खुदकुशी कर ली तो उसका ज़हर उसके हाथ में होगा जिसको दोज़ख़ की आग में हमेशा-हमेशा पीता रहेगा और जिसने किसी लोहे की चीज़ से खुदकुशी कर ली तो उसकी वह लोहे की चीज़ उसके हाथ में होगी जिस को हमेशा दोज़ख़ की आग में अपने पेट में घोंपता रहेगा।
—बुख़ारी

घमंडी की सज़ा

रसूले खुदा ﷺ ने फ़रमाया : घमंड करने वाले चूंटियों के बराबर जिस्मों में उठाये जाएंगे जिनकी शक्लें इंसानों की होंगी। फिर फ़रमाया : हर तरफ़ से उनको ज़िल्लत घेर लेगी। (फिर फ़रमाया) वे दोज़ख़ के जेलख़ाने की तरफ़ इसी तरह हंकाये जाएंगे। इस जेलख़ाने का नाम बोल्स है। उनपर आगों को जलाने वाली आग चढ़ी होगी और उनको 'तीनतुल ख़बाल' यानी दोज़ख़ियों के जिस्मों का निचोड़ पिलाया जाएगा। —मिश्कात शरीफ़

तिर्मिज़ी शरीफ़ की एक रिवायत में है कि बेशक जहन्नम में एक वादी है जिसको 'हब-हब' कहा जाता है उसमें हर जब्बार (सरकश) रहेगा।

दिखावटी आबिदों की सज़ा

रसूले खुदा ﷺ ने फ़रमाया : जुब्बुल हुज़्न (ग़म के कुएं) से पनाह मांगो। सहाबा ﷺ ने अर्ज़ किया कि जुब्बुल हुज़्न क्या है? इर्शाद फ़रमाया : दोज़ख़ में एक गढ़ा है जिससे हर दिन खुद दोज़ख़ चार सौ बार पनाह चाहता है।

---

1. आत्म-हत्या
2. यह काफ़िर के मुतअल्लिक़ है। मुसलमान ख़ुदकुशी करने वाला ख़ुदकुशी की सज़ा पूरी कर लेने के बाद दूसरे गुनाहगार मुसलमानों की तरह जन्नत में दाख़िल हो जाएगा।

अ़र्ज़ किया गया इसमें कौन जाएगा? फ़रमाया : अपने आ़माल का दिखलावा करने वाले आ़बिद (इबादत करने वाले) जाएंगे। —तिर्मिज़ी शरीफ़

इब्ने माजा की रिवायत में यह भी है कि इसके बाद आप ﷺ ने फ़रमाया कि बेशक अल्लाह के नज़दीक सबसे बदतरीन इबादतगुज़ारों में वह भी हैं जो (ज़ालिम) अमीरों (सरदारों) के पास जाते हैं यानी उनकी ख़ुशामद और चापलूसी के लिए। —मिश्कात शरीफ़

सऊद (आग का एक पहाड़)

क़ुरआन शरीफ़ में हैं :

स उर्हिक़ुहू सऊदा। —*मुद्दस्सिर*

'बहुत जल्द मैं उसको सऊद पर चढ़ाऊंगा (जो दोज़ख़ में आग का पहाड़ है)'

रसूले ख़ुदा ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि 'सऊद' आग का एक पहाड़ है जिस पर दोज़ख़ी को सत्तर साल तक चढ़ाया जाएगा फिर सत्तर साल तक ऊपर से गिराया जाएगा यानी 70 साल तक तो वह ऊपर चढ़ा था अब सत्तर साल तक गिरते-गिरते नीचे पहुंचेगा और हमेशा उसके साथ ऐसा ही होता रहेगा। —तिर्मिज़ी

सिलसिलः (बहुत लंबी ज़ंजीर)

क़ुरआन शरीफ़ में है :

خُذُوْهُ فَغُلُّوْهُ ثُمَّ الْجَحِيْمَ صَلُّوْهُ ثُمَّ فِيْ سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُوْنَ ذِرَاعًا
فَاسْلُكُوْهُ

ख़ुज़ूहु फ़ ग़ुल्लूहु। सुम्मल जही म सल्लूह। सुम्म म फ़ी सिलसिल तिन ज़रउहा ज़िराअ़न फ़स्लुकूह। —*अल-हाक़्क़ः*

'(फ़रिश्तों को हुक्म होगा कि) उसको पकड़ो फिर उसको तौक़ पहना

दो फिर दोज़ख़ में दाख़िल कर दो फिर ऐसी ज़ंजीर में जकड़ दो जिसकी नाप सत्तर गज़ है।

हज़रत हकीमुल उम्मत क़ुद्दुस सिर्रहू ब्यानुल क़ुरआन में लिखते हैं कि उस गज़ की मिक़दार ख़ुदा को मालूम है क्योंकि यह गज़ वहां का होगा। रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : अगर रांग का एक टुकड़ा ज़मीन की तरफ़ आसमान से छोड़ दिया जाए तो रात के आने से पहले ज़मीन तक पहुंच जाए जो पांच सौ साल की दूरी है और अगर वह टुकड़ा दोज़ख़ी की ज़ंजीर के सिरे से छोड़ा जाए तो दूसरे तक पहुंचने से पहले चालीस साल तक चलता रहेगा।

—तिर्मिज़ी शरीफ़

इससे मालूम हुआ कि दोज़ख़ियों के जकड़ने की ज़ंजीरे आसमान और ज़मीन के बीच की दूरी से भी लंबी होंगी।

हज़रत इब्ने अब्बास رضي الله عنه फ़रमाते थे कि ये ज़ंज़ीरें उसके जिस्म में पिरो दी जाएंगी। पाख़ाने के रास्ते से डाली जाएंगी; फिर उसे आग में इस तरह भूना जाएगा जैसे सीख़ में कबाब और तेल में टिड्डी भूनी जाती है। —इब्ने कसीर

तौक़

अल्लाह जल्ल ल शानुहू का इर्शाद है :

إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَٰفِرِينَ سَلَٰسِلَا وَأَغْلَٰلًا وَسَعِيرًا (دهر)

इन्ना अअ्तदना लिलकाफ़िरी न सलासि ल अग़्लालौं व सईरा।

—सूरः दह

'और हमने काफ़िरों के लिए ज़ंजीरें, तौक़ और धधकती आग तैयार कर रखी है।'

सूरः मोमिन में है :

فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ إِذِ الْأَغْلَٰلُ فِيٓ أَعْنَٰقِهِمْ وَالسَّلَٰسِلُ يُسْحَبُونَ فِي الْحَمِيمِ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُونَ (مومن)

फ़ सौ फ़ यअ्लमू न इज़िल अग्लालु फ़ी अअ्नाक़िहिम वस्सलासिल। युस्हबू न फ़िल हमीम। सुम्म म फ़िन्नारि युस्जरून।

'उनको अभी मालूम हो जाएगा जबकि तौक़ उनकी गरदनों में होंगे और (उन तौक़ों में) ज़ंजीरें (पिरोयी हुई होंगी और इस तरह वह) घसीटते हुए गर्म पानी में ले जाए जाएं फिर आग में झोंक दिए जाएंगे।'

इब्ने अबी हातिम की एक मर्फ़ूअ् हदीस में है कि एक तरफ़ से काला बादल उठेगा जिसे दोज़ख़ी देखेंगे। उनसे पूछा जाएगा तुम क्या चाहते हो? वह दुनिया पर सोच करके कहेंगे हम यह चाहते हैं कि बादल बरसे! चुनांचे उसमें से तौक़ और ज़ंजीर और आग के अंगारे बरसने लगेंगे; जिनके शोले उन्हें जलायेंगे और उनके तौक़ों व ज़ंजीरों में और बढ़ोतरी हो जाएगी।

—इब्ने कसीर

जिस खौलते पानी में दोज़ख़ी डाले जाएंगे उसके मुतअल्लिक़ हज़रत क़तादा ﷺ फ़रमाते हैं कि गुनाहगार के बाल पकड़ कर उस पानी में ग़ोता दिया जाएगा तो उसका तमाम गोश्त गल कर गिर जाएगा और हड्डियों के ढांचे और दो आंखों के सिवा कुछ न बचेगा।

गंधक के कपड़े

सूरः इब्राहीम में इर्शाद है :

سَرَابِيلُهُمْ مِّنْ قَطِرَانٍ وَّتَغْشٰى وُجُوهَهُمُ النَّارُ

सराबीलुहुम मिन क़ति रानिउँ व तग़्शा वुजू ह हुमुन्नार।

'उनके कुर्ते गंधक के होंगे और उनके चेहरों पर आग लिपटी हुई होगी।'

फ़ायदा : हज़रत हकीमुल उम्मत (रह०)लिखते हैं कि चीड़ के तेल को क़तिरान कहते हैं (जिसका तर्जुमा गंधक किया गया है) और उसके कुर्ते का मतलब यह है कि सारे बदन को क़तिरान लिपटी

होगी ताकी उसमें जल्दी और तेज़ी के साथ आग लग सके।

—ब्यानुल क़ुरआन

हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ फ़रमाते थे कि 'कतिरान' पिघले हुए तांबे को कहते हैं। इस तांबे के दोज़खियों के कपड़े होंगे जो सख़्त ग़र्म आग-जैसे होंगे।

—इब्ने कसीर

मुस्लिम शरीफ़ में आया है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया :

मैयत पर चीख़-पुकार करके रोने वाली औ़रत अगर मौत से पहले तौबा न करेगी तो क़ियामत के दिन इसमें खड़ी की जाएगी कि उसका एक कुर्ता क़तिरान (गंधक[1] या पिघले हुए तांबे) का होगा और ख़ुजली का होगा यानी उसके जिस्म पर ख़ारिश (खुजली) पैदा कर दी जाएगी और ऊपर से क़तिरान लपेट दिया जाएगा। सूरः हज में इर्शाद है :

فَالَّذِينَ كَفَرُوا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّن نَّارٍ

फ़ल्लज़ी न क फ़ रू क़ूत्तिअ़त लहुम सियाबुम मिन्नार।

'सो जो लोग काफ़िर थे उनके (पहनने के लिए) आग में कपड़े तराशे जाएंगे।'

दोज़ख़ के दारोग़ों के तअ़्ने

तरह-तरह की जिस्मानी तकलीफ़ों और अलग-अलग क़िस्म के अ़ज़ाब के तरीक़ों के अलावा एक बड़ी रूहानी तकलीफ़ दोज़ख़ियों को यह पहुंचेगी कि दोज़ख़ के दारोग़े उनको तानें देंगे जिसको क़ुरआन हकीम में अलग-अलग अन्दाज़ में ब्यान किया गया है। चुनांचे सूरः अलिफ़-लाम-मीम-सज्दा में इर्शाद है :

1. अगर क़तिरान से मुराद गंधक ही है तो गंधक इसलिए न होगी कि खुजली को आराम हो जाए बल्कि इसलिए ताकि जिस्म पर और ज़्यादा जलन हो क्योंकि खुजली में गंधक लगाने से बहुत जलन होती है (वल्लाहु तआ़ला अअ़्लम)।

وَقِيلَ لَهُمْ ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ۔

व क़ी ल लहुम ज़ूक़ू अज़ाबन्नारल्लज़ी कुन्तुम बिही तुकज़्ज़िबून।

'और उनसे कहा जाएगा अब चखो इस आग का अज़ाब जिसको तुम झुठलाते थे।'

सूरः अहक़ाफ़ में है :

اَذْهَبْتُمْ طَيِّبٰتِكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا، فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُوْنَ۔ (احقاف)

अज़् हब्तुम तैयिबातिकुम फ़ी हयातिकुमुद्दुन्या वस्तमतअ्तुम बिहा। फ़ल यौ म तुज्ज़ौ न अज़ाबल हूनि बिमा कुन्तुम तस्तक्बिरू न फ़िल अर्ज़ि बिग़ैरिल हक़्क़ि व बिमा कुन्तुम तफ़्सुक़ून —सूरः अहक़ाफ़

'तुमने दुनिया की ज़िंदगी में अपने मज़े पूरे कर लिए। उन्हें तो हासिल कर चुके (अब ज़रा संभल जाओ, क्योंकि) आज तुम ज़िल्लत के अज़ाब की सज़ा पाओगे, अपनी उस अकड़ के बदले कि तुम ख़्वाह-म-ख़्वाह ज़मीन में बड़े बनते थे और ख़ुदा की नाफ़र्मानी करते थे।'

हज़रत ज़ैद बिन असलम ؓ फ़रमाते हैं कि एक बार हज़रत उमर ؓ ने पानी तलब फ़रमाया : चुनांचे आप की ख़िदमत में शहद में मिलाया हुआ पानी पेश किया गया तो आप ने नहीं पिया और फ़रमाया यह है तो बहुत अच्छा मगर नहीं पियूंगा क्योंकि मैं क़ुरआन शरीफ़ में पढ़ता हूं कि अल्लाह तआला ने ख़्वाहिश पर अमल करने वालों की निंदा करते हुए फ़रमाया है कि उनसे आख़िरत में कहा जाएगा कि तुमने दुनिया की ज़िंदगी में मज़े उड़ाये इसलिए मैं डरता हूं। कहीं ऐसा न हो कि हमारी नेकी के बदले में दुनिया ही में लज़्ज़तें मिल जाएं। —मिश्कात

(2) दोज़ख़ियों के हालात

दोज़ख़ में जाने वालों की तादाद

रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला हज़रत आदम عليه السلام को ख़िताब करके फ़रमायेंगे ऐ आदम! वह अर्ज़ करेंगे :

لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ وَالْخَيْرُ كُلُّهُ فِي يَدَيْكَ

लब्बैक व सअ़्दैक वल ख़ैरु कुल्लुहू फ़ी यदैक

यानी, 'में हाज़ीर हूं और हुक्म का ताबेअ़ हूं और सारी बेहतरी आप ही के हाथ में है। अल्लाह जल्ल ल शानुहू फ़रमायेंगे (अपनी औलाद में से) दोज़ख़ी निकाल दो। वह अ़र्ज़ करेंगे : दोज़ख़ी कितने हैं? इर्शाद होगा हर हज़ार में 999 हैं। यह सुनकर औलाद आदम सख़्त परेशान होगी और (रंज व ग़म की वजह से) उस वक़्त बच्चे बूढ़े हो जाएंगे और हामिला औरतों का हमल गिर जायगा और लोग बदहवास हो जाएंगे और हक़ीक़त में बेहोश न होंगे लेकिन अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त होगा (जिसकी वजह से बदहवासी होगी)। --मिश्कात

यह सुनकर हज़रत सहाबा رضي الله عنهم ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह ﷺ वह एक जन्नती हम में से कौन-कौन होगा? आप ﷺ ने फ़रमाया कि (घबराओ नहीं) ख़ुश हो जाओ; क्योंकि यह तादाद इस तरह है कि एक तुम में से और हज़ार याजूज माजूज में से हैं।

मतलब यह है कि याजूज माजूज की तादाद बहुत ज़्यादा है, अगर तुम में और उनमें मुक़ाबला हो तो तुम में से एक शख़्स के मुक़ाबले में याजूज-माजूज एक हज़ार आएंगे और चूंकि वे भी आदम ही की नस्ल से हैं, उनको मिलाकर हर फ़ी हज़ार 999 दोज़ख़ में जाएंगे।

दोज़ख़ में ज़्यादा औरतें होंगी

रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया कि मैंने जन्नत में नज़र डाली तो अक्सर बेपैसे वाले देखे और मैंने दोज़ख़ में नज़र डाली तो अक्सर औरतें देखीं।

—मिश्कात

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा ﷺ एक बार ईद या बक़रईद की नमाज़ के लिए ईदगाह तशरीफ़ ले जा रहे थे। रास्ते में औरतों में गुज़र हुआ तो आप ﷺ ने (उनको ख़िताब करके) फ़रमाया ऐ औरतो! सदक़ा किया करो, क्योंकि मैंने दोज़ख़ियों में ज़्यादातर औरतें देखी हैं। औरतों नें अ़र्ज़ किया, क्यों? आप ﷺ ने फ़रमाया कि लानत[1] बहुत करती हो और शौहर की नाशुक्री करती हो। —बुख़ारी व मुस्लिम

दोज़ख़ियों की बदसूरती

وَالَّذِينَ كَسَبُوا السَّيِّاٰتِ جَزَآءُ سَيِّئَةٍ بِمِثْلِهَا وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ مَالَهُمْ
مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ، كَاَنَّمَا اُغْشِيَتْ وُجُوْهُهُمْ قِطَعًا مِّنَ الَّيْلِ مُظْلِمًا

वल्लज़ी न क स बुस्सैयिआति जज़ाउ सैयिअतिम बिमिस्लिहा व तर्हक़ुहुम ज़िल्लः। मा लहुम मिनल्लाहि मिन आ़सिम। क अन्न मा उग़्शियत वुजूहुहुम क़ितअ़म मिनल्लैलि मुज़्लिमा। —सूरः यूनुस

'और जिन लोगों ने बुरे काम किये बदी की सज़ा उस बुराई के बराबर मिलेगी और उन पर ज़िल्लत छा जाएगी। उनको अल्लाह (के अ़ज़ाब) से कोई न बचा सकेगा (उनकी बदसूरती का यह हाल होगा कि) गोया उनके चेहरों पर अंधेरी रात के परत के परत लपेट दिये गये हैं।'

---

1. लानत का मतलब है अल्लाह की रहमत से दूर होना। आपका मतलब यह था कि औरतें चूंकि अक्सर दूसरी औरतों पर लानत करती रहती हैं, इस वजह से वे ख़ुद ही अल्लाह की रहमत से दूर होती रहती हैं और रहमत से दूर होने का मतलब ही दोज़ख़ में जाना है।

इस आयत से मालूम हुआ कि दोज़ख़ियों के चेहरे बेहद स्याह होंगे। हदीस शरीफ़ में आया है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ ने फ़रमाया : अगर दोज़ख़ियों में से कोई शख़्स दुनिया की तरफ़ निकाल दिया जाए तो उसकी जंगली सूरत के मंज़र और बदबू की वजह से दुनिया वाले ज़रूर मर जाऐंगे। इसके बाद हज़रत अ़ब्दुल्लाह ﷺ बहुत रोये। —तर्गीब

सूरः मूमिनून में है :

تَلْفَحُ وُجُوْهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيْهَا كٰلِحُوْنَ۝ (مومنون)

तलफ़हु वुजू ह हुमुन्नारु व हुम फ़ीहा कालिहून। —*मूमिनून*

'आग उनके चेहरों को झुलसाती होगी और उसमें उनके मुहँ बिगड़े होंगे।'

रसूले ख़ुदा ﷺ ने 'कालिहून' की तफ़्सीर फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया कि दोज़ख़ी को आग जलायेगी जिसकी वजह से उसका ऊपर का होंट सिकुड़ कर बीच सर तक पहुंच जाएगा और नीचे का होंठ लटक कर नाफ़ तक पहुंच जाएगा। —तिर्मिज़ी शरीफ़

दोज़ख़ियों के आंसू

हज़रत अनस ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने हज़रात सहाबा ﷺ से फ़रमाया ऐ लोगो! रोओ और रो न सको तो रोने की सूरत बनाओ क्योंकि दोज़ख़ी दोज़ख़ में इतना रोयेंगे कि उनके आंसू उनके चेहरों पर नालियां सी बना देंगे। रोते-रोते आंसू निकलने बंद हो जाएंगे तो ख़ून बहने लगेंगे जिसकी वजह से आँखें ज़ख़्मी हो जाएंगी (मतलब यह कि आंसू और ख़ून की इतनी ज़्यादती होगी कि) अगर उनमें किश्तियां छोड़ दी जाएं तो वे भी चलने लगें। —शर्हुस्सुन्नः

दोज़ख़ियों की ज़ुबान

रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया, बेशक काफ़िर अपनी ज़ुबान एक फ़र्सख़[1] और दो फ़र्सख़ तक खींच कर बाहर निकाल देगा जिस पर लोग चलकर जाएंगे। —तर्ग़ीब व तर्हीब

दोज़ख़ियों के जिस्म

रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया दोज़ख़ में काफ़िर के दोनों मोढों के दर्मियान का हिस्सा तीन दिन के रास्ते के बराबर लम्बा होगा जबकि कोई तेज़ रफ़्तार सवार चलकर जाए और काफ़िर की दाढ़ उहद पहाड़ के बराबर होगी और उसकी खाल की मोटाई तीन दिन के रास्ते के बराबर होगी।

—मुस्लिम शरीफ़

तिर्मिज़ी की एक रिवायत में है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया काफ़िर की दाढ़ क़ियामत के दिन उहुद पहाड़ के बराबर होगी और उसकी रान बैज़ा पहाड़ के बराबर होगी और दोज़ख़ में उसके बैठने की जगह तीन दिन के रास्ते के बराबर लम्बी-चौड़ी होगी जितनी दूर मदीना से रिबज़ा गांव है।

—मिश्कात

और एक रिवायत में है कि दोज़ख़ियों के बैठने की जगह इतनी लम्बी होगी जितनी मक्का और मदीना के दर्मियान का फ़ासला है। —मिश्कात शरीफ़

फ़ायदा : कुछ रिवायतों में है कि काफ़िर की खाल की मोटाई 42 हाथ होगी और मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत में गुज़र चुका है कि तीन दिन की दूरी के बराबर होगी मगर कोई यह मुश्किल बात नहीं क्योंकि मुख़्तलिफ़ काफ़िरों को मुख़्तलिफ़ सज़ाएं होंगी। किसी को कम, किसी को ज़्यादा।

कुछ रिवायतों में है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया मेरी उम्मत के कुछ

---

1. एक फ़र्सख़ तीन मील का होता है। मालूम हुआ कि काफ़िर की ज़ुबान इतनी लम्बी हो जाएगी।

लोग दोज़ख़ में इतने बड़े कर दिए जाएंगे कि एक ही आदमी दोज़ख़ के पूरे एक कोने को भर देगा। —तर्ग़ीब व तर्हीब

हज़रत मुजाहिद (रह०) फ़रमाते हैं कि मुझसे हज़रत इब्ने अ़ब्बास ؓ ने फ़रमाया : क्या तुम जानते हो, दोज़ख़ कितना चौड़ा है? मैंने कहा : नहीं। फ़रमाया, हां! ख़ुदा की क़सम! ख़ुदा की क़सम!! तुम नहीं जानते, बेशक दोज़ख़ी के कान की लौ और मोंढे के दर्मियान सत्तर साल चलने का रास्ता होगा जिसमें ख़ून और पीप की वादियां (नाले) जारी होंगी। —तर्ग़ीब

पुलसिरात से गुज़र कर दोज़ख़ में गिरना

दोज़ख़ की पीठ पर पुल क़ायम किया जायगा जिसको 'पुलसिरात' कहते हैं। तमाम नेक और बद लोगों को उसपर होकर गुज़रना होगा।

क़ुरआन हकीम में इर्शाद है :

وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ۝

व इम मिन्कुम इल्ला वारिदुहा। का न अ़ला रब्बि क हत्मम मक़्ज़ीय्या। —*सूरः मरयम*

'और तुम में ऐसा कोई भी नहीं, जिसका इस दोज़ख़ पर गुज़र न हो (क़ियामत के दिन)'।

रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया है कि दोज़ख़ की पीठ पर पुलसिरात क़ायम किया जाएगा और मैं नबियों में सबसे पहले अपनी उम्मत को लेकर उसपर से गुज़रूंगा और उस दिन सिर्फ़ रसूल ही बोलेंगे और उनका कलाम (बोल) सिर्फ़ यह होगा :

अल्लाहुम्म म सल्लिम सल्लिम।

'ऐ अल्लाह! सलामत रख, सलामत रख'।

फिर फ़रमाया कि जहन्नम में सादान[1] के कांटों की तरह मुड़ी हुई कीलें

1. एक कांटेदार पेड़ का नाम है जिसके कांटे बड़े-बड़े होते हैं।

हैं जिन की बड़ाई अल्लाह ही को मालूम है। वे कीलें पुलसिरात पर चलने वालों को बद-आ'मालियों की वजह से घसीट कर दोज़ख़ में गिराने की कोशिश करेंगी, जिसके नतीजे में कुछ हलाक होकर (दोज़ख़ में) गिर जाएंगे (और कभी भी न निकल सकेंगे, ये काफ़िर होंगे) और कुछ कट-कटाकर दोज़ख़ में गिरेंगे और फिर निजात पा जाएंगे (यह फ़ासिक़ होंगे)।

दूसरी रिवायत में है कि कुछ मोमिन पलक झपकते में गुज़र जाएंगे और कुछ बिजली की तरह जल्दी से गुज़र जाएंगे। और कुछ हवा की तरह और कुछ तेज़ घोड़ों और ऊंटों की तरह। इन रफ़्तारों में कुछ सलामती के साथ निजात पा जाएंगे और कुछ (कीलों से) छिल-छिलाकर छूट जाएंगे और कुछ दोज़ख़ में औंधे धकेल दिए जाएंगे। —बुख़ारी व मुस्लिम

हज़रत कअ़ब ﷺ फ़रमाते थे कि जहन्नम अपनी पीठ पर तमाम लोगों को जमा लेगा। जब सब नेक व बद जमा हो जाएंगे तो अल्लाह तआ़ला का इर्शाद होगा कि तू अपनों को पकड़ ले, जन्नतियों को छोड़ दे। चुनांचे जहन्नम बुरों को निवाला कर जाएगा जिनको वह इस तरह पहचानता होगा जैसे तुम अपनी औलाद को पहचानते हो बल्कि उससे भी ज़्यादा।

—इब्ने कसीर

हासिल[1] यह है कि जन्नत वाले पार होकर जन्नत में पहुंच जाएंगे जिनके लिए जन्नत के दरवाज़े पहले से खुले हुए होंगे और दोज़ख़ी दोज़ख़ में झोंक दिए जाएंगे जिसको अल्लाह जल्ल ल शानुहू ने यह ब्यान फ़रमाया है :

ثُمَّ نُنَجِّى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّنَذَرُ الظّٰلِمِيْنَ فِيْهَا جِثِيًّا

सुम्म म नुनज्जिल्लज़ी नत्तक़ौ व न ज़ रुज़्ज़ालिमी न फ़ीहा जिसीय्या। —*सूरः मरयम*

'फिर हम उनको निजात देंगे जो डरा करते थे और ज़ालिमों को उस (दोज़ख़) में ऐसी हालत में रहने देंगे कि घुटनों के बल गिर पड़ेंगे।'

1. ख़ुलासा, सार

दाख़िले की सूरत

क़ुरआन शरीफ़ की आयतों में दोज़ख़ियों के दाख़िले की सूरत कई जगह ब्यान की गयी हैं जिनमें यह भी है कि दोज़ख़ी प्यास की हालत में जहन्नम रसीद किये जाएंगे और दोज़ख़ में जाने से पहले दरवाज़े पर खड़ा करके उनसे फ़रिश्ते सवाल व जवाब भी करेंगे। नीचे की आयतों से ये मज़्मून खूब साफ़ समझ में आते हैं :

وَنَسُوْقُ الْمُجْرِمِيْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا (مريم)

व नसूक़ुल मुज्रिमी न इला जहन्न न म विर्दा —सूरः मरयम

'और हम मुज्रिमों को दोज़ख़ की तरफ़ प्यासा हांकेंगे।'

يَوْمَ يُسْحَبُوْنَ فِي النَّارِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ ذُوْقُوْا مَسَّ سَقَرَ

यौ म युस्हबू न फ़िन्नारि अला वुजूहिहिम ज़ूक़ू मस्स स सक़र।
—सूरः कमर

'जिस दिन मुज्रिम मुंह के बल जहन्नम में घसीटें जाएंगे, तो उनसे कहा जाएगा कि दोज़ख़ की आग का मज़ा चखो।'

فَكُبْكِبُوْا فِيْهَا هُمْ وَالْغَاوٗنَ وَجُنُوْدُ اِبْلِيْسَ اَجْمَعُوْنَ

फ़कुब्किबू फ़ीहा हुम वल् ग़ाऊन। व जुनूदु इब्ली स अज्मऊन ।
—सूरः शुअ्रा

'फिर वे और गुमराह लोग और इबलीस का लश्कर सबके सब दोज़ख़ में औंधे मुंह डाल दिए जाएंगे।'

يُعْرَفُ الْمُجْرِمُوْنَ بِسِيْمٰهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِيْ وَالْاَقْدَامِ

युअ्रफ़ुल मुज्रिमू न बिसीमाहुम फ युअ्ख़ज़ु बिन्नवासी वल्

अक़्दाम। *—सूरः रहमान*

'मुज्रिम लोग अपने हुलिए से पहचाने जाएंगे। (क्योंकि उनके चेहरे स्याह और आखें नीली होंगी), फिर उनके सर के बाल और पांव पकड़ लिए जाएंगे (और उनको घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जायेगा)।'

तर्ग़ीब व तर्हीब में हज़रत इब्ने अब्बास ؓ का क़ौल इस आयत की तफ़सीर में नक़ल किया गया है कि मुज्रिम के हाथ और पैर मोड़कर इकट्ठे कर दिए जऐंगे। फिर लकड़ियों की तरह तोड़-मरोड़ दिया जाएगा (और जहन्नम में झोंक दिया जाएगा)।

اُحْشُرُوا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا وَاَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ۝ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَاهْدُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطِ الْجَحِيْمِ۝ وَقِفُوْهُمْ اِنَّهُمْ مَّسْئُوْلُوْنَ مَالَكُمْ لَاتَنَاصَرُوْنَ بَلْ هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُوْنَ۝

उहशुरुल्लज़ी न ज़ ल मू व अज़्वा जहुम वमा कानू यअ़्बुदून। मिन दूनिल्लाहि फ़हदूहुम इला सिरातिल जहीम। व क़िफ़ूहुम इन्ननहुम मस्उलून। मा लकुम ला तना सरून। बल हुमुल यौ म मस्तस्लिमून। *—साफ़्फ़ात*

'(फ़रिश्तों को हुक्म होगा कि) जमा कर लो ज़ालिमों को और उनके जोड़ों को और उनके माबूदों को, जिनको वे लोग खुदा को छोड़कर पूजा करते थे, फिर इन सबको दोज़ख़ का रास्ता दिखाओ। (और फिर हुक्म होगा अच्छा ज़रा) ठहराओ, उनसे सवाल किया जाएगा (चुनांचे यह सवाल होगा) कि अब तुम को क्या हुआ, एक दूसरे की मदद नहीं करते। (इस पर भी वे एक दूसरे की कुछ मदद न करेंगे) बल्कि सब के सब सर झुकाये खड़े रहेंगे।'

يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوْهُهُمْ فِى النَّارِ يَقُوْلُوْنَ يٰلَيْتَنَآ اَطَعْنَا اللّٰهَ وَاَطَعْنَا الرَّسُوْلَا۝ (احزاب)

यौ म तुक़ल्लबु वुजू हुहुम फ़िन्नारि यक़ूलू न यालैतना अ तअ्-नल्ला ह व अ तअ्नर्रसूला। —सूरः अहज़ाब

'जिस दिन उनके चेहरे दोजख़ में उलट-पलट किये जाएंगे, वे यों कहते होंगे ऐ काश! हमने अल्लाह की इताअ़त की होती और हमने रसूल की इताअ़त की होती।'

दोज़ख़ वालों से शैतान का ख़िताब

इधर तो दोज़ख़ी शैतान पर पछताते होंगे और अल्लाह की ओर से ऊपर के ख़िताब के ज़रिये उन पर डांट पड़ेगी। उधर शैतान इस तक़रीर से उनको लताड़ेगा :

وَقَالَ الشَّيْطَانُ لَمَّا قُضِيَ الْاَمْرُ اِنَّ اللّٰهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُّكُمْ فَاَخْلَفْتُكُمْ وَمَا كَانَ لِيَ عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّا اَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِيْ فَلَا تَلُوْمُوْنِيْ وَلُوْمُوْآ اَنْفُسَكُمْ مَآاَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ اِنِّيْ كَفَرْتُ بِمَآ اَشْرَكْتُمُوْنِ مِنْ قَبْلُ ○ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ (ابراهيم)

व कालश्शैतानु लम्मा क़ुज़ियल अम्रु इन्नल्ला ह व अ़ द कुम वअ़्दल हक़्क़ि व वअ़त्तुकुम फ अख़्लफ़्तुकुम। वमा का न लि य अ़लैकुम मिन सुल्तानिन इल्ला अन् दअ़ौतुकुम फ़स्तजब्तुम ली फ़ला तलूमूनी व लूमू अन्फ़ुसकुम। मा अना बिमुस्रिख़िकुम व मा अन्तुम बिमुस्रिख़ी य। इन्नी कफ़र्तु बिमा अश्रक्तुमूनि मिन क़ब्ल। इन्नज़्ज़ालिमी न लहुम अ़ज़ाबुन अलीम। —सूरः इब्राहीम

'और (क़ियामत के दिन) जब सब मुक़दमे फ़ैसला हो चुकेंगे तो शैतान कहेगा (मुझे बुरा-भला कहना नाहक़ है, क्योंकि) बिला शुब्हा अल्लाह ने तुमसे सच्चे वायदे किये थे और मैंने भी कुछ वादे किये थे सो मैंने वे वादे ख़िलाफ़ किये थे और तुम पर मेरा इससे ज़्यादा ज़ोर न चलता था कि मैंने

तुमको (गुमराही की) दावत दी। सो तुमने (खुद ही) मेरा कहना मान लिया। तुम मुझ पर मलामत मत करो और अपने आप को मलामत करो। न मैं तुम्हारा मददगार हूं और न तुम मेरे मददगार हो। मैं तुम्हारे इस काम से खुद बेज़ार हूं कि तुम इससे पहले (दुनिया में) मुझे (खुदा का) शरीक क़रार देते थे। यक़ीनन ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अज़ाब है।'

दोज़ख़ियों को वाक़ई बड़ी हसरत होगी जबकि शैतान अपना अलगाव ज़ाहिर करेगा और हर क़िस्म की मदद और तसल्ली से अलग हो जाएगा। उस वक़्त दोज़ख़ियों के ग़ुस्से की जो हालत होगी, ज़ाहिर है।

गुमराह करने वालों पर दोज़ख़ियों का ग़ुस्सा

जो लोग गुमराह करने वाले थे उन पर दोज़ख़ियों को ग़ुस्सा आयेगा और उनसे कहेंगे :

إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ أَنْتُمْ مُغْنُونَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ

(ابراهيم)

इन्ना कुन्ना लकुम त ब अ़न फ़हल अन्तुम मुग्नू न अ़न्ना मिन अ़ज़ाबिल्लाहि मिन शैई। —इब्राहीम

'हम तुम्हारे ताबे थे तो क्या तुम ख़ुदा के अज़ाब का कुछ हिस्सा हम से हटा सकते हो?'

वे जवाब देंगे :

لَوْ هَدَانَا اللَّهُ لَهَدَيْنَاكُمْ سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَجَزِعْنَا أَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَحِيصٍ ○

(ابراهيم)

लौ हदानल्लाहु ल हदैनाकुम सवाउन अ़लैना अ ज ज़िअ़्ना अम सबर्ना मा लना मिम् महीस। —इब्राहीम

'(तुम्हें क्या बचाएं हम तो ख़ुद ही नहीं बच सकते) अगर अल्लाह हमको बचने की कोई राह बताता तो तुमको भी वह राह बता देते। हम

सबके हक़ में दोनों शक्लें बराबर हैं। चाहे हम परेशान हों, चाहे ज़ब्त करें। हमारे बचने की कोई शक्ल नहीं।'

वह लोग ग़ुस्से और जलन से भर कर गुमराह करने वालों के बारे में अल्लाह के दरबार में अ़र्ज़ करेंगे। सूरः हामीम सज्दा में है :

رَبَّنَا أَرِنَا الَّذَيْنِ أَضَلَّانَا مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ أَقْدَامِنَا لِيَكُونَا مِنَ الْأَسْفَلِينَ ۝

रब्बना अरिनाल्लज़ै नि अज़ल्ललाना मिनल जिन्नि वल इंसि नज्-अ़लहुमा तह् त अक़्दामिना लियकूना मिनल अस्फ़लीन।

'ऐ हमारे परवरदिगार! हमें वह शैतान और इंसान दिखा दे जिन्होंने हमें गुमराह किया; हम उनके पैरों के नीचे कुचल डालेंगे ताकि वे ख़ूब ज़लील हों'

दोज़ख़ के दारोग़ों और मालिक से अ़र्ज़-मारूज़

दोज़ख़ी अ़ज़ाब से परेशान होकर अ़र्ज़-मारूज़ का सिलसिला शुरू करेंगे कि :

ادْعُوا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ (مومن)

उद्ऊ रब्बकुम युख़फ़्फ़िफ़ अ़न्ना यौमम मिनल अ़ज़ाब।

—सूरः मोमिन

'तुम ही अपने पालनहार से दुआ़ करो कि एक दिन तो हम से अ़ज़ाब हल्का कर दे।'

वे जवाब देंगे :

أَوَلَمْ تَكُ تَأْتِيكُمْ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ (مومن)

अ व लम तकु तअ्तीकुम रुसुलुकुम बिलबैयिनात।

—सूरः मोमिन

'क्या तुम्हारे पास तुम्हारे पैग़म्बर मुअ्जिज़े लेकर नहीं आते रहे थे (और दोज़ख़ से बचने का तरीक़ा नहीं बतलाया था?)

इसपर दोज़ख़ी जवाब देंगे कि *'बला'* यानी 'हाँ' आते तो थे लेकिन हमने उनका कहना न माना। फ़रिश्ते जवाब में कहेंगे :

فَادْعُوْا وَمَادُعٰٓؤُا الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِىْ ضَلٰلٍ (مومن)

फ़द्ऊ व मा दुआउल काफ़िरी न इल्ला फ़ी ज़लाल। (सूरः मोमिन)

'तो फिर (हम तुम्हारे लिए नहीं कर सकते तुम ही दुआ कर लो और वह भी बेनतीजा होगी) क्योंकि काफ़िरों की दुआ (आख़िरत में) बिल्कुल बेअसर है।'

इसके बाद मालिक यानी दोज़ख़ के अफ़्सर के दरबार में दर्ख़्वास्त पेश करके कहेंगे :

يٰمٰلِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ

या मालिकु लियक़्ज़ि अलैना रब्बुक।

यानी ऐ मालिक! (तुम ही दुआ करो कि) तुम्हारा परवरदिगार (हमको मौत देकर) हमारा काम तमाम कर दे।'

वे जवाब देंगे :

اِنَّكُمْ مّٰكِثُوْنَ

इन्ननकुम माकिसून।

'तुम हमेशा इस हाल में रहोगे (न निकलोगे, न मरोगे)।

हज़रत आ'मश (रह०) फ़रमाते थे कि मुझे रिवायत पहुंची है कि मालिक (अलै०) के जवाब और दोज़ख़ियों की दर्ख़्वास्त में हज़ार वर्ष की मुद्दत का फ़ासला होगा।

इसके बाद कहेंगे कि आओ अपने रब से सीधे-सीधे दर्ख़्वास्त करें

और उससे दुआ करें क्योंकि उससे बढ़कर कोई नहीं है। चुनाचें अर्ज़ करेंगे:

رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَالِّينَ، رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظَالِمُونَ (مومنون)

रब्बना ग़ ल बत अ़लैना शिक़्वतुना व कुन्ना क़ौमन ज़ाल्लीन। रब्बना अख़्रिज्ना फ़इन्नउद्ना फ़ इन्ना ज़ालिमून। —सूरः मोमिनून

'ऐ हमारे रब! (वाक़ई) हमारी बदबख़्ती ने हमको घेर लिया था और हम गुमराह हो गये थे। ऐ हमारे रब! हमको इससे निकाल दीजिए फिर हम अगर दोबारा (ऐसा) करें तो हम बेशक क़ुसूरवार हैं।

अल्लाह तआ़ला जवाब में फ़रमायेंगे :

इख़्सऊ फ़ीहा वला तुकल्लिमून।

'इसी में फिटकारे हुए पड़े रहो और मुझसे बात न करो।'

हज़रत अबूदर्दा ﷺ फ़रमाते थे कि अल्लाह जल्ल ल शानुहु के इस इर्शाद पर हर क़िस्म की भलाई से नाउम्मीद हो जाएंगे और गधों की तरह चीख़ने-चिल्लाने और हसरत व दुख़ में लग जाएंगे। —मिश्कात शरीफ़

इब्ने कसीर में है कि उनके चेहरे बदल जाएंगे; शक्लें बिगड़ जाएंगी; यहां तक कि कुछ मोमिन शिफ़ाअ़त लेकर आयेंगे लेकिन दोज़ख़ियों में से किसी को पहचानेंगे नहीं। दोज़ख़ी उनको देखकर कहेंगे कि मैं फ़्लां हूं मगर वे कहेंगे कि ग़लत कहते हो हम तुमको नहीं पहचानते। 'इख़्सऊ फ़ीहा' के जवाब के बाद दोज़ख़ के दरवाज़े बंद कर दिए जाएंगे और वे उसी में सड़ते रहेंगे।

दोज़ख़ियों की चीख़-पुकार

सूरः हूद में अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है :

فَأَمَّا الَّذِينَ شَقُوا فَفِي النَّارِ لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ وَشَهِيقٌ، خَالِدِينَ فِيهَا

फ़ अम्मल्लज़ी न शक़ू फ़ फ़िन्नारि लहुम फ़ीहा ज़फ़ीरुं व शहीक़ुन ख़ालिदी न फ़ीहा।

'जो लोग शक़ी (बदबख़्त) हैं वे दोज़ख़ में इस हाल में होंगे कि गधों की तरह चिल्लाते होंगे।'

क़ामूस में है कि 'जफ़ीर' गधे की आवाज़ को कहते हैं और 'शहीक़' उसकी आख़िरी आवाज़ को कहते हैं।

दोज़ख़ के अज़ाब से छुटकारे के लिए फ़िद्या देना गवारा होगा

अल्लाह जल्ल ल शानुहू का इर्शाद है :

وَلَوْ اَنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَافِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّ مِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ مِنْ سُوْٓءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۔ (زمر)

व लौ अन्न न लिल्लज़ी न ज़ ल मू मा फ़िल अर्ज़ि जमीऔं व मिस्लहू म अ हू लफ़्तदौ बिही मिन सूइल अ़ज़ाबि यौमल क़ियामः ।

'और अगर ज़ुल्म (यानी शिर्क व कुफ़्र) करने वालों के पास दुनिया भर की तमाम चीज़ें हों और इन चीजों के साथ और भी इतनी चीज़ें हों तो लोग क़ियामत के दिन सख़्त अ़ज़ाब से छूट जाने के लिए (बेझिझक) उन सबको देने लगें।'

सूरः मआरिज में इर्शाद है कि 'उस दिन मुज्रिम यह तमन्ना करेगा कि आज के अ़ज़ाब से छूट जाने के लिए अपने बेटों को और अपनी बीवी को और भाई को और कुन्बे को जिनमें वह रहता था और तमाम ज़मीन की चीजों को अपने बदले में दे दे और फिर यह बदला उसको बचा ले।'

लेकिन वहां न तो माल होगा; न कोई किसी के बदले में आना मंज़ूर करेगा और मान लो, ऐसा हो भी जाए, तो मंज़ूर न किया जाएगा। जैसा कि सूरः माईदा में ज़िक्र है :

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لِيَفْتَدُوْا بِهٖ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَاتُقُبِّلَ مِنْهُمْ، وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ۔

इन्नल्लज़ी न क फ़ रू लौ अन्न न लहुम मा फ़िल अर्ज़ि जमी औं

व मिस्लहू म अ हू लियफ़्तदू बिही मिन अज़ाबि यौमिल क़ियामति मा तुक़ुब्बि ल मिन्हुम। व लहुम अज़ाबुन अलीम।

'यक़ीनन जो लोग काफ़िर हैं अगर उनके पास तमाम दुनिया की चीज़ें हों और उतनी चीज़ों के साथ उतनी ही चीज़ें और भी हों ताकि वे उनको देकर क़ियामत के दिन अज़ाब से छूट जाएं तब भी ये चीज़ें उनसे हरगिज़ क़ुबूल न की जाएंगी और उनको दर्दनाक अज़ाब होगा।'

जन्नतियों का हँसना

क़ुरआन हकीम में फ़रमाया गया है कि जन्नती दोज़ख़ियों के हाल पर हंसेंगे। सूरः मुतफ़्फ़िफ़ीन में है :

فَالْيَوْمَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُوْنَ، عَلَى الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ

फ़ल यौ मल्लज़ी न आ मनू मिनल कुफ़्फ़ारि यज़्हकून। अ़लल अराइकि यन्ज़ुरून।

'आज ईमान वाले काफ़िरों पर हंसते होंगे, मुसहरियों पर बैठ उनका हाल देख रहे होंगे।'

तफ़सीर दुर्रे मंसूर में हज़रत क़तादा (रजि०) से रिवायत है कि जन्नत में कुछ दरीचे और झरोखे ऐसे होंगे जिनसे जन्नत वाले दोज़ख़ वालों को देख सकेंगे और उनका बुरा हाल देखकर 'बदले के तौर पर' उन पर हंसेंगे जैसा कि दुनिया में मोमिनों को देखकर ख़ुदा के मुज्रिम हँसते थे और कनखियों के इशारों से उनका मज़ाक़ उड़ाते थे और घरों में बैठकर भी दिल्लगी के तौर पर ईमान वालों का ज़िक्र करते थे।

اِنَّ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا كَانُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَضْحَكُوْنَ

इन्नल्लज़ी न अज्रमू कानू मिनल्लज़ी न आमनू यज़्हकून[1]

1. अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल ने फ़रमाया : 'बेशक मुज्रिम मोमिनों का मज़ाक़ उड़ाया करते थे।'

सूरः मुअ्मिनून में है कि दोज़ख़ियों से अल्लाह तआ़ला शानुहू का इर्शाद होगा कि मेरे बंदों में एक गिरोह (ईमान वालों का) था जो (हम से) अ़र्ज़ किया करते थे कि, 'हमारे परवरदिगार! हम ईमान ले आये सो हमको बख़्श दीजिए और हम पर रहमत फ़रमाइए और आप सब रहम करने वालों से बढ़कर रहम करने वाले हैं।' तुमने उनका मज़ाक़ बना रखा था और यहां तक तुम उनका मज़ाक़ बनाने में मश्ग़ूल रहे कि उनके मश्ग़ले ने तुमको मेरी याद भी भुला दी। आज मैंने उनको उनके सब्र का बदला यह दिया कि वही कामयाब हुए।

सोचने की बात

दोज़ख़ और दोज़ख़ियों के हालात अब तक आपने पढ़े हैं। यह इसलिए नहीं लिखे गये कि सरसरी नज़र से पढ़कर किताब अलमारी के सुपुर्द कर दी जाए और दोज़ख़ और दोज़ख़ियों के हालात को पढ़कर दूसरे क़िस्सों और कहानियों की तरह भुला दिया जाए।

हक़ीक़त यह है कि पिछले वाक़िए और हालात जो ब्यान किए गये हैं चूंकि क़ुरआन की आयतों और नबी ﷺ की हदीसों का तर्जुमा है इसलिए बिला शक सही और वाक़ई हैं। अगर इनको बार-बार पढ़ा जाए और अपनी बद-आ'मालियों पर नज़र डाली जाए तो सख़्त दिल वाला इंसान भी अपनी ज़िंदगी को बहुत आसानी से पलट सकता है और अपने नफ़्स को दोज़ख़ के हालात समझाकर नेकियों के रास्ते पर डाल सकता है। बशर्ते कि अल्लाह और उसके रसूल ﷺ को सच्चा समझता हो और उनके बताये हुए दोज़ख़ के हालात को सही और वाक़ई मानता हो। मोमिन बंदे हमेशा अपनी ज़िंदगी का हिसाब करते रहते हैं और अल्लाह तआ़ला शानुहू के दरबार में दोज़ख़ से पनाह में रहने की दुआ़ करते रहते हैं भला हो सकता है कि जो शख़्स इन हालात को सही समझता हो, वह अपनी ज़िंदगी को दुनिया की लज़्ज़तों और फ़िना हो जाने वाली इज़्ज़त और दौलत के हासिल करने में गंवा दे। रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया है कि दोज़ख़ लज़्ज़तों में छिपा है, जन्नत नागवारियों में छुपा दी गई है। —बुख़ारी व मुस्लिम

यानी लज़्ज़तों में पड़कर ज़िंदगी गुज़ारने वाले वे काम कर रहे हैं जिनके पर्दे में दोज़ख़ है और नफ़्स को नागवारियों में फंसाकर अच्छे अ़मल करने वाले वह काम कर रहे हैं जिनके पर्दे में जन्नत है। आह! उन लोगों को जहन्नम के हालात का पता ही नहीं जो ख़ुदकुशी करके यह समझते हैं कि मुसीबत से छुटकारा हो जाएगा और जो दुनिया की सख़्ती और मशक़्क़त से घबराकर यों कह देते हैं क्या ख़ुदा के यहां मेरे लिए दोज़ख़ में भी जगह नहीं है।

हक़ीक़त यह है कि अगर दोज़ख़ की आग, उनके बिच्छू, आग के कपड़े, अ़ज़ाब के तरीक़े, दोज़ख़ की ख़ुराक वग़ैरह का ध्यान रहे तो म्युनिसिपैलिटी और एसंबलियों की क़ुर्सियों के एज़ाज़ हासिल करने वाले, रुपया जमा करने और बिल्डिंग व जायदाद बनाने वाले हरगिज़-हरगिज़ उन चीजों में पड़कर और बड़े-बड़े गुनाहों में मुब्तला होकर अपनी आख़रत ख़राब नहीं कर सकते।

भला जिसे दोज़ख़ की भूख की ख़बर हो, वह रोज़ा छोड़ा सकता है? और दोज़ख़ की बेचैनी को जानता हो, वह ज़रा-सी नींद और फ़ानी आराम के लिए नमाज़ बर्बाद कर सकता है? और जो दोज़ख़ के सांप, बिच्छुओं के डसने की जलन की ख़बर रखता हो, वह यों कह सकता है कि दाढ़ी रख़ने से ख़ुजली होती है? जिन्हें 'जुब्बुल हुज़्न' की ख़बर हो, वे दिखावे की इबादत कैसे कर सकते हैं और जिसको तस्वीर बनाने का अंजाम मालूम हो, वे तस्वीर बना सकते हैं? जिनको यह यक़ीन हो कि शराब पीने की सज़ा में दोज़ख़ियों के जिस्मों का धोवन या निचोड़ पीना पड़ेगा, वे शराब के पास जा सकते हैं? हरगिज़ नहीं, हरगिज़ नहीं।

हक़ीकत यह है कि जन्नत और दोज़ख़ के हालात सिर्फ़ ज़ुबानों तक ही महदूद (सीमित) रह गये हैं और यक़ीन के दर्ज़े में नहीं रहे, वरन् बड़े गुनाह तो दूर की बात, छोटे गुनाहों के पास जाना भी सोचा नहीं जा सकता। हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वज्ह फ़रमाते थे कि अगर जन्नत और दोज़ख़ मेरे सामने रख दिए जाएं तो मेरे यक़ीन में ज़रा-भी बढ़ोतरी नहीं होगी यानी मेरा

ग़ैब पर ईमान इतना मज़बूत है कि आंखों से देखकर भी उतना ही मेरा यक़ीन हो सकता है जितना बग़ैर देखे है। जिनको दोज़ख़ के हालात की ख़बर हो, वे गुनाह तो क्या करते इस दुनिया में न हँसते, न खुशी मनाते।

अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब में एक रिवायत नक़ल की है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने हज़रत जिब्रील عليه السلام से दर्याफ़्त फ़रमाया कि क्या बात है, मैंने मीकाईल को हँसते हुए नहीं देखा? अर्ज़ किया---- जबसे दोज़ख़ की पैदाइश हुई है, मीकाईल नहीं हँसे।

सही मुस्लिम की एक रिवायत में है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने एक मर्तबा, इर्शाद फ़रमाया कि उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अगर तुमने वह मंज़र देखा होता जो मैंने देखा है, तो तुम ज़रूर कम हँसते और ज़्यादा रोते! सहाबा رضي الله عنهم ने अर्ज़ किया, आपने क्या देखा? इर्शाद फ़रमाया मैंने जन्नत और दोज़ख़ देखे।

हज़रत इब्ने मस्ऊद رضي الله عنه फ़रमाते थे मुझे तअज्जुब है कि लोग हँसते हैं, हालांकि उनको दोज़ख़ से बचने का यक़ीन नहीं है। हज़रत अबू सईद رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा ﷺ एक बार (मकान से) बाहर तशरीफ़ लाये और देखा कि लोग खिलखिला कर हँस रहे हैं। यह देखकर आप ﷺ ने फ़रमाया कि अगर तुम लज़्ज़तों को ख़त्म कर देने वाली चीज़ (यानि मौत) को कसरत से याद करते तो तुम्हें इसकी फ़ुर्सत नहीं मिलती; जिस हाल में तुमको देख रहा हूँ। --मिश्कात शरीफ़

ग़रज़ यह कि होशियार वही है, जो अपनी आख़िरत की ज़िंदगी बनाये और दो-चार दिनों के माल व दौलत, इज़्ज़त व आबरु, ओहदा व हुकूमत के फंदों में पड़कर अपनी जान को दोज़ख़ के हवाले न करे, जब अज़ाब में फंसेगा तो पछताने और

يٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ مَآ اَغْنٰى عَنِّىْ مَالِيَهْ هَلَكَ عَنِّىْ سُلْطٰنِيَهْ

(الحاقة)

या लै तहा कानतिल क़ाज़ियः मा अग़्ना मालियः ह ल क अन्नी सुल्तानियः।
—*अल-हाक्क़:*

'हाय काश! वह मौत ही ख़त्म कर देती, मेरे काम कुछ न आया मेरा माल, जाती रही मेरी हुकूमत। कहने और हाथ मलने से कुछ हासिल न होगा। जन्नत-जैसी आराम की जगह की तलब से लापरवाही और दोज़ख़ जैसे बेमिसाल अज़ाब के घर से बचने की चिंता से ग़फ़लत बेअक़्लों ही का काम हो सकता है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया है कि जन्नत को तलब करो जितना तुमसे हो सके और दोज़ख़ से भागो जितना तुमसे हो सके। क्योंकि जन्नत का तलबगार और दोज़ख़ से भागने वाला (लापरवाही की नींद) सो नहीं सकता। —अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब

हज़रत यह्या बिन मुंकदिर जब रोते थे तो आंसूओं को अपने मुंह और दाढ़ी से पोंछते थे और इसकी वजह यह बताते थे कि मुझे यह रिवायत पहुंची है कि उसे जगह जहन्नम की आग न पहुंचेगी जहां आंसू पहुंचे होंगे।

एक अंसारी ने तहज्जुद की नमाज पढ़ी और बैठकर बहुत रोये और कहते रहे कि जहन्नम की आग के बारे में अल्लाह ही से फ़रियाद करता हूँ। उनका हाल देखकर रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया कि आज तुमने फ़रिश्तों को रुला दिया।

हज़रत ज़ैनुलआबिदीन رضي الله عنه एक मर्तबा नमाज़ पढ़ रहे थे कि घर में आग लग गई, मगर आप नमाज़ में मश्ग़ूल रहे। लोगों ने पूछा कि आपको ख़बर न हुई? फ़रमाया कि दुनिया की आग से आख़िरत की आग ने ग़ाफ़िल रखा।

एक साहब का क़िस्सा है कि रात को सोने के लिए बिस्तर पर जाते और सोने की कोशिश करते, मगर नींद न आती थी इसलिए उठकर नमाज़ शुरू कर देते थे और अल्लाह के दरबार में अर्ज़ करते थे कि ऐ अल्लाह! आपको मालूम है कि जहन्नम की आग के ख़ौफ़ ने मेरी नींद उड़ा दी। फिर सुबह तक नमाज़ में मश्ग़ूल रहते।

हज़रत अबू यज़ीद (रह०) हर वक़्त रोते रहते थे। इसकी वजह पूछी गई तो फ़रमाया कि अगर ख़ुदा का यों इर्शाद हो कि गुनाह करोगे तो हमेशा के लिए हम्माम (ग़ुस्लख़ाना) में क़ैद किये जाओगे तो उसके डर से मेरे आंसू हरगिज़ न रुकेंगे। फिर जबकि गुनाह करने पर दोज़ख़ से डराया जिसकी आग तीन हज़ार साल तक गर्म की गयी है तो मेरे आंसू कैसे रुकें?

फ़अ्तबिरू या उलिल अब्सार।

ख़ातमा

दोज़ख़ से बचने की कुछ दुआयें

1. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ फ़रमाते हैं कि आँहज़रत ﷺ जिस तरह सहाबा को क़ुरआन की सूरः सिखाते थे, उसी तरह यह दुआ़ सिखाते थे :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ (ترغيب عن مسلم)

अल्लाहुम्म म इन्नी अऊज़ुबि क मिन अ़ज़ाबि जहन्नम व अऊ ज़ुबि क मिन अ़ज़ाबिल क़ब्रि व अऊज़ुबि क मिन फ़ित्नतिल मसीहिद्दज्जालि व अऊज़ुबि क मिन फ़ित्नतिल महूया वल ममात।

2. हज़रत अनस ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा ﷺ अकसर यह दुआ़ फ़रमाते थे :

رَبَّنَا اٰتِنَا فِی الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

(بخاری)

रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या ह स न तौं व फ़िल आख़िरति ह स न तौं व क़िना अ़ज़ाबन्नार। —*बुख़ारी*

3. हज़रत रसूले ख़ुदा ﷺ ने एक सहाबी 'मुस्लिम' को बतलाया था कि मग़्रिब की नमाज़ से फ़ारिग़ होकर किसी से बात करने से पहले सात मर्तबा

اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِیْ مِنَ النَّارِ

अल्लाहुम्म म अजिर्नी मिनन्नार

कहा करो। अगर इसको कह लोगे और उसी रात मर जाओगे तो दोज़ख़ से तुम्हारी ख़लासी कर दी जाएगी और जब सुबह को नमाज़ पढ़ चुको और उसको इसी तरह (सात मर्तबा किसी से बोलने से पहले) कह लोगे और उसी दिन मर जाओगे तो दोज़ख़ से तुम्हारी ख़लासी ज़रूर कर दी जाएगी। —अबूदाऊद शरीफ़

4. रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया है जो शख़्स तीन बार ख़ुदा से जन्नत का सवाल करे तो जन्नत उसके लिए ख़ुदा से दुआ करती है कि

اَللّٰهُمَّ اَدْخِلْهُ الْجَنَّةَ

अल्लाहुम्म म अद्ख़िलहुल जन्नः

'ऐ अल्लाह! इसको जन्नत में दाख़िल कर दे।'

और जो आदमी तीन बार दोज़ख़ से पनाह चाहे तो दोज़ख़ उसके लिए ख़ुदा से दुआ करती है कि—

اَللّٰهُمَّ اَجِرْهُ مِنَ النَّارِ

अल्लाहुम्म म अजिर्हु मिनन्नार

'ऐ अल्लाह! इसको दोज़ख़ से बचा। —तर्ग़ीब

आख़िरी बात

अब मैं इस रिसाले को ख़त्म करता हूँ। सबक़ लेने वाली आँख रखने वालों के लिए थोड़ी भी बहुत है और ग़ाफ़िलों के लिए बड़-बड़े दफ़्तर भी कुछ नहीं।

पढ़ने वालों से दर्ख़्वास्त है कि मुहताज व मिस्कीन के हक़ मे दुआ फ़रमायें कि अल्लाह अपनी रहमत से दुनिया व आख़िरत के तमाम अज़ाबों और तकलीफ़ों से बचाये रखें और जन्नतुल फ़िर्दौस नसीब फ़रमायें।

मेरे वालिद मोहतरम सूफ़ी मुहम्मद सिद्दीक़ साहब ज़ैद मजदहुम को भी दुआ-ए-ख़ैर से याद फ़रमायें जिनकी कोशिश से मैं क़ुरआन करीम की आयतें जमा करने और नबी ﷺ की हदीसों को चुनने के लायक़ हुआ।

جَزَاهُ اللّٰهُ عَنِّیْ جَزَاء خیر فی هذه الدار وفی تلك الدار واحشرنی
وایاه مع المتقین الابرار۔ آمین

जज़ाहुल्लाहु अ़न्नी जज़ाअ् ख़ैरिन फ़ी हाज़िहिद्दारि व फ़ी तिल्कद्-दारि वहशुर्नी व इय्याहु मअ़ल मुत्तक़ीनल अब्रार। (आमीन)

واخرِ دعوانا ان الحمد للّٰہ رب العالمین والصلوۃ والسلام علی
خالقه سیدنا محمدن الشفیع الامة یوم الدین وعلیٰ اله وصحبه
هداة الدین المتین

व आख़िरुदअ़्वाना अनिलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन वस्सलातु वस्सलामु अ़ला ख़ल्क़िहि सैयिदिना मुहम्मदि-निश्शफ़िइल उम्मति यौमिद्दीन व अ़ला आलिही व सहबिही हुदातद्दीनिल मतीन।

मैदाने हश्र

मौलाना मुहम्मद आशिक़ इलाही बुलन्दशहरी (रह०)

www.idaraimpex.com

मैदाने हश्र

Maidane Hashr

मौलाना मुहम्मद आशिक इलाही बुलन्दशहरी (रह०)

प्रकाशन : 2014

ISBN 81-7101-480-1

TP-308-14

Published by Mohammad Yunus for

IDARA IMPEX

D-80, Abul Fazal Enclave-I, Jamia Nagar
New Delhi-110 025 (India)
Tel.: +91-11-2695 6832 & 085888 33786
Fax: +91-11-6617 3545 Email: **info@idara.in**
Online Store: **www.idarastore.com**

Retail Shop: **IDARA IMPEX**
Shop 6, Nizamia Complex, Gali Gadrian, Hazrat Nizamuddin
New Delhi-110013 (India) Tel.: 085888 44786

विषय-सूची

मैदाने हश्र

मैदाने हश्र

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम०

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ۔

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन। वस्सलातु वस्सलामु अला रसूलिही सैयदिना मुहम्मदिंव आलिही व अस्हाबिही अजमईन०। अम्मा बअ्द—

इस दुनिया में जो भी आया, हर एक ने इसको छोड़कर दूसरी दुनिया का रास्ता लिया यानी अपनी उम्र की सांस पूरी करके मौत की कठिन घाटी को तय करके बर्ज़ख़ में पहुंचा। बर्ज़ख़ में अज़ाब और तकलीफ़ें भी हैं और आराम व राहत भी है। अपने-अपने आमाल के एतबार से बर्ज़ख़ में अलग-अलग हालात से गुज़रना पड़ता है। दुनिया से जो आता है बर्ज़ख़ में जगह पाता है। ग़रज़ यह कि हर आने वाला जाएगा और—

सब ठाठ पड़ा रह जायेगा
जब लाद चलेगा बंजारा

जिस तरह इंसानों और जिन्नों की उम्रें मुक़र्रर हैं; उसी तरह दुनिया की उम्र भी मुक़र्रर है। जब इस दुनिया की उम्र पूरी होगी; अचानक उसके मज्मूए को मौत आ जाएगी। एक-एक आदमी के चले जाने को मौत और पूरी

दुनिया के ख़त्म हो जाने को क़ियामत कहते हैं। मौत और ज़िंदगी की हिक्मत ब्यान फ़रमाते हुए अल्लाह जल्ल ल शानुहू ने इर्शाद फ़रमाया है:

الَّذِیْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَیٰوةَ لِیَبْلُوَكُمْ اَیُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا

अल्लज़ी ख़ ल क़ल मौ त वल हया त लियब्लु व कुम ऐयुकुम अहसनु अ़ म ला०

'जिसने पैदा किया मौत को और ज़िंदगी को ताकि तुमको जांचा जाए कि तुम में कौन अच्छे काम करता है।'

यानि मौत व ज़िंदगी का यह सिलसिला इसलिए है कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारे आ़माल की जांच करे कि कौन बुरे काम करता है और कौन अच्छे काम करता है। और अच्छे से-अच्छे काम करने वाला कौन है? पहली ज़िंदगी में अ़मल का मौक़ा देकर और काम करने का तरीक़ा बताकर इंसान को इम्तिहान में डाला। फिर दूसरी ज़िंदगी रखी गयी। जिसका एलान पैग़म्बरों की ज़ुबानी साफ़ कर दिया गया कि ऐ इंसानो! तुमको मरना है और मरने के बाद जी उठना है और जी उठकर पैदा करने वाले व मालिक के हुज़ूर में जवाबदही करना है। सूरः मूमिनून में इंसान की पैदाइश के हालात ब्यान करने के बाद इर्शाद फ़रमाया :

ثُمَّ اِنَّكُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَیِّتُوْنَ○ ثُمَّ اِنَّكُمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ تُبْعَثُوْنَ

सुम्म म इन्नकुम बअ़् द ज़ालि क ल मैयितून। सुम्म म इन्नकुम यौमल क़ियामति तुब्अ़सून०

'फिर तुम इसके बाद मरोगे। फिर तुम क़ियामत के दिन खड़े किये जाओगे।'

यानी यह ज़िंदगी, ज़िंदगी नहीं है और जीती जागती मूरत और हंसती-बोलती तस्वीर। देखती-सुनती जान जो तुमको दी गई है, हमेशा न रहेगी, मौत की घाटी से गुज़र कर एक और ज़िंदगी पाओगे और अपनी उस प्यारी जान को लेकर अल्लाह के हुज़ूर में पेश होकर *'वुफ़्फ़ियत कुल्लु*

नफ़्सिम मा अमिलत' का मंज़र देखोगे।

आमाल का बदला मिलना ज़रूरी है, इस पर तमाम अक्ल वाले एक राय हैं। 'जैसी करनी वैसी भरनी' मशहूर मिस्ल है जो आम व ख़ास हर एक की ज़ुबान पर है। दुनिया में जो काम इंसान करते हैं, उनके फैसले क़ियामत के दिन होंगे। क़ुरआन मजीद में क़ियामत के दिन को *'यौमुद्दीन'* (बदले का दिन) और *'यौमुल फ़स्ल'* (फ़ैसले का दिन) और *'यौमुल हिसाब'* (हिसाब का दिन) फ़रमाया गया है। उस दिन रिश्तेदार काम न आयेंगे; ताक़त न चलेगी, बेकसी और बेबसी की दुनिया होगी, आमाल पेश होंगे। हर भलाई-बुराई सामने आयेगी। सूरः ज़िल्ज़ाल में फ़रमाया :

يَوْمَئِذٍ يَصْدُرُ النَّاسُ أَشْتَاتًا لِّيُرَوْا أَعْمَالَهُمْ فَمَن يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ
خَيْرًا يَرَهُ وَمَن يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ ط

यौ मइजिंय्यस्दुरुन्नासु अश्तातल्लि युरौ अअ्‌ मा ल हुम
फ़मैंयअ्‌मल मिस्क़ा ल ज़र्र तिन ख़ैरैंयरः व मैंयअ्‌मल मिस्क़ा
ल ज़र्रतिन शर्रैंयरः

'उस दिन अलग-अलग जमाअ़तों में हो जाएगें ताकि आमाल को देख लें सो जिसने ज़र्रा बराबर नेकी की, वह उसे देख लेगा और जिसने ज़र्रा बराबर बुराई की वह उसे देख लेगा।

अपने आप अकेले हाज़िरी होगी और पहले के और आख़िर के लोगों में से कोई छिपकर कहीं न जा सकेगा। अल्लाह का इर्शाद है :

لَقَدْ أَحْصَاهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا وَكُلُّهُمْ آتِيهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَرْدًا (سورئہ مریم)

ल क़ द अह्‌साहुम व अ़द्‌दहुम अ़द्दा व कुल्लुहुम आतीहि
यौमल क़ियामति फ़र्दा।

'उसके पास उनकी गिनती है और गिन रखी है उनकी गिनती। और क़ियामत के दिन इनमें से हर एक उसके सामने तंहा आयेगा।'

इंसानों ने जो काम दुनिया में किये थे, उनका अक्सर हिस्सा दुनिया में

ही भूल गये थे, फिर आख़िरत में तो क्या याद रखेंगे। लेकिन अल्लाह तआ़ला उनके तमाम आ़माल से इत्तिला फ़रमायेंगे। सूरः मुजादला में फ़रमाया :

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا اَحْصٰهُ اللّٰهُ وَنَسُوْهُ ط

यौ म यब्अ़सुहुमुल्लाहु जमीअ़न फ़ युनब्बिउहुम बिमा अ़मिलू अहसाहुल्लाहु व नसूह०

रहा यह सवाल कि नेकियों और बुराईयों का बदला क़ियामत के दिन पर उधार क्यों रखा है। मरते के साथ ही क़ब्र में क्यों फ़ैसला नहीं हो जाता तो इसका जवाब यह है कि अल्लाह तआ़ला हिकमत वाला और जानने वाला है। उनकी हिकमत चाहती है कि फ़ैसलों और बदलों के लिए क़ियामत के दिन का इंतिज़ार किया जाए। अल्लाह जल्ल ल शानुहू के इल्म में तो (ख़ुदा ही बेहतर जाने) कितनी मस्लहतें और हिकमतें होंगी। सरसरी नज़र में जो (मस्लहत) हमारी समझ में आती है, वह यह है कि इस दुनिया में इंसान का तअ़ल्लुक़ इंसान से भी है और इसके अ़लावा दूसरी मख़्लूक़ से भी है और इंसान को अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से हुक्म दिया गया है कि सारी मख़्लूक़ से अच्छा बर्ताव रखे और अच्छा व्यवहार करे। किसी पर जानी या माली ज़ुल्म न करे। मख़्लूक़ के मख़्लूक़ पर जो हक़ हैं, खुले तौर पर पाक शरीअ़त ने उनसे आगाह (सूचित) फ़रमा दिया है। फिर यह कि इंसान के ज़िम्मे न सिर्फ़ मख़्लूक़ के हक़ हैं बल्कि अल्लाह तआ़ला के हक़ भी हैं। उनकी तफ़्सील भी पाक शरीअ़त में मौजूद है उसके साथ दूसरी बात यह भी ज़ेहन में रख लीजिए कि नेक अ़मल और बुरे अ़मल दोनों की दो क़िस्में हैं; एक वे अ़मल कि जो अ़मल करते ही ख़त्म हो जाते हैं और उनको कर लेने के बाद इंसान अ़ज़ाब या सवाब का हक़दार हो जाता है। दूसरे वह अ़मल कि जो वुजूद में आते ही ख़त्म नहीं होते बल्कि उनका असर बराबर ज़्यादा-से-ज़्यादा सवाब या अ़ज़ाब का हक़दार होता चला जाता है, जैसे किसी शख़्स ने लिखकर या बोलकर तब्लीग़ (प्रचार) किया और उसके असर से दुनिया में नेकियां जारी हैं या किसी ने कुआं खुदवा दिया है या सराय बनवा दी है या और कोई ऐसा काम कर दिया है जिसका नफ़ा और

असर बराबर जारी है तो बहरहाल उसका सवाब भी चालू है। वह मर भी जाएगा तब भी उसका सवाब चालू रहेगा। इसके ख़िलाफ़ अगर किसी ने कोई गुनाह का काम चालू किया या किसी को गुनाह का रास्ता बता दिया या कोई ऐसी किताब लिख दी जो इंसानों को गुनाहों पर उभारती रहती है या और कोई ऐसा काम कर दिया जिसकी वजह से गुनाह बराबर जारी हैं तो बहरहाल उसके आमालनामे में गुनाह बढ़ते रहेंगे और ज़्यादा-से-ज़्यादा अज़ाब का हक़दार होता रहेगा। इससे यह भी साफ़ हो गया कि जिस तरह दुनिया में इंसान के आमाल का खाता बराबर लिखा जाता रहता है इसी तरह मरने के बाद भी उसके आमाल में (अच्छे हों या बुरे) बढ़ोतरी होती रहती है।

कहने का मतलब यह है किः—

जबकि क़ब्र (यानी बर्ज़ख़ की दुनिया) भी अमल का घर है और आख़िरत में जिन आमाल की वजह से अज़ाब या सवाब मिलता है; वह अब भी उसके आमालनामे में जारी हैं (चाहे उसने किये हों या वह उनके करने की वजह बन गया हो) कैसे दे दिया जाए और आख़िरी फ़ैसला किस तरह हो? फिर चूंकि बंदे के हक़ के फ़ैसले भी होना ज़रूरी हैं। इसलिए भी क़ियामत के दिन पर फ़ैसला रखा गया। क्योंकि बर्ज़ख़ की दुनिया में तमाम हक़दार मौजूद न होंगे। हर आदमी की मौत का वक़्त अलग-अलग है। बर्ज़ख़ की दुनिया में यह आज पहुंचा है और जिसने उसपर ज़ुल्म किया था वह दस वर्ष बाद वहां पहुंचेगा और जिन लोगों पर उसने ज़ुल्म किया है, वह बीस वर्ष बाद दुनिया से रुख़्सत होकर बर्ज़ख़ में जगह पाएंगे। इंसाफ़ का तक़ाज़ा है कि मुद्दई और मुद्दआअलैह दोनों मौजूद हों तब फ़ैसला किया जाए ताकि ग़ायबाना फ़ैसला करने पर मुद्दई यह एतराज़ न कर सके कि मेरा हक़ कम दिलाया गया और मुद्दआअलैह यों न कह सके कि मेरे ख़िलाफ़ डिग्री देना उस वक़्त सही होता जब कि मुद्दई मौजूद होता। क्या मुम्किन न था कि मुद्दई माफ़ कर देता।

इसलिए

हिकमत व मस्लहत का तक़ाज़ा यह हुआ कि एक ऐसी तारीख़

फ़ैसलों और बदलों के लिए मुक़र्रर कर दी जाए जिसमें सब हाज़िर हों और जिसमें हर क़िस्म के आमाल (चाहे ख़ुद किए हों या वास्ते के साथ बंदे के आमालनामे में लिखे गये हों) ख़त्म हो चुके हों ताकि सबके सामने फ़ैसला हो और पूरे आमाल का पूरा बदला दिया जाए। इसी तारीख़ को क़ियामत का दिन कहते हैं। क़ियामत के दिन यह दुनिया ख़त्म हो जाएगी और हर क़िस्म के अमल और अमल के सिलसिले ख़त्म हो जाएंगे और तमाम अगले व पिछले लोग ज़िंदा करके हाज़िर किये जाएंगे और उस दिन फ़ैसले होंगे और बदले मिलेंगे।

बाक़ि रहा यह सवाल कि इस दुनिया में क्यों फ़ैसले नहीं होते और बदले क्यों नहीं मिलते तो इसका जवाब यह है कि एक तो यह दुनिया अ़मल की जगह है इसमें इम्तिहान के लिए आते हैं। अ़मल की जगह अ़मल का बदला मिलने लगे तो ग़ैब पर ईमान न रहे और इम्तिहान का मक़सद बेकार हो जाए। फिर यह कि अ़मल बराबर जारी है। नेकियों से बहुत-से गुनाह (छोटे) माफ़ होते रहते हैं और तौबा करने का भी मौक़ा है। इसलिए यह मुनासिब और सही है कि इस ज़िंदगी के बाद दूसरी ज़िंदगी में फ़ैसले हों और बदले दिए जाएं। क़ियामत के दिन जब ख़त्म होगा और सबके फ़ैसले हो जाएंगे तो हर एक अपने-अपने अंजाम के मुताबिक़ दोज़ख़ में पहुंचेगा। वे गुनाहगार मोमिन जो बुरे आमाल की वजह से दोज़ख़ में जाएंगे। बाद में जब अल्लाह जल्ल ल शानुहू की मंशा होगी, दोज़ख़ से निकाल कर जन्नत में दाख़िल कर दिए जाएंगे। लेकिन जन्नत से निकाल कर किसी को किसी दूसरी जगह न भेजा जाएगा। क़ियामत के फ़ैसले के बाद जन्नत का फ़ैसला हो जाना ही सच्ची कामयाबी है। क़ुरआन शरीफ़ में है :

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ۖ وَإِنَّمَا تُوَفَّوْنَ أُجُورَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَمَنْ
زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعُ
الْغُرُورِ (آل عمران)

कुल्लु नफ़्सिन ज़ाइक़तुल मौत। व इन्नमा तुवफ़्फ़ौ न उजू रकुम यौमल क़ियामति फ़ मन ज़ुहज़ि ह अ़निन्नार। व

उद्ख़िलल जन्न न त फ़ क़द फ़ा ज़ व मल हयातुद्दुन्या
इल्ला मताउल ग़ुरूर० —आले इमरान

'हर जान मौत को चखने वाली है और तुमको पूरे बदले क़ियामत के दिन दिए जाएंगे। पस जो शख़्स दोज़ख़ से बचा लिया गया और जन्नत में दाख़िल कर दिया गया सो वह पूरा कामयाब हुआ और दुनिया की ज़िंदगी धोखे की पूंजी के सिवा कुछ भी नहीं है।'

इंसान के आमाल का बदला जो दोज़ख़ या जन्नत की शक्ल में मिलेगा और उसके आमाल के फ़ैसले जो क़ियामत के दिन होंगे, उनके हालात और तफ़सीलात क़ुरआन व हदीस में ख़ूब खोलकर ब्यान किये गये हैं। मुसलमानों के अलावा दूसरी क़ौमों में भी मरने के बाद अमल का बदला मिलने के बारे में कुछ बातें मिलती हैं लेकिन इनकी कोई सही बुनियाद नहीं जिसकी वजह यह है कि उन बातों को उन्होंने अपनी अटकल से तज्वीज़ कर लिए हैं जो अल्लाह तआला के रसूलों की तालीमात और उनके बताये अक़ीदों के ख़िलाफ़ हैं। जैसे, कुछ क़ौमों में आवागमन का अक़ीदा चला आ रहा है। जिसे उन लोगों ने अपनी तरफ़ से तज्वीज़ किया है। उन लोगों का ख़्याल है कि मरने के बाद इंसान की रूह दूसरे इंसान या जानवर की योनि में जगह पाकर नया जन्म ले लेती है और हमेशा यही होता रहता है। इस अक़ीदे की वजह यह नहीं है कि ख़ुदा के पैग़म्बरों की बतायी हुई बात को मान कर ऐसा कर रहे हैं बल्कि इस अक़ीदे के गढ़ने की वजह यह है कि इन लोगों को दुनिया में इंसानों के अलग-अलग मर्तबे और दर्जे इस तरह नज़र आये कि कोई हाकिम है, कोई महकूम (जिस पर हुकूमत की जाए) कोई अमीर है, कोई ग़रीब है, कोई ख़ादिम है, कोई मख़्दूम (जिस्की ख़िदमत की जाए)। और इसी तरह के अनगिनत फ़र्क़ हैं। इस अलगाव की वजह क्या है? इसका फ़लसफ़ा (दर्शन) उन लोगों की समझ में न आया। हज़रत मुहम्मद ﷺ की शरीअत की तरफ़ रुजूअ् करते तो इस अलगाव की बहुत-सी वजहें मालूम हो जातीं। ख़ुद समझना चाहा, इसलिए समझ न सके। मजबूर होकर यह तज्वीज़ किया कि पिछले जन्म में जो कर्म

किये थे, यह अच्छा या बुरा हाल उसी का नतीजा है। इन नादानों का यह अक़ीदा जो उनका ख़ुद गढ़ा हुआ है, बहुत-से पहलुओं से ग़लत है। अगर ग़ौर किया जाए तो सरसरी नज़र में एक बड़ा सवाल और एतराज़ इस अक़ीदे के मान लेने के साथ ही मामूली समझ वाले इंसान की अक़्ल में यह आता है कि अमल का बदला (अज़ाब की हैसियत में) सच में, वही बदला समझा जा सकता है, जिसके बारे में बदला मिलने वाले को उसका इल्म और यक़ीन हो कि मुझे यह आराम या तकलीफ़ फ़्लां अमल की वजह से है तो उसको बदला कहने का कोई मतलब न हुआ। दुनिया में जो लोग मौजूद हैं, जबकि उनको यह मालूम नहीं कि यह आराम या तकलीफ़ फ़्लां जगह के लिए फ़्लां अमल की वजह से है तो दुनिया के आराम व राहत या तकलीफ़ व मुसीबत को किसी पिछले जन्म का नतीजा किस तरह माना जाए? सज़ा भुगतने वाले को जब ही शर्म और पछतावा होगा जबकि उसे यह ख़बर हो कि यह फ़्लां अमल की सज़ा है। काश! वह अमल मैं न करता।

बहरहाल हक़ वही है जो हज़रत मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया और बताया। उन्होंने जो कुछ फ़रमाया, सही फ़रमाया। जो बताया, अल्लाह की तरफ़ से फ़रमाया। गुमान और अटकल को उन्होंने किसी मतलब का न समझा।

अब मैं क़ुरआन हकीम और नबी करीम ﷺ के इर्शादात की रौशनी में क़ियामत के हालात तफ़सील से लिखता हूं। ये हालात हक़ हैं। इनको सच्चा जानो और अपनी आक़िबत (अंजाम) की फ़िक्र करो।

क़ियामत का आना ज़रूरी है। कोई माने या न माने। वादा सच्चा है जो होकर रहेगा। जिस वक़्त क़ुरआन करीम नाज़िल होता था उस वक़्त भी क़ियामत के इंकारी थे और आज भी इस साबित सच्चाई से इंकार करने वाले मौजूद हैं। वह्य नाज़िल होते वक़्त जो लोगों को इस बारे में शक व शुब्हे थे; बहुत-से मौक़ों पर क़ुरआन शरीफ़ में उनके जवाब दिए गये हैं। नीचे कुछ आयतें इसी से मुतआल्लिक़ लिखी जाती हैं। सूरः यासीन में फ़रमायाः

وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَّنَسِيَ خَلْقَهٗ قَالَ مَنْ يُّحْيِ الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيْمٌ

व ज़ र ब लना म स लौं व नसि य ख़ल्क़ह। क़ा ल मैंय युहयिल इज़ा म व हि य रमीम०

'और ब्यान की (इंसान ने) हमारे लिए मिसाल और भूल गया अपनी पैदाइश को। कहने लगा कौन हड्डियों को ज़िंदा करेगा। जबकि वह खोखली हो गयी होंगी।'

इस आयत में इंसान की नामुनासिब बात की शिकायत की गयी है कि देखो वह ख़ुदा पर भी जुम्ले चस्पां करता है और कहता है कि मियां! गली-सड़ी हड्डियों को कौन ज़िंदा करेगा? बस ये सब कहने की बातें हैं। ऐसा सवाल करते वक़्त इंसान पैदाइश को भूल जाता है। अगर उसे अपनी पैदाइश एक ज़लील क़तरे (बूंद) से है तो अल्लाह जल्ल ल शानुहू के बारे में ऐसे लफ़्ज़ कहने में कुछ तो शर्म खाता और अक़्ल से काम लेता तो इस सवाल का जवाब भी अपनी पैदाइश में ग़ौर करने से पा लेता। आगे इस सवाल का तफ़सीली जवाब देते हुए फ़रमायाः

قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي أَنشَأَهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ

क़ुल युहयीहल्लज़ी अन्शअ हा अव्व ल मर्रतिउं व हु व बिकुल्लि ख़ल्क़िन अ़लीम०

'आप फ़रमा दीजिए कि इन हड्डियों को वही ज़िंदा करेगा जिसने इनको पहली बार पैदा फ़रमाया था और वह सब बनाना जानता है'।

यानी जिसने पहली बार हड्डियों को वुजूद बख़्शा और उनमें जान डाली; वही दोबारा उनको ज़िंदगी बख़्शेगा। वह पूरी क़ुदरत रखता है। उसके लिए सब कुछ आसान है। बदन के अंश और हड्डियों के कण जहां कहीं भी बिखरे हों उनका एक-एक कण उसके इल्म में है। वह हर तरह बनाने पर क़ुदरत रखता है। सोचना चाहिए कि जिसने नुत्फ़े (वीर्य) को बहुत-से हालात से गुज़ार कर जीती-जागती तस्वीर देकर रूह डाल दी भला उसके लिए यह कैसे मुम्किन है कि वह मुर्दों को जिंदा न कर सके।

اَلَيْسَ ذٰلِكَ بِقٰدِرٍ عَلٰى اَنْ يُّحْيِيَ الْمَوْتٰى

अ लै स ज़ालि क बिक़ादिरिन अ़ला ऐंयुह्यियल मौता०

इंसानी समझ का तक़ाज़ा तो यह है कि पहली बार अदम (न होना) से वुजूद बख़्शने के बाद दोबारा ज़िंदगी देना आसान है। सूरः रूम में फ़रमाया :

وَهُوَ الَّذِىْ يَبْدَؤُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَهُوَ اَهْوَنُ عَلَيْهِ

व हुवल्लज़ी यब्दउल ख़ल क़ सुम्म म युईदुहू व हु व अह्वनु अ़लैह०

'और वही है जो पहली बार पैदा करता है, फिर उसको दोबारा पैदा कर देगा और यह (दोहराना) इसके लिए (पहली बार पैदा करने से) ज़्यादा आसान है।

यानी तुम ख़ुद ही समझ लो कि जिसने पहली बार बिना मिसाल, नक़्शे और ख़ाके के वुजूद बख़्श दिया; वह दोबारा पैदा करने पर क्योंकर क़ुदरत न रखेगा। गो उसके लिए पहली पैदाइश और दूसरी पैदाइश सब बराबर है।'[1] लेकिन तुम्हारी समझ के एतबार से पहली बार पैदा करने से दूसरी बार दोहरा देना आसान होना चाहिए। यह अजीब बात है कि जिसने पहली बार वुजूद बख़्शा वह मौत देकर दोबारा ज़िंदा न कर सके, कुछ तो समझो। सूरः अह्क़ाफ़ में फ़रमायाः

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَمْ يَعْىَ بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ عَلٰى اَنْ يُّحْيِيَ الْمَوْتٰى بَلٰى اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ

अ व लम यरौ अन्नल्ला हल्लज़ी ख़ ल क़स्समावाति वल् अर्ज़ी व लम यअ् य बिख़ल्क़िहिन्न न बिक़ादिरिन अ़ला अंय्युहियियल मौता बला-इन्नहु अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर०

1. बुख़ारी

'क्या नहीं देखते कि वह अल्लाह जिसने बनाये आसमान व ज़मीन और उनके बनाने से वह थका नहीं, वह क़ुदरत रखता है कि मुर्दों को ज़िंदा कर दे। ज़रूर! वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।'

यानी जिसने आसमानों और ज़मीन जैसी बड़ी-बड़ी चीज़ें सिर्फ़ अपनी क़ुदरत से फ़रमा दीं, क्या इसपर क़ुदरत नहीं रखता कि मुर्दों को ज़िंदा करे। बिला शुबहा इसपर वह ज़रूर क़ादिर (क़ुदरत रखने वाला) है। सूरः हाम-मीम सज्दा में फ़रमायाः

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ خَاشِعَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ
وَرَبَتْ ۗ اِنَّ الَّذِيْٓ اَحْيَاهَا لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ۗ اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

व मिन आयातिही इन्न क तरल अर ज़ ख़ाशिअतन फ़ इज़ा अन्ज़ल्ना अलैहल माअह तज़्ज़त व रबत अह्याहा ल मुहिइल मौता। इन्नहू अला कुल्लि शैइन क़दीर०

'और बहुत-सी इसकी निशानियों में से एक यह है कि तू ज़मीन को देखता है; दबी पड़ती है। फिर जब हम इस पर पानी बरसाते हैं वह उभरती है। बेशक जिसने इस ज़मीन को ज़िंदा कर दिया है, वही मुर्दों को ज़िंदा करने वाला है। बेशक वह हर चीज़ पर क़ादिर है।'

यानी जिस ख़ुदावन्द करीम ने इस ज़मीन को ज़िंदा कर दिया वही मुर्दों के जिस्मों में दोबारा जान डाल देगा।

एक बार एक सहाबी ﷺ ने हज़रत रसूल करीम ﷺ से सवाल किया कि या रसूलल्लाह! अल्लाह तआला मख़्लूक़ को कैसे दोबारा ज़िंदा फ़रमायेगा और (मौजूदा) मख़्लूक़ में इसकी क्या नज़ीर (मिसाल) है? इस पर आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने फ़रमाया कि क्या ऐसा नहीं हुआ कि तुम अपनी क़ौम के जंगल पर उस वक़्त नहीं गुज़रे जबकि ज़मीन सूखी हुई थी, फिर दोबारा उस वक़्त गुज़रे जबकि वह हरी-भरी होकर लहलहाती हुई थी? उन्होंने अ़र्ज़ किया कि जी हां, ऐसा तो हुआ है। प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया कि यही अल्लाह की निशानी है उसकी मख़्लूक़ में, (यानी मौत के बाद ज़िंदा करने

की एक नज़ीर है) इसी तरह अल्लाह मुर्दों को ज़िंदा फ़रमाएगा[1]।

कुछ जगहों पर क़ुरआन मजीद में क़ियामत के इंकारियों का सवाल नक़ल फ़रमाकर उनका जवाब दलील से नहीं दिया, बल्कि क़ियामत होने का यक़ीन दिलाने के लिए क़ियामत होने के दावे को दोहरा दिया है। चुनांचे सूरः साफ़्फ़ात में पहले इंकार करने वालों की बात नक़ल फ़रमायी। फिर जवाब में दावे को दोहरा दिया। चुनांचे इर्शाद है :

ءَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ أَوَ آبَاؤُنَا الْأَوَّلُونَ قُلْ نَعَمْ
وَأَنْتُمْ دَاخِرُونَ فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ فَإِذَا هُمْ يَنْظُرُونَ وَقَالُوا
يٰوَيْلَنَا هٰذَا يَوْمُ الدِّينِ هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ

अ इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबौं व इज़ामन अ इन्न ना लमबऊसून अ व आबाउनल अव्वलून। क़ुल नअम व अन्तुम दाख़िरून। फ़ इन्नमा हि य ज़ज्रतुंव्वाहिदतुन फ़ इज़ा हुम यन्ज़ुरून व क़ालू या वैलना हाज़ा यौमुद्दीन। हाज़ा यौमुल फ़स्लिल्लज़ी कुन्तुम बिही तुकज़्ज़िबून।

'क्या जब हम मर गये और मिट्टी और हड्डियां ही हड्डियां हो गये तो क्या हम उठाये जाएंगे? क्या हमारे अगले बाप-दादे भी उठाये जाएंगे? आप फ़रमा दीजिए कि हां, (तुम उठाये जाओगे) और ज़िल्लत की हालत में होगे और कहेंगे कि हाय! हमारी ख़राबी!! यह आ गया बदले का दिन! (जवाब मिलेगा कि) यह है दिन फ़ैसले का जिसको तुम झुठलाते थे।'

सूरः सबा में इर्शाद फ़रमाया :

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ يُّنَبِّئُكُمْ إِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ
مُمَزَّقٍ إِنَّكُمْ لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ أَفْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا أَمْ بِهِ جِنَّةٌ بَلِ
الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلٰلِ الْبَعِيدِ

व कालल्लज़ी न क फ़ रू हल नदुल्लुकुम अला रजुलिं

1. मिश्कात शरीफ़

युनब्बि-उकुम इज़ा मुज़्ज़िक़्तुम कुल ल मुमज़्ज़किन इन्नकुम लफ़ी ख़ल्क़िन जदीद। अफ़्त र अ़लल्लाहि कज़िबन अम बिही जिन्नः। बलिल्लज़ी न ला युअ्मिनू न बिल आख़िरति फ़िल अज़ाबि वज़्ज़लालिल बईद।

'और कहने लगे काफ़िर- क्या हम बतलाएं तुमको एक मर्द जो तुम्हें ख़बर देता है कि जब तुम फट कर ज़र्रा-ज़र्रा से रेज़े (कण) हो जाओगे। तुमको फिर नये सिरे से बनना है। क्या बना लाया है अल्लाह पर झूठ या उसको जुनून है? कुछ भी नहीं। लेकिन जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, आफ़त में हैं और गुमराही में दूर जा पड़े हैं।'

हासिल यह है कि क़ियामत हक़ है। अल्लाह तआ़ला की जब मंशा होगी; सूर फूंक दिया जाएगा। क़ियामत आ मौजूद होगी। तो कोई भी उसको झुठलाने वाला न होगा। उसके आने का वक़्त अल्लाह तआ़ला के इल्म में मुक़र्रर है। लोगों के एतराज़ करने से अल्लाह तआ़ला वक़्त से पहले ज़ाहिर न फ़रमायेंगे। सूरः सबा में यह भी इर्शाद है :

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ قُلْ لَكُمْ مِيعَادُ يَوْمٍ
لَا تَسْتَأْخِرُونَ عَنْهُ سَاعَةً وَلَا تَسْتَقْدِمُونَ

व यक़ूलू न मता हाज़ल् वअ़्दु इन कुन्तुम सादिक़ीन। क़ुल लकुम मीआ़दु यौमिल्ला तस्तअ्ख़िरू न अ़न्हु साअ़तौं वला तस्तक़्दिमून।

'और वे कहते हैं कि यह वादा कब पूरा होगा अगर तुम सच्चे हो। आप कह दीजिए कि तुम्हारे लिए वादा है एक दिन का। न एक घड़ी इससे लेट किये जाओगे और न पहले।'

क़ियामत की निशानियां इस नाचीज़ ने एक किताब में जमा कर दी हैं जो '**रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पेशीनगोइयां**' के नाम से छप चुकी हैं इसलिए क़ियामत की निशानियों को उसी में पढ़ लें। अब उन लोगों का मुख़्तसर हाल लिखकर जिन पर क़ियामत क़ायम होगी,

क़ियामत के हालात लिखना शुरू करता हूँ।

وَاللّٰهُ وَلِيُّ التَّوْفِيْقِ وَهُوَ خَيْرُ عَوْنٍ وَخَيْرُ رَفِيْقٍ

वल्लाहु वलीयुत्तौफ़ीकि व हु व ख़ैरु औनिऊँ व ख़ैरु रफ़ीक़।

क़ियामत किन लोगों पर क़ायम होगी?

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द ﷺ से रिवायत है कि हज़रत रसूले करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत सबसे बुरी मख़्लूक़ पर क़ायम होगी। यह भी इर्शाद फ़रमाया कि उस वक़्त तक क़ियामत क़ायम न होगी जब तक ज़मीन में अल्लाह-अल्लाह किया जाता रहेगा। यह भी इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत किसी ऐसे शख़्स पर क़ायम न होगी जो अल्लाह-अल्लाह कहता होगा।[1]

एक लम्बी हदीस में है कि (चूंकि किसी मुसलमान की मौजूदगी में क़ियामत क़ायम न होगी। इसलिए दुनिया के इसी दिन व रात के होते हुए) अचानक अल्लाह तआ़ला एक उम्दा हवा भेज देंगे जो मुसलमानों की बग़लों में लगकर हर मोमिन और मुस्लिम की रूह क़ब्ज़ कर लेगी और सबसे बुरे लोग बाक़ी रह जाएंगे जो (सबके सामने बेहयाई से) गधों की तरह औरतों से ज़िना करेंगे।[2]

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि प्यारे नबी ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि दज्जाल को क़त्ल करने के बाद हज़रत ईसा ﷺ सात वर्ष लोगों में रहेंगे। इस दौर में दो आदमियों के बीच ज़रा दुश्मनी न होगी। फिर अल्लाह तआ़ला मुल्क शाम की तरफ़ से एक ठंढी हवा भेज देंगे, जिसकी वजह से तमाम मोमिन ख़त्म हो जाएंगे (और) ज़मीन पर कोई भी ऐसा शख़्स बाक़ी न रहेगा, जिसके दिल में ख़ैर का (या फ़रमाया ईमान का)

1. मुस्लिम शरीफ़
2. मिश्कात शरीफ़

कोई ज़र्रा होगा। यहां तक कि अगर तुम (मुसलमानों में से) कोई शख़्स किसी पहाड़ के अन्दर (खोह में) दाख़िल हो जाएगा, तो वह हवा वहां भी दाख़िल होकर उसकी रूह क़ब्ज़ कर लेगी।

इसके बाद सबसे बुरे लोग रह जाएंगे (जो बुरे करतूतों और शरारत की तरफ़ बढ़ने में) हल्के परिंदों की तरह (तेज़ी से उड़ने वाले) होंगे और (दूसरों का ख़ून बहाने और जान लेने में) दरिंदों-जैसे अख़्लाक़ वाले होंगे। न भलाई को पहचानते होंगे, न बुराई को बुराई समझते होंगे। उनका यह हाल देखकर इंसानी शक्लों में शैतान उनके पास आकर कहेगा कि (अफ़सोस! तुम कैसे हो गये) तुम्हें शर्म नहीं आती (कि अपने बाप-दादों को छोड़ बैठे)। वे उससे कहेंगे कि तू ही बता हम क्या करें? इसलिए वे उनको बुत परस्ती को तालीम देगा (और वे बुत की पूजा करने लगेंगे) वे इसी हाल में होंगे (यानी क़त्ल व ख़ून, बिगाड़-फ़साद और बुत परस्ती में पड़े होंगे) और उनको ख़ूब रोज़ी मिल रही होगी और अच्छी ज़िंदगी गुज़र रही होगी कि सूर फूंक दिया जाएगा। सूर की आवाज़ सब ही सुनेंगे। जो-जो सुनता जाएगा (डर की वजह से, हैरान होकर) एक तरफ़ को गरदन झुका देगा और दूसरी तरफ को उठा देगा।

फिर फ़रमाया कि सबसे पहले जो शख़्स उसकी आवाज़ सुनेगा, वह वह होगा जो ऊंटों को पानी पिलाने का हौज़ लीप रहा होगा। वह शख़्स सूर की आवाज़ सुनकर बेहोश हो जाएगा और फिर सब लोग बेहोश हो जाएंगे। फिर ख़ुदा एक बारिश भेजेगा जो ओस की तरह होगी, उससे आदमी उग जाएंगे (यानी क़ब्रों में मिट्टी के जिस्म बन जाएंगे)। फिर दोबारा सूर फूंका जाएगा तो अचानक सब खड़े देखते होंगे। इसके बाद एलान होगा कि ऐ लोगो! चलो अपने रब की तरफ़ और फ़रिश्तों को हुक्म होगा कि इनको ठहराओ। इनसे सवाल होगा। फिर एलान होगा कि (इस सारे मज्मे से) दोज़ख़ियों को अलग कर दो। इसपर पूछा जाएगा (अल्लाह जल्ल ल शानुहू से) कि किस तादाद में से कितने दोज़ख़ी निकाले जाएं, जवाब मिलेगा कि हर हज़ार में 999 दोज़ख़ी निकालो। इसके बाद आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने फ़रमाया कि यह दिन होगा कि जिसके डर और दहशत से, बच्चे बूढ़े हो

जाएंगे और यह दिन बड़ा ही मुसीबत का होगा।'[1]

इन हदीसों से मालूम हुआ कि क़ियामत क़ायम होने के वक़्त कोई मुसलमान दुनिया में मौजूद न होगा। इस बड़ी मुसीबत से अल्लाह तआ़ला इन इंसानों को बचाये रखेंगे, जिनके दिल में ज़रा भी ईमान होगा।

क़ियामत की तारीख़ की ख़बर नहीं दी गई

अल्लाह तआ़ला ही जानते हैं कि क़ियामत कब आयेगी। क़ुरआन शरीफ़ में बताया गया है कि क़ियामत अचानक आ जाएगी। बाक़ी उसकी मुक़र्ररा तारीख़ की ख़बर नहीं दी गई। एक बार हज़रत जिब्रील عليه السلام ने इंसानी शक्ल में आकर मज्लिस में हाज़िर लोगों की मौजूदगी में प्यारे नबी ﷺ से पूछा कि क़ियामत कब क़ायम होगी, तो उनके इस सवाल के जवाब में प्यारे नबी ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि ----

مَا الْمَسْئُوْلُ عَنْهَا بِاَعْلَمَ مِنَ السَّائِلِ ط (بخاری ومسلم)

मल मस्ऊलु अ़न्हा बि अअ़्लम मिनस्साइल।

—बुख़ारी व मुस्लिम

'इस बारे में सवाल करने वाले से ज़्यादा उसको इल्म नहीं है जिस से सवाल किया गया है।'

यानी इस बारे में हम और तुम दोनों बराबर हैं। न मुझे उसके क़ायम होने के वक़्त का इल्म है और न तुमको है। एक बार जब लोगों ने प्यारे नबी ﷺ से पूछा कि क़ियामत कब आयेगी तो अल्लाह तआ़ला शानुहू की तरफ़ से हुक्म हुआ:

قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ لَا يُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَا اِلَّا هُوَ ثَقُلَتْ فِي
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَا تَاْتِيْكُمْ اِلَّا بَغْتَةً يَسْئَلُوْنَكَ كَاَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا
قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

---

1. मुस्लिम शरीफ़

क़ुल इन्नमा इल्मुहा इन द रब्बी ला युजल्लीहा लिवक़तिहा इल्ला हू। सक़ुलत फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ला तअ्तीकुम इल्ला बग़्तः। यस्अलून क क अन्न न क हफ़ीय्युन अ़न्हा क़ुल इन्नमा इल्मुहा इन्दल्लाहि व ला किन्न न अक्सरन्नासि ला यअ्लमून। -अल-आअ्राफ़

'आप फ़रमा दीजिए कि इसका इल्म सिर्फ़ मेरे रब ही के पास है। उसके वक़्त पर उसको सिवाए अल्लाह तआ़ला के कोई ज़ाहिर न करेगा। आसमान व ज़मीन में बड़ी भारी घटना होगी। वह तुम पर बिल्कुल ही अचानक आ पड़ेगी। वे आपसे इस तरह पूछते हैं जैसे गोया आप उसकी खोज कर चुके हैं। आप फ़रमा दीजिए कि उसका इल्म सिर्फ़ अल्लाह के पास है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।'

क़ियामत अचानक आ जाएगी

सूरः अंबिया में फ़रमायाः

بَلْ تَاْتِيْهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ

बल तअ्तीहिम बग़्ततन फ़तबअ़तुहुम फ़ ला यस्ततीऊ न रद्दहा व ला हुम युन्ज़रून।

'बल्कि वह आ जाएगी अचानक उनपर और उनको बदहवास कर देगी। न उसके हटाने की उसको क़ुदरत होगी और न उनको मोहलत दी जाएगी।'

इस मुबारक आयत से और इससे पहली आयत से मालूम हुआ कि क़ियामत अचानक आ जाएगी। हज़रत रसूले करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि अलबत्ता क़ियामत ज़रूर इस हालत में क़ायम होगी कि दो आदमियों ने अपने दर्मियान (ख़रीदने-बेचने के लिए) कपड़ा खोल रखा होगा और अभी मामला तय करने और कपड़ा लपेटने भी न पायेंगे कि क़ियामत क़ायम होगी। एक इंसान अपनी ऊंटनी का दूध निकाल कर जा रहा होगा कि पी भी न सकेगा और क़ियामत यक़ीनन इस हाल में क़ायम होगी कि इंसान अपना

हौज़ लीप रहा होगा और अभी उसमें (मवेशियों को) पानी भी न पिलाने पायेगा और वाक़ई क़ियामत इस हाल में क़ायम होगी कि इंसान अपने मुंह की तरफ़ लुक़्मा उठायेगा और उसे खा भी न सकेगा।[1]

यानी जैसे आजकल लोग कारोबार में लगे हुए हैं, उसी तरह क़ियामत के आने वाले दिन भी लगे होंगे कि अचानक क़ियामत आ पहुंचेगी। जिस दिन क़ियामत क़ायम होगी, वह जुमे का दिन होगा। प्यारे नबी ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि सब दिनों से बेहतर जुमा का दिन है। उसी दिन वह जन्नत से निकाले गये और क़ियामत जुमा ही के दिन क़ायम होगी।[2]

दूसरी हदीस में है कि आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने फ़रमाया कि जुमा के दिन क़ियामत क़ायम होगी। हर क़रीबी फ़रिश्ता और आसमान और ज़मीन और पहाड़ और समुद्र, ये सब जुमा के दिन से डरते हैं कि कहीं आज क़ियामत न हो जाए।[3]

सूर और सूर का फूंका जाना

क़ियामत की शुरूआत सूर फूंकने से होगी। प्यारे नबी ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि सूर एक सींग है, जिसमें फूंका जाएगा।[1] और यह भी इर्शाद फ़रमाया कि मैं मज़े की ज़िंदगी क्यों कर गुज़ारूंगा, हालांकि सूर फूंकने वाले (फ़रिश्ते) ने मुंह में सूर ले रखा है और अपना कान लगा रखा है और माथा झुका रखा है। इस इंतिज़ार में कि कब सूर फूंकने का हुक्म हो।[2] सूरः मुद्दस्सिर में सूर को नाक़ूर फ़रमाया है। चुनांचे इर्शाद है :

فَاِذَا نُقِرَ فِى النَّاقُوْرِ فَذٰلِكَ يَوْمَئِذٍ يَّوْمٌ عَسِيْرٌ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ غَيْرُ يَسِيْرٍ

फ़ इज़ा नुक़ि र फ़िन्नाक़ूरि फ़ ज़ालि क यौ म इज़िंय्यौमुन

---

1. बुख़ारी व मुस्लिम
   यह जो मशहूर है कि क़ियामत मुहर्रम की दसवीं तारीख़ को क़ायम होगी, किसी हदीस से साबित नहीं है। मुजम्मअ़ुल बहहार में इसको मौज़ूअ़ यानी गढ़ी हुई बातों में गिना गया है।
2. मुस्लिम शरीफ़
3. मिश्कात शरीफ़

असीरुन अ़लल्काफ़िरी न ग़ैरु यसीर।

'फिर जब नाक़ूर (यानि सूर) फूंका जायेगा तो वह काफ़िरों पर एक सख़्त दिन होगा जिसमें कुछ आसानी न होगी।'

सूरः ज़ुमर में इर्शाद फ़रमाया :

وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ثُمَّ نُفِخَ فِيْهِ اُخْرٰى فَاِذَا هُمْ قِيَامٌ يَّنْظُرُوْنَ۝

व नुफ़ि ख फ़िस्सूरि फ़ स इ क़ मन फ़िस्समावाति व मन फ़िल अर्ज़ि इल्ला मन शाअल्लाह। सुम्म म नुफ़ि ख़ फ़ीहि उख़रा फ़ इज़ा हुम क़िया-मुंय्यन्ज़ुरून।

'और सूर में फूंका जाएगा। सो बेहोश हो जाएंगे। जो भी आसमानों और ज़मीन में है सिवाए उनके जिनका होश में रहना अल्लाह चाहें। फिर दोबारा सूर में फूंका जाएगा तो वह फ़ौरन खड़े हो जाएंगे, हर तरफ़ देखते हुए।'

क़ुरआनी आयतों और नबी की हदीसों में दो बार सूर फूंके जाने का ज़िक्र है। पहली बार सूर फूंका जाएगा तो सब बेहोश हो जाएंगे *(इल्ला मन शअल्लाह)* फिर ज़िंदे तो मर जाएंगे और जो मर चुके थे उनकी रूहों पर बेहोशी की हालत पैदा हो जाएगी। इसके बाद दोबारा सूर फूंका जाएगा तो मुर्दों की रूहें उनके बदनों में वापस आ जाएंगी और जो बेहोश थे उनकी बेहोशी चली जाएगी। उस वक़्त का अ़जीब व ग़रीब हाल देखकर सब हैरत से तकते होंगे और अल्लाह के दरबार में पेशी के लिए तेज़ी के साथ हाज़िर किए जाएंगे। सूरः यासीन में फ़रमाया :

وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَاِذَا هُمْ مِّنَ الْاَجْدَاثِ اِلٰى رَبِّهِمْ يَنْسِلُوْنَ۝ قَالُوْا يٰوَيْلَنَا مَنْۢ بَعَثَنَا مِنْ مَّرْقَدِنَا ۜ هٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ۝ اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ۝

---

1. मिश्कात शरीफ़ 2. मिश्कात शरीफ़

व नुफ़ि ख़ फ़िस्सूरि फ़ इज़ाहुम मिनल अज्दासि इला रब्बिहिम यन्सिलून। क़ालू यावैलना मम ब अ़ स ना मिम मर्क़दिना, हाज़ा मा व अ़ दर्रहमानु व स द क़लमुर्सलून । इन कानत् इल्ला सैहतों वा हिदतन फ़ इज़ा हुम जमीउल्लदैना मुह्ज़रून।

'और सूर में फूंका जाएगा। बस अचानक वह अपने रब की तरफ़ जल्दी-जल्दी फैल पड़ेंगे। कहेंगे कि हाय! हमारी ख़राबी! किसने हमको उठा दिया, हमारे लेटने की जगह से। (जवाब मिलेगा कि) यह वह माजरा है जिसका रहमान ने वादा किया है और पैग़म्बरों ने सच्ची ख़बर दी। बस एक चिंघाड़ होगी। फिर उसी वक़्त वे सब हमारे सामने हाज़िर कर दिए जाएंगे।'

यानी कोई न छिप कर जा सकेगा। सब अल्लाह के हुज़ूर में मौजूद कर दिए जाएंगे।

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ ने फ़रमाया कि प्यारे नबी ﷺ ने पहली बार और दूसरी बार सूर फूंकने की दर्मियानी दूरी बताते हुए चालीस का अ़दद फ़रमाया। मौजूद लोगों ने हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से पूछा कि चालीस क्या? चालीस दिन या चालीस माह या चालीस साल। आंहज़रत ﷺ ने क्या फ़रमाया? इस सवाल के जवाब में हज़रत अबू हुरैरः ﷺ ने अपनी ला-इल्मी ज़ाहिर की और फ़रमाया कि मुझे ख़बर नहीं (या याद नहीं) कि आंहज़रत ﷺ ने सिर्फ़ चालीस फ़रमाया या चालीस साल या चालीस दिन फ़रमाया। दोबारा सूर फूंके जाने के बाद अल्लाह तबारक व तआ़ला आसमान से पानी बरसा देंगे, जिसकी वजह से लोग (क़ब्रों से) उग जाएंगे जैसे (ज़मीन से) सब्ज़ी (उग जाती है)। यह भी फ़रमाया कि इंसान के जिस्म की हर चीज़ गल जाती है यानी मिट्टी में मिलकर मिट्टी हो जाती है सिवाए एक हड्डी के कि वह बाक़ी है। क़ियामत के दिन उसी से जिस्म बना दिए जाएंगे। यह हड्डी रीढ़ की हड्डी है।'

सूरः ज़ुमर की आयत में यह जो फ़रमाया कि सूर फूंके जाने से सब

1. बुख़ारी व मुस्लिम की एक हदीस में है कि राई के दाने के बराबर रीढ़ की हड्डी बाक़ी रह जाती है, उसी से दोबारा जिस्म बनेंगे। —अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब

बेहोश हो जाएंगे, सिवाए उनके जिनको अल्लाह चाहे। इसके बारे में तफ़सीर लिखने वालों के कुछ क़ौल हैं, किसी ने फ़रमाया कि शहीद मुराद हैं। किसी ने कहा कि जिब्रील ﷺ व मीकाईल ﷺ और इस्राफ़ील ﷺ व इज़्राईल ﷺ के बारे में फ़रमाया है। किसी ने अ़र्श उठाने वालों को इस छूट में शामिल किया है। इनके अ़लावा और भी क़ौल हैं (अल्लाह ही बेहतर जानता है)। मुम्किन है कि बाद में इन पर भी फ़िना छा जाए, जिसे इस छूट में ब्यान किया जाता है। जैसा कि आयत **'लि मनिल मुल्कल यौम। लिल्लाहिल वाहिदिल क़ह्हार'** की तफ़सीर में साहिबे मआ़लिमुल तंज़ील लिखते हैं कि जब मख़्लूक़ के फ़िना हो जाने के बाद अल्लाह तआ़ला **'लि मनिल मुल्कुल यौम'** (किस का राज है आज?) फ़रमायेंगे, तो कोई जवाब देने वाला न होगा। इसलिए ख़ुद ही जवाब में फ़रमायेंगे: **'लिल्लाहिल वाहिदिल क़ह्हार'** (आज बस अल्लाह का राज है जो तंहा है और क़ह्हार[1] है)

यानी आज के दिन बस उसी एक हक़ीक़ी बादशाह का राज है। जिसके सामने हर ताक़त दबी हुई है। तमाम दुनिया की हुकूमतें और राज इस वक़्त फ़िना हैं।

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि बेशक लोग क़ियामत के दिन बेहोश हो जाएंगे और मैं भी उनके साथ बेहोश हो जाऊंगा। फिर सबसे पहले मेरी ही बेहोशी दूर होगी तो अचानक देखूंगा कि मूसा ﷺ अ़र्शे इलाही को एक तरफ़ पकड़े ख़ड़े हैं। मैं नहीं जानता कि वह बेहोश होकर मुझ से पहले होश में आ चुके होंगे या उनपर बेहोशी आयी ही न होगी और वे उनमें से होंगे जिनके बारे में अल्लाह का इर्शाद है **'इल्ला मन शाअल्लाह'** है। —मिश्कात शरीफ़

कायनात का बिखर जाना

सूर फूंके जाने से न सिर्फ़ ये इंसान मर जाएंगे बल्कि कायनात का

1. ज़बर्दस्त क़हर वाला

निज़ाम ही टूट जाएगा। आसमान फट जाएगा; सितारे झड़ जाएंगे और बेनूर हो जाएंगे; चांद व सूरज की रोशनी ख़त्म कर दी जाएगी; ज़मीन हमवार मैदान बन जाएगी; पहाड़ उड़ते फिरेंगे।

नीचे की आयतों व हदीसों से ये बातें साफ़-साफ़ ज़ाहिर हो रही हैं।

पहाड़ों का हाल

अल्लाह का इर्शाद है :

اَلْقَارِعَةُ مَاالْقَارِعَةُ ○ وَمَا اَدْرٰكَ مَاالْقَارِعَةُ ○ يَوْمَ يَكُوْنُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوْثِ ○ وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ ط

अल् क़ारि अ तु मल् क़ारिअः। व मा अद्रा क मल क़ारिअः। । यौ म यकूनुन्नासु कल्फ़राशिल मब्सूसि व तकूनुल जिबालु कल इह्निल मन्फ़ूश।

'वह खड़खड़ाने वाली? क्या है वह खड़खड़ाने वाली? और तू क्या समझा? क्या है वह खड़खड़ाने वाली? जिस दिन लोग परवानों की तरह और पहाड़ धुनी हुई रंगीन ऊन की तरह होंगे।'

'अल क़ारिअः' (खड़खड़ाने वाली) क़ियामत को फ़रमाया है। यह नाम इसका इसलिए रखा गया कि वह दिलों को घबराहट से और कानों को सख़्त आवाज़ से खड़खड़ा देगी। उस दिन इंसान परवानों की तरह बेचैनी के साथ, बदहवास होकर महशर की तरफ़ जमा होने के लिए चल पड़ेंगे। ऐसे बिखरे हुए अन्दाज़ में चलेंगे कि परवाने अंधाधुंध चिराग़ पर गिरते जाते हैं और पहाड़ों का यह हाल होगा कि जैसे धुनिया ऊन या रूई को धुनकर एक-एक फाया उड़ा देता है। उसी तरह पहाड़ बिखर कर उड़ जाएंगे। सूरः मुर्सलात में फ़रमाया : وَاِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ (مرسلات)

व इज़ल जिबालु नुसिफ़त।

'और जब पहाड़ उड़ा दिए जाएंगे'

सूरः नबा में फ़रमाया :

وَسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا (النبا)

व सुय्यि रतिलजिबालु फ़कानत सराबा।

'और चलाये जाएंगे पहाड़ तो हो जाएंगे चमकते हुआ रेत'।

सूरः नह्ल में फ़रमाया :

وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَهِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ۚ صُنْعَ اللَّهِ الَّذِي أَتْقَنَ كُلَّ شَيْءٍ

व तरल जिबा ल तह्सबुहा जामिदतन व हि य तमुर्रु मर्रस्सहाब। सुन् अ़ल्लाहिल्लज़ी अत्क़ न कुल्ल ल शैइ।

'और तू देखे पहाड़ों को तो यह समझते हुए कि वे जमे हुए हैं। हालांकि वे चलेंगे बादल की तरह। कारीगरी अल्लाह की जिसने ठीक किया हर चीज़ को।'

यानी ये बड़े-बड़े पहाड़ जिनको तुम इस वक़्त देख कर यह ख़्याल करते हो कि ये ऐसे जमे हुए हैं कि कभी अपनी जगह से जुंबिश भी न खा सकेंगे। उन पर एक दिन ऐसा आने वाला है कि यह रूई के गालों की तरह उड़े-उड़े फिरेंगे और बादल की तरह तेज़ रफ़्तार होंगे। अल्लाह ने हिकमत के मुताबिक़ हर चीज़ को दुरुस्त किया। उसी ने आज पहाड़ों को ऐसा बोझल, भारी और ठहरा हुआ बनाया कि ज़मीन को भी हिलने से रोके हुए है।

وَأَلْقَىٰ فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَن تَمِيدَ بِكُمْ

व अल्क़ा फ़िल अर्ज़ि र वा सि य अन् तमी द बिकुम।

'फिर क़ियामत के दिन उनका मालिक और पैदा करने वाला ज़र्रा-ज़र्रा करके उड़ा देगा। यह सब उस कारीगर की कारीगरी है, जिसका कोई काम हिकमत से ख़ाली नहीं।' सूरः वाक़िअः में फ़रमाया :

وَبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ۝ فَكَانَتْ هَبَاءً مُّنبَثًّا

व बुस्सतिल जिबालु बस्सा फ़ कानत हबाअम मुंबस्सा।

'और रेज़ा-रेज़ा हो जाएंगे पहाड़। फिर हो जाएंगे उड़ता हुआ गुबार।'

आसमान व ज़मीन

सूरः ताहा में फ़रमाया :

وَيَسْئَلُونَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّي نَسْفًا فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا لَّا تَرَىٰ فِيهَا عِوَجًا وَّلَا أَمْتًا

व यस्अलू न क अ़निल जिबालि फ़कुल यन्सिफ़ुहा रब्बी नस्फ़न फ़ य ज़ रुहा क़ाअ़न सफ़सफ़ल्ला तरा फ़ीहा इ व जौं व ला अम्ता।

'और वे आप से पहाड़ों के बारें में पूछते हैं। आप फ़रमा दीजिए कि मेरा रब उनको अच्छी तरह उड़ा देगा। फिर ज़मीन को छोड़ देगा चटियल मैदान। न देखेगा तू उसमें मोड़ और टीला।'

यानी क़ियामत के दिन पहाड़ उड़ा दिए जाएंगे और ज़मीन साफ़ और हमवार बना दी जाएगी। कोई टीला उस पर न रहेगा। सूरः इब्राहीम में फ़रमाया :

يَوْمَ تُبَدَّلُ الْأَرْضُ غَيْرَ الْأَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ وَبَرَزُوا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ

यौ म तुबद्दलुल अर्ज़ु ग़ैरल अर्ज़ि वस्समावातु व ब र ज़ू लिल्लाहिल वाहिदिल क़ह्हार।

'जिस दिन बदल दी जाए इस ज़मीन से दूसरी ज़मीन और बदल जाएं आसमान और लोग निकल खड़े होंगे अल्लाह वाहिद क़ह्हार के सामने।'

इस आयत से मालूम हुआ कि आसमान व ज़मीन क़ियामत के दिन बदल दिए जाएंगे और अपनी इस मौजूदा शक्ल पर बाक़ी न रहेंगे। इस आयत के बारे में हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने आंहज़रत ﷺ से सवाल किया कि जब आसमान व ज़मीन बदले जाएंगे तो उस दिन लोग कहां

होंगे? इसके जवाब में फ़ख़्रे दो आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि पुलसिरात पर होंगे।[1]

इस रिवायत से मालूम होता है कि इस आयत में जो आसमान व ज़मीन के बदले जाने का ज़िक्र है, वह हिसाब-किताब होने के बाद उस वक़्त होगा, जबकि लोग जन्नत व दोज़ख़ में भेजे जाने के लिए पुलसिरात पर पहुंच जाएंगे।

पहली आयत में जो ज़िक्र हुआ कि ज़मीन हमवार और साफ़ मैदान कर दी जाएगी, वह हिसाब व किताब शुरू होने से पहले का ज़िक्र है। हज़रत सह्ल बिन सअ़्द رضي الله عنه ने रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन लोग ऐसी ज़मीन पर जमा किए जाएंगे जिसका रंग सफ़ेद होगा लेकिन सफ़ेदी का झुकाव मटियाले रंग की तरफ़ होगा। उस वक़्त ज़मीन मैदे की रोटी-जैसी होगी। किसी की उसमें निशानी न होगी।[2]

जब क़ियामत होगी तो आसमान में यह तब्दीली होगी कि उसके सितारे झड़ पड़ेंगे और बेनूर हो जाएंगे और चांद-सूरज की रौशनी लपेट दी जाएगी, नीज़ आसमान फट पड़ेगा और उसमें दरवाज़े हो जाएंगे। सूरः नबा में फ़रमाया :

يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَتَأْتُوْنَ اَفْوَاجًا وَّفُتِحَتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ اَبْوَابًا

यौ म युन्फ़ख़ु फ़िस्सूरि फ़तअ्तू न अफ़्वाजौं व फ़ुतिहतिस्समाउ फ़कानत अब्वाबा।

'जिस दिन फूंका जाएगा सूर में तो तुम चले जाओगे झुण्ड के झुण्ड और खोला जाएगा आसमान तो हो जाएंगे उसमें दरवाज़े।'

यानी आसमान फटकर ऐसा हो जाएगा कि गोया दरवाज़े ही दरवाज़े हैं।

सूरः मुर्सलात में है : وَاِذَا السَّمَآءُ فُرِجَتْ

व इज़स्समाउ फ़ुरिजत।

'और जब आसमान में झरोखे पड़ जाएंगे।'

सूरः फ़ुर्क़ान में फ़रमाया :

1. मुस्लिम शरीफ़ 2. बुख़ारी

وَيَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَآءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلٰٓئِكَةُ تَنْزِيْلًا

व यौ म त शक़्क़क़ुस्समाउ बिलग़मामि व नुज़्ज़ि लल मलाइकतु तन्ज़ीला।

'जिस दिन फट जाए आसमान बादल से और उतार दिए जाएं फ़रिश्ते लगातार।'

सूरः हाक़्क़ः में फ़रमाया :

فَاِذَا نُفِخَ فِي الصُّوْرِ نَفْخَةٌ وَّاحِدَةٌ، وَّحُمِلَتِ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَّاحِدَةً، فَيَوْمَئِذٍ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ، وَانْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَّاهِيَةٌ، وَّالْمَلَكُ عَلٰٓى اَرْجَآئِهَا وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمٰنِيَةٌ

फ़ इज़ा नुफ़ि ख़ फ़िस्सूरि नफ़्ख़तुंव्वाहिदतुँ व हुमिलतिल अर्ज़ु वलजिबालु फ दुक्कतौं दक्कतौंवाहिदतन फ़यौम इज़िंव क़ अ तिल वाक़िअतः वन्शक़्क़तिस्समाउ फ़ हि य यौम इज़िंव्वाहियः वल म ल कु अ़ला अर्जाइहा। व यह़्मिलु अ़र श रब्बि क फ़ौक़हुम यौ म इज़िन समानियः -अल-हाक़्क़ः

'फिर जब सूर में फूंक मारी जाए। एक फूंक और उठा दिए जाएं (अपनी जगह से) ज़मीन और पहाड़ फिर दोनों एक बार रेज़ा-रेज़ा कर दिए जाएंगे तो उस दिन हो पड़ने वाली हो पड़ेगी (यानी क़ियामत) और आसमान फट पड़ेगा तो वह उस दिन बोदा होगा और फ़रिश्ते आसमान के किनारों पर आ जाएंगे और आपके परवरदिगार के अ़र्श को उस दिन आठ फ़रिश्ते उठाये होंगे।'

जिस वक़्त दर्मियान से आसमान फटने लगेगा तो फ़रिश्ते उसके किनारे पर चले जाएंगे।

सूरः रहमान में इर्शाद फ़रमाया :

فَاِذَا انْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ

फ़ इज़न शक़्क़तिस्समाउ फ़ कानत वर्दतन कद्दिहान।

'बस जब आसमान फट जाएगा तो ऐसा लाल हो जाएगा जैसे लाल नरी।'

और सूरः मआरिज में फ़रमाया है कि आसमान उस दिन 'मुह्ल' यानी पिघले हुए तांबे की तरह होगा यानी फटने के साथ उसका रंग भी बदल जाएगा और लाल हो जाएगा। सूरः तूर में फ़रमाया है कि उस दिन आसमान कपकपायेगा। يَوْمَ تَمُوْرُ السَّمَآءُ مَوْرًا (طور)

यौ म तमूरुस्समाउ मौरा।

यानी कपकपा कर फट पड़ेगा।

सूरः इन्शिक़ाक़ में फ़रमाया :

اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ ○ وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ○ وَاِذَا الْاَرْضُ مُدَّتْ ○
وَاَلْقَتْ مَافِيْهَا وَتَخَلَّتْ ○ وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ○

इज़स्समाउन शक़्क़त। व अज़िनत लिरब्बिहा व हुक़्क़त।
व इज़ल अर्ज़ु मुद्दत। व अलक़त मा फ़ीहा व तख़ल्लत।
व अज़िनत लिरब्बिहा व हुक़्क़त०

'जब आसमान फट जाएगा और अपने रब का हुक्म सुन लेगा और वह इसी लायक़ है और जब ज़मीन खींच कर बढ़ा दी जाएगी और अपने अन्दर की चीज़ों को बाहर डाल देगी और ख़ाली हो जाएगी और अपने रब का हुक्म सुन लेगी और वह इसी लायक़ है।'

आसमान को फटने का और ज़मीन को खींच कर बढ़ जाने और फैल जाने का हुक्म उनके रब की तरफ़ से होगा। दोनों अल्लाह की मख़्लूक़ हैं। मख़्लूक़ को ख़ालिक़ (पैदा करने वाले) का हुक्म सुनना और अमल करना ज़रूरी बात है। ये दोनों भी अल्लाह तआला के हुक्म को पूरा करेंगे और उनको यही लायक़ भी है कि अपने पैदा करने वाले और मालिक के आगे झुक जाएं और फ़रमांबरदारी में तनिक-भी कहें-सुनें नहीं।

ज़मीन खींच कर रबड़ की तरह बढ़ा दी जाएगी और इमारत और पहाड़ वग़ैरह सब बराबर कर दिये जाएंगे ताकि एक हमवार बराबर ज़मीन पर सब अगले-पिछले एक साथ खड़े हो सकें और कोई पर्दा-रुकावट बाक़ी न रहे, ज़मीन अपने भीतर की चीज़ों को बाहर डाल देगी और ख़ाली हो जाएगी यानी वह अपने अंदर से ख़ज़ाने और मुर्दे और मुर्दों के हिस्से उगल डालेगी और उन तमाम चीज़ों से ख़ाली हो जाएगी, जिनका तअ़ल्लुक़ बंदों के आमाल का बदला मिलने से होगा।

चांद, सूरज और सितारे

जब सूर फूंका जाएगा तो चांद, सूरज और सितारे भी अपने हाल पर बाक़ी न रहेंगे। सूरः तकवीर में फ़रमाया :

إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ○ وَإِذَا النُّجُومُ انْكَدَرَتْ ○

इज़श्शम्सु कुव्विरत व इज़न्नुजूमुन क द रत।

'जब सूरज बेनूर हो जाएगा और जब सितारे टूटकर गिर पड़ेंगे।'

सूरः इन्फ़ितार में फ़रमाया :

إِذَا السَّمَاءُ انْفَطَرَتْ ○ وَإِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ○

इज़स्समाउन फ़ त रत व इज़ल कवाकिबुन त स रत०

इन आयतों से आसमान का फटना और सितारों का झड़कर गिरना ज़ाहिर हुआ। सूरः मुर्सलात में फ़रमाया है कि उस दिन सितारों की रौशनी ख़त्म कर दी जाएगी। चुनांचे इर्शाद है : فَإِذَا النُّجُومُ طُمِسَتْ

फ़इज़न्नुजूमु तुमिसत।

'सो जब सितारे बेनूर हो जाएंगे।'

सूरः क़ियामः में फ़रमाया :

يَسْئَلُ اَيَّانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ○ فَاِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ وَخَسَفَ الْقَمَرُ وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ○ يَقُوْلُ الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ اَيْنَ الْمَفَرُّ○ كَلَّا لَاوَزَرَ اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ نِ الْمُسْتَقَرُّ○

यस्अलु ऐय्या न यौमुल क़ियामः। फ इज़ा बरिक़ल ब स रु व ख़ स फ़ल क़ म रु व जुमिअश्शम्सु वल क़मर। यक़ूलुल इन्सानु यौ म इज़िन ऐनल मफ़र्र। कल्ला, ला व ज़र। इला रब्बि क यौ म इज़ि-निल-मुस्तक़र्र।

'पूछता है (इंसान) कब होगा दिन क़ियामत का पस जब चुंधियाने लगे आंख और बेनूर हो जाए चांद और जमा किए जाएं चांद और सूरज। उस दिन कहेगा इंसान, कहां चला जाऊं भागकर। हरगिज़ नहीं, कहीं पनाह की जगह नहीं। उस दिन सिर्फ़ तेरे रब की तरफ़ जा ठहरना है।'

इन आयतों से साफ़ हो गया कि क़ियामत के दिन चांद भी बेनूर हो जाएगा। चांद के बेनूर होने का ज़िक्र फ़रमा कर इर्शाद फ़रमाया, '**व जुमिअश्शम्सु वल क़मर**' (सूरज और चांद जमा किए जाएंगे) यानी सिर्फ़ चांद ही बेनूर न होगा बल्कि बेनूर होने का ख़ास तौर से इसलिए ज़िक्र फ़रमाया कि अरब के लोगों को चांद का हिसाब रखने की वजह से उसका हाल देखने का ज़्यादा इहतमाम था।

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन चांद और सूरज दोनों लपेट दिये जाएंगे।[1] यानी उनकी रौशनी लपेट दी जाएगी। जिसकी वजह से रौशनी न फैल सकेगी; न किसी चीज़ पर पड़ेगी।

बैहक़ी ने किताबुल बअ्स वन्नुशूर में हज़रत हसन बसरी (रह०) से रिवायत की है कि हज़रत अबू हुरैरः ﷺ ने आंहज़रत ﷺ का इर्शाद गरामी नक़ल करते हुए फ़रमाया कि सूरज और चांद बेनूर करके दो टुकड़े बनाकर क़ियामत के दिन दोज़ख़ में डाल दिए जाएंगे। यह सुनकर हज़रत हसन (रह०) ने सवाल किया कि इनकी क्या वजह है? हज़रत अबू हुरैरः ﷺ ने

फ़रमाया कि मैं आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ का फ़रमान नक़ल कर रहा हूं (इससे ज़्यादा मुझे इल्म नहीं) यह सुनकर हसन रह० ख़ामोश हो गये।[1]

इन्सानों का क़ब्रों से निकलना

हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर رضي الله عنه रिवायत फ़रमाते हैं कि प्यारे नबी ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि सबसे पहले ज़मीन फटकर मुझे ज़ाहिर करेगी; फिर अबू बक्र رضي الله عنه व हज़रत उमर رضي الله عنه क़ब्रों से ज़ाहिर होंगे। फिर बक़ीअ् (क़ब्रिस्तान) में जाऊंगा। इसलिए वे (क़ब्रों से निकल कर) मेरे साथ जमा कर दिए जाएंगे। फिर मैं मक्का वालों का इन्तिज़ार करूंगा, (यहां तक कि वे भी क़ब्रों से निकल कर मेरे साथ हो जाएंगे) फिर मैं हरमैन (वालों) के दर्मियान (महश्र में) जमा हो जाऊंगा।[2]

जो लोग क़ब्रों में दफ़न हैं (मुस्लिम हों या काफ़िर) वे तो दूसरी बार सूर की आवाज़ सुनकर क़ब्रों से निकल खड़े होंगे और जो लोग आग में जला दिये गये या समुद्रों में बहा दिए गये या जिनको दरिंदों ने फाड़ खाया था, उनकी

---

1. आसमान, ज़मीन, चांद, सूरज और सितारों के बारे में पुराने फ़लसफ़े और आज की साइंस के कुछ ख़्यालात हैं। ये सब उन लोगों ने ख़ुद तज्वीज़ कर लिए हैं, जिनमें तब्दीलियां तज्वीज़ करते रहते हैं। आज एक नज़रिया है, कल दूसरी बात कह देंगे। अटकलों, ख़्यालों और गुमानों के चारों तरफ़ इनके नज़रिए घूमते रहते हैं। फिर ताज्जुब यह है कि क़ुरआन व हदीस में इन चीज़ों के पिछले या अगले जो हालात ज़िक्र किये गये हैं, उनके मान लेने में इसलिए झिझकते हैं कि अपने गढ़े हुए नज़रियों के ख़िलाफ़ नज़र आते हैं, जिसने इन चीज़ों को वुजूद बख़्शा है। उससे ज़्यादा उसकी मख़लूक़ का जानने वाला कौन हो सकता है? बेशक वे लोग बड़े बे-सूझ-बूझ के और हक़ के रास्ते से हटे हुए हैं। अल्लाह जो सबको पैदा करने वाला और सबका मालिक है, उसकी ख़बर को अपने तज्वीज़ किए हुए नज़रियों पर परखते हैं। क़ियामत आने के सिलसिले में दुनिया के बिगड़ने और बदलने के जिन हालात का ज़िक्र क़ुरआन व हदीस में किया गया है, बेशुब्हा सही और हक़ है। जो लोग अपने तज्वीज़ किए हुए नज़रिए की बुनियाद पर क़ुरआन व हदीस को न मानें, ख़ुली गुमराही और ख़ुली नादानी में पड़े हुए हैं। इंय्यत्तबिऊ न इल्लज़्ज़न्न व मा तहवल अन्फ़ुसु लक़द जा अहुम बिर्रब्बिहिमुलहुदा।
2. तिर्मिज़ी शरीफ़

रूहों को भी जिस्म दिया जाएगा और ज़रूर ही वे भी महशर में हाज़िर होंगे।

क़ब्रों से नंगे और बे-ख़त्ना के निकलेंगे

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया कि मैंने प्यारे नबी ﷺ से सुना कि क़ियामत के दिन लोग नंगे पांव, नंगे बदन, बे-ख़त्ना के जमा किए जाएंगे। मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! क्या मर्द व औरत सब (नंगे होंगे और) एक दूसरे को देखते होंगे। (अगर ऐसा हुआ तो बड़े शर्म की बात होगी) इसके जवाब में प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया कि ऐ आइशा! क़ियामत की सख़्ती इतनी ज़्यादा होगी (और लोग घबराहट और परेशानी से ऐसे बेहाल होंगे) कि किसी को दूसरे की तरफ़ देखने का ध्यान ही न होगा।[1]

दूसरी हदीस में है कि प्यारे नबी ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बेशक क़ियामत के दिन नंगे पांव, नंगे बदन, बे-ख़त्ना जमा किये जाओगे। यह फ़रमाकर क़ुरआन मजीद की आयत **'क मा बदअ्ना अव्व ल ख़ल्क़िन नुइदुहू'** (हमने जिस तरह पहली बार पैदा करने के वक़्त शुरूआत की थी, उसको दोबारा इसी तरह लौटाएंगे) तिलावत फ़रमाई। फिर फ़रमाया कि सबसे पहले क़ियामत के दिन इब्राहीम عليه السلام को कपड़े पहनाये जाएंगे।[2]

उलमा ने लिखा है कि हज़रत इब्राहीम عليه السلام को इसलिए सबसे पहले लिबास पहनाया जाएगा कि उन्होंने सबसे पहले फ़क़ीरों को कपड़े पहनाये थे या इसलिए कि वे अल्लाह तआला की तरफ़ दावत देने की वजह से सबसे पहले नंगे किये गये जबकि काफ़िरों ने उनको आग में डाला था।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رضي الله عنه से रिवायत है आंहज़रत ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि सबसे पहले जिसको कपड़े पहनाये जाएंगे, वह इब्राहीम عليه السلام होंगे। अल्लाह तआला फ़रमायेंगे कि मेरे दोस्त को पहनाओ। चुनांचे जन्नत के कपड़ों में से दो बारीक और नर्म-सफ़ेद कपड़े उनको पहनाने के लिए लाए जाएंगे। उनके बाद मुझे कपड़े पहनाये जाएंगे।

1. बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ 2. मिश्कात शरीफ़

क़ब्रों से उठकर मैदाने हश्र में जमा होने के लिए चलना

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन लोग तीन क़िस्म से जमा किये जाएंगे– (1) एक जमाअ़त पैदल, (2) दूसरा सवार और (3) तीसरी वह जमाअ़त होगी जो अपने चेहरों के बल चलेंगे। सवाल किया गया कि या रसूलल्लह! वे लोग चेहरों के बल क्यों कर चलेंगे? जवाब में सैयदे आ़लम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बेशक जिस ज़ात पाक ने उनको क़दमों पर चलाया, वह इसपर क़ुदरत रखता है कि उनको चेहरों के बल चला दें। फिर फ़रमाया कि ख़बरदार वे (चेहरों के बल इस तरह चलेंगे) कि ज़मीन के उभरे हुए हिस्से और कांटों तक से अपने चेहरों के ज़रिए बचाव करेंगे।[1]

यह हाल काफ़िरों का होगा। चूंकि इन नालायक़ों ने दुनिया में अपने चेहरे को ख़ुदा के हुज़ूर में रखने से मुंह फेरा और घमंड की वजह से सज्दे में सर रखने से इन्कार कर दिया इसलिए क़ियामत के दिन उनके चेहरों से उनको पांव का काम दिलाया जाएगा ताकि ख़ूब ज़लील हों और चेहरों के पैदा करने वाले और मालिक को सज्दा करने से जो इन्कार किया था, उसका मज़ा चख लें। अल्लाह तआ़ला को सब कुछ क़ुदरत है। वह अपनी मख़्लूक़ के जिस्म के हर हिस्से को उसकी हर ख़िदमत में इस्तेमाल फ़रमा सकते हैं। दुनिया ही में देख लिया जाए कि कुछ चीज़ें चार पैरों पर और कुछ दो पैरों पर चलती हैं और कुछ सिर्फ़ अपने पेट से (फ़ **मिन्हुम मैंयम्शी अ़ला बत्निहा**) वे लोग जिनके एक हाथ है, वे उसी एक हाथ से दोनों हाथों का काम कर लेते हैं। जो लोग अंधे होते हैं उनकी सुनने और महसूस करने की ताक़त अकसर तेज़ होती है, जिनसे बड़ी हद तक आंख न होने की कमी हो जाती है। क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला काफ़िरों को चेहरे के बल चलायेंगे। यह अक़्ल के एतबार से ज़रा भी नामुम्किन नहीं है।

---

1. बुख़ारी व मुस्लिम

काफ़िर गूंगे-बहरे और अन्धे उठाये जाएंगे

सूरः बनी इस्राईल में फ़रमाया :

وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ عُمْيًا وَّبُكْمًا وَّ صُمًّا۔

व नहशुरुहुम यौमल क़ियामति अ़ला वुजूहिहिम उम्यौं व बुक्मौं व सुम्मा।

'और हम उनको क़ियामत के दिन अंधे, बहरे, गूंगे करके चेहरों के बल चलाएंगे।'

सूरः ताहा में इर्शाद फ़रमाया :

وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِىْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَّنَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَعْمٰى، قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِىْٓ اَعْمٰى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا قَالَ كَذٰلِكَ اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا، وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى، وَكَذٰلِكَ نَجْزِىْ مَنْ اَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَاَبْقٰى۔

व मन अअ्र ज़ अ़न ज़िक्री फ़ इन्न न लहू मईशतन ज़न्कौंव नहशुरुहू यौमल क़ियामति अअ्मा। क़ा ल रब्बि लि म हशर्तनी अअ्मा व क़द कुन्तु बसीरा। क़ा ल कज़ालि क अतत् क आयातुना फ़ न सी त हा व कज़ालि कल यौ म तुन्सा। व कज़ालि क नज्ज़ी मन असर फ़ व लम् युअ्मिम बिआयाति रब्बिही व ल अ़ज़ाबुल आख़िरति अशद्दु व अब्क़ा।

'और जिसने मुंह फेरा मेरी याद से तो उसके लिए है तंगी की ज़िंदगी और क़ियामत के दिन हम उसका हश्र इस तरह करेंगे कि वह अंधा होगा। वह कहेगा कि ऐ मेरे रब! क्यों तूने मुझे अंधा उठाया हालांकि मैं देखता था। जवाब में ख़ुदा इर्शाद फ़रमायेगा इसी तरह आती थीं तेरे पास मेरी आयतें, पस तूने उनको भुला दिया और इसी तरह आज तू भुलाया जाएगा और इसी

तरह हम बदला देंगे उसको जो हद से बढ़ा और अपने रब की आयतों पर ईमान न लाया और अलबत्ता आख़िरत का अज़ाब सख़्त है और बाक़ी रहने वाला है।'

अल्लाह के दीन से दुनिया में जिन लोगों ने आँखें फेरीं और सच्चे मालिक की आयतों को सुनकर क़ुबूल करने और इक़रार करने के बजाए सब सुनी अनसुनी कर दी, उनकी आंखों और कानों और ज़ुबानों की ताक़तें छीन ली जाएंगी और गूंगे-बहरे होकर उठेंगे। यह हश्र के शुरू का ज़िक्र है। फिर आंख और ज़ुबान और कान खोल दिए जाएंगे ताकि महशर के हालात और उसकी सख़्तियां देख सकें और हिसाब-किताब के मौक़े पर उनसे सवाल-जवाब किया जाए।[1]

काफ़िरों की आंखें नीली होंगी।

सूरः ताहा में फ़रमाया :

وَنَحْشُرُ الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا يَّتَخَافَتُوْنَ بَيْنَهُمْ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا عَشْرًا

व नह्शुरुल मुज्रिमी न यौ म इज़िन ज़ुर्कौय त ख़ाफ़तू न बै नहुम इल्लबिस्तुम इल्ला अश्रा।

'और हम जमा करेंगे उस दिन गुनाहगारों को इस हाल में कि उनकी आंखें नीली होंगी। चुपके-चुपके आपस में कहते होंगे कि दुनिया में बस तुम दस दिन रहे।'

यानी बुरा लगने के लिए उनकी आखें नीली कर दी जाएंगी, जब क़ियामत को उठ खड़े होंगे तो आपस में धीरे-धीरे बातें करेंगे कि दुनिया में कितने दिन रहे। फिर ख़ुद ही आपस में जवाब देंगे। कोई कहेगा कि दुनिया में हम दस दिन ही रहे।

दुनिया में कितने दिन रहे?

अल्लाह तआला ने इस आयत के बाद दूसरी आयत में फ़रमाया :

نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ اِذْ يَقُوْلُ اَمْثَلُهُمْ طَرِيْقَةً اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا يَوْمًا۔

1. मआलिमुत्तंज़ील

नह्नु अअ्लमु बिमा यक़ूलू न इज़ यक़ूलु अम्सलुहुम तरीक़तन इल्लबिस्तुम इल्ला यौमा।

'हमको अच्छी तरह मालूम है, जो कुछ वे कहते हैं। जब बोलेगा उनमें का अच्छी रविश वाला कि तुम दुनिया में एक दिन से ज़्यादा नहीं रहे।'

आख़िरत के लम्बे और वहां कि दर्दनाक मंज़रों को देखकर दुनिया में या क़ब्र में रहना इतना कम नज़र आयेगा कि गोया दस दिन से ज़्यादा नहीं रहे। दस दिन भी किसी के ख़्याल में गुज़ारेगा। वरन् जो इनमें ज़्यादा अक़्लमंद और अच्छी राय वाला और होशियार होगा, वह कहेगा कि दस दिन कहां? सिर्फ़ एक ही दिन समझो। इस बात के कहने वाले को अक़्लमंद और अच्छे रवैया वाला इसलिए फ़रमाया कि दुनिया का ख़त्म हो जाना और आख़िरत का बाक़ी रहना और सख़्ती को उसने दूसरों से ज़्यादा समझा।

सूरः नाज़िआत में फ़रमाया :

كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوْا اِلَّا عَشِيَّةً اَوْ ضُحٰهَا ○

क अन्नहुम यौ म यरौ न हा लम् यल्बसू इल्ला अशीय्यतन औ ज़ुहाहा।

'जब वे क़ियामत को देखेंगे तो ऐसा मालूम होगा कि दुनिया में बस एक शाम या उसकी सुबह ठहरे हैं।'

अब तो जल्दी करते हैं और कहते हैं। **'मता हाज़ल वअ्दु इन कुन्तुम सादिक़ीन।** (यह वादा कब पूरा होगा अगर तुम सच्चे हो) और यह भी कहते हैं कि **'ऐयाना मुर्साहा'** (कब पूरा होगा क़ियामत का आना) लेकिन जब वह अचानक आ पहुंचेगी, उस वक़्त ऐसा मालूम होगा कि बहुत जल्द आयी, बीच में ज़रा देर भी नहीं लगी।

सूरः रूम में फ़रमाया :

وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُوْنَ، مَالَبِثُوْا غَيْرَ سَاعَةٍ، كَذٰلِكَ كَانُوْا يُؤْفَكُوْنَ ○

व यौ म तक़ूमुस्सा अ तु युक़्सिमुल मुज्रिमू न मा लबिसू ग़ै र साअतिन क ज़ालि क कानू युअ् फ़कून।

'और जिस दिन क़ायम होगी क़ियामत, क़सम खाकर कहेंगे मुज्रिम कि हम दुनिया में एक घड़ी से ज़्यादा नहीं रहे। इसी तरह उलटे चलते थे।'

क़ब्र में या दुनिया में रहना थोड़ा-सा मालूम होगा। जब क़ियामत की मुसीबत सर पर आ खड़ी होगी तो अफ़सोस करेंगे और कहेंगे कि दुनिया की और बर्ज़ख़ की ज़िंदगी बड़ी जल्दी ख़त्म हो गयी। कुछ ज़्यादा मुद्दत ठहरने को मौक़ा मिलता तो इस दिन के लिए तैयारी करते। यह तो एक दम मुसीबत की घड़ी सामने आ गयी। दुनिया के मज़े और लम्बी चौड़ी उम्मीदें सब भूल जाएंगे। बेहूदा उम्र खोने और दुनिया की साज-सज्जा और ओहदों और बड़ाईयों में जो वर्षों गुज़ारे थे, उतनी लम्बी उम्र को घड़ी भर की ज़िंदगी बतायेंगे। अल्लाह जल्ल ल शानुहू ने फ़रमाया, **कज़ालि क कानू युअ्फ़कून।** यानी इसी तरह दुनिया में उलटी बातें करते थे और बेहूदा ख़्यालात जमाते थे, न दुनिया में हक़ को माना और दिल में उतारा, न यहां सच बोल रहे हैं।

आगे इर्शाद फ़रमाया :

وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَالْاِيْمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِىْ كِتٰبِ اللّٰهِ اِلٰى يَوْمِ

الْبَعْثِ، فَهٰذَا يَوْمُ الْبَعْثِ وَلٰكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَاتَعْلَمُوْنَ ،

व क़ालल्लज़ी न ऊतुल इल मा वल ईमा न लक़द लबिस्तुम फ़ी किताबिल्लाहि इला यौमिल बअ्सि फ़ हाज़ा यौमुल बअ्सि व ला किन्नकुम कुन्तुम ला तअ्लमून।

'और कहेंगे इल्म और ईमान वाले, तुम्हारा ठहरना अल्लाह की किताब में जी उठने के दिन तक था, सो यह है जी उठने का दिन, लेकिन तुम जानते न थे।'

इल्म और ईमान वाले उस वक़्त उनकी बातों को रद्द करेंगे और कहेंगे कि तुम झूठ बकते हो और यह जो कहते हो कि सिर्फ़ एक घड़ी रहना हुआ,

सरासर ग़लत है। तुम ठीक अल्लाह तआ़ला के इल्म में और लौहे महफ़ूज़[1] के नविश्ता[2] के मुताबिक़ क़ियामत के दिन तक ठहरे, एक सेकंड की भी कमी नहीं हुई, हर एक को जितनी उम्र मिली थी, उसने सब पूरी की। फिर बर्ज़ख़ की लम्बी ज़िंदगी गुज़ार कर अब मैदाने हश्र में मौजूद हुआ है। आज वह दिन आ पहुंचा जिसका आना यक़ीनी था। अब देख लो जिसे तुम जानते और मानते न थे। अगर पहले से उस दिन का यक़ीन करते तो यहां के लिए ईमान और नेकियों से तैयार होकर आते।

क़ियामत के दिन की परेशानी और हैरानी

क़ियामत का दिन होश गुम कर देने वाला होगा

सूरः इब्राहीम में फ़रमाया :

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِىْ رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ وَاَفْـِٕدَتُهُمْ هَوَآءٌ

व ला तहसबन्नल्ला ह ग़ाफ़िलन अ़म्मा यअ़्मलुज़्ज़ालिमू न इन्नमा युअख़्ख़िरुहुम लियौमिन तश्ख़सु फ़ीहिल अब्सारु मुहतिई न मुक़्निई रुऊसिहिम ला यर्तद्दु इलैहिम तर्फ़ुहुम व अफ़इदतुहुम हवाउ।

'और जो कुछ ज़ालिम करते हैं अल्लाह तआ़ला को उनके आ़माल से बेख़बर मत समझ। उनको सिर्फ़ उस दिन तक मोहलत दे रखी है जिसमें उन लोगों की आंखें फटी रह जाएंगी। दौड़ते होंगे (और) अपने सर ऊपर को उठाये हुए होंगे, उनकी नज़र उनकी तरफ़ हटकर न आयेगी और उनके दिल बिल्कुल बद-हवास होंगे।'

महशर की तरफ़ (क़ब्रों से निकल कर) सख़्त परेशानी और हैरत से ऊपर को सर उठाये टकटकी बांधे घबराते हुए चले जाएंगे। हक्का-बक्का

1. सुरक्षित तख़्ती
2. लिखे हुए

होकर देखते होंगे। ज़रा पलक भी न झपकेगी। दिलों का यह हाल होगा कि होश से बिल्कुल ख़ाली होंगे, ख़ौफ़ में उड़े जा रहे होंगे।

सूरः हज में फ़रमाया :

يَاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ، اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيْمٌ، يَوْمَ تَرَوْنَهَا
تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّآ اَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا
وَتَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى وَمَاهُمْ بِسُكٰرٰى وَلٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِيْدٌ○

या ऐयुहन्नासुत्तक़ू रब्बकुम इन्न न ज़ल ज़लतस्साअ़ति शैउन अज़ीम तरौ न हा तज़हलु कुल्लु मुर्ज़िअ़तिन अ़म्मा अर्ज़अ़त व तज़उ कुल्लु ज़ाति हम्लिन हम्लहा व तरन्ना स सुकारा व मा हुम बिसुकारा। व ला किन्न न अ़ज़ाबल्लाहि शदीद।

'ऐ लोगो! डरो अपने रब से बिला शुब्हा क़ियामत का भूंचाल एक बड़ी चीज़ है जिस दिन उसको देखोगे, भूल जाएगी हर दूध पिलाने वाली अपने दूध पिलाने को और गिरा देगी हर हमल वाली अपने हमल को और तू देखेगा लोगों को नशे में और (हक़ीक़त में), वे नशे में न होंगे लेकिन अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त है।'

क़ियामत के बड़े ज़ल्ज़ले हैं। क़ियामत से कुछ पहले जो क़ियामत की निशानियों में से हैं दूसरा उस वक़्त जब दोबारा सूर फूंके जाने के बाद क़ब्रों से निकल खड़े होंगे। इस आयत में अगर पहला ज़ल्ज़ला मुराद है तो दूध पिलाने वालियों का बच्चों को भूल जाना और हामिला औरतों का अपने-अपने हमल गिरा देना हक़ीक़ी और ज़ाहिरी मानी के एतबार से मुराद होगा और अगर दूसरे मानी मुराद हों तो यह मिसाल के तौर पर कहा गया समझा जाएगा यानी क़ियामत की घबराहट और सख़्ती इतनी होगी कि अगर औरतों के पेटों में उस वक़्त हमल हों तो उनके हमल गिर जाएं और उनकी गोदों में दूध पीते बच्चे हों तो उनको भूल जाएं।

इस वक़्त लोग इतने डरे हुए होंगे कि देखने वाला ख़्याल करेगा कि ये लोग शराब के नशे में हैं हालांकि वहां नशे का क्या काम? अ़ज़ाब की

सख़्ती होश गुम कर देगी। सूरः मुज़्ज़म्मिल में इर्शाद है :

فَكَيْفَ تَتَّقُونَ إِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيبًا

फ़ कै फ़ तत्तक़ू न इन कफ़र्तुम यौमैंयज्अलुल विल्दा न शीबा।

'सो अगर तुम कुफ़्र करोगे तो कैसे बचोगे उस दिन से जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा।'

अगर दुनिया में बच गये तो उस दिन किस तरह बचोगे जिस दिन की तेज़ी और लम्बाई बच्चों को बूढ़ा कर देने वाली होगी। चाहे, सच में बूढ़ें न हों मगर वह दिन ऐसा सख़्त होगा कि उसकी सख़्ती और लम्बाई बच्चों को बूढ़ा कर देने वाली होगी।

चेहरों पर ख़ुशी और उदासी

महशर में सब ही हाज़िर होंगे अल्लाह के नेक बंदों के चेहरे सफ़ेद और ख़ुश और हंसते-खेलते होंगे और काफ़िरों और नाफ़रमानों के चेहरों पर उदासी और ज़िल्लत छायी होगी। सूरः आले इम्रान में फ़रमाया :

يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَّتَسْوَدُّ وُجُوهٌ، فَأَمَّا الَّذِينَ اسْوَدَّتْ وُجُوهُهُمْ،
أَكَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ وَأَمَّا الَّذِينَ
ابْيَضَّتْ وُجُوهُهُمْ فَفِي رَحْمَةِ اللّٰهِ، هُمْ فِيهَا خٰلِدُونَ○

यौ म तब्यज़्ज़ु वुजूहुंव्व तस्वद्दु वुजूह। फ अम्मल्लज़ी नस्वद्दत वुजूहुहुम अ कफ़र्तुम बअ्द ईमानिकुम फ ज़ूक़ुल अज़ा ब बिमा कुन्तुम तक्फ़ुरून। व अम्मल्लज़ी नब यज़्ज़त वुजूहुहुम फ़फ़ी रहमतिल्लाहि हुम फ़ीहा ख़ालिदून।

'जिस दिन कुछ चेहरे सफ़ेद होंगे और कुछ स्याह होंगे। सो जिनके चेहरे स्याह होंगे, उनसे कहा जाएगा क्या तुम काफ़िर हुए बाद ईमान लाने के। बस चखो अज़ाब इस वजह से कि तुम कुफ़्र करते थे और जिनके चेहरे सफ़ेद हुए सो वह अल्लाह की रहमत में होंगे; वे उसमें हमेशा रहेंगे।'

कुछ के चेहरों पर ईमान व तक़्वा का नूर चमकता होगा और इज़्ज़त के साथ ख़ुश-ख़ुश नज़र आएंगे उनके ख़िलाफ़ दूसरों के मुंह कुफ़्र व निफ़ाक़ की स्याही से काले होंगे। शक्ल से ज़िल्लत व रुस्वाई टपक रही होगी। हर एक का ज़ाहिर उसके भीतर का आईना होगा।

सूरः अ़ ब स में फ़रमाया :

وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ○ ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ○ وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ○ تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ○ أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ○

वुजूहुंयौ म इज़िम मुस्फ़िरः। ज़ाहिकतुम मुस्तब्शिरः। व वुजूहुंयौ म इज़िन अ़लैहा ग़ ब रः। तर्हक़ुहा क़ त रः। उलाइ क हुमुल क फ़ र तुल फ़ ज रः०

'कितने चेहरे उस दिन रौशन (और) हंसते (और) ख़ुशी करते होंगे और कितने चेहरे उस दिन ऐसे होंगे कि उन पर गर्द पड़ी होगी और स्याही चढ़ी आती होगी। ये लोग काफ़िर व नाफ़र्मान होंगे।'

ईमान और नेक कामों की वजह से नेक बन्दों के चेहरे रौशन होंगे। उनकी शक्लों से ख़ुशी और ताज़गी ज़ाहिर हो रही होगी और जिन नालायक़ों ने दुनिया से ख़ुदा को भुला दिया, ईमान और नेक कामों के नूर से अलग रहे और कुफ़्र और नाफ़र्मानी की स्याही में घुसे रहे, क़ियामत के दिन उनके चेहरों पर स्याही चढ़ी होगी। ज़िल्लत और रुस्वाई के साथ महशर में हाज़िर होंगे और अपने बुरे आमाल की वजह से उदास हो रहे होंगे और डरे हुए होकर यह सोचते होंगे कि वहां हमसे बुरा बर्ताव होने वाला है और वह आफ़त आने वाली है जो कमर तोड़ देने वाली होगी। *(तज़ुन्नु ऐंयुफ़ अ़ ल बिहा फ़ाकिरः)*

इर्शाद फ़रमाया सरवरे आ़लम ﷺ ने कि क़ियामत के दिन हज़रत इब्राहीम عليه السلام की उनके बाप आज़र से मुलाक़ात हो जाएगी। उनके बाप के चेहरे पर स्याही होगी और गर्द पड़ी होगी। हज़रत इब्राहीम عليه السلام अपने बाप से फ़रमायेंगे—क्या मैंने न कहा था कि मेरी नाफ़रमानी न करो। उनका बाप कहेगा कि आज आप की नाफ़रमानी न करूंगा। उसके बाद हज़रत इब्राहीम عليه السلام अल्लाह के दरबार में अ़र्ज़ करेंगे कि आपने मुझ से वादा फ़रमाया था

कि क़ियामत के दिन मुझे आप रुस्वा न करेंगे, इससे ज़्यादा क्या रुस्वाई होगी कि मेरा बाप हलाक हो रहा है। अल्लाह तआला शानुहू फ़रमायेंगे कि मैंने काफ़िरों पर जन्नत हराम कर दी गई है (तुम्हारा बाप अ़ज़ाब से बचकर जन्नत में नहीं जा सकेगा) फिर हज़रत इब्राहीम ؑ से पूछा जाएगा कि आपके पांव में क्या है? वह नज़र करेंगे तो एक लिथड़ा हुआ बिज्जू नज़र आएगा फिर इस बिज्जू की टांगें पकड़कर दोज़ख़ में डाल दिया जाएगा।

अल्लाह तआला शानुहू अपनी क़ुदरत से आज़र को बिज्जू की शक्ल में कर देंगे ताकि हज़रत इब्राहीम ؑ की रुस्वाई न हो और उनको अपने बाप की शक्ल देखकर तरस भी न आये। अल्लाह! अल्लाह! यह किसके बाप का अंजाम हुआ? हज़रत इब्राहीम ؑ के बाप का! जो नबियों के बाप हैं और ख़ुदा के दोस्त हैं। जिनकी मिल्लत (तरीक़े) की पैरवी करने का हुक्म हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ को हुआ। जिन्होंने ख़ाना काबा बनाया। काफ़िर बाप के हक़ में उनकी सिफ़ारिश भी न चली! कहां हैं वह पीर-फ़क़ीर जो नसब और रिश्ते पर फ़ख़्र करने वाले हैं और जो बुरे करतूतों के साथ रिश्तों की आड़ लेकर बख़्शे जाने के उम्मीदवार बने हुए हैं।

महशर में पसीने की मुसीबत

हज़रत मिक़दाद ؓ रिवायत करते हैं कि प्यारे नबी० ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत कि दिन सूरज मख़्लूक़ से इतना करीब हो जाएगा कि उनसे करीब एक मील[1] के फ़ासले पर होगा और आमाल की बुराईयों के

1. पहले गुज़र चुका है कि क़ियामत क़ायम होने से चाँद सूरज बेनूर हो जाएंगे, आसमान फट जाएगा। अगर कोई सवाल करे कि सूरज बेनूर होने के बाद महशर में लोगों के सरों से एक मील होकर कैसे गर्मी पहुंचाएगा जवाब यह है कि एक तो बेनूर होने के साथ उसकी जलन और गर्मी का ख़त्म हो जाना ज़रूरी नहीं और अगर यह मान लिया जाए कि बेनूर होने के साथ उसकी जलन भी जाएगी तो दूसरा जवाब यह है कि उसको दोबारा रोशनी और गर्मी देकर महशर में सरों पर क़ायम किया जाएगा फिर इसके बाद दोबारा बेनूर करके दोज़ख़ में डाल दिया जाएगा ताकि उसके पुजारियों को सबक़ मिले और समझ लें कि यह पूजा के क़ाबिल होता तो ख़ुद क्यों दोज़ख़ में पड़ा होता। बहरहाल आयतों और हदीसों में जो कुछ आया है उसपर ईमान लाना ज़रूरी है।

बराबर लोग पसीने में होंगे। बस कोई तो पसीने में टख़नों तक होगा और किसी के घुटनों तक पसीना होगा और किसी के तहमद बांधने की जगह पसीना होगा और किसी का यह हाल होगा कि पांव से लेकर मुंह तक पसीना होगा। उसका पसीना लगाम की तरह मुंह में घुसा हुआ होगा।[1]

एक हदीस में है कि प्यारे नबी ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि हश्र के मैदान में इंसान को इतना पसीना आयेगा और लगातार बाक़ी रहेगा कि इंसान यह कह उठेगा कि ऐ रब! आप का मुझे दोज़ख़ में भेज देना मेरे लिए इस मुसीबत से आसान है। महशर के अ़ज़ाब की सख़्ती को देखकर ऐसा कहेगा। हालांकि दोज़ख़ के अ़ज़ाब की सख़्ती को जानता होगा।[2]

हश्र के मैदान में मौजूद लोगों की अलग-अलग हालतें

भिखारियों की हालत

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि आंहज़रत ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि आदमी लोगों से सवाल करते-करते उस हालत को पहुंच जाता है कि क़ियामत के दिन इस हालत में आयेगा कि उसके चेहरे पर गोश्त की ज़रा-सी भी बोटी न होगी[3] यानी भीख मांगने वाले को रुस्वा और ज़लील करने के लिए हश्र के मैदान में इस हाल में लाया जाएगा कि उसके चेहरे पर बस हड्डियाँ ही हड्डियाँ होंगी और गोश्त की एक बोटी भी न होगी और तमाम लोग उसे देखकर पहचान लेंगे कि यह दुनिया में लोगों से सवाल करके अपनी इ़ज़्ज़त खोता था। आज भी उसकी कुछ इ़ज़्ज़त नहीं और सबके सामने ज़लील हो रहा है।

जिसने एक बीवी के साथ नाइंसाफ़ी की हो

हज़रत अबू हुरैरः رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि हज़रत रसूले करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस मर्द के पास दो बीवियां हों और उसने उनके दर्मियान

1. मुस्लिम शरीफ़ 2. तर्ग़ीब
3. बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़

इंसाफ़ न किया हो तो क़ियामत के दिन वह इस हाल में आयेगा कि उसका पहलू गिरा हुआ होगा।

जो क़ुरआन शरीफ़ भूल गया हो

हज़रत साद बिन उबादा ﷺ से रिवायत है कि हज़रत रसूल करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस शख़्स ने क़ुरआन शरीफ़ पढ़ा और फिर उसे (ग़फ़लत और सुस्ती की वजह से) भुला दिया, वह अल्लाह से इस हाल में मुलाक़ात करेगा कि **'अज्ज़म'** होगा।[1]

'अज्ज़म' यानी कोढ़ी होगा। उसके हाथ या उंगलियां गिरी हुई होंगी और कुछ बुज़ुर्गों का कहना है कि इसका मतलब यह है कि उसके दांत गिरे हुए होंगे।[2] ज़ाहिर में यह आख़िरी मतलब ही ज़्यादा मुनासिब मालूम होता है क्योंकि क़ुरआन शरीफ़ पढ़ते रहने से याद रहता है और पढ़ते रहना ज़ुबान और दांतों का अमल है। इसलिए इसकी सज़ा दांतों का न होना ही मुनासिब है। (ख़ुदा ही बेहतर जाने)

एक हदीस में है कि प्यारे नबी ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि मुझ पर मेरी उम्मत के गुनाह पेश किये गये तो मैंने कोई गुनाह इससे बढ़कर नहीं देखा कि किसी को क़ुरआन शरीफ़ की कोई सूरः या आयत आती हो और फिर वह उसे भूल जाए।[3]

बेनमाज़ियों का हश्र

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ से रिवायत है कि हज़रत रसूले करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसने नमाज़ की पाबंदी न की, इसके लिए नमाज़ न नूर होगी, न दलील होगी, न निजात का सामान होगी और क़ियामत के दिन उसका हश्र फ़िरऔन, क़ारून, हामान और उबई बिन ख़ल्फ़ के साथ होगा।[4]

---

1. मिश्कात शरीफ़ 2. लम्आत
3. तिर्मिज़ी शरीफ़ 4. अहमद व दारमी

क़ातिल व मक़्तूल[1]

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत है कि हज़रत रसूले करीम ﷺ ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन मक़्तूल अपने क़ातिल को पकड़कर इस तरह लायेगा कि क़ातिल का माथा और उसका सर मक़्तूल के हाथ में होगा और मक़्तूल की गरदनों की नसों से ख़ून बह रहा होगा। वह अल्लाह के दरबार में अ़र्ज़ करेगा कि ऐ रब! मुझे इसने क़त्ल किया था, (इसी तरह वह) उसे अ़र्श के क़रीब ले पहुंचेगा।[2]

क़ातिल की मदद करने वाला

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि हज़रत रसूले करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसने किसी मोमिन के क़त्ल में ज़रा-सी कलिमा कहकर भी मदद की हो (क़ियामत के दिन) वह ख़ुदा से इस हाल में मुलाक़ात करेगा कि उसकी दोनों आंखें के दर्मियान *'आइसुम मिर्रहमतिल्लाह'* लिखा होगा। जिसके मानी यह है यह अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद है।[3]

वादा न पूरा करने वाला

हज़रत सईद ﷺ से रिवायत है कि हज़रत रसूले करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन हर ग़ादिर (यानी वादा तोड़ने वाला) के लिए झंडा होगा जो उसके पाख़ाने की जगह पर लगा होगा।[4]

दूसरी रिवायत में है कि आंहज़रत ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसका वादा तोड़ना जितना ही बड़ा होगा उतना ही झंडा बुलन्द होगा। इसके बाद फ़रमाया कि ख़बरदार जो जनता का हाकिम बना उसके वादे तोड़ने से बढ़कर किसी का वादा तोड़ना नहीं यानी अगर वह वादा तोड़ेगा तो तमाम पब्लिक उसके निशाने पर आ जाएगी, इसलिए उसका वादा तोड़ना सबसे बड़ा हुआ।[5]

---

1. जिसे क़त्ल किया जाये
2. तिर्मिज़ी व नसाई
3. इब्ने माजा
4. मुस्लिम शरीफ़
5. मिश्कात

अमीर या बादशाह

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ फ़रमाते हैं कि हज़रत रसूले करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स भी दस आदमियों का अमीर बना होगा, वह क़ियामत के दिन इस हाल में आयेगा कि उसके हाथ बंधे हुए होंगे। यहां तक कि (अगर उसने अपने मातहतों में इंसाफ़ से काम लिया होगा तो) उसे इंसाफ़ छुड़ा देगा या (अगर ज़ुल्म का बर्ताव किया होगा तो) उसे ज़ुल्म हलाक कर देगा।[1]

एक हदीस में है कि जो हाकिम भी लोगों के दर्मियान हुक्म करता है। वह क़ियामत के दिन इस हाल में आयेगा कि एक फ़रिश्ते ने उसकी गुद्दी पकड़ रखी होगी। (वह फ़रिश्ता उसको लाकर खड़ा कर देगा और) फिर अपना सर आसमान की तरफ़ उठाकर (अल्लाह के हुक्म का इन्तिज़ार करेगा) सो अगर अल्लाह तआला हुक्म फ़रमाएंगे कि उसको गिरा दे तो वह उसको इतने गहरे गड्ढे में गिरा देगा जिसकी तह में गिरत-गिरते चालीस साल में पहुंचा जाए।[2]

ज़ालिम हाकिम गिराए जाएंगे।

ज़कात न देने वाला

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि हज़रत रसूल करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसे अल्लाह ने माल दिया और उसने उसकी ज़कात न अदा की तो क़ियामत के दिन उसका माल गंजा सांप बना दिया जाएगा जिसकी आँखों पर उभरे हुए दो नुक़्ते होंगे, वह सांप तौक़ बनाकर उसके गले में डाल दिया जाएगा फिर वह सांप उसके दोनों बांहों को पकड़कर कहेगा कि मैं तेरा माल हूं। फिर आप ﷺ ने यह आयत तिलावत फ़रमाई (जिस में यही मज़्मून आया है):

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَبْخَلُونَ بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ بَلْ هُوَ
شَرٌّ لَّهُمْ سَيُطَوَّقُونَ مَا بَخِلُوا بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ○

---

1. दारमी   2. मिश्कात

व ला यह्सबन्नल्लज़ी न यब्ख़लू न बिमा आताहुमुल्लाहु मिन फ़ज़्लिही हु व ख़ैरल्लहुम। बल हु व शर्रुल्लहुम। स यु तव्वक़ू न मा बख़िलू बिही यौमलक़ियामः।

'और जो लोग अल्लाह के दिए हुए में बुख़्ल (कंजूसी) करते हैं जो उसने उनको अपने फ़ज़्ल से दिया है। वे यह ख़्याल न करें कि यह उनके हक़ में बेहतर है, बल्कि यह उनके लिए वबाल है। उन्हें बहुत जल्द क़ियामत के दिन इस (माल) का तौक़ पहनाया जाएगा, जिसमें उन्होंने कंजूसी की थी।'—बुख़ारी

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि हज़रत रसूल करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि सोने-चांदी के जिस मालिक ने इनमें से इनका हक़ (ज़कात) अदा न किया तो जब क़ियामत का दिन होगा तो उसके लिए आग की तख़्तियां बनायी जाएंगी जो दोज़ख़ में तपायी जाएंगी फिर उनसे उनका पहलू और उसका माथा और उसकी पीठ को दाग़ दिया जाएगा। जब भी वे (तख़्तियां ठंढी हो-होकर दोज़ख़ की आग में) वापस कर दी जाएंगी तो फिर बार-बार निकाली जाती रहेंगी (और उनसे दाग़ दिया जाता रहेगा और यह सज़ा) उसको उस दिन में (मिलती रहेगी) जो पचास हज़ार वर्ष का दिन होगा। यहां तक कि सब बन्दों का फ़ैसला कर दिया जाएगा। आख़िरकार वह (इस मुसिबत से निजात पाकर) अपना रास्ता पायेगा जो जन्नत की तरफ़ होगी या दोज़ख़ की तरफ़। मौजूद लोगों में से किसी ने सवाल किया कि या रसूलल्लाह! ऊंटों का हुक्म (भी) इर्शाद फ़रमायें। आप ﷺ ने फ़रमाया जो ऊंटों वाला इनमें से इनके हक़ अदा नहीं करता और इनके हक़ों में से एक हक़ यह भी है कि जिस दिन उनको पानी पिलाये उस दिन उनका दूध भी निकाल ले तो उसको उन ऊंटों के नीचे साफ़ मैदान में लिटा दिया जाएगा। इसके ऊंट ख़ूब मोटेताज़े सबके सब वहां मौजूद होंगे। उनमें से एक बच्चा भी ग़ैर-हाज़िर न होगा। वे ऊंट अपने खुरों से उसको रौदेंगे और अपने मुंहों से उसको काटेंगे। जब उनका पहला गिरोह गुज़र चुकेगा तो बाद का गिरोह उस पर लौटा दिया जाएगा। पचास हज़ार वर्ष के दिन में बन्दों के दर्मियान फ़ैसले होने तक उसको यही सज़ा मिलती रहेगी। फिर वह अपना रास्ता जन्नत की तरफ़ जाएगा या

दोज़ख़ की तरफ़।

सवाल किया गया कि या रसूलुल्लाह! बकरियों और गायों का हुक्म भी इर्शाद फ़रमायें। आपने फ़रमाया कि जो गायों का मालिक और बकरियों का मालिक। इनमें से इनका हक़ अदा नहीं करता तो जब क़ियामत का दिन होगा तो उसको साफ़ मैदान में उनके नीचे लिटा दिया जाएगा। इनमें से वहां एक गाय या बकरी ग़ैरहाज़िर न होगी (और) न कोई इनमें मुड़े हुए सींगों की होगी और न कोई बेसींगा की और न कोई टूटे हुए सींगों की। फिर ये गायें और बकरियां उसपर गुज़रेंगी और अपने सींगों से उसको मारती जाएंगी और खुरों से रौंदती जाएंगी। जब इनका पहला गिरोह गुज़र चुकेगा तो आख़िर का गिरोह उसपर लौटा दिया जाएगा। पचास हज़ार वर्ष के दिन में फ़ैसला होने तक उसको यही सज़ा मिलती रहेगी फिर वह अपना रास्ता जन्नत की तरफ़ पायेगा या दोज़ख़ की तरफ़।[1]

क़ियामत के दिन सबसे ज़्यादा भूखे

हज़रत इब्ने उमर ؓ से रिवायत है कि हज़रत रसूल करीम ﷺ के सामने एक शख़्स ने डकार ली। आप ने फ़रमाया कि अपनी डकार कम करो क्योंकि क़ियामत के दिन सबसे ज़्यादा देर तक वही भूखे रहेंगे जो दुनिया में सबसे ज़्यादा देर तक पेट भरे रहते हैं।[2]

दोग़ले का हश्र

हज़रत अम्मार ؓ से रिवायत है कि हज़रत रसूले पाक ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जो दुनिया में दो चेहरों वाला था (यानी ऐसा शख़्स कि इस गिरोह के सामने इसकी तारीफ़ और दूसरों की निंदा (बुराई) करता हो और फिर जब दूसरों में जाए तो उनकी तारीफ़ और उस गिरोह की बुराई करता हो) तो क़ियामत के दिन उसकी ज़ुबान आग की होगी।[3]

---

1. मुस्लिम शरीफ़ 2. मिश्कात शरीफ़
3. मिश्कात

कनसूई लेने वाला

फ़रमाया हुज़ूरे अक्दस ﷺ ने कि जिसने बनाकर (यानि अपनी तरफ़ से गढ़कर) झूठा ख़्वाब ब्यान किया उसे क़ियामत के दिन मजबूर किया जाएगा कि दो जौ के बीच में गिरह लगाये और उनमें हरगिज़ गिरह न लगा सकेगा (इसलिए अ़ज़ाब में रहेगा)। और जिसने किसी गिरोह की बात की तरफ़ कान लगाये, हालांकि वह सुनाना न चाहते थे तो क़ियामत के दिन उसके कान में सीसा (पिघलाकर) डाला जाएगा और जिसने कोई तस्वीर (जानदार की) बनाई उसे क़ियामत के दिन अ़ज़ाब दिया जाएगा और मजबूर किया जाएगा कि उसमें रूह फूंक कर ज़िंदा करे और वह रूह फूंक न सकेगा।[1]

ज़िल्लत का लिबास

हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ से रिवायत है कि हज़रत रसूले करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसने दुनिया मे शोहरत (घमंड और इतरावे) का लिबास पहना, उसे खुदा क़ियामत के दिन ज़िल्लत का लिबास पंहनायेगा।[2]

ज़मीन हड़पने वाला

इर्शाद फ़रमाया हुज़ूरे अक्दस ﷺ ने कि जिसने थोड़ी-सी ज़मीन भी बग़ैर हक़ के ले ली, उसको क़ियामत के दिन सातवीं ज़मीन तक धंसा दिया जायेगा।[3]

दूसरी रिवायत में है कि आप ﷺ ने फ़रमाया कि जिसने ज़ुल्म के तौर पर एक बालिश्त ज़मीन भी ले ली उसको अल्लाह तआला मजबूर करेगा कि उसे इतना खोदे कि सातवीं ज़मीन के आख़िर तक पहुंच जाए फिर क़ियामत का दिन ख़त्म होने तक, जब तक कि लोगों में फ़ैसला न हो, वे सातों ज़मीनें उसके गले में तौक़ की तरह डाल दी जाएंगी।[4]

आग की लगाम

हज़रत अबू हुरैरः रज़ि॰ रिवायत करते हैं कि हज़रत रसूले करीम ﷺ

1. मिश्कात शरीफ़ 2. अहमद, अबूदाऊद
3. बुख़ारी शरीफ़ 4. मिश्कात शरीफ़

ने इर्शाद फ़रमाया कि जिससे कोई इल्म की बात पूछी गयी, जिसे वह जानता था और उसने वह छिपा ली तो क़ियामत के दिन उसके (मुंह में) आग की लगाम दी जाएगी।[1] चूंकि उसने बोलने के वक़्त ज़ुबान बंद कर रखी। इसलिए जुर्म के मुताबिक़ सज़ा तज्वीज़ हुई कि आग की लगाम लगायी गई।

ग़ुस्सा पीने वाला

हज़रत सहल ﷺ अपने बाप हज़रत मुआज़ ﷺ से रिवायत फ़रमाते थे कि नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया कि जिसने ग़ुस्सा पी लिया हालांकि वह ग़ुस्से के तक़ाज़े पर अमल करने की क़ुदरत रखता था; क़ियामत के दिन अल्लाह तआला उसको सारी मख़्लूक़ के सामने बुलाकर अख़्तियार देंगे कि जिस हूर को चाहे, अपने लिए अख़्तियार कर ले।[2]

हरमैन में वफ़ात पाने वाला

हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जो मदीने में ठहरा और उसने मदीने की तकलीफ़ पर सब्र किया। मैं क़ियामत के दिन उसके लिए गवाह और सिफ़ारिशी हूंगा और जो शख़्स मक्का के हरम या मदीना के हरम में मर गया, उसे अल्लाह क़ियामत के दिन अमन वालों में उठायेगा।[3]

जो हज करते हुए मर जाए

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ से रिवायत है कि एक साहब हज़रत रसूले करीम ﷺ के साथ अरफ़ात में ठहरे थे। अचानक सवारी से गिर पड़े, जिससे उनकी गरदन टूट गई। हुज़ूर ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि उसको बेरी के पत्तों में पके हुए पानी में नहलाओ और उसको इन (इहराम के) ही कपड़ों में कफ़न दो और उसका सिर न ढांको क्योंकि यह क़ियामत के दिन 'तल्बियः'[4] पढ़ता हुआ उठेगा।[5]

---

1. अहमद व तिर्मिज़ी
2. तिर्मिज़ी व अबूदाऊद
3. बैहक़ी
4. हज में जो दुआ अक्सर पढ़ी जाती है, जिसमें बार-बार लब्बैक आता है उसे तल्बियः कहते हैं।
5. बुख़ारी शरीफ़

शहीद

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह की राह में जिस किसी के ज़ख़्म लग गया और अल्लाह ही ख़ूब जानता है कि उसकी राह में किस-किस के ज़ख़्म आया है। (यानी) नीयत का हाल अल्लाह ही ख़ूब जानता है तो वह क़ियामत के दिन उस ज़ख़्म को लेकर इस हाल में आयेगा कि उसका ख़ून बह रहा होगा जिसका रंग ख़ून की तरह होगा और ख़ुश्बू मुश्क की तरह होगी।[4]

कामिल नूर वाले

हज़रत बुरैदा ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि हज़रत रसूले करीम ने इर्शाद फ़रमाया कि अंधेरे में मस्जिद जाने वालों को ख़ुशख़बरी सुना दो कि उनको क़ियामत के दिन पूरा नूर इनायत किया जाएगा। —तिर्मिज़ी

अज़ान देने वाले

हज़रत मुआविया ﷺ से रिवायत है कि हज़रत रसूले करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि अज़ान देने वाले क़ियामत के दिन सब लोगों से ज़्यादा लम्बी गरदनों वाले होंगे। —मुस्लिम

ख़ुदा के लिए मुहब्बत करने वाले

हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि मेरी अज़्मत (बड़ाई) की वजह से आपस में मुहब्बत करने वालों के लिए नूर के मिंबर होंगे और नबी व शहीद उन पर रश्क करते होंगे (क्योंकि वे तो बेख़ौफ़ और बेलगाम होकर नूर के मिम्बरों पर बैठे होंगे और नबी व शहीद दूसरों की सिफ़रिश में लगे होंगे।) —मिश्कात शरीफ़

अर्श के साये में

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि हज़रत रसूले करीम ﷺ ने

4. बुख़ारी व मुस्लिम

इर्शाद फ़रमाया कि सात शख़्सों को उस दिन अल्लाह अपने साए में रखेगा जबकि उसके साए के अ़लावा और किसी का साया न होगा।

1) मुसलमानों का इंसाफ़ पसंद बादशाह,

2) वह जवान, जिसने अल्लाह की इबादत में जवानी गुज़ारी,

3) वह मर्द, जिसका दिल मस्जिद में लगा रहता है। जब वह मस्जिद से निकलता है, जब तक वह वापस न आये (उसका जिस्म बाहर और दिल मस्जिद के अंदर रहता है),

4) वे दो शख़्स जिन्होंने आपस में अल्लाह के लिए मुहब्बत की। उसी मुहब्बत की वजह से जमा होते हैं और उसी को दिल में रखते हुए जुदा हो जाते हैं।

5) वह शख़्स जिसने तन्हाई में अल्लाह को याद किया और उसके आंसू बह निकले,

6) वह मर्द जिसको ख़ूबसूरत और इज़्ज़तदार औरत ने (बुरे काम के लिए) बुलाया और उसने टका-सा जवाब दे दिया कि मैं तो अल्लाह से डरता हूं,

7) वह शख़्स जिसने ऐसे छिपाकर सदक़ा दिया कि उसके बाएं हाथ को ख़बर न हुई कि दाहिने हाथ ने क्या ख़र्च किया।

—बुख़ारी व मुस्लिम

नूर के ताज वाले

हज़रत मुआ़ज़ जुह्नी ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि हज़रत रसूले करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसने क़ुरआन पढ़ा और उसपर अ़मल किया, क़ियामत के दिन उसके मां-बाप को एक ताज पहनाया जाएगा, जिसकी रौशनी सूरज की उस रौशनी से भी अच्छी होगी जबकि दुनिया के घरों में इस शक्ल में होती, जिस वक़्त कि सूरज तुम्हारे घरों में मौजूद होता। अब तुम ही बताओ कि जब उसके मां-बाप का यह हाल है तो ख़ुद जिसने उस

पर अ़मल किया होगा, उसका कैसा रुत्बा होगा।[1]

हलाल कमाने वाला

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि हज़रत रसूले करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसने हलाल तरीक़े से इसलिए दुनिया तलब की कि भीख मांगने से बचे और अपने घर वालों पर ख़र्च करे और अपने पड़ोसी पर रहम करे तो क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला से वह इस हाल में मुलाक़ात करेगा कि उसका चेहरा चौदहवीं रात की तरह चमकता हुआ होगा और जिसने हलाल तरीक़े से दुनिया इसलिए तलब की कि दूसरों के मुक़ाबले में ज़्यादा जमा कर ले और दूसरों पर फ़ख़्र करे और दिखावा करे तो ख़ुदा से इस हाल में मुलाक़ात करेगा कि अल्लाह तआ़ला उसपर ग़ुस्सा होगा।[2] —मिश्कात

रिश्ते-नाते काम न आयेंगे

उस दिन हर आदमी सिर्फ़ अपने बचाव की फ़िक्र में होगा। कोई किसी के काम न आयेगा। एक दूसरे से भागेगा। बहुत-सी आयतों में इन्हीं बातों का एलान फ़रमाया गया है। सूरः लुक़मान में इर्शाद है :

وَاخْشَوْا يَوْمًا لَّا يَجْزِي وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهٖ وَلَا مَوْلُودٌ هُوَ جَازٍ عَنْ وَّالِدِهٖ شَيْئًا

वख़्शौ यौमल्ला यज्ज़ी वालिदुन औंव ल दिही वला मौलूदुन हु व जाज़िन औंवालिदिही शैआ।

'उस दिन से डरो जिस दिन न बाप बेटे का बदला चुकायेगा, न बेटा ही बाप की तरफ़ से कोई मुतालबा (मांग) अदा कर सकेगा।'

क़ियामत के दिन बड़ा बिखराव होगा। दुनिया की कुछ दिनों की

1. अहमद, अबूदाऊद
2. यह बात ध्यान देने की है कि फ़ख़्र करने के लिए हलाल कमाने वाले के हक़ में यह धमकी है। पस जो लोग इस मक़सद के लिए हराम कमाते हैं, उनका क्या बनेगा? **फ़अ़्तबिरू या उलिल् अब्सार।**

ज़िंदगी से (जिस में नाते-रिश्तेदार काम आते हैं) धोखा खाकर बेवक़ूफ़ी से यह समझना कि क़ियामत में भी ये लोग काम आयेंगे, नादानी है। सूरः मुमिनून में फ़रमाया : فَإِذَا نُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَلَآ اَنْسَابَ بَيْنَهُمْ وَلَا يَتَسَآءَلُوْنَ

फ इज़ा नुफ़ि ख़ फ़िस्सूरि फ़ ला अन्सा ब बै नहुम वला य त साअलून।

'जब सूर फूंका जा चुकेगा तो उस दिन उनके दर्मियान रिश्ते-नाते न रहेंगे और न कोई किसी को पूछेगा।'

सूरः अ़ ब स में फ़रमाया :

يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِيْهِ وَاُمِّهٖ وَاَبِيْهِ وَصَاحِبَتِهٖ وَبَنِيْهِ

यौ म यफ़िर्रुल मर्उ मिन अख़ीहि व उम्मिही व अबीहि व साहिबतिही व बनीह।

यानी 'क़ियामत के दिन इंसान अपने भाई से और मां-बाप से और बीवी से और बेटों से सबसे भागेगा।'

यानी किसी के साथ हमदर्दी और मदद तो दूर की बात। वह अपने ऐसे क़रीबी रिश्तेदारों तक से दूर भागेगा।

दोस्त दुश्मन हो जाएंगे

क़ियामत के दिन बस नेक अ़मल ही काम आयेंगे। इंसान को सबसे ज़्यादा भरोसा अपने रिश्तेदारों पर होता है। ऊपर की आयतों से यह बात मालूम हुई कि इंसान अपने रिश्तेदारों से दूर भागेगा। उनके बाद नम्बर दोस्तों और हमदर्दों का आता है। उनके बारे में अल्लाह का इर्शाद है :

وَلَا يَسْئَلُ حَمِيْمٌ حَمِيْمًا يُبَصَّرُوْنَهُمْ

व ला यस अलु हमीमुन हमीमैंयुबस्सरू नहुम।

—सूरः मआ़रिज

यानी 'न दोस्त दोस्त को पूछेगा, हालांकि (वे एक दूसरे को) दिखाई दे रहे होंगे और फ़रमाया :

اَلْاَخِلَّآءُ یَوْمَئِذٍۭ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ اِلَّا الْمُتَّقِیْنَ○

अल-अख़िल्लाउ यौ म इज़िम बअ्ज़ुहुम लिबअ्ज़िन अ़दुव्वुन इल्लल मुत्तक़ीन। —ज़ुख़रुफ़

'यानी उस दिन दुनिया के दोस्त एक-दूसरे के दुश्मन बने हुए होंगे। हां! परहेज़गारों की दोस्ती उस वक़्त भी क़ायम रहेगी।

रिश्वत में सारी दुनिया देने को तैयार होंगे

सूरः मआ़रिज में फ़रमाया :

یَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ یَفْتَدِیْ مِنْ عَذَابِ یَوْمِئِذٍۭ بِبَنِیْهِ○ وَصَاحِبَتِهٖ وَاَخِیْهِ○
وَفَصِیْلَتِهِ الَّتِیْ تُؤْوِیْهِ○ وَمَنْ فِی الْاَرْضِ جَمِیْعًا ثُمَّ یُنْجِیْهِ، كَلَّا،

यवद्दुल मुज्रिमु लौ यफ़्तदी मिन अ़ज़ाबि यौ म इज़िम बिबनीह। व साहिबतिही व अख़ीह। व फ़सीलतिहिल्लती तुअ्वीह। व मन फ़िल अर्ज़ि जमीअ़न सुम्म म युन्जीह, कल्ला।

'मुज्रिम चाहेगा (किसी तरह) अपनी सज़ा के बदले में अपनी औलाद को, बीवी को, भाई को, यहां तक कि अपना सारा कुन्बा, जिसके साथ रहता था, बल्कि ज़मीन में जो कुछ है वह सब (रिश्वत के तौर पर) दे दे और फिर उसे छुटकारा मिल जाए।'

(लेकिन) हरगिज़ ऐसा न होगा। क़ियामत के दिन अपने बदले में रिश्तेदार-नातेदार, माल व दौलत, बल्कि सारी ज़मीन देकर जान छुड़ाने तक के लिए इंसान राज़ी होगा मगर वहां आ़माल के सिवा कुछ पास भी न होगा। अ़ज़ीज़ व रिश्तेदार क्यों किसी के बदले उस दिन की मुसीबत में पड़ना पसंद करेंगे। मान भी लीजिए अगर किसी के पास कुछ हो और कोई किसी की

तरफ़ से अपनी जान के बदले में देने को तैयार भी हो जाए तो क़ुबूल न होगा। सूरः आले इम्रान में फ़रमाया :

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْ أَحَدِهِمْ مِلْءُ الْأَرْضِ ذَهَبًا وَلَوِ افْتَدَىٰ بِهِ

इन्नल्लज़ी न क फ़ रू व मातू व हुम कुफ़्फ़ारुन फ़लैंयुक़्ब ल मिन अ ह दिहिम मिलउल् अर्ज़ि ज़ ह बौं व लविफ़्तदा बिः।

'बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया और कुफ़्र की हालत में मर गये सो उनमें से किसी का ज़मीन भर कर सोना भी न लिया जाएगा भले ही अपनी जान के बदले देना चाहे।'

अल्लाहु अकबर! कैसी परेशानी और मजबूरी और बेकसी की हालत होगी।

दुनिया में दोबारा आने की दर्ख़्वास्त

सूरः अलिफ़-लाम-मीम सज्दा में फ़रमाया :

وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الْمُجْرِمُونَ نَاكِسُوا رُءُوسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ رَبَّنَا أَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا إِنَّا مُوقِنُونَ

व लौ तरा इज़िल मुज्रिमू न नाकिसू रुऊसिहिम इन द रब्बिहिम। रब्बना अब्सरना व समिअ़्ना फ़र्जिअ़्ना नअ़्मल सालिहन इन्ना मूक़िनून।

'और अगर तुम वह वक़्त देखो जबकि मुज्रिम अपने परवरदिगार के सामने सिर झुकाये हुए (कह रहे) होंगे कि ऐ हमारे माबूद! हमने देख लिया और सुन लिया। हमें आप दुनिया में लौटा दीजिए। हम नेक काम करेंगे। अब हमें यक़ीन आ गया। उस वक़्त अजीब मंज़र देखोगे।'

लेकिन एक तो इन्हें दोबारा दुनिया में भेजा नहीं जाएगा और अगर भेज भी दिया जाए तो फिर नाफ़रमानी करेंगे। चुनांचे फ़रमाया :

وَلَوْ رُدُّوْا لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝

व लौ रुद्‌दू ल आदू लिमानुहू अन्हु व इन्नहुम ल काज़िबून।

—सूरः अन्‌आम

'अगर उन्हें लौटा दिया जाए तो फिर वे गुनाह करेंगे जिससे मना किया गया है। बेशक ये बड़े झूठे हैं।'

सरदारों पर लानत

सूर-सबा में फरमाया :

وَلَوْ تَرٰىٓ اِذِ الظّٰلِمُوْنَ مَوْقُوْفُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضِ نِ الْقَوْلَ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لَوْلَآ اَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِيْنَ، قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْٓا اَنَحْنُ صَدَدْنٰكُمْ عَنِ الْهُدٰى بَعْدَ اِذْ جَآءَكُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُّجْرِمِيْنَ وَقَالَ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا بَلْ مَكْرُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ اِذْ تَاْمُرُوْنَنَآ اَنْ نَّكْفُرَ بِاللّٰهِ وَنَجْعَلَ لَهٗٓ اَنْدَادًا

व लौ तरा इज़िज़्ज़ालिमू न मौक़ूफ़ू न इन्द रब्बिहिम यर्जिउ बअ्‌ज़ुहुम इला बअ्‌ज़ि-निल-क़ौल। यक़ूलुल्लज़ी नस तुज़्इफ़ू लिल्लज़ी नस्तकबरू लौ ला अन्तुम ल कुन्ना मुअ्‌मिनीन क़ालल्लज़ी नस्तक्बरू लिल्लज़ीनस्तुज़् इफ़ू अ नह्‌नु सद्‌दनाकुम अनिल हुदा बअ्‌द इज़ जा अ कुम बल कुन्तुम मुज्रिमीन। व क़ालल्लज़ीनस्तुज़् इफ़ू लिल्लज़ी नस्तकबरू बल मक्रुल्लैलि वन्नहारि इज़ तअ्‌मुरूनना अन नक्फु र बिल्लाहि व नज्‌अ ल लहू अन्दादा।

'काश! तुम वह वक़्त देखो जब ज़ालिम अपने परवरदिगार के पास खड़े हुए एक दूसरे पर बात टाल रहे होंगे जो लोग दुनिया में छोटे समझे जाते थे, उन लोगों से कहेंगे जो दुनिया में बड़े समझे जाते थे। अगर तुम न होते, तो हम यक़ीनन मोमिन होते। (यह सुनकर) बड़े लोग छोटों से कहेंगे कि क्या

हमने तुमको हिदायत से रोका था। जब तुम्हारे पास हिदायत आयी थी बल्कि तुम खुद मुज्रिम हुए। वे बड़ों को जवाब देंगे, बल्कि तुम्हारे रात-दिन के फ़रेब और चालबाज़ियों ने ही (हमें गुमराह किया) जब तुम हमें अल्लाह पाक के साथ कुफ़्र करने और उसके साथ शरीक ठहराने का हुक्म देते थे।'

इन आयतों में बातिल के सरदारों और कुफ़्र व शिर्क के लीडरों और उसकी बात पर चलने वालों की आपस में जो बहस क़ियामत के दिन अल्लाह के दरबार में होगी, उसको नक़ल फ़रमाया है। छोटे कहेंगे कि लीडरो! तुमने हमारा नास मारा और ख़ुदा से बाग़ी किया। लीडर कहेंगे कि हमने कब तुमको कुफ़्र व शिर्क पर मजबूर किया और कब तुम्हारा हाथ पकड़कर रोका। तुमने ख़ुद ही कुफ़्र किया था मगर तुम्हारी चालों और धोखेबाज़ियों ने हमको हक़ मानने और अल्लाह के रसूलों की पैरवी से रोके रखा। सूरः साफ़्फ़ात में फ़रमाया :

وَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ○ قَالُوْا اِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَاْتُوْنَنَا عَنِ الْيَمِيْنِ ○ قَالُوْا بَلْ لَّمْ تَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ○ وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طٰغِيْنَ ○ فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَا اِنَّا لَذَآئِقُوْنَ ○ فَاَغْوَيْنٰكُمْ اِنَّا كُنَّا غٰوِيْنَ ○

व अक़ ब ल बअ्ज़ुहुम अ़ला बअ्ज़िं य त साअलून। क़ालू इन्नकुम कुन्तुम तअ्तूनना अ़निल यमीन। क़ालू बल लम तकूनू मुअ्मिनीन। व मा का न लना अ़लैकुम मिन सुल्तानिन बल कुन्तुम क़ौमन ताग़ीन। फ़ हक़्क़ क़ अ़लैना क़ौलु रब्बिना इन्ना लज़ाइक़ून। फ़ अग़्वैनाकुम इन्ना कुन्ना ग़ावीन।

'और एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह होकर जवाब व सवाल करने लगेंगे जो ताबे (मातहत) थे वे अपने लीडरों से कहेंगे कि हमारे पास तुम्हारा आना बहुत ज़ोर से हुआ करता था। लीडर कहेंगे बल्कि तुम खुद ही ईमान नहीं लाये थे और हमारा तुम पर कोई ज़ोर तो था ही नहीं बल्कि तुम खुद ही सरकशी किया करते थे। सो हम सब पर तुम्हारे रब की बात साबित हो गयी कि हमको

मज़ा चखना है। तो हमने तुमको बहकाया। हम ख़ुद ही गुमराह थे।'

छोटे लोग और जनता अपने लीडरों और सरदारों पर इल्ज़ाम रखेंगे कि तुमने हमारा नास खोया और बड़े ज़ोर-शोर से तुम हमारे पास आते और तक़रीरों (भाषणों), तहरीरों (लेखों) से हम पर ज़ोर डालते और बातिल (असत्य) की तरफ़ बुलाते और हक़ के मानने से रोकते थे। लीडर जवाब में कहेंगे कि हमारा तुम पर क्या ज़ोर था। जो तुम्हारे दिल में ईमान न घुसने देते। तुम ख़ुद ही अक़्ल व इंसाफ़ की हद से निकल गए कि बेग़रज़ नसीहत करने वालों का कहना न माना और हमारे बहकावे में आये। समझ से और अंजाम को सोचते हुए काम लेते तो हमारी बातों पर कान न धरते। ख़ुदा के सच्चे पैग़म्बरों और क़ासीदों की बातों से क्यों मुंह मोड़ते? हम तो ख़ुद ही गुमराह थे। गुमराह से और क्या उम्मीद हो सकती है? वह तो गुमराह ही करेगा। अब क्या बन सकता है। अब हमको और तुमको अ़ज़ाब चखना है। आगे फ़रमाया :

فَإِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ إِنَّا كَذَٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ
إِنَّهُمْ كَانُوا إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ وَيَقُولُونَ أَئِنَّا
لَتَارِكُوا آلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَجْنُونٍ

फ़ इन्नहुम यौ म इज़िन फ़िल अ़ज़ाबि मुश्तरिकून। इन्ना कज़ालि क नफ़अ़लु बिल मुज्रिमीन। इन्नहुम कानू इज़ा क़ी ल लहुम ला इला ह इल्लल्लाहु यस्तक्बिरू न व यक़ूलू न अ इन्ना लतारिकू आलिहतिना लिशाइरिम मज्नून।

'सो वे सब उस दिन अ़ज़ाब में शरीक हों। हम मुज्रिमों के साथ ऐसा ही करते हैं। दुनिया में जब उनसे 'ला इला ह इल्लल्लाह' कहा जाता तो घमंड करते और यों कहते थे। क्या हम छोड़ देंगे अपने माबूदों को, एक शायर दीवाना के कहने से।'

लीडर हों या जनता, जिसने भी 'ला इला ह इल्लल्लाह' से इंकार किया और ख़ुदा को माबूद मानने को अपनी शान के ख़िलाफ़ समझा और

खुदा के रसूल को झुठलाया और शायर व दीवाना बताया। ऐसे लोग सब ही अज़ाब में डाले जाएंगे। यह न होगा कि सिर्फ़ गुमराह करने वाले लीडरों को अज़ाब हो और उनके रास्ते पर चलने वाली जनता छोड़ दी जाए।

लीडरों की बेज़ारी

सूरः बकरः में फ़रमाया :

إِذْ تَبَرَّأَ الَّذِينَ اتُّبِعُوا مِنَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا وَرَأَوُا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْأَسْبَابُ

इज़ तबर्रअल्लज़ी नत्तबिऊ मिनल्लज़ी नत्तबऊ व र अ वुल अज़ा ब व तक़त्तअत बिहिमुल अस्बाब।

'जिनके कहने पर दूसरे चलते थे। जब वे इनसे साफ़ बेज़ारी ज़ाहिर करेंगे जिन्होंने उनका कहा माना था और अज़ाब को देख लेंगे और उनके तअल्लुक़ात आपस में टूट जाएंगे।'

क़ियामत के दिन गुमराही के लीडर और कुफ़्र के सरदार अपने लोगों से बेज़ारी ज़ाहिर करेंगे और कोई मदद न करेंगे और न मदद कर सकेंगे। उस वक़्त उनकी बात पर चलने वालों और उनकी कुफ़्र व बातिल की तज्वीज़ों और प्रस्तावों पर हाथ उठाने वालों लीडरों पर जो गुस्सा आएगा, ज़ाहिर है। इसी आयत के आगे लोगों की परेशानी और शर्मिंदगी का ज़िक्र फ़रमाते हुए अल्लाह जल्ल ल शानुहू ने फ़रमाया :

وَقَالَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا لَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّأَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوا مِنَّا كَذَٰلِكَ يُرِيهِمُ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ حَسَرَاتٍ عَلَيْهِمْ وَمَا هُمْ بِخَارِجِينَ مِنَ النَّارِ

व क़ालल्लज़ी नत्त ब ऊ लौ अन्न न लना कर्रतन फ़ न त बर्र अ मिनहुम कमा तबर्रऊ मिन्ना क ज़ालि क युरीहुमुल्लाहु अअ्मालहुम ह स रातिन अलैहिम व मा हुम बिख़ारिजी न मिनन्नार।

'(और इन झूठे लीडरों के) लोग कहेंगे कि किसी तरह एक बार ज़रा हमको दुनिया में जाना मिल जाए तो हम भी उनसे साफ़ अलग हो जाएं। जैसा ये हमसे (इस वक़्त) साफ़ अलग हो गए और उनको दोज़ख़ से निकलना नसीब न होगा।'

क़ुरआन करीम ने साफ़ खोल कर मैदाने हश्र के वाक़िए ब्यान फ़रमाये हैं। क्या ठिकाना है हमदर्दी और भलाई चाहने का। बदक़िस्मत हैं जो उसकी दावत पर कान नहीं धरते और उसकी खुली निशानियों से नसीहत हासिल नहीं करते!

हश्र के मैदान में प्यारे नबी ﷺ के बुलन्द मर्तबे का ज़ुहूर

शिफ़ाअ़ते कुबरा, मक़ामे महमूद, उम्मते मुहम्मदिया की बड़ाई

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ؓ रिवायत फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन आदम की तमाम औलाद का मैं सरदार हूंगा (यानी सरदार होना सब पर साफ़ हो जाएगा। गो हक़ीक़त में सरदार अब भी आप ही हैं) और मैं इस पर फ़ख़्र नहीं करता हूं (बल्कि यह ब्यान हक़ीक़त और नेमत का इज़्हार है); और मेरे हाथ में हम्द का झंडा होगा और मैं इस पर फ़ख़्र नहीं करता हूं; और उस दिन हर बनी आदम और उनके अ़लावा सब नबी मेरे झंडे के नीचे होंगे और ज़मीन में सबसे पहले मैं ज़ाहिर हूंगा।[1] —तिर्मिज़ी

दूसरी रिवायत में है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि जब क़ियामत का दिन होगा तो मैं नबियों के आगे-आगे हूंगा और उन पर ख़तीब[2] और शफ़ाअ़त करने वाला हूंगा यह बग़ैर फ़ख़्र के ब्यान कर रहा हूं। —तिर्मिज़ी

हज़रत अबू हुरैरः ؓ रिवायत फ़रमाते हैं कि एक दावत में हम

1. तिर्मिज़ी
2. ख़िताब (भाषण) करने वाला

रसूलुल्लाह ﷺ के साथ थे। एक दस्त (बकरी का) आप ﷺ की ख़िदमत में पेश किया गया। आप ﷺ को दस्त पसन्द था। उसमें से आप ﷺ ने अपने मुबारक दांतों से थोड़ा-सा खाया और उस वक़्त इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन मैं सब इंसानों का सरदार हूंगा। तुमको मालूम है इसके (ज़ाहिर होने) की क्या शक्ल होगी? फिर खुद ही जवाब में इर्शाद फ़रमाया कि एक ही मैदान में अल्लाह तआ़ला तमाम अगलों-पिछलों को जमा फ़रमाएंगे; देखने वाला सबको देखेगा और पुकारने वाला सब को सुनायेगा और सूरज उनसे क़रीब होगा। इसलिए लोगों को ऐसी घुटन और बेचैनी होगी जो ताक़त और बर्दाशत से बाहर होगी।

इस घुटन और बेचैनी की वजह से लोग (आपस में) कहेंगे कि जिस हाल और जिस मुसीबत में तुम हो, ज़ाहिर है क्या किसी ऐसे (बुज़ुर्ग) शख़्स को नहीं खोजते जो तुम्हारे रब के दरबार में सिफ़ारिश कर दे। फिर कुछ से कहेंगे कि तुम्हारे बाप आदम ؑ इसके अहल (क़ाबिल) हैं, उनसे अ़र्ज़ करो। चुनांचे उनके पास आकर कहेंगे कि ऐ आदम! आप अबुल बशर[1] हैं। अल्लाह ने फ़रिश्तों को हुक्म दिया तो उन्होंने आपको सज्दा किया और आपको जन्नत में ठहराया। क्या आप अपने रब से हमारे लिए सिफ़ारिश नहीं कर देते? आप देखते नहीं हैं, हम किस मुसीबत और परेशानी में हैं? हज़रत आदम ؑ फ़रमायेंगे, यक़ीन जानो कि मेरे रब को आज इस क़दर गुस्सा है कि इससे पहले न कभी हुआ और न इसके बाद कभी हरगिज़ इतना गुस्सा होगा और यह हक़ीक़त है कि मेरे रब ने मुझे पेड़ (के पास जाने) से रोका था जिसकी मुझसे नाफ़रमानी हो गयी? नफ़्सी-नफ़्सी-नफ़्सी (मुझे अपनी ही फ़िक्र है)। तुम लोग मेरे आलावा किसी दूसरे के पास चले जाओ। ऐसा करो कि नूह ؑ के पास पहुंचो (और उनसे दरख़्वासत करो) इसलिए लोग हज़रत नूह ؑ के पास पहुचेंगे और अ़र्ज़ करेंगे कि आप ज़मीन वालों की तरफ़ (कुफ़्फ़ार को ईमान की दावत देने के लिए) सबसे पहले रसूल थे। अल्लाह ने आपको शुक्रगुज़ार बन्दा फ़रमाया है। क्या आप नहीं देख रहे हैं कि हम किस मुसीबत में हैं और हमारा क्या बुरा हाल बना हुआ है? क्या

1. इन्सानों के बाप

आप अपने रब के दरबार में हमारे लिए सिफ़ारिश नहीं कर देते? हज़रत नूह عليه السلام जवाब में फ़रमायेंगे, यक़ीन जानो मेरे रब को आज इतना गुस्सा है कि कभी ऐसा गुस्सा न इससे पहले हुआ और न हरगिज़ कभी इसके बाद होगा और यह सच है कि मैंने अपनी क़ौम के लिए बद्दुआ की थी (मुझे इस पर पकड़े जाने का डर है) नफ़्सी-नफ़्सी-नफ़्सी। तुम लोग मेरे अ़लावा किसी और के पास पहुंच जाओ। ऐसा करो कि इब्राहीम عليه السلام के पास जाओ।

इसके बाद लोग हज़रत इब्राहीम عليه السلام के पास आएंगे और उनसे अ़र्ज़ करेंगे कि आप अल्लाह के नबी और ज़मीन वालों में से (चुने हुए) अल्लाह के दोस्त हैं। हमारे लिए अपने रब के सामने सिफ़ारिश फ़रमा दीजिए। आप देख ही रहे हैं कि हमारा क्या हाल बना हुआ है? हज़रत इब्राहीम عليه السلام उनको जवाब देंगे। यक़ीन जानो, मेरे रब को आज इस क़दर गुस्सा है कि न कभी ऐसा गुस्सा इससे पहले हुआ, न हरगिज़ कभी इसके बाद होगा और यह सच है कि मैंने तीन झूठ[1] बोले थे (गो दीनी मस्लहत और दीनी ज़रूरत से हुए थे, लेकिन ख़ौफ़ हैं कि कहीं मेरी पकड़ न हो जाए) यह फ़रमा कर उन तीन मौक़ों का ज़िक्र फ़रमाया, जिनमें उनसे झूठ निकला था। (आख़िर में हज़रत इब्राहीम عليه السلام फ़रमायेंगे) नफ़्सी-नफ़्सी-नफ़्सी (तुम मेरे अ़लावा किसी और के पास चले जाओ)। ऐसा करो तुम मूसा عليه السلام के पास पहुंचो।

चुनांचे लोग हज़रत मूसा عليه السلام के पास आएंगे और उनसे अ़र्ज़ करेंगे कि ऐ मूसा! आप अल्लाह के रसूल हैं। आपको अल्लाह ने अपने पैग़ामों के ज़रिए और अपने साथ हमकलामी (बात करने) के ज़रिए लोगों पर फ़ज़ीलत दी। आप अपने रब के सामने हमारी सिफ़ारिश कर दीजिए, आप देख रहे हैं कि हमारा कैसा हाल बना हुआ है। हज़रत मूसा عليه السلام जवाब देंगे कि यक़ीन जानो कि मेरे रब को आज इस क़दर गुस्सा है कि ऐसा गुस्सा इससे

1. जिन तीन झूठों का ज़िक्र इस हदीस पाक में है। उनकी कैफ़ियत (अवस्था) ज़रूरत व मस्लहत दूसरी रिवायत में ज़िक्र हुई है। ऐसे मौक़ों पर झूठ बोलना मना नहीं है। लेकिन हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अपने बुलंद मर्तबे की वजह से ख़ौफ़ करेंगे कि गो जायज़ था, मगर झूठ तो था। ख़लीलुल्लाह से उसका होना शायद पकड़ में आये, जिनके रुत्बे हैं सिवा, उनको सिवा मुश्किल है।

पहले न हुआ, न हरगिज़ इसके बाद कभी होगा। यह सच है कि मैंने एक शख़्स को क़त्ल किया था जिसके क़त्ल करने का (ख़ुदा की तरफ़ से) मुझे हुक्म न था।[1] नफ़्सी-नफ़्सी-नफ़्सी, तुम लोग मेरे अलावा किसी और के पास जाओ। ऐसा करो कि ईसा ﷺ के पास पहुंचो।

चुनांचे लोग हज़रत ईसा ﷺ के पास जाएंगे और उनसे अर्ज़ करेंगे कि ऐ ईसा! आप अल्लाह के रसूल हैं और उसका कलिमा हैं जिसे अल्लाह ने मरयम तक पहुंचाया और अल्लाह की तरफ़ से रूह हैं। आपने गहवारा में लोगों से बात की (ये आप के फ़ज़ाइल हैं) अपने पालनहार के दरबार में हमारी सिफ़ारिश फ़रमा दीजिये। आप देख ही रहें हैं कि हमारा क्या बुरा हाल बना हुआ है? वह फ़रमाएंगे कि यक़ीन जानो मेरे रब को आज इतना ग़ुस्सा है कि ऐसा ग़ुस्सा न इससे पहले हुआ, न हरगिज़ कभी इसके बाद होगा।[2]

यहां पहुंचकर प्यारे नबी ﷺ ने हज़रत ईसा ﷺ की किसी 'भूल' का ज़िक्र नहीं फ़रमाया जिसे याद करके वह सिफ़ारिश का उज़्र करेंगे (बल्कि इसके बाद यह फ़रमाया कि हज़रत ईसा ﷺ फ़रमायेंगे) नफ़्सी-नफ़्सी-नफ़्सी (और यह फ़रमायेंगे कि) मेरे अलावा किसी और के पास चले जाओ, ऐसा करो कि मुहम्मद ﷺ के पास पहुंचो।

आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने फ़रमाया कि अब मेरे पास लोग आयेंगे और कहेंगे कि ऐ मुहम्मद ﷺ! आप अल्लाह के रसूल हैं और नबियों के आख़िरी नबी हैं और अल्लाह ने आप का सब कुछ बख़्श दिया। अपने रब के दरबार में आप हमारे लिए सिफ़ारिश फ़रमा दीजिए। आप देख ही रहे हैं

---

1. हज़रत मूसा (ﷺ) ने एक दिन देखा कि दो आदमी आपस में लड़ रहे हैं। एक उनकी क़ौम का था और दूसरा दुश्मनों की क़ौम से था। हज़रत मूसा (ﷺ) की क़ौम वाले ने उनसे मदद चाही। इसलिए आपने उस आदमी को एक घूंसा मार दिया जो उनकी क़ौम वाले पर ज़ुल्म कर रहा था। मारा तो था सज़ा के लिए, तंबीह करने के लिए। मगर हुक्म ख़ुदा का ऐसा हुआ वह मर गया। हज़रत मूसा (ﷺ) शर्मिंदा हुए। अल्लाह तआला से माफ़ी मांगी। अल्लाह तआला ने माफ़ कर दिया इसी क़िस्से की तरफ़ इशारा है।
2. दूसरी रिवायत में है कि इस मौक़े पर हज़रत ईसा (ﷺ) शफ़ाअत न कर सकने की वजह यह ब्यान फ़रमायेंगे अल्लाह से परे मेरी इबादत की गयी।

कि हम किस बदहाली में हैं।

इसलिए मैं रवाना हो जाऊंगा और अ़र्श के नीचे आकर अपने रब के लिए सज्दा में पड़ जाऊंगा। फिर अल्लाह तआ़ला मुझपर अपनी वे तारीफ़ें और वह बेहतरीन सना (गुणगान) खोलेंगे जो मुझ से पहले किसी पर न खोली गयी थी। फिर अल्लाह का इर्शाद होगा कि ऐ मुहम्मद! सर उठाओ और मांगो। तुम्हारा सवाल पूरा किया जाएगा। सिफ़ारिश क़ुबूल की जाएगी। चुनांचे मैं सर उठाऊंगा और (अल्लाह के दरबार में) अ़र्ज़ करूंगा कि ऐ रब! मेरी उम्मत पर रहम फ़रमा, ऐ रब! मेरी उम्मत पर रहम फ़रमा। ऐ रब! मेरी उम्मत के उन लोगों को जिन पर कोई हिसाब नहीं है, जन्नत के दरवाज़ों में से दांए दरवाज़े से दाख़िल कर दे और उस दरवाज़े के अ़लावा दूसरे दरवाज़ों में भी वे साझी हैं (यानी उनको यह भी इख़्तियार है कि इस दरवाज़े के अ़लावा दूसरे दरवाज़ों से दाख़िल हो जाएं) इसके बाद आंहज़रत ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि क़सम उस ज़ात की, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, जन्नत के दरवाज़ों (की इतनी बड़ी चौड़ाई है कि उन) के दोनों किनारों के दर्मियान जो फ़ासला है, वह इतना लम्बा है कि जितना मक्का और हिज्र के दर्मियान का रास्ता है या (फ़रमाया कि जैसे) मक्का और बसरा के दर्मियान का रास्ता है। —अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब (बुख़ारी व मुस्लिम)

दूसरी रिवायत में है (जिसे रिवायत करने वाले हज़रत अनस रज़ि॰ हैं) कि आंहज़रत ﷺ ने शफ़ाअ़त का वाक़िया ब्यान फ़रमा कर यह आयत तिलावत फ़रमाई : عَسٰی اَنْ یَّبْعَثَکَ رَبُّکَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا۝

अ़सा एं यब् अ़ स क रब्बु क मक़ामम महमूदा।

(क़रीब है कि आप का रब आपको मक़ामे महमूद में खड़ा करेगा)

फिर फ़रमाया कि यह मक़ामे महमूद है जिसका वादा (अल्लाह तआ़ला ने) तुम्हारे नबी ﷺ से किया है। —बुख़ारी व मुस्लिम

उम्मते मुहम्मदिया की पहचान

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि॰ ने फ़रमाया कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ से

एक आदमी ने पूछा : ऐ अल्लाह के रसूल! आप (क़ियामत के दिन) सारी उम्मत से लेकर आप की उम्मत तक दुनिया में आयी थी, अपनी उम्मत को कैसे पहचानेंगे? इसके जवाब में आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि वुज़ू के असर से उनके चेहरे रौशन होंगे और हाथ और पांव सफ़ेद होंगे। इनके अलावा और कोई इस हाल में न होगा। और मैं उनको इस तरह भी पहचानूंगा कि उनके आमालनामे उनके दाहिने[1] हाथ में दिए जाएंगे और इस तरह भी उनको पहचानूंगा कि उनकी ज़ुर्रियत[2] उनके आगे दौड़ती होगी।

हौज़े कौसर

हश्र के मैदान में बड़ी भारी तादाद में हौज़ होंगे। आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने फ़रमाया कि हर नबी का एक हौज़ होगा और सब नबी आपस में इस पर फ़ख़्र करेंगे कि किस के पास पीने वाले ज़्यादा आते हैं (हर नबी के हौज़ से उसके उम्मती पानी पीएंगे) और मैं उम्मीद करता हूं कि सबसे ज़्यादा लोग मेरे पास पीने के लिए आएंगे।[3]

हज़रत अनस رضي الله عنه ने फ़रमाया कि मैंने नबी करीम ﷺ से अ़र्ज़ किया कि आप क़ियामत के दिन मेरे लिए सिफ़ारिश फ़रमा दें। आप ने इर्शाद फ़रमाया कि हां, मैं कर दूंगा। मैंने अ़र्ज़ किया, आपको कहां तलाश करूं? फ़रमाया पहले पुलसिरात पर तलाश करना। मैंने अ़र्ज़ किया, वहां आपसे

---

1. बुख़ारी व मुस्लिम
2. क़ुरआन शरीफ़ में है कि जिनके आमालनामे दाहिने हाथ में दिए जाएंगे, उनसे आसान हिसाब होगा और अपने बाल-बच्चों में ख़ुश-ख़ुश लौटकर जाएंगे। इसमें उम्मते मुहम्मदिया को ख़ास नहीं किया गया। इसलिए इस हदीस शरीफ़ में यह फ़रमाया कि मैं अपनी उम्मत को इस तरह पहचानूंगा कि उनके आमालनामे सीधे हाथों में किसी ऐसी शक्ल से उनको आमालनामे मिलेंगे जो दूसरी उम्मतों के साथ न होगा या यह समझो कि उम्मते मुहम्मदिया को सबसे पहले दिए जाएंगे। (हाशिया मिश्कात)
3. क्योंकि उम्मते मुहम्मदिया (अ़ला साहिबिस्सलातु वस्सलाम) सब उम्मतों से ज़्यादा होगी। —तिर्मिज़ी

मुलाक़ात न हो तो कहां तलाश करूं? फ़रमाया आमाल की तराज़ू के पास तलाश करना! मैंने अ़र्ज़ किया; वहां भी मुलाक़ात न हो तो कहां हाज़िर हूं? फ़रमाया हौज़ पर तलाश करना, इन तीनों जगहों में से किसी एक जगह ज़रूर मिल जाऊंगा। —तिर्मिज़ी

हज़रत मुहम्मद ﷺ के हौज़ की ख़ूबियां

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ؓ रिवायत फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरे हौज़ की लम्बाई-चौड़ाई इतनी ज़्यादा है कि उसके एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ जाने के लिए एक महीने की मुद्दत चाहिए और उसके कोने बराबर हैं (यानि वह चौकोर है, लम्बाई-चौड़ाई दोनों बराबर हैं) उसका पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद है और उसकी ख़ुश्बू मुश्क से ज़्यादा उम्दा है और उसके लोटे इतने हैं जितने आसमान के सितारे हैं जो उसमें से पीयेगा, कभी प्यासा न होगा। —बुख़ारी व मुस्लिम

हज़रत अबू हुरैरः ؓ ने रिवायत है कि आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि बेशक मेरा हौज़ इतना लंबा-चौड़ा है कि उसके दोनों किनारों के दर्मियान उस फ़ासले से भी ज़्यादा फ़ासला है जो एला से अ़दन तक है। सच जानो वह बर्फ़ से ज़्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा मीठा है। जो दूध में मिला हुआ हो और उसके बर्तन सितारों की तादाद से ज़्यादा हैं और मैं (दूसरी उम्मतों) को अपने हौज़ पर आने से हटाऊंगा। जैसे (दुनिया में) कोई शख़्स दूसरों के ऊंटों को अपने हौज़ से हटाता है। सहाबा ؓ ने अ़र्ज़ किया-ऐ अल्लाह के रसूल! क्या उस दिन आप हमको पहचानते होंगे? इर्शाद फ़रमाया, हां (ज़रूर पहचान लूंगा, इसलिए कि) तुम्हारी एक निशानी होगी जो और किसी उम्मत की न होगी और वह यह कि तुम हौज़ पर मेरे पास इस हाल में आओगे कि वुज़ू के आसार से तुम्हारे चेहरे रौशन होंगे और हाथ-पांव सफ़ेद होंगे। —मुस्लिम

दूसरी रिवायत में यह भी आप ﷺ इर्शाद फ़रमाया कि आसमान के तारों की तादाद में हौज़ के अंदर सोने-चांदी के लोटे नज़र आ रहे होंगे[1]। यह

1. मुस्लिम

भी इर्शाद फ़रमाया कि इस हौज़ में दो परनाले गिर रहे होंगे जो जन्नत (की नहर से) उसके पानी में बढ़ौतरी कर रहे होंगे। एक परनाला सोने का और दूसरा चांदी का होगा।[1]

सबसे पहले हौज़ पर पहुंचने वाले

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरा हौज़ इतना बड़ा है जितना अ़दन[2] और ओमान के दर्मियान फ़ासला है। बर्फ़ से ज़्यादा ठंढा और शहद से ज़्यादा मीठा है और मुश्क से बेहतर उसकी ख़ुश्बू है। उसके प्याले आसमान के सितारों से भी ज़्यादा हैं जो उसमें से एक बार पी लेगा, उसके बाद कभी भी प्यासा न होगा। सबसे पहले पीने के लिए उस पर मुहाजिर फ़ुक़रा (मुहताज) आएंगे। किसी ने (मौजूद लोगों में से) सवाल किया कि ऐ अल्लाह के रसूल। उनका हाल बता दीजिए? फ़रमाया ये वह लोग हैं (दुनिया में) जिनके सरों के बाल बिखरे हुए और चेहरे (भूख, मेहनत व थकन की वजह से) बदले होते थे। इनके लिए (बादशाहों और हाकिमों) के दरवाज़े नहीं खोले जाते थे और अच्छी औरतों इनके निकाह में नहीं दी जाती थीं और (इनके मामलों की ख़ूबी का यह हाल था कि) इनके ज़िम्मे जो हक़ (किसी का) होता था तो सब चुका देते थे और इनका जो (हक़ किसी पर) होता था तो पूरा न लेते थे (बल्कि थोड़ा बहुत) छोड़ देते थे।[3]

यानी दुनिया में उनकी बदहाली और तंगी का यह हाल था कि बाल

---

1. मुस्लिम
2. हौज़ की लम्बाई-चौड़ाई कई तरह इर्शाद फ़रमायी है, कहीं एक माह की दूरी उसके किनारों के दर्मियान फ़रमाया; कहीं एला और अ़दन के बीच की दूरी से इसे नापा; कहीं कुछ और फ़रमाया। इन मिसालों का मक़सद हौज़ की लम्बाई-चौड़ाई को समझाना है, नापी हुई दूरी बताना मुराद नहीं है। मौजूद लोगों के हिसाब से वह दूरी ज़िक्र फ़रमायी है जिसे वे समझ सकते थे। ख़ुलासा तमाम रिवायतों का यह है कि हौज़ की दूरी सैकड़ों मील है।
3. तर्ग़ीब व तर्हीब

सुधारने और कपड़े साफ़ रखने की ताकत भी न थी और ज़ाहिर है संवारने के उनको ऐसा ख़ास ध्यान भी न था कि बनाव-सिंगार के चोंचले में वक़्त गुज़ारते और आख़िरत से गफ़लत बरतते। उनको दुनिया में फ़िक्र-मुसीबतें इस तरह घेरी रहते थीं कि चेहरों पर उनका असर ज़ाहिर था। दुनिया वाले उनको ऐसा नीच समझते थे कि मज्लिसों, जश्नों और शाही दरबारों में उनको दावत देकर बुलाना तो दूर की बात उनके लिए ऐसे मौक़ों में दरवाज़े ही न खोले जाते थे और वे औरतें जो नाज़ व नेमत में पली थीं, इन ख़ुदा के ख़ास बन्दों के निकाहों में नहीं दी जाती थीं मगर आख़िरत में उनका रुत्बा होगा कि हौज़ कौसर पर सबसे पहले पहुंचेंगे। उनको नीच समझने वाले और उनके बाद उस पाक हौज़ से पी सकेंगे (बशर्ते कि ईमान वाले और उसमें से पीने के लायक़ हों)।

हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल अज़ीज़ (रह०) के सामने आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ का यह इर्शाद सुनाया गया कि हौज़े कौसर पर सबसे पहले फ़ुक़रा मुहाजिरीन पहुंचेंगे जिनके सर बिखरे हुए और कपड़े मैले रहते थे और जिनसे अच्छी औरतों के निकाह न किये जाते थे और जिनके लिए दरवाज़े नहीं खोले जाते थे। नबी करीम ﷺ के इस इर्शाद को सुनकर हज़रत उमर बिन अब्दुल अ़ज़ीज़ (घबरा गये) और बेइख़्तियार फ़रमाया कि मैं तो ऐसा नहीं हूं। मेरे निकाह में अ़ब्दुल मलिक की बेटी फ़ातिमा (शाहज़ादी) है और मेरे लिए दरवाज़े खोले जाते हैं। अब तो ज़रूर ही ऐसा करूंगा कि उस वक़्त तक सर को न धोऊंगा जब तक बाल बिखर न जाया करेंगे और न अपने बदन का कपड़ा उस वक़्त तक धोऊंगा जब तक मैला न हो जाया करे।

हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल अज़ीज़ (रह०) वक़्त के ख़लीफ़ा और इस्लामी सरकार के चलाने वाले थे। आख़िरत की फ़िक्र के उनके बड़े-बड़े क़िस्से एतबार वाली किताबों में मिलते हैं।

हौज़े कौसर से हटाये जाने वाले

हज़रत सहल बिन सअ़द ؓ से रिवायत है कि रसूले करीम ﷺ ने

इर्शाद फ़रमाया कि यक़ीन जानो (क़ियामत के दिन) हौज़ पर तुम्हारा मेरा सामना होगा (यानी मैं तुमको पिलाने के लिए पहले पहुंचा हुआ हूंगा)। जो मेरे पास से होकर गुज़रेगा, पी लेगा और जो (मेरे पास हौज़ से) पी लेगा, कभी प्यासा न होगा। फिर इर्शाद फ़रमाया ऐसा ज़रूर होगा कि पीने के लिए मेरे पास ऐसे लोग आएंगे, जिनको में पहचानता हूंगा और वे मुझे पहचानते होंगे, फिर (उनको मुझ तक पहुंचने न दिया जाएगा बल्कि) मेरे और उनके दर्मियान आड़ लगा दी जाएगी और वे पीने से महरूम रह जाएंगे। मैं कहूंगा ये तो मेरे आदमी हैं (इनको आने दिया जाए)। इसपर (मुझ से) कहा जाएगा कि आप नहीं जानते कि आपके बाद उन्होंने क्या नयी चीज़ें निकाली थीं, यह सुनकर मैं कहूंगा दूर हो, जिन्होंने मेरे बाद अदल-बदल किया।'

—बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़

आह! दीन में पच्चर लगाने वालों का उस वक़्त कैसा बुरा हाल होगा जबकि क़ियामत के दिन प्यास से बेताब और मुसीबत से परेशान होंगे और हौज़े कौसर के क़रीब पहुंचाकर धुत्कार दिये जाएंगे और प्यारे नबी ﷺ उनकी 'नयी बातों' का हाल सुनकर 'दूर-दूर' फ़रमा कर फटकार देंगे।

क़ुरआन व हदीस में जो कुछ आया है और जो हदीसों और आयतों से निकलता है, उसी पर चलने में भलाई और कामयाबी है। लोगों ने हज़ारों बिद्‌अतें निकाल रखी हैं और दीन में अदल-बदल कर रखा है, जिनसे उनकी दुनिया भी चलती है और नफ़्स को मज़ा भी आता है और अलग-अलग इलाक़ों में अलग-अलग बिद्‌अतें रिवाज पा गयी हैं। ऐसे लोगों को समझाया जाता है तो उलटा समझाने वाले ही को बुरा कहते हैं। हम सीधी और मोटी-सी एक बात कह देते हैं कि जो कोई काम करना हो, आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने जैसे फ़रमाया, इस तरह करो और जिस तरह आपने किया उसी तरह अ़मल करो। —मिश्कात

दुनियादार पीर-फ़क़ीर या मौलवी-मुल्ला अगर कहें कि फ़्लां काम में सवाब है और अच्छा है तो उनसे सबूत मांगो और पूछो कि बताओ आंहज़रत ﷺ ने किया है या नहीं? और हदीस शरीफ़ की किस किताब में

लिखा है कि आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ को ऐसा करना पसंद था या आपने इसको अंजाम दिया है।

मरने-जीने और ब्याह-शादी में औरतों ने और दुनियादार पीरों-फ़क़ीरों ने बड़ी बिद्अतें और ग़ैर शरई रस्में निकाल रखी हैं। सोयम, चेहल्लुम, क़ब्र पर चादर, क़ब्र का ग़ुस्ल, संदल, उर्स, पक्की क़ब्र और इसी तरह की बहुत-सी बातें जो क़ब्रों पर होती है, बिदअ़त हैं। ऐसा करने वाले अंजाम सोच लें। हौज़े कौसर से हटाये जाने को तैयार रहें और क़ब्र का तवाफ़ और क़ब्र को या पीर को सज्दा यह तो शिर्क है, जो गुनाह में बिदअ़त से कहीं ज़्यादा बढ़ा हुआ है।

अपने-अपने बापों के नाम से बुलाये जाएंगे

हज़रत अबुद्दर्दा رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम क़ियामत के दिन अपने नामों के साथ और अपने बापों के नामों के साथ बुलाये जाओगे। इसलिए तुम अपने नाम अच्छे रखो[1]। आमतौर से मशहूर है कि क़ियामत के दिन लोग अपनी माँओं के नामों के साथ पुकारे जाएंगे, सही नहीं है बनायी हुई बात है।[2]

क़ियामत बुलन्द और पस्त करने वाली होगी

क़ियामत के बारे में अल्लाह का इर्शाद है :

إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ، لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ، خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ

इज़ा व क़ अ़तिल वाक़िअ़: लै स लिवक़् अ़तिहा काज़िब: ख़ाफ़िज़तुर्राफ़िअ़:। —सूर: वाक़िअ़:

1. अहमद, अबूदाऊद

2. इमाम बुख़ारी ने अपनी जामे सहीह में बाब 'मा युद्अ़न्नास यौमल क़ियामति बि आबाइहिम' क़ायम करके सही हदीसों से साबित किया है कि क़ियामत के दिन बापों के नाम से बुलावा होगा। मुआ़लिमुत्तंज़ील में माँओं के नामों के साथ पुकारने की तीन वजहें बतायी गयी हैं। लेकिन ये सब मनगढ़त हैं जो सिर्फ़ रिवायत के मशहूर होने की वजह से तज्वीज़ किया गये हैं। चुनांचे साहिबे मुआ़लिमुत्तंज़ील ने तीनों वज्हों का ज़िक्र फ़रमाया है कि सही हदीसें इस मशहूर कौल के ख़िलाफ़ हैं।

'जिस वक़्त होने वाली वाक़ेअ् हो जाएगी, नहीं है उसके होने में कुछ झूठ। वह पस्त करने वाली है और बुलंद करने वाली है।'

क़ियामत के दिन अमल के मुताबिक़ रुत्बों में फ़र्क़ होगा और छोटाई-बड़ाई का मेयार नेकी-बदी होगा। यहां दुनिया में जो छोटा-बड़ा होने के मेयार हैं यहीं रह जाएंगे। बड़े-बड़े घमंडी, जो दुनिया में बहुत घमंडी और सरबुलंद समझे जाते थे, क़ियामत के दिन दोज़ख़ के गहरे गढ़े में ढकेल दिए जाएंगे और उनकी बड़ाई और चौधराहट धूल में मिल जाएगी। वहाँ ये मर्दूद कहेंगे :

مَا أَغْنَىٰ عَنِّي مَالِيَهْ ۝ هَلَكَ عَنِّي سُلْطَانِيَهْ ۝

मा अग्ना अन्नी मालियः। ह ल क अन्नी सुल्तानियः।

'मेरा माल मेरे कुछ काम न आया, जाती रही मेरी हुकूमत।'

और यह कहना और हाथ मलना कुछ काम न आयेगा। और बहुत से लोग ऐसे होंगे जो दुनिया में नर्म बनकर रहते थे, लोग उनको नीची की नज़र से देखते थे और नीची ज़ात का समझते थे और उनको अपनी बड़ाई का ख़्याल न था लेकिन चूंकि उन्होंने अल्लाह से अपना तअल्लुक़ सही रखा और अल्लाह के हुक्मों पर अमल करते रहे। इसलिए क़ियामत के दिन उनमें से कोई मुश्क के टीले पर बैठा होगा; कोई नूर के मिंबर पर होगा; अर्श के साए में मज़े करते होंगे। फिर बहुत-से तो बेहिसाब और बहुत-से तो हिसाब के बाद जन्नत में दाख़िल होंगे और उसके साफ़-सुथरे कोठों में चैन से रहेंगे।

اولئك يجزون الغرفة بما صبروا ويلقون فيها تحية وسلمًا

उलाइ क युज्ज़ौ नल गुर्फ़ त बिमा स ब रू व युलक़्क़ौ न फ़ीहा तहीय्यतौंव सलामा।

सरवरे आलम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि ख़बरदार! बहुत-से लोग जो दुनिया में खाते-पीते और नेमतों में रहने वाले हैं। आख़िरत में नंगे-भूखे होंगे। फिर फ़रमाया कि ख़बरदार! दुनिया में बहुत-से लोग ऐसे हैं जो अपने को इज़्ज़तदार बना रहे हैं और हक़ीक़त में वे अपने को ज़लील कर रहे हैं

(जिसका पता आख़िरत में चल जाएगा) और बहुत-से लोग दुनिया में ऐसे हैं जो (नर्मी की वजह से) अपने को ज़लील कर रहे हैं। सच तो यह है कि वे अपने को इज़्ज़तदार बना रहे हैं (क्योंकि उनकी नर्मी उनको जन्नत में पहुंचा देगी)। —तर्ग़ीब व तर्हीब

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने फ़रमाया कि ज़रूर ऐसा होगा कि क़ियामत के दिन (भारी भरकम) मोटा-ताज़ा आदमी आयेगा, जिसका वज़न अल्लाह के नज़दीक मच्छर के बराबर भी न होगा यानी उसकी हैसियत और पोज़ीशन उस दिन न होगी) फिर आपने फ़रमाया कि तुम चाहो तो (मेरी बात की तस्दीक़ में) इस आयत को पढ़ लो।

فَلَا نُقِيْمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا

फ़ ला नुक़ीमु लहुम यौमल क़ियामति वज़्ना।

(तो हम क़ियामत के दिन उनके लिए ज़रा वज़न भी क़ायम न करेंगे)।

आज दुनिया में बहुत-से आक़ा हैं जिनके नौकर-चाकर और ख़ादिम हैं। इन नौकरों को गालियां देते हैं, मारते-पीटते हैं और बहुत-से लोग दौलत या ओह्दे के नशे में कम-हैसियत लोगों से बेगारें लेते हैं और बात-बात में लात-घूंसा दिखाते हैं। क़ियामत का दिन सही फ़ैसले और वाक़ई इंसाफ़ का होगा। वहां बहुत-से नौकर-चाकर और कम-हैसियत लोग बुलन्द हो जाएंगे और घमंड करने वाले, दौलत व पोज़ीशन वाले, जो ख़ुदा के बाग़ी थे, पस्त हो जाएंगे उनपर ज़िल्लत सवार होगी और दोज़ख़ का रास्ता लेंगे। क्या हाल बनेगा उन लोगों का जो बड़ाई के लिए एलेक्शन पर एलेक्शन लड़ते जाते हैं और बड़ाई की उम्मीद में या बड़ाई मिलने के लिए अल्लाह तआला के हुक्मों के ख़िलाफ़ करते रहते हैं, ऐसे लोग अपना अंजाम सोच लें।

नेमतों का हाल

क़ियामत के दिन नेमतों का सवाल होगा। क़ुरआन शरीफ़ में इर्शाद है :

ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ

सुम्म म ल तुसअलुन्न न यौ म इज़िन अनिन्नईम।

(फिर अलबत्ता ज़रूर तुमसे उस दिन नेमतों की पूछ होगी)।

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बिलाशुब्हा क़ियामत के दिन नेमतों में से सबसे पहले (तन्दुरुस्ती और ठंढे पानी का सवाल होगा और) यूँ पूछा जाएगा कि क्या हमने तेरे जिस्म को ठीक न रखा था और क्या तुझे हमने ठंढे पानी से तर नहीं किया था। —तिर्मिज़ी शरीफ़

अल्लाह तआला ने जो कुछ भी इनायत फ़रमाया है बग़ैर किसी हक़ के दिया है। उनको यह हक़ है कि अपनी नेमत के बारे में सवाल करें और यह पकड़ करें कि जिन नेमतों में तुम रहे बोलो, इन नेमतों का क्या हक़ अदा किया और मेरी इबादत में कितना लगे और इन नेमतों के इस्तेमाल के बदले क्या लेकर आये? यह सवाल बड़ा ही कठिन होगा। मुबारक हैं वे लोग जो खुदा की नेमतों के शुक्रिए में नेक अ़मल करते रहते हैं और आख़िरत की पूछ से कांपते हैं। इसके ख़िलाफ़ वे बदक़िस्मत हैं जो अल्लाह की नेमतों से पलते-बढ़ते हैं और नेमतों में डूबे हुए हैं, लेकिन ख़ुदा की तरफ़ उनका ध्यान नहीं और खुदा के सामने झुकने का ज़रा ख़्याल नहीं। अल्लाह तआला की अनगिनत नेमतें हैं। क़ुरआन शरीफ़ में इर्शाद है :

وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا

व इन तउद्दू निअ्मतल्लाहि ला तुहसूहा।

(अगर तुम अल्लाह की नेमतों को गिनोगे, तो गिन नहीं सकते)।

फिर साथ ही यह भी फ़रमाया :

ان الانسان لظلوم كفار

इन्नल इन्सा न ले ज़लूमुन कफ़्फ़ार।

बिला शुब्हा इन्सान बड़ा ज़ालिम (और) नाशुक्रा है।

बिला शुब्हा यह इंसान की बड़ी नादानी और ज़ुल्म है कि मख़्लूक़ के ज़रा-से भी एहसान का भी शुक्रिया अदा करता है और जिससे कुछ मिलता

है, उससे दबता है और उसके सामने बा-अदब खड़ा होता है। हालांकि ये देने वाले मुफ़्त नहीं देते, बल्कि किसी काम के बदले या आगे किसी काम के मिलने की उम्मीद में देते-दिलाते हैं। अल्लाह तआ़ला, पैदा करने वाले मालिक, ग़नी और ग़नी बनाने वाले हैं; वे बग़ैर किसी ग़रज़ के देते हैं। लेकिन उनके हुक्मों पर चलने और उनके आगे सज्दा करने से इंसान भागता-फिरता है, यह बड़ी बदक़िस्मती है। अल्लाह की नेमतों को कोई कहां तक गिनेगा। जो नेमत है हर एक का मुहताज है। एक बदन की सलामती और तन्दुरुस्ती ही को ले लीजिए। कैसी बड़ी नेमत है। जब प्यास लगती है तो ग़टा ग़ट ठंढा पानी पी जाते हैं। यह पानी किसने पैदा किया है? इस पैदा करने वाले के हुक्मों पर चलने और शुक्रगुज़ार बन्दा बनने की भी फ़िक्र है या नहीं? यह ग़ौर करने की बात है।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन इंसान के क़दम हिसाब की जगह से न हट सकेंगे, जब तक कि उससे पांच चीज़ों का सवाल न हो जाएगा———

1) उम्र का सवाल होगा कि किन चीज़ों में ख़त्म कर दी?
2) जवानी का सवाल होगा कि कहां बर्बाद कर दी?
3) माल का सवाल होगा कि कहां से कमाया?
4) और कहां ख़र्च किया?
5) इल्म का सवाल होगा कि (दीन और दीनियात का) जो इल्म था उस पर क्या अ़मल किया? —तिर्मिज़ी शरीफ़

हज़रत अनस ﷺ ने फ़रमाया कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन इंसान के तीन दफ़्तर होंगे। एक दफ़्तर में उसके नेक अ़मल लिखे होंगे। दूसरे दफ़्तर में उसके गुनाह दर्ज होंगे और एक दफ़्तर में अल्लाह की वे नेमतें दर्ज होंगी जो उसको खुदा की तरफ़ से दुनिया में दी गई थीं। अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल सबसे छोटी नेमत से फ़रमायेंगे कि अपनी क़ीमत उसके नेक अ़मल में से ले लें। चुनांचे वह नेमत उसके तमाम नेक अ़मल को अपनी क़ीमत में लगा

लेगी और इसके बाद अर्ज़ करेगी कि (ऐ रब!) आपकी इज़्ज़त की क़सम! अभी मैंने पूरी क़ीमत वसूल नहीं की है। अब इसके बाद गुनाह बाक़ी रहे और नेमतें भी बाक़ी रहीं (जिनकी क़ीमत अदा नहीं हुई है) रहे नेक अमल! सो वे सब ख़त्म हो चुके। क्योंकि सबसे छोटी नेमत अपनी क़ीमत में तमाम नेक अमल को लगा चुकी है, पस अल्लाह तआला किसी बन्दे पर रहम करना चाहेंगे (यानी मग़्फ़िरत फ़रमा कर जन्नत अता फ़रमाना चाहेंगे) तो फ़रमायेंगे कि ऐ मेरे बन्दे! मैंने तेरी नेकियों को बढ़ा दिया और तेरे गुनाहों से आंखें बचायीं।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि शायद आंहज़रत ﷺ ने इस मौक़े पर ख़ुदा-ए-पाक का इर्शादे गरामी नक़ल फ़रमाते हुए यह भी फ़रमाया कि मैंने तुझे अपनी नेमतें (यों ही बग़ैर किसी बदले में) बख़्श दीं।

—तर्ग़ीब अनिल बज़्ज़ार

हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के रोज़ इंसान को बकरी के बच्चे की तरह (बेहक़ीक़त और बेहैसियत होने की हालत में) लाया जाएगा, फिर अल्लाह के सामने खड़ा कर दिया जाएगा। अल्लाह तआला फ़रमायेंगे कि मैंने तुझे दिया और नेमतों से मालामाल किया, तूने क्या किया? वह जवाब देगा कि ऐ रब! मैंने माल जमा किया और नफ़ा पर नफ़ा कमाकर उसे बढ़ाया और जितना शुरू में था, उससे बहुत ज़्यादा बढ़ाकर छोड़ आया हूं। इसलिए आप मुझे इजाज़त दीजिए। मैं सारा आपके दरबार में लाकर हाज़िर कर देता हूं। अल्लाह का इर्शाद होगा (यहां से वापस जाने का क़ानून नहीं है) जो पहले से यहां भेजा था वह दिखाओ। इस फ़रमान के जवाब में वह फिर वही कहेगा कि ऐ रब। मैंने माल जमा किया और नफ़ा पर नफ़ा कमाकर उसे बढ़ाया और जितना शुरू में था उससे बहुत ज़्यादा बढ़ाकर छोड़ आया। पस मुझे वापस भेज दीजिए मैं सारा माल लाकर आपके दरबार में हाज़िर कर देता हूं।

ख़ुलासा यह है कि वह यही जवाब देगा और चूंकि कुछ पहले से वहां के लिए इस दुनिया से न भेजा था। इसलिए वह नतीजे के तौर पर ऐसा शख़्स निकलेगा जिसने ज़रा भलाई (अपने लिए) पहले से न भेजी थी। चुनांचे उसको दोज़ख़ की तरफ़ रवाना कर दिया जाएगा। —तिर्मिज़ी शरीफ़

पैग़म्बरों से सवाल

कुरआन शरीफ़ में इर्शाद है :

فَلَنَسْـَٔلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ وَلَنَسْـَٔلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ ۙ

फ़ ल नस्अल न्न ल्लज़ी न उर्सि ल इलैहिम व ल नस्
अलन्नल मुर्सलीन। —सूरः आराफ़

'सो हमको ज़रूर पूछना है उनसे जिनके पास पैग़म्बर भेजे गये और ज़रूर पूछना है पैग़म्बरों से।'

इसकी तश्रीह (व्याख्या) दूसरी आयतों में इस तरह फ़रमायी :

وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ مَاذَآ اَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِيْنَ فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْاَنْۢبَآءُ
يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَآءَلُوْنَ ۝ (قصص: ٢٠)

व यौ म युनादीहिम फ़ यक़ूलु मा ज़ अजब्तुमुल मुर्सलीन।
फ़ अ़मियत अ़लैहिमुल अंबाउ यौ म इज़िन फ़हुम ला य त
सा अलून। —सूरः क़सस

'और जिस दिन उनसे पुकार कर पूछेगा कि तुमने पैग़म्बरों को क्या जवाब दिया। सो उस दिन उनसे सब मज़ामीन गुम हो जाएंगे पस वे आपस में भी पूछ-पाछ न कर सकेंगे।'

यानी रिसालत के बारे में सवाल होगा कि तुम पैग़म्बरों के समझाने पर समझे या नहीं? पैग़म्बरों को तुमने क्या जवाब दिया?

इस सवाल का कोई जवाब न बन पड़ेगा।

दूसरी जगह इर्शाद है :

يَوْمَ يَجْمَعُ اللّٰهُ الرُّسُلَ فَيَقُوْلُ مَاذَآ اُجِبْتُمْ ۝ قَالُوْا لَا عِلْمَ لَنَا ۚ اِنَّكَ
اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ۝ (مائده: ٧)

यौ म यज्मउल्लाहुर्रु सु ल फ़ यक़ूलु मा ज़ उजिब्तुम। क़ालू

ला इलम लना। इन्न क अन्त अल्लामुल ग़ुयूब।—सूरः माइदः

'जिस दिन अल्लाह तआला जमा फ़रमायेंगे सब पैग़म्बरों को फिर सवाल फ़रमायेंगे कि तुमको क्या जवाब मिला। वे कहेंगे हमको ख़बर नहीं! बेशक आप छिपी बातों के जानने वाले हैं।'

यह सवाल अंबिया किराम अ़लैहिमुस्सलातु वस्सलाम से उनकी उम्मतों के सामने होगा कि जब तुम उनके पास हक़ की दावत ले गये तो उन्होंने क्या जवाब दिया। उस वक़्त अल्लाह की बड़ाई ज़ाहिर होगी। उसके क़ह्र से सब डर रहे होंगे। बेइंतिहा डर की वजह से अल्लाह तआला के सामने जवाब में *'ला इलम लना'* (हमको कुछ ख़बर नहीं) से ज़्यादा कुछ न कह सकेंगे।

सूरः निसा में फ़रमाया :

فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ وَجِئْنَا بِكَ عَلَى هَؤُلَاءِ شَهِيدًا۔

फ़ कै फ़ इज़ा जिअ्ना मिन कुल्लि उम्मतिन बिशहीदिंव्व
जिअ्ना बि क अ़ला हा उलाइ शहीदा।

'फिर उस वक़्त क्या हाल होगा। जब बुलाएंगे हम हर उम्मत में से (उसका) हाल बताने वाला और तुमको उन (लोगों) के मुतअ़ल्लिक़ गवाही देने वाला बनाकर लाएंगे।'

इससे हर उम्मत का नबी और हर ज़माने के नेक और मोतबर लोग मुराद हैं कि वह क़ियामत के दिन लोगों की नाफ़रमानी और फ़रमांबरदारी ब्यान करेंगे और सबके हालात की गवाही देंगे। यह जो फ़रमाया, '**व जिअ्ना बि क अ़ला हा उलाइ शहीदा०**' (कि ऐ मुहम्मद ﷺ तुमको उनके मुतअ़ल्लिक़ गवाही देने वाला बना कर लाएंगे) इसका मतलब यह है कि दूसरे नबियों की तरह आप भी अपनी उम्मत के हालात व आमाल के बारे में गवाही देंगे और यह भी हो सकता है कि 'हा उलाइ' का इशारा नबियों की तरफ़ हो। जिसका मतलब यह होगा कि सैयदे आलम हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ हज़रत अंबिया-ए-किराम की सच्चाई पर गवाही देंगे जबकि

उनकी उम्मत उनको झूठा बताएंगी। एक बात यह भी हो सकती है कि **'हा उलाइ'** का इशारा काफ़िरों की तरफ़ हो, जिनका ज़िक्र पिछली आयत **'यौम इज़िंय्य वद्दुल्लज़ी न क फ़रू'** में हो चुका है। इस शक्ल में मतलब यह होगा कि जिस तरह पिछले नबी अपनी उम्मत के फ़ासिक़ों व काफ़िरों के फ़िस्क़ व कुफ़्र की गवाही देंगे। ऐसे ही आप भी ऐ मुहम्मद! इनकी बदआमाली पर गवाह बनेंगे, जिससे उनकी ख़राबी व बुराई और ज़्यादा साबित होगी।

फ़रिश्तों से ख़िताब

सूरः सबा में इर्शाद फ़रमाया :

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلَٰئِكَةِ أَهَٰؤُلَاءِ إِيَّاكُمْ كَانُوا يَعْبُدُونَ

व यौ म यह्शुरुहुम जमीअन सुम्म म यक़ूलु लिल मलाइकति अ हाउलाइ इय्याकुम कानू यअ्बुदून।

'और जिस दिन (अल्लाह तआला) जमा फ़रमायेगा इन सबको फिर फ़रिश्तों में सवाल फ़रमायेगा। क्या ये लोग तुमको पूजा करते थे।'

दुनिया में बहुत-से मुश्रिक फ़रिश्तों को ख़ुदा की बेटियां बताते थे और उनके हैकल (बुत) बनाकर पूजते थे। कुछ उलमा का कहना है कि बुतपरस्ती की शुरुआत फ़रिश्तों की पूजा से हुई। क़ियामत के दिन मुश्रिकों को सुनाकर अल्लाह जल्ल ल शानुहू फ़रिश्तों से सवाल फ़रमायेंगे, क्या ये लोग तुमको पूजते थे। शायद सवाल का मतलब यह हो कि तुमने तो उनसे ऐसा नहीं किया और तुम इनके काम से ख़ुश तो नहीं हुए? और इस सवाल का मक़सद भी हो सकता है कि फ़रिश्तों का यह जवाब मुश्रिकों के सामने सुनवा दिया जाए कि न हमने उनको शिर्क की तालीम दी, न उनकी इस हरकत से ख़ुश हुए! ताकि मुश्रिकों को यह यक़ीन हो जाए कि अपने अमल के हम ख़ुद अकेले ज़िम्मेदार हैं।

फ़रिश्तों का जवाब

आगे इसी आयत के बाद फ़रमाया :

قَالُوْا سُبْحَانَكَ اَنْتَ وَلِيُّنَا مِنْ دُوْنِهِمْ بَلْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ الْجِنَّ اَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُّؤْمِنُوْنَ

क़ालू सुब्हा न क अन्त वलीय्युना मिन दूनिहिम बल कानू यअ़्बुदू नल जिन्न न अकसरुहुम बिहिम मुअ़्मिनून।

'फ़रिश्ते जवाब में अ़र्ज़ करेंगे कि तेरी ज़ात पाक है। तू ही हमारा वली है न कि वह। बल्कि वह पूजा करते थे जिन्नों की। उनमें अकसर उन्हीं को मानते थे।'

यानी आपकी ज़ात इससे पाक है कि किसी दर्जे में भी कोई आपका शरीक हो, हम क्यों ऐसी बात कहते और क्यों शिर्किया हरकतों से ख़ुश रहते। हमारी ख़ुशी अपकी ख़ुशी में है। इन नालायक़ों से हमको क्या वास्ता? ये बदबख़्त हक़ीक़त में हमारी पूजा करते भी न थे। नाम हमारी पूजा का लेते और पूजते शैतानों को थे! शैतान उनको जिस तरफ़ मोड़ते, उधर ही मुड़ जाते थे। चाहे फ़रिश्तों का नाम लेकर, चाहे किसी नबी का, किसी वली और शहीद, पीर-फ़क़ीर का।

आगे फ़रमाया :

فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَّفْعًا وَّلَا ضَرًّا وَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ

फ़ल यौ म ला यम्लिकु बअ़्जुकुम लिबअ़्ज़िन नफ़्औं व ला ज़र्रौं व नक़ूलु लिल्लज़ी न ज़ ल मू ज़ूक़ू अ़ज़ाबन्ना रिल्लती कुन्तुम बिहा तुकज़्ज़िबून।

'सो, आज मालिक नहीं तुम में से कोई एक दूसरे के नफ़ा का, न नुक़्सान का और हम कह देंगे यह ज़ालिमों से कि चखो उस आग का अ़ज़ाब जिसे तुम झुठलाते थे।'

हज़रत नूह ﷺ की उम्मत के ख़िलाफ़ उम्मते मुहम्मदिया की गवाही

हज़रत अबू सईद ﷺ से रिवायत है कि रसूले करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन हज़रत नूह ﷺ को लाया जाएगा और उनसे सवाल होगा कि क्या तुमने तब्लीग़ (प्रचार) की? वे अर्ज़ करेंगे कि या रब! मैंने सच में तब्लीग़ की थी! उनकी उम्मत से सवाल होगा कि बोलो क्या इन्होंने तुमको हुक्म पहुंचाये? वे कहेंगे कि नहीं! हमारे पास तो कोई नज़ीर (यानी डराने वाला) नहीं आया। इसके बाद हज़रत नूह ﷺ से पूछा जाएगा कि तुम्हारे दावे की तस्दीक़ की गवाही देने वाले कौन हैं? वे जवाब देंगे कि हज़रत मुहम्मद ﷺ और उनके उम्मती हैं। यहां तक वाक़िआ नक़ल करने के बाद आंहज़रत ﷺ ने अपनी उम्मत को ख़िताब करके फ़रमाया कि इसके बाद तुमको लाया जाएगा और तुम गवाही दोगे कि बेशक हज़रत नूह ﷺ ने अपनी क़ौम को तब्लीग़ की थी। इसके बाद आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने (सूरः बक़रः की) नीचे की आयतें तिलावत फ़रमायीं :

وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَٰكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِّتَكُونُوا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ
الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا

व कज़ालि क जअ़ल्नाकुम उम्मतौं व स तल्लितकूनू शु ह
दा अ अ़लन्नासि व यकूनर्रसू लु अ़लैकुम शहीदा।

'और हमने तुमको एक ऐसी जमाअ़त बना दी है जो बहुत दर्मियानी है ताकि तुम दूसरी उम्मतों के लोगों के मुक़ाबले में गवाह बनो। और तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह ﷺ गवाह बनें।'

यह बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत है। मुस्नद इमाम अहमद (रह०) की एक रिवायत से ज़ाहिर होता है कि हज़रत नूह ﷺ के अ़लावा दूसरे नबी ﷺ की उम्मतें भी इंकारी होंगी और कहेंगी कि हमको तब्लीग़ नहीं की गई। उनके नबीयों से सवाल होगा कि तुमने तब्लीग़ की। वे कहेंगे कि जो हमने तब्लीग़ की थी। इस पर उनसे गवाह मांगे जाएंगे तो वे हज़रत मुहम्मद ﷺ

और उनकी उम्मत को गवाही में पेश करेंगे। चुनांचे हज़रत मुहम्मद ﷺ और उनकी उम्मत से सवाल होगा कि इस बारे में आप हज़रात क्या कहते हैं। जवाब में अर्ज़ करेंगे-जी, हम पैग़म्बरों के दावे की तस्दीक़ करते हैं? उम्मते मुहम्मदिया से सवाल होगा कि तुमको इस मामले में क्या ख़बर है? वे जवाब में अर्ज़ करेंगे कि हमारे पास हमारे नबी ﷺ तशरीफ़ लाये और उन्होंने ख़बर दी कि तमाम पैग़म्बरों ने अपनी-अपनी उम्मत की तब्लीग़ की।[1]

आयत का आम होना 'लि तकूनू शुहदा अ अ़लन्नास' भी इसको चाहता है कि हज़रत नूह ﷺ के अ़लावा दूसरे नबियों की उम्मतों के मुक़ाबले में भी उम्मते मुहम्मदिया गवाही देंगी।

यहां एक शुब्हा किया जा सकता है और वह यह कि उम्मते मुहम्मदिया नबीयों से ज़्यादा सच्ची और एतबार के क़ाबिल तो नहीं है। फिर नबीयों की सच्चाई को उम्मते मुहम्मदिया की गवाही से साबित करने का क्या मतलब होगा? जवाब यह है कि ज़्यादा एतबार के और सच्चे तो हज़रात अंबिया-ए-किराम अ़लैहिमुस्सलातु वस्सलाम ही हैं लेकिन चूंकि इस मुक़द्दमे के फ़रीक़ हो गये। इसलिए दूसरे गवाहों की ज़रूरत होगी भले ही वे गवाह नबियों से कम दर्जे के होंगे।[2] और उनके एतबार वाला होने की गवाही प्यारे

---

1. कुछ रिवायतों में यह भी आया है कि जब उम्मते मुहम्मदिया दूसरी उम्मतों के मुक़ाबले में उनके नबियों की ताईद में गवाही देगी तो सैयदे आ़लम हज़रत मुहम्मद ﷺ से सवाल होगा कि क्या तुम्हारी उम्मत लायक़ है कि उनकी गवाही मोतबर मानी जाए? आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ अपनी उम्मत की अ़दालत की गवाही देंगे। यानी यह फ़रमायेंगे कि हां यह सच कहते हैं और इनकी गवाही मोतबर है। बेशक इस उम्मत का बड़ा मर्तबा है और बहुत बड़ाई है। जिसका हश्र के मैदान में अगलों-पिछलों के सामने ज़ुहूर होगा। उम्मते मुहम्मदिया ﷺ की गवाही पर हज़रात अंबिया किराम अ़लैहिमुस्सलातु वस्सलाम के हक़ में अल्लाह के दरबार में फ़ैसला होना और अंबिया किराम अ़लैहिमुस्सलातु वस्सलाम के मुख़ालिफ़ों का मुजि़्रम क़रार पाकर सज़ा पाना इस उम्मत के लिए बड़े ऊंचे दर्जे की इज़्ज़त है। —बयानुल क़ुरआन

2. यहाँ एक सवाल और पैदा होता है और वह यह है कि जब उम्मते मुहम्मदिया नबियों की तब्लीग़ के वक़्त मौजूद न थी तो उनकी गवाही कैसे एतबार की होगी? जवाब यह है कि गवाही का भरोसा सिर्फ़ यक़ीन पर है और महसूसात ग़ैर साबित बिल वह्य

नबी ﷺ दे देंगे जैसे कोई तहसीलदार (जो खुद भी साहिबे इज्लास होता है) किसी गुस्ताख़ चपरासी के मुक़दमे में फ़रीक़ बन जाए तो हाकिमे आला के इज्लास में तहसीलदार से गवाह तलब किये जाएंगे। भले ही वे रुत्बे में तहसीलदार से छोटे दर्जे के हों और फिर उन गवाहों की सच्चाई को देख कर फ़ैसला किया जाएगा। यहीं से एक और शुब्हे का जवाब भी साफ़ हो जाता है। शुब्हा यह है कि रिसालत व तब्लीग़ के इंकारी इस मौक़े पर यह कह सकते है कि जब हमने नबियों को सच्चा न माना तो उनकी उम्मत (यानी उम्मते मुहम्मदिया) को क्यों सच्चा मानें? जवाब यह है कि ऐसा कहने का उनको हक़ न होगा क्योंकि मुद्दआ अ़लैह अगर उन गवाहों को झूठा साबित कर दे तो गवाह रद्द होंगे। गवाह पेश हो जाने के बाद मुद्दआ अ़लैह की तरफ़ से सिर्फ़ यह कह देना काफ़ी न होगा कि हम इनको सच्चा नहीं मानते। साथ ही इस हक़ीक़त से भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि मुद्दआ अ़लैह गवाहों को सच्चा माने या न माने, फ़ैसला देने के लिए हाकिम के नज़दीक उनका सच्चा होना काफ़ी है।

मुश्रिकों का इंकार कि हम मुश्रिक न थे

सूरः अन्आम में फ़रमाया :

(वह्य के अ़लावा की महसूस चीज़ों) में यक़ीन हासिल होना बग़ैर देखे मुम्किन नहीं। इसलिए गवाही का मदार (आश्रय) मुशाहदा (देखना) को बना दिया गया है और नबियों की तब्लीग़ व रिसालत का वाक़िया अगर्चे महसूस भी है और मुशाहद (जिसे देखा जाए) भी है, लेकिन उम्मते मुहम्मिदया की गवाही का एतबार के क़ाबिल होना देखने की वजह से नहीं, बल्कि वह्य से साबित होने की वजह से होगा और वह्य से मुशाहदे जैसा बल्कि उससे भी ज़्यादा यक़ीन हासिल होता है। और यक़ीन ही असल गवाही का मदार है। जैसे कोई डॉक्टर किसी मुर्दा को जिसके बदन पर कोई ज़ाहिरी निशानी (ज़ख़्म वग़ैरह न हो) देखकर अपनी महारत के ज़रिए यह इज़्हार कर दे कि यह शख़्स मर्ज़ से नहीं बल्कि किसी भारी चोट से मरा है और इस वजह से क़ातिल की इन्कुवाइरी का हुक्म हो जाए तो इसके बावजूद कि डॉक्टर उसकी मौत के वक़्त मौजूद न था चूंकि सेहत के क़ायदों की वजह से 'भारी चोंट' वजह बतायी गयी, इसलिए इसका एतबार किया गया। —ब्यानुल क़ुरआन

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا اَيْنَ شُرَكَآءُ كُمُ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ اِلَّا اَنْ قَالُوْا وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَاكُنَّا مُشْرِكِيْنَ۔

व यौ म नह्शुरुहुम जमीअ़न सुम्म म नक़ूलु लिल्लज़ी न अश्रकू ऐ न शु र का उकुमुल्लज़ी न कुन्तुम तज़्उमून। सुम्म म लम तकुन फ़ित न तुहुम इल्ला अन् क़ालू वल्लाहि रब्बिना मा कुन्ना मुश्रिकीन।

'और वह वक़्त भी याद करने के क़ाबिल है जिस दिन हम इन सब को जमा करेंगे, फिर मुश्रिकों से कहेंगे कि तुम्हारे वे शरीक, जिनके माबूद होने के तुम मुद्दई थे, कहां गये। फिर उनके शिर्क का अंजाम बस यही होगा कि यूँ कहेंगे कि अल्लाह की क़सम! जो हमारा परवरदिगार है, हम मुश्रिक न थे।'

इसके बाद फ़रमाया :

اُنْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوْا عَلٰى اَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَاكَانُوْا يَفْتَرُوْنَ۝

उन्ज़ुर कै फ़ क ज़ बू अ़ला अन्फ़ुसिहिम व ज़ल्ल ल अ़न्हुम मा कानू यफ़्तरून।

'ज़रा देखो तो किस तरह झूठ बोला अपनी जानों पर और जिन चीज़ों को वे झूठ-मूठ तराशा करते थे, वे सब ग़ायब हो गयीं।'

इन्कार तो करेंगे मगर इन्कार से निजात कहां मिलेगी। आ़मालनामों और गवाहों के ज़रिए इल्ज़ाम साबित हो ही जाएगा।

जिनकी पूजा करते थे, वे भी इन्कारी होंगे।

सूरः यूनुस में फ़रमाया :

وَقَالَ شُرَكَآءُ هُمْ مَاكُنْتُمْ اِيَّانَا تَعْبُدُوْنَ فَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغٰفِلِيْنَ۔

व क़ा ल शु र काउहुम मा कुन्तुम इय्याना तअ्बुदून। फ़ कफ़ा बिल्लाहि शहीदम बै न ना व बै नकुम इन कुन्ना अ़न इबादतिकुम ल ग़ाफ़िलीन।

'और उनके शरीक कहेंगे कि तुम हमारी इबादत नहीं करते थे। सो हमारे तुम्हारे दर्मियान ख़ुदा काफ़ी गवाह है कि हमको तुम्हारी इबादत की ख़बर भी न की।'

हज़रत ईसा عليه السلام से सवाल

क़ियामत के दिन हज़रत ईसा عليه السلام से यही सवाल होगा जैसा कि सूरः माइदः में फ़रमाया :

وَاِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِیْ وَ اُمِّیَ اِلٰهَيْنِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ۝

व इज़ क़ालल्लाहु या ईसब्न मरय म अ अन्त क़ुल त लिन्नासित्तख़ि ज़ूनी व उम्मि य इलाहैनि मिन दूनिल्लाह।

'और जबकि अल्लाह तआ़ला फ़रमायेंगे कि ऐ ईसा बिन मरयम! क्या तुमने उन लोगों से कह दिया था कि मुझको और मेरी मां को ख़ुदा के अ़लावा माबूद बना लो।'

हज़रत ईसा عليه السلام का जवाब

قَالَ سُبْحٰنَكَ مَايَكُوْنُ لِیْ اَنْ اَقُوْلَ مَالَيْسَ لِیْ بِحَقٍّ ط اِنْ كُنْتُ قُلْتُهٗ فَقَدْ عَلِمْتَهٗ تَعْلَمُ مَافِیْ نَفْسِیْ وَلَآ اَعْلَمُ مَا فِیْ نَفْسِكَ ط اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ط مَاقُلْتُ لَهُمْ اِلَّا مَآ اَمَرْتَنِیْ بِهٖ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّیْ وَرَبَّكُمْ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ وَاَنْتَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ شَهِيْدٌ ط اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ وَاِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَاِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ط

क़ा ल सुब्हा न क मा यकूनु ली अन अक़ू ल मा लै स ली बिहक़्क़। इन कुन्तु क़ुल्तुहू फक़द अ़लिम्तः। तअ़लमु मा फ़ी नफ़्सी व ला अअ़लमु फ़ी नफ़्सिक । इन्न न क अन्त अ़ल्लामुल ग़ुयूब। मा क़ुल्तु लहुम इल्ला मा अमर्तनी बिही अनिअ़बुदुल्ला ह रब्बी व रब्बुकुम व कुन्तु अ़लैहिम शहीदम्मा दुम्तु फ़ीहिम फ़लम्मा तवफ़्फ़ैतनी कुन्त अन्तर्रक़ी ब अ़लैहिम व अन्त अ़ला कुल्लि शैइन शहीद। इन तुअ़ज़्ज़िबुहुम फ़ इन्नहुम इबादुक व इन तग़्फ़िर लहुम, फ़ इन्न क अन्तल् अ़ज़ीज़ुल हकीम।

'हज़रत ईसा ﷺ जवाब देंगे कि मैं तो आपको (हर ऐब) से बरी जानता हूं। मुझे किसी तरह मुनासिब न था कि ऐसी बात कहूं जिसके कहने का मुझे हक़ नहीं। मगर (अल्लाह की पनाह!) मैंने कहा होगा तो आप जानते होंगे। आप तो मेरे दिल की बात जानते हैं और मैं आप के इल्म में जो कुछ है, उसको नहीं जानता। बेशक आप तमाम ऐबों को ख़ूब जानते हैं। मैंने उनसे सिर्फ़ वही कहा जिसका आपने मुझे हुक्म दिया (और वह) यह कि तुम अल्लाह की इबादत करो जो मेरा भी रब है और तुम्हारा रब भी और मैं जब तक उनमें रहा, उनपर मुत्तला रहा। फिर जब आपने मुझे उठा लिया तो आप ही उन पर मुत्तला रहे और आप हर चीज़ की पूरी ख़बर रखते हैं। अगर आप उनको सज़ा दें तो यह आप के बन्दे हैं और अगर आप इनको माफ़ फ़रमा दें, तो आप अ़ज़ीज़ व हकीम हैं।

लेकिन काफ़िर और मुश्रिक की मग़्फ़िरत का क़ानून नहीं है। ज़रूर ही ईसाई दोज़ख़ में जाएंगे। अपने पैग़म्बरों की हिदायत को छोड़कर ख़ुद ही गुमराह और काफ़िर हुए। यक़ीनन अ़ज़ाब झेलेंगे।

हिसाब-किताब, क़िसास, मीज़ान

وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّاعَمِلَتْ۔

व वुफ़्फ़ियत कुल्लु नफ़्सिम मा अ़मिलत०

'और हर जान को उसके अ़मल का पूरा बदला दिया जाएगा।'

नीयतों पर फ़ैसले

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि बेशक क़ियामत के दिन जिन लोगों के बारे में सबसे पहले फ़ैसला दिया जाएगा। उनमें से एक शख़्स वह होगा जो (जिहाद में क़त्ल हो जाने की वजह से) शहीद समझ लिया गया था, उसको क़ियामत के दिन लाया जाएगा। इसके बाद अल्लाह तआ़ला उसको नेमतों की पहचान कराएंगे जिनको वह पहचान लेगा (यानी उसे वे नेमतें याद आ जाएंगी जो अल्लाह ने दुनिया में उसको दी थीं) अल्लाह जल्ल ल शानुहू उस से सवाल फ़रमायेंगे कि तूने उन नेमतों को किस काम में लगाया? वह जवाब में अ़र्ज़ करेगा कि मैंने आपके रास्ते में यहां तक लड़ाई लड़ी कि शहीद हो गया। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेंगे कि तूने झूठ कहा (तेरा यह कहना ग़लत है कि तूने मेरे लिए लड़ाई लड़ी)। बल्कि तूने इसलिए लड़ाई की कि तुझे बहादुर समझा जाए सो (इसका फल तुझे मिल चुका और) दुनिया में तेरा नाम हो चुका। इसके बाद हुक्म होगा कि इसे मुंह के बल खींचकर दोज़ख़ में डाल दिया जाए। चुनांचे हुक्म पूरा कर दिया जाएगा।

और एक आदमी उन लोगों में से भी होगा, जिसके बारे में सबसे पहले फ़ैसला किया जाएगा। जिसने इल्म (दीन) सीखा और सिखाया और क़ुरआन शरीफ़ पढ़ा। उसे (क़ियामत के दिन) लाया जाएगा। इसके बाद अल्लाह तआ़ला उसको अपनी नेमतों की पहचान करायेंगे। चुनांचे वह पहचान लेगा। उससे अल्लाह तआ़ला सवाल फ़रमायेंगे कि तूने इन नेमतों को किस तरह काम में लगाया? वह जवाब देगा कि मैंने इल्म हासिल किया और दूसरों को सिखाया और आपकी ख़ुशी के लिए क़ुरआन पढ़ा। अल्लाह जल्ल ल शानुहू फ़रमायेंगे कि तूने झूठ बोला, (मेरे लिए तूने न इल्म हासिल किया, न क़ुरआन पढ़ा) बल्कि तूने इल्म इसलिए पढ़ा कि लोग तेरे मुतअ़ल्लिक़ यह कहें कि यह तो क़ुरआन पढ़ता रहता है (और इसका फल

तुझे मिल चुका और) दुनिया में तेरे मुतअ़ल्लिक़ वह कहा जा चुका जिसका तू चाहने वाला था। इसके बाद हुक्म होगा कि उसे मुंह के बल घसीट कर दोज़ख़ में डाल दिया जाए। चुनांचे हुक्म पूरा कर दिया जाएगा।

और एक वह शख़्स भी उन लोगों में से होगा जिनके मुतअ़ल्लिक़ सबसे पहले फ़ैसला किया जाएगा। जिसे अल्लाह तआ़ला ने बहुत कुछ दिया था और तरह-तरह के माल उसे दिये गये थे। क़ियामत के दिन उसे लाया जाएगा। इसके बाद अल्लाह तआ़ला अपनी नेमतों की पहचान करायेंगे। चुनांचे वह उनको पहचान लेगा। अल्लाह जल्ल ल शानुहू का सवाल होगा कि तूने इन नेमतों को किस चीज़ में लगाया? वह कहेगा कि कोई ऐसा भला काम जिसमें ख़र्च करना आप को महबूब हो, मैंने नहीं छोड़ा। हर भले काम में मैंने आप की ख़ुशी के लिए अपना माल ख़र्च किया। अल्लाह जल्ल ल शानुहू फ़रमायेंगे कि तूने झूठ बोला (मेरे लिए तूने ख़र्च नहीं किया) बल्कि तूने यह काम इसलिए किया कि तेरे बारे में यह कहा जाएगा कि वह सख़ी है, चुनांचे कहा जा चुका (और तेरा मक़सूद पूरा हो गया)। इसके बाद हुक्म होगा कि उसे मुंह के बल घसीटकर दोज़ख़ में डाल दिया जाए। चुनांचे इसे भी पूरा कर दिया जाएगा। —मिश्कात

तिर्मिज़ी शरीफ़ में भी यह हदीस मौजूद है। इसमें यही ज़िक्र किया गया है कि इसके ब्यान करने का हज़रत अबू हुरैरः ﷺ ने इरादा फ़रमाया तो (हश्र के मैदान के इस मंज़र के ख़्याल से) बेहोश हो गए। होश आने पर फिर ब्यान करने लगे तो दोबारा बेहोश हो गये। फिर होश आने पर तीसरी बार ब्यान करने का इरादा फ़रमाया तो तीसरी बार भी बेहोश हो गए और इसके बाद होश आने पर हदीस ब्यान फ़रमायी। जब यह हदीस हज़रत मुआ़विया ﷺ को सुनायी गयी तो फ़रमाया कि जब इन तीनों आदमियों के साथ ऐसा होगा तो इनके अ़लावा दूसरे बदनीयत इन्सानों के बारे में अच्छा मामला होने की क्या उम्मीद रखी जाए। इसके बाद हज़रत अमीर मुआ़विया ﷺ इतना रोये कि देखने वालों ने यह समझ लिया कि आज उनकी जान निकल कर रहेगी। —मिश्कात अ़न अहमद

हज़रत अबू सईद बिन फ़ुज़ाला ﷺ से रिवायत है कि हमारे नबी ﷺ ने फ़रमाया कि जब अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन लोगों को जमा करेंगे जिनके आने में ज़रा शक नहीं है तो एक पुकारने वाला ज़ोर से पुकारेगा कि जिसने कोई अ़मल अल्लाह के लिए किया और इस अ़मल में किसी दूसरे को दिखाने की नीयत करके इस दूसरे को भी शरीक कर लिया तो उसको चाहिए कि इस अ़मल का सवाब अल्लाह के सिवा (इस ग़ैर से) ही ले ले।—मिश्कात

दूसरी हदीस में है (जिसकी रिवायत बैहक़ी ने शोबुल ईमान में की है) कि जिस दिन अल्लाह तआ़ला बन्दों को आ़माल का बदला देंगे। दिखावा करने वालों से फ़रमायेंगे, जाओ दुनिया में तुम जिनको दिखाने के लिए अ़मल करते थे। उन्हीं के पास जाओ। फिर देखो कि उनके पास तुम्हें कुछ सवाब या भलाई मिलती है। —मिश्कात शरीफ़

नमाज़ का हिसाब और नफ़्लों का फ़ायदा

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ ने फ़रमाया कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से सुना है कि बेशक क़ियामत के दिन बंदे के आ़माल में से पहले उसकी नमाज़ का हिसाब किया जाएगा। पस अगर नमाज़ ठीक निकली तो कामयाबी और बामुराद होगा और अगर नमाज़ ख़राब निकली तो नामुराद और टोटा उठाने वाला होगा। पस उसके फ़र्ज़ों में कोई कमी रह जाएगी तो अल्लाह तआ़ला फ़रमायेंगे कि देखो, क्या मेरे बन्दे के कुछ नफ़्ल भी हैं? पस (अगर नफ़्ल निकले तो) जो फ़र्ज़ों में कमी होगी, नफ़्लों के ज़रिए पूरी कर दी जाएगी। फिर (नमाज़ के बाद) उसके बाक़ी अ़मलों का इसी तरह हिसाब होगा।[1]

एक रिवायत में है कि फिर (नमाज़ के बाद) इसी तरह ज़कात का हिसाब होगा। फिर (दूसरे) आ़माल इसी तरह से (हिसाब में) लिए जाएंगे। —मिश्कात शरीफ़

1. यानी फ़र्ज़ नमाज़ों की तकमील नफ़्लों से (ग़ैर नमाज़ में भी) की जाएगी।

बेहिसाब जन्नत में जाने वाले

अस्मा बिन्त यज़ीद रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन लोग एक ही मैदान में जमा किए जायेंगे, उस वक़्त एक पुकारने वाला ज़ोर से पुकार कर कहेगा कि वे लोग कहां हैं, जिनके पहलू बिस्तरों से अलग रहते थे (क्योंकि वे रातों को नमाज़ों में वक़्त गुज़ारते थे)। यह सुनकर इस ख़ूबी के लोग पूरे मज्मे में से निकल कर खड़े होंगे जो तायदाद में (बहुत कम) होंगे। ये लोग जन्नत में बग़ैर हिसाब के दाख़िल हो जायेंगे फिर उसके बाद बाक़ी लोगों का हिसाब शुरू करने के लिए हुक्म होगा।

—बैहक़ी शोबुल ईमान

हज़रत अबू उमामा ﷺ फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने फ़रमाया है कि मेरे रब ने मुझसे वादा फ़रमाया है कि तेरी उम्मत से सत्तर हज़ार बिला हिसाब-किताब जन्नत में दाख़िल होंगे, जिन पर कोई अज़ाब न होगा। हर हज़ार के साथ सत्तर हज़ार होंगे जो इसी बड़ाई से नवाज़े जायेंगे और तीन लप मेरे रब के लप[1] भरकर (भी) जन्नत में दाख़िल होंगे।

—मिश्क़ात शरीफ़

शिफ़ाअत वाली हदीस में हैं कि सरवरे आलम ﷺ ने फ़रमाया कि मैं अर्श के नीचे अपने रब के लिए सज्दे में जा पड़ूंगा। फिर अल्लाह मुझे अपनी वे हम्दें और उम्दा तारीफ़ बता देगा जो मुझसे पहले किसी को न बताई होंगी। फिर अल्लाह का इर्शाद होगा कि ऐ मुहम्मद! अपना सर उठाओ और सवाल करो। तुम्हारा सवाल पूरा किया जाएगा और सिफ़ारिश करो, तुम्हारी सिफ़ारिश क़ुबूल की जाएगी। चुनांचे मैं सर उठाऊंगा। और *'या रब्बि उम्मती। या रब्बि उम्मती। या रब्बि उम्मती!* (ऐ मेरे रब! मेरी उम्मत, ऐ मेरे रब! मेरी उम्मत, ऐ मेरे रब! मेरी उम्मत) कहूंगा। इसलिए मुझसे कहा जाएगा

1. अल्लाह हाथ, लप, क़दम और चेहरे से पाक है। क़ुरआन व हदीस में जहां कहीं इन चीज़ों का ज़िक्र आया है, उन पर ईमान लाओ कि उनका जो मतलब अल्लाह के नज़दीक है। यही हमारे नज़दीक है और इनका ज़ाहिरी मतलब लेकर अल्लाह के लिए जिस्म तज्वीज़ कभी न करो।

कि ऐ मुहम्मद! अपनी उम्मत के उन लोगों को जन्नत के दरवाज़ों में से दाहिने दरवाज़े से जन्नत में दाख़िल कर दो, जिनसे कोई हिसाब नहीं है। (फिर फ़रमाया कि) क़सम उस ज़ात की, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, जन्नत के दरवाज़े इतने चौड़े हैं, जितना कि मक्का और हिज्र[1] के दर्मियान फ़ासला है। —मिश्कात शरीफ़

हज़रत आइशा ؓ फ़रमाती हैं कि मैंने एक नमाज़ में आंहज़रत ﷺ को यह दुआ करते हुए सुना कि——

اللهم حاسبنى حسابا يسيرا ○

अल्लाहुम्म म हासिब्नी हिसाबैंयसीरा।

(ऐ अल्लाह! मुझसे आसान हिसाब लीजियो) मैंने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी! आसान हिसाब का क्या मतलब है? इर्शाद फ़रमाया आसान हिसाब यह है कि आमालनामे से आंखें बचा कर मुंह फेर लिया जाए (और छानबीन न की जाए) यह सच है कि जिससे छानबीन करके हिसाब लिया गया, वह हलाक हुआ। —अहमद

सख़्त हिसाब

हज़रत आइशा ؓ से यह भी रिवायत है कि नबी अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन जिससे (सही मानी में) हिसाब लिया गया। वह बर्बाद होकर रहेगा। यह सुनकर मैंने अ़र्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! अल्लाह तआला फ़रमाते हैं **'फ़ सौ फ़ युहासबु हिसाबैंयसीरा।'** (कि जिसके दाहिने हाथ में आमालनामा दिया गया। सो उससे बहुत जल्द आसान हिसाब होगा, इससे मालूम हुआ कि कुछ हिसाब देने वाले ऐसे भी होंगे, जो निजात पा जाएंगे।) आंहज़रत ﷺ ने इस सवाल के जवाब में फ़रमाया (आसान हिसाब से सही मानी में खोद-कुरेद और छानबीन वाला हिसाब मुराद नहीं है, बल्कि आसान हिसाब से यह मुराद है कि बन्दे के

1. हिज्र अरब के एक शहर का नाम था, जो मक्का से काफ़ी दूर था।

सामने सिर्फ़ आमालनामा पेश करके छोड़ दिया जाए। लेकिन जिसकी छानबीन हुई, वह तो बर्बाद ही होकर रहेगा। —बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़

मोमिन पर अल्लाह का ख़ास करम

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने फ़रमाया कि बेशक (क़ियामत के दिन) अल्लाह तआला मोमिन को अपने क़रीब करेंगे और (महशर वालों से उसे छिपा करके) फ़रमायेंगे कि क्या तुझे फ़्लां गुनाह याद है? क्या तुझे फ़्लां गुनाह याद है? वह जवाब में अर्ज़ करेगा कि, हां, ऐ रब! याद है, यहां तक कि अल्लाह तआला उससे गुनाहों का इक़रार करा लेंगे और वह अपने दिल में यक़ीन कर लेगा कि मैं बर्बाद हो चुका। अल्लाह तआला फ़रमायेंगे कि मैंने दुनिया में तेरे ऐबों को छिपाया और उन गुनाहों को ज़ाहिर न होने दिया और अब मैं बख़्शिश कर देता हूं। इसके बाद नेकियों का आमालनामा उसे इनायत कर दिया जाएगा। लेकिन काफ़िर और मुनाफ़िक़ लोगों का प्रोपगंडा किया जाएगा। सारी मख़्लूक़ के सामने उसके मुतअल्लिक़ ज़ोर से पुकार दिया जाएगा कि ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब के बारे में झूठी बातें गढ़ी थीं। ख़बरदार! अल्लाह की लानत है ज़ालिमों पर। -बुख़ारी व मुस्लिम

बग़ैर किसी वास्ते और पर्दे के अल्लाह को जवाब देना होगा

हज़रत इद्दी बिन हातिम ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम में से कोई भी ऐसा नहीं है, जिससे उसका रब ख़ुद (हिसाब लेने के सिलसिले में) बात न करे। बन्दे के और उसके रब के दर्मियान कोई वास्ता और कोई पर्दा न होगा। उस वक़्त बन्दा अपने दाहिने तरफ़ नज़र करेगा तो अपने आमाल के अलावा कुछ नज़र न आयेगा और अपने बाएं तरफ़ नज़र करेगा तो जो पहले से करके भेजा था, वह नज़र आएगा और अपने सामने नज़र करेगा तो सामने दोज़ख़ ही पर

नज़र पड़ेगी लिहाज़ा तुम दोज़ख से बचो, अगरचे खजूर का एक टुकड़ा ही (अल्लाह के रास्ते से) ख़र्च करने को तुम्हारे पास हो। -बुख़ारी व मुस्लिम

किसी पर ज़ुल्म न होगा और भलाई व बुराई की एक-एक बात मौजूद होगी

क़ुरआन शरीफ़ में इर्शाद है :

فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَّلَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ○

फ़ल यौ म ला तुज़्लमु नफ़्सुन शैऔंव ला तुज्ज़ौ न इल्ला मा कुन्तुम तअ्मलून।

'यानी उस दिन किसी जान पर ज़ुल्म न होगा और तुमको बस उन्हीं कामों का बदला मिलेगा जो तुम किया करते थे।'

और इर्शाद है :

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ۔

फ़ मैंयअ् मल मिस्क़ा ल ज़र्रतिन ख़ैरैंयरह व मैंयअ्मल मिस्क़ा ल ज़र्रतिन शर्रैंयरह।

'सो जो शख़्स (दुनिया में) ज़र्रा बराबर नेकी करेगा वह (वहां) उसको देख लेगा और जो शख़्स ज़र्रा बराबर बदी करेगा वह (भी वहां) उसको देख लेगा।'

सूरः मोमिन में फ़रमाया :

اَلْيَوْمَ تُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ○

अल् यौ म तुज्ज़ा कुल्लु नफ़्सिम बिमा क स बत ला ज़ुल्मल यौम। इन्नल्ला ह सरीउल हिसाब।

'और हर शख़्स को उसके कामों का बदला दिया जाएगा। आज (किसी पर) ज़ुल्म न होगा। बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।'

बंदों के हक़

क़ियामत के दिन अल्लाह के हक़ (नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज वग़ैरह) का भी हिसाब होगा और बंदों के हक़ का भी हिसाब होगा। दुनिया में जिसने किसी का हक़ मारा हो या किसी भी तरह ज़ुल्म या ज़्यादती की हो, सबका हिसाब और फ़ैसला होगा। बुज़ुर्गों ने फ़रमाया है कि अल्लाह का मुजरिम होना क़ियामत के दिन के लिए इतना ख़तरनाक नहीं है जितना बंदों के हक़ को मारने और बंदों के सताने व ज़ुल्म करने में ख़तरा है, क्योंकि अल्लाह तआला बेनियाज़ है। उनकी तरफ़ से अपने हक़ की बख़्शिश कर देने की उम्मीद की जी सकती है। लेकिन बन्दे चूंकि ज़रूरतमंद होंगे और एक-एक नेकी से काम निकलने और निजात पाने की उम्मीद होगी। इसलिए बन्दों से माफ़ करने और अपना हक़ छोड़ने की उम्मीद रखना नामुनासिब है। क़ियामत के दिन रुपया-पैसा, माल व दौलत कुछ भी पास न होगा। हक़ की अदायगी के लिए नेकियों का लेन-देन होगा और हक़ की अदाएगी का एहतमाम इतना होगा कि जानवरों ने जो आपस में एक दूसरे पर पर ज़ुल्म किया था, उसका भी बदला दिलाया जाएगा।

नेकियों और बुराइयों से लेन-देन होगा

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसने अपने किसी भाई पर ज़ुल्म कर रखा हो कि उसकी बे-आबरूई की हो और कुछ हक़ मारा हो, तो उसे चाहिए कि आज ही (उसका हक़ अदा करके या माफ़ी मांगकर) उस दिन से पहले हलाल करा ले जबकि न दीनार होगा, न दिरहम। (फिर फ़रमाया) अगर इसके कुछ अच्छे अमल होंगे तो ज़ुल्म के बराबर उससे ले लिए जायेंगे और जिस पर ज़ुल्म हुआ है उसको दिला दिए जायेंगे और अगर उसकी नेकियां न हुईं तो मज़्लूम की बुराइयां लेकर उस ज़ालिम के सर डाल दी जायेंगी। —बुख़ारी शरीफ़

क़ियामत के दिन सबसे बड़ा ग़रीब

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत ﷺ ने एक बार अपने सहाबा ﷺ से सवाल फ़रमाया, क्या तुम जानते हो कि ग़रीब कौन है? सहाबा ﷺ ने अ़र्ज़ किया हम तो उसे ग़रीब समझते हैं कि जिसके पास दिरहम (रुपया-पैसा) और माल व अस्बाब न हो। इसके जवाब में आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बेशक मेरी उम्मत में से (हक़ीक़ी) मुफ़्लिस वह है जो क़ियामत के दिन नमाज़ और रोज़े और ज़कात लेकर आएगा (यानी उसने नमाज़ें भी पढ़ी होंगी, रोज़े भी रखे होंगे और ज़कात भी अदा की होगी) और (इन सबके बावजूद) इस हाल में (हश्र के मैदान में) आयेगा कि किसी को गाली दी होगी और किसी को तोहमत लगायी होगी और किसी का (नामुनासिब और नाहक़) मारा होगा। (और चूंकि क़ियामत का दिन इंसाफ़ और सही फ़ैसलों का दिन होगा) इसलिए (उस शख़्स का फ़ैसला इस तरह किया जाएगा कि जिस-जिस को उसने सताया होगा और जिस-जिस का हक़ मारा होगा सबको उसकी नेकियां बांट दी जायेंगी) कुछ नेकियां इस हक़दार को दे दी जाएंगी। फिर अगर हुक़ूक़ पूरा न होने से पहले उसकी नेकियां ख़त्म हो जाएं तो हक़दारों के गुनाह उसके सिर डाल दिए जाएंगे। फिर उसको दोज़ख़ में डाल दिया जाएगा। —मुस्लिम

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उनैस ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन अल्लाह (अपने बन्दों) को जमा फ़रमाएगा जो नंगे, बेख़त्ना और बिल्कुल ख़ाली हाथ होंगे। फिर ऐसी आवाज़ से पुकारेंगे जिसे हर दूर वाले इसी तरह सुनेंगे जैसे क़रीब वाले सुनेंगे (और उस वक़्त ये फ़रमायेंगे कि) मैं बदला देने वाला हूं, मैं बादशाह हूं। (आज) किसी दोज़ख़ी के हक़ में यह न होगा कि दोज़ख़ में चला जाए और किसी जन्नती पर उसका ज़रा भी कोई हक़ हो जब तक कि मैं उसका बदला न दिला दूं? यहां तक कि अगर एक चपत भी ज़ुल्म से मार दिया था तो उसका बदला भी दिला दूंगा।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि हमने अ़र्ज़ किया- ऐ अल्लाह के

रसूल! बदला कैसे दिलाया जाएगा हालांकि हम नंगे, बेख़त्ना और बिल्कुल ख़ाली हाथ होंगे? जवाब में सरवरे आ़लम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि नेकियों और बुराइयों से लेन-देन होगा।

—अहमद

हज़रत अबू हुरैरः رضي الله عنه से रिवायत है कि जिसने अपने ख़रीदे हुए गुलाम को ज़ुल्म से एक कोड़ा भी मारा था, क़ियामत के दिन उसको बदला दिलाया जाएगा।

—तर्ग़ीब

मां-बाप भी हक़ छोड़ने पर राज़ी न होंगे

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رضي الله عنه ने फ़रमाया कि हज़रत रसूले करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि (अगर) मां-बाप का अपनी औलाद पर क़र्ज़ होगा तो जब क़ियामत का दिन होगा तो अपनी औलाद से उलझ जाएंगे (कि ला हमारा क़र्ज़ अदा कर)। वह जवाब देगा कि मैं तो तुम्हारी औलाद हूं। वे इस जवाब का कुछ असर न लेंगे और मांग पूरी करने पर इसरार करते रहेंगे बल्कि यह तमन्ना करेंगे कि काश! इस पर हमारा और भी ज़्यादा क़र्ज़ होता।

—तबरानी

सबसे पहले मुद्दई व मुद्दआ़ अ़लैह

हज़रत उक़्बा बिन आ़मिर رضي الله عنه से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन सबसे पहले मुद्दई व मुद्दआ़ अलैह दो पड़ोसी होंगे।

—अहमद

जानवरों के फ़ैसले

क़ियामत के दिन सभी का हिसाब होगा। हर मज़्लूम के हक़ में इंसाफ़ होगा। हज़रत अबू हुरैरः رضي الله عنه रिवायत फ़रमाते हैं कि आंहज़रत ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम ज़रूर-ब-ज़रूर हक़ वालों को उनके हक़ क़ियामत के दिन अदा करोगे यहां तक कि बे-सींगों वाली बकरी को (जिसे दुनिया में सींगों वाली बकरी ने मारा था) सींगों वाली बकरी से बदला दिलाया जाएगा।

—मुस्लिम शरीफ़

सूरः नबा के आख़िर में इर्शाद है :

ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ مَاٰبًا، اِنَّآ اَنْذَرْنٰكُمْ عَذَابًا
قَرِيْبًا يَّوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَاقَدَّمَتْ يَدَاهُ وَيَقُوْلُ الْكٰفِرُ يٰلَيْتَنِىْ كُنْتُ تُرٰبًا○

ज़ालिकल यौमुल हक़्क़ । फ़ मन शाअत्त ख़ ज़ इला रब्बिही मआबा । इन्ना अन्ज़र्नाकुम अज़ाबन क़रीबैं यौ म यन्ज़ुरुल मर्उ मा क़द्दमत यदाहु व यक़ूलुल काफ़िरु या लै त नी कुन्तु तुराबा ।

'वह दिन यक़ीनी है, सो जिसका जी चाहे अपने रब के पास ठिकाना बना रखे। बेशक हमने तुमको एक नज़दीक आने वाले अ़ज़ाब से डरा दिया है, जिस दिन हर शख़्स अपने अ़मल को देख लेगा। जो उसने पहले से आगे भेज दिए थे और काफ़िर कहेगा, काश मैं मिट्टी हो जाता!'

दुर्रे मंसूर में इस आयत की तफ़सीर में बुहत-सी हदीस की किताबों के हवाले से हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से नक़ल किया है कि क़ियामत के दिन सारी मख़्लूक़ जमा की जाएगी चौपाए भी और (इनके अ़लावा) ज़मीन पर चलने वाले भी और परिंदे भी और इनके अ़लावा हर चीज़। उस वक़्त अल्लाह की अदालत से जो फ़ैसले होंगे, उनमें यह भी होगा कि बे-सींगों वाले जानवरों की सींगों वाले जानवर से बदला दिलाया जाएगा। फिर उनसे कह दिया जाएगा कि मिट्टी हो जाओ उस वक़्त काफ़िर की ज़ुबान से (बड़ी हसरत से) यह निकलेगा कि काश मैं मिट्टी होता! —दुर्रे मंसूर

मशहूर तफ़सीर लिखने वाले हज़रत मुजाहिद ﷺ ने फ़रमाया कि जिस जानवर के चोंच मारी गयी थी। उसे चोंच मारने वाले जानवर से और जिस जानवर के लात मारी गयी थी, उसे लात मारने वाले जानवर से बदला दिलाया जाएगा। यह माजरा इंसानों के सामने होगा जिसे वह देखते रहेंगे। इसके बाद जानवरों के कह दिया जायेगा कि मिट्टी हो जाओ। न तुम्हारे लिए जन्नत है, न दोज़ख़ है। उस वक़्त काफ़िर (जानवरों की यह ख़लासी बल्कि

हमेशा के अज़ाब से बचने की कामयाबी को देखकर उनपर रश्क करेंगे और) कह उठेंगे कि हम (भी) मिट्टी हो जाते।

दुनिया काम करने की जगह है; सोचने की जगह है; तकलीफ़ की जगह है; दुख की जगह है। इस दुनिया में जो आदमी दुनिया ही के लिए अमल और मेहनत करेगा और दुनिया ही के रंज व फ़िक्र में घुलेगा। यक़ीनी तौर पर आख़िरत में ख़ाली हाथ पहुंचेगा। जिसने यहां अपने को न सिर्फ़ जानवरों से अच्छा बल्कि नेक बन्दों से भी अच्छा समझा और अल्लाह के रसूल ﷺ की बात को ठुकराया और आख़िरत से बेफ़िक्र रहा। आख़िरत में बर्बाद और बेआबरू होगा और न सिर्फ़ नेक बन्दे उससे अच्छे साबित होंगे बल्कि जानवर भी नतीजे के तौर पर उससे अच्छे रहेंगे और उस वक़्त बड़ी हसरत और नाउम्मीदी के साथ पुकार उठेगा कि काश! मैं भी मिट्टी हो जाता। हिसाब न लिया जाता, दोज़ख़ में न गिरता। काश! ज़मीन फट जाती और मैं हमेशा कि लिए ज़मीन का पैवंद हो जाता जैसा कि सूरः निसा में फ़रमाया :

يَوْمَئِذٍ يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَعَصَوُا الرَّسُوْلَ لَوْ تُسَوّٰى بِهِمُ الْاَرْضُ

यौ म इज़िं यवद्‌दुल्लज़ी न क फ़ रू व अ स वुर्रसू ल लौ तुसव्वा बिहिमुल अर्ज़।

'जिन लोगों ने कुफ़्र किया और रसूल की नाफ़रमानी की, उस दिन तमन्ना करेंगे कि काश! हम ज़मीन का पैवंद हो जाएं।'

इसके ख़िलाफ़ कि जिन लोगों ने दुनिया को आख़िरत के अमल की जगह समझकर वहां के लिए फ़िक्र किया और वहां की फ़िक्र में घुला वे वहां कामयाब होंगे। दुनिया में उनका हाल था कि ख़ुदा के डर से कहते थे कि काश हम मिट्टी हो जाते। मतलब यह कि ईमान वाले यहां अपने को दूसरी मख़्लूक़ से कम समझ कर आख़िरत की कामयाबी हासिल करेंगे और हक़ के इंकारी क़ियामत के दिन अपने को जानवरों से बदतर यक़ीन करेंगे और नाकाम होंगे।

جَعَلَنَا اللّٰهُ مِنَ الصَّالِحِيْنَ حَشَرَنَا مَعَهُمْ (امين)

ज अ़ ल नल्लाहु मिनस्सालिहीन ह श र ना म अ़ हुम।
(आमीन)

मालिकों और ग़ुलामों का इन्साफ़

हज़रत आइशा ﷺ रिवायत फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में एक शख़्स आकर बैठ गया। उसने अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! बिला शुब्हा मेरे कुछ ग़ुलाम हैं जो मुझसे झूठ बोलते हैं और मेरी ख़ियानत करते हैं और मेरी नाफ़रमानी करते हैं (यह तो उनकी तरफ़ से है) और (मेरी तरफ़ से यह है) कि उनको गालियां देता हूं और सज़ा में मारता भी हूं। अब मुझे आप यह बताएं कि आख़िरत में मेरा और उनका क्या मामला होगा? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जब क़ियामत का दिन होगा तो तेरे ग़ुलामों को ख़ियानत और नाफ़रमानी और झूठ बोलने का और तेरे सज़ा देने का हिसाब होगा। अगर तेरी सज़ा उनके क़ुसूरों के बराबर होगी तो मामला बराबर रहेगा, न तुझे कुछ उनकी तरफ़ से मिलेगा, न तुझ पर कुछ बोझ पड़ेगा और अगर तेरी सज़ा उनकी हरकतों से ज़्यादा होगी तो उस ज़्यादा सज़ा का उनको तुझे बदला दिलाया जाएगा।

हज़रत आइशा ﷺ फ़रमाती हैं कि नबी का यह इर्शाद सुनकर वह शख़्स रोता और चीख़ता हुआ वहां से हट गया। रसूलुल्लाह ﷺ ने उससे फ़रमाया क्या तू अल्लाह तआ़ला का यह इर्शाद नहीं पढ़ता (जिसमें तेरे मामले का साफ़ ज़िक्र किया गया है)

وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَاِنْ
كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا وَكَفٰى بِنَا حَاسِبِيْنَ۔

व न ज़ उल म वाज़ी नल क़िस त लि यौमिल क़ियामति फ़ ला तुज़्लमु नफ़्सुन शैआ व इन का न मिस्क़ा ल हब्बतिम मिन ख़रदलिन अतैना बिहा व कफ़ा बिना हासिबीन।

'और हम क़ियामत के दिन इंसाफ़ की तराज़ू क़ायम करेंगे सो किसी पर ज़रा-सा भी ज़ुल्म न होगा और अगर कोई अमल राई के दाने के बराबर भी होगा तो हम उसे ज़ाहिर करेंगे और हम हिसाब लेने वाले काफ़ी हैं।'

यह सुनकर उस शख़्स ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! मैं अपने और इन ग़ुलामों के हक़ में इससे बेहतर कुछ नहीं समझता कि उनको अपने से जुदा कर दूं। आपको गवाह बनाकर कहता हूं कि वह सब आज़ाद हैं।

—मिश्कात शरीफ़

जिन्नों से ख़िताब

जिन्नों को ख़िताब करके अल्लाह जल्ल ल शानुहू सवाल फ़रमायेंगे जैसा कि सूरः अंबिया में फ़रमाया :

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِاسْتَكْثَرْتُمْ مِنَ الْاِنْسِ

व यौ म नह्शुरुहुम जमीअन या मअ्शरल जिन्नि क़दिस्तक्सर्तुम मिनल इन्स।

'और जिस दिन अल्लाह इन सबको जमा करेगा (और फ़रमायेगा) ऐ जिन्नों की जमाअ़त! तुमने इंसानों में से बड़ी जमाअ़त बस में कर ली थी।'

आगे फ़रमाया :

وَقَالَ اَوْلِيٰٓؤُهُمْ مِنَ الْاِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَّ بَلَغْنَآ اَجَلَنَا الَّذِیْٓ اَجَّلْتَ لَنَا

व क़ा ल औलियाउहुम मिनल इंसि रब्ब नस्तम्त अ बअ्ज़ुना बिबअ्ज़िंव्व बलग़्ना अ ज लनल्लज़ी अज्जल्त लना।

'और कहेंगे जिन्नों के दोस्त आदमियों में से कि ऐ हमारे रब! फ़ायदा उठाया हम में एक ने दूसरे से और हम पहुंच गये अपने उस मुक़र्रर वक़्त को जो आपने हमारे लिए मुक़र्रर फ़रमाया।'

दुनिया में तो लोग बुत वग़ैरह पूजते हैं, वे सच में ख़बीस जिन्न व शैतान ही की पूजा करते हैं, इस ख़्याल से कि वे हमारे काम निकालेंगे, उन की नियाज़ें चढ़ाते हैं और उनके आस-पास नाचते और गाते-बजाते हैं। इस्लाम से पहले यह भी क़ायदा था कि आड़े वक़्त में जिन्नों से मदद तलब किया करते थे, जब आख़िरत में जिन्न और उनकी पूजा करने वाले पकड़े जाएंगे तो मुश्रिक कहेंगे कि हमारे परवरदिगार! वह तो हमने वक़्ती कार्रवाई कर ली थी और मौत का वादा आने से पहले-पहले दुनिया की ज़रूरतों के लिऐ हम एक-दूसरे से काम निकालने के कुछ उपाय कर लिया करते थे।

आगे फ़रमाया :

قَالَ النَّارُ مَثْوٰكُمْ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا اِلَّا مَاشَآءَ اللّٰهُ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ وَكَذٰلِكَ نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضًا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ۝

क़ालन्नारु मस्वाकुम ख़ालिदी न फ़ीहा इल्ला मा शाअल्लाह। इन्न न रब्ब क हकीमुन अ़लीम। व कज़ालि क नुवल्ली बअ्ज़ज़्ज़ालिमी न बअ्ज़म बिमा कानू यक्सिबून।

'अल्लाह तआला का इर्शाद होगा कि दोज़ख़ है तुम्हारा ठिकाना। उसमें हमेशा रहोगे मगर हां, जो अल्लाह चाहे[1]। बेशक तेरा रब हिकमत वाला और जानने वाला है और इसी तरह हम साथ मिला देंगे गुनहगारों को एक-दूसरे से उनके आमाल की वजह से।'

फिर आगे फ़रमाया :

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰٓى اَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَشَهِدُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ.

1. दोज़ख़ का अ़ज़ाब काफ़िरों के लिए हमेशा है अल्लाह के चाहने से अगर अल्लाह चाहे तो ख़त्म कर दे लेकिन इसका फ़ैसला हो चुका कि काफ़िर व मुश्रिक की बख़्शिश नहीं। ये लोग हमेशा दोज़ख़ में रहेंगे। पैग़म्बरों के ज़रिए इसकी ख़बर दी जा चुकी है।

या मअ्शरल जिन्नि वल इंसि अलम यअ्तिकुम रुसुलुम मिन्कुम यक़ुस्सू न अ़लैकुम आयाति व युन्ज़िरू न कुम लिक़ा अ यौमिकुम हाज़ा। क़ालू शहिदना अ़ला अन्फ़ुसिना व ग़र्रतहुमुल हयातुद्दुन्या व शहिदू अ़ला अन्फ़ुसिहिम अन्नहुम कानू काफ़िरीन।

'ऐ जिन्नो और इंसानों की जमाअ़त! क्या तुम्हारे पास तुम में से रसूल नहीं आये थे जो तुमको मेरी आयतें सुनाते थे और उस दिन के पेश आने से डराते थे। जिन्न व इंसान इक़रार करते हुए अ़र्ज़ करेंगे कि हमने अपने गुनाह का इक़रार कर लिया और उनको दुनिया की ज़िंदगी ने धोखा दिया और इक़रारी होंगे कि वे काफ़िर थे।'

इस आयत से साफ़ ज़ाहिर है कि जिन्नों और इंसानों से इकट्ठा ख़िताब और सवाल होगा कि रसूल तुम्हारे पास पहुंचे या नहीं? सवाल के जवाब में जुर्म का इक़रार करेंगे और यह मानेंगे कि हां! रसूल हमारे पास आये थे। सच में हम ही मुज्रिम हैं। इस आयत में है कि अपने काफ़िर होने का इक़रार करेंगे और कुछ आयतों में है कि **'मा कुन्ना मुश्रिकीन'** (हम मुश्रिक न थे) कहेंगे। इस शुब्हे का जवाब यह है कि पहले इंकार करेंगे और फिर आ़मालनामों और गवाहियों के ज़रिए इक़रार कर लेंगे और यह इंसान का क़ायदा है कि पहले जुर्म मानने से इंकार करते है। फिर जब इस तरह जान छूटती नज़र नहीं आती तो यह समझकर शायद इक़रार करने ही से ख़लासी हो जाए, इक़रार कर लेता है (लेकिन वहां काफ़िर व मुश्रिक की ख़लासी न होगी)।

जुर्म न मानने पर गवाहियां

बदन के अंगों की गवाही

इंसान बड़ा झगड़ालू है और उसकी बहस की तबीयत क़ियामत के दिन भी अपना रंग दिखायेगी और अल्लाह तआ़ला से भी हुज्जत करेगा।

उस वक़्त गवाहों के ज़रिए उसकी हुज्जत ख़त्म कर दी जाएगी। ख़ुद इंसान के अंग उसके ख़िलाफ़ गवाही देंगे। जैसा कि सूरः यासीन में फ़रमाया :

اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰى اَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَا اَيْدِيْهِمْ وَتَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ۝

अल् यौ म नख़्तिमु अ़ला अफ़्वाहिहिम व तुकल्लिमुना ऐ दीहिम व तशहदु अर्जुलुहुम बिमा कानू यक्सिबून।

'आज हम उनके मुंहों पर मुहर लगा देंगे और उनके हाथ हमसे कलाम करेंगे और उनके पांव उन कामों की गवाही देंगे।'

हज़रत अनस ؓ ने रिवायत ब्यान फ़रमायी कि (एक बार) आंहज़रत ﷺ की ख़िदमत में हम बैठे हुए थे कि उसी बीच अचानक आप ﷺ को हँसी आ गयी और (हमसे) फ़रमाया, क्या तुम जानते हो मैं क्यों हँस रहा हूं? हमने अ़र्ज़ किया कि अल्लाह और उसको रसूल ही ख़ूब जानते हैं। फ़रमाया कि (क़ियामत के दिन) बन्दे जो अल्लाह से सवाल व जवाब करेंगे, इस मंज़र को याद करके मुझे हँसी आ गयी। बन्दा कहेगा कि ऐ रब! क्या आपने मुझे ज़ुल्म से (बचाने का एलान फ़रमाकर) मुत्मईन नहीं फ़रमाया है। अल्लाह तआ़ला फ़रमाएंगे कि हां, मैंने यह वादा किया है। इसके बाद बन्दा कहेगा कि मैं अपने मामले में किसी की गवाही न मानूंगा। हां, अगर मेरे ही अंदर से कोई गवाही दे दे तो एतबार कर सकता हूं। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेंगे कि आज अपने बारे में तेरा ख़ुद गवाह होना काफ़ी है और लिखने वालों की गवाही भी काफ़ी है। (आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने) फ़रमाया कि इसके बाद उसके मुंह पर मुहर लगा दी जाएगी (और अल्लाह की तरफ़ से) उसके अंगों को हुक्म होगा कि बोलो। चुनांचे उसके अंग उसके अ़मल को ज़ाहिर कर देंगे। यह क़िस्सा देखकर बंदा अपने अंगों से कहेगा कि दूर! दूर! तुम ही को अ़ज़ाब से बचाने के लिए तो मैं बहस कर रह था। —मुस्लिम शरीफ़

एक हदीस में है कि उसकी रान और गोश्त और हड्डियां उसके अ़मल की गवाही देंगी। —मुस्लिम शरीफ़ अन अबी हुरैरः ؓ

ज़मीन की गवाही

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने इन आयत **'यौ म इज़िन तुहद्दिसु अख़्बारहा'** (उस दिन ज़मीन अपनी ख़बरें ब्यान कर देगी) तिलावत फरमाकर सवाल फ़रमाया, क्या तुम जानते हो ज़मीन के ख़बर देने का क्या मतलब है? । सहाबा ﷺ ने अ़र्ज़ किया कि अल्लाह और उसका रसूल ही ख़ूब जानते हैं। आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि ज़मीन के ख़बर देने का मतलब यह है कि वह मर्द व औरत के ख़िलाफ़ उसके आ़माल की गवाही देगी जो उसकी पीठ पर किये थे। वह कहेगी कि (उसने) मुझ पर फ़्लां-फ़्लां दिन फ़्लां-फ़्लां अ़मल किया था। यह है ज़मीन की ख़बर देना।

—अहमद व तिर्मिज़ी शरीफ़

आ़मालनामे

क़ियामत के दिन आ़मालनामे पेश किये जाएंगे। किरामन कातिबीन जो दुनिया में बन्दों के आ़माल रिकार्ड करते हैं। आ़मालनामे की शक्ल में पेश कर दिए जाएंगे। सूरः जासिया में फ़रमाया :

وَتَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِيَةً ۞ كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰى اِلٰى كِتٰبِهَا ۞ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۞ هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ ۞ اِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۞

व तरा कुल्लु उम्मतिन जासियः। कुल्लु उम्मतिन तुद्अ़ा इला किताबिहा। अल यौ म तुज्ज़ौ न मा कुन्तुम तअ़्मलून। हाज़ा किताबुना यन्तिक़ु अ़लैकुम बिलहक़्क़। इन्ना कुन्ना नस्तन्सिखु मा कुन्तुम तअ़्मलून।

और (उस दिन) आप हर फ़िर्क़े को देखेंगे कि (ख़ौफ की वजह से) ज़ानू के बल गिरे पड़े होंगे। हर फ़िर्क़ा अपने नामा-ए-आ़माल की तरफ़ बुलाया जाएगा (और उनसे कहा जाएगा) कि आज तुमको तुम्हारे कामों का बदला दिया जाएगा। यह हमारा दफ़्तर है जो तुम्हारे मुक़ाबले में ठीक-ठीक

बोल रहा है और हम तुम्हारे आमाल को लिखवा लिया करते थे।'

सूरः बनी इस्राईल में फ़रमाया :

وَكُلَّ إِنسَانٍ أَلْزَمْنَٰهُ طَٰٓئِرَهُۥ فِى عُنُقِهِۦ وَنُخْرِجُ لَهُۥ يَوْمَ الْقِيَٰمَةِ ۝ كِتَٰبًا
يَلْقَىٰهُ مَنشُورًا ۝ اقْرَأْ كِتَٰبَكَ كَفَىٰ بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيبًا ۝

व कुल्लु इन्सानिन अलज़म्नाहु ताइ र हू फ़ी उनुक़िही व नुख़्रिजु लहू यौमल क़ियामः। किताबैंयल्क़ाहा मन्सूरा। इक़रअ् किताब क कफ़ा बिनफ़्सि कल यौ म अलै क हसीबा।

'और हमने हर इंसान का अमल उसके गले का हार कर रखा है और क़ियामत के दिन हम उसका आमालनामा निकाल कर सामने कर देंगे जिसको वह खुला हुआ देख लेगा (और उससे कहेंगे) पढ़ ले अपना आमालनामा। आज तू खुद अपना हिसाब लेने वाला काफ़ी है।'

आमालनामों में सब कुछ होगा और मुज्रिम डरे हुए हैरत और हसरत करेंगे

आमालनामों में सब कुछ होगा और बदअमल आमालनामों को देख कर डर जाएंगे और जो भी दुनिया में किया था, सब मौजूद पाएंगे। सूरः कहफ़ में इर्शाद है :

وَوُضِعَ الْكِتَٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا فِيهِ وَيَقُولُونَ
يَٰوَيْلَتَنَا مَالِ هَٰذَا الْكِتَٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً إِلَّآ أَحْصَىٰهَا
وَوَجَدُوا مَا عَمِلُوا حَاضِرًا وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ أَحَدًا ۝

व वुज़िअल किताबु फ़ तरल मुज्रिमी न मुश्फ़िक़ी न मिम्मा फ़ीहि व यक़ूलू न या वै ल त ना मालि हाज़ल किताबि ला युग़ादिरु सग़ीरतौं व ला कबीरतन इल्ला अह्साहा। व व ज दू मा अमिलू हाज़िरौं व ला युज़्लिमु रब्बु क अ ह दा।

'और आमालनामा रख दिया जाएगा तो आप मुज्रिमों को देखेंगे कि उसमें जो कुछ होगा उससे डर रहे होंगे और कहते होंगे कि हाय! हमारी कमबख़्ती! इस नामा-ए-आमाल की अजीब हालत है कि बग़ैर क़लमबंद किए हुए उसने न कोई छोटा गुनाह छोड़ा, न कोई बड़ा गुनाह छोड़ा और जो कुछ उन्होंने किया, सब कुछ मौजूद पाएंगे और आपका रब किसी पर ज़ुल्म न करेगा।'

आमालनामों की तक़सीम

हर शख़्स का आमालनामा उसके सुपुर्द किया जाएगा जो लोग नेक और निजात पाने वाले होंगे, उनके आमालनामे दाहिने हाथ में दिए जाएंगे और जो लोग बदअमल और दोज़ख़ में गिरने वाले होंगे, उनके आमालनामे बाएं हाथ में और पीठ के पीछे से दिए जाएंगे।

सूरः इन्शिक़ाक़ में फ़रमाया :

يَاأَيُّهَا الْإِنْسَانُ إِنَّكَ كَادِحٌ إِلَىٰ رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلَاقِيهِ ○ فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ ○ فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَسِيرًا ○ وَيَنْقَلِبُ إِلَىٰ أَهْلِهِ مَسْرُورًا ○ وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ وَرَاءَ ظَهْرِهِ ○ فَسَوْفَ يَدْعُو ثُبُورًا ○ وَيَصْلَىٰ سَعِيرًا ○ إِنَّهُ كَانَ فِي أَهْلِهِ مَسْرُورًا ○ إِنَّهُ ظَنَّ أَنْ لَنْ يَحُورَ ○ بَلَىٰ ۚ إِنَّ رَبَّهُ كَانَ بِهِ بَصِيرًا ○

या ऐयुहल इंसानु इन्न क कादिहुन इला रब्बि क कद्हन फ मुलाक़ीह फ अम्मा मन ऊति य किता ब हू बियमीनिह फ सौ फ युहासबु हिसाबैं यसीरौं व यं कलिबु इला अह्लिही मस्रूरा। व अम्मा मन ऊति य किता ब हू व रा अ ज़ह्रिही फ सौ फ यद्ऊ सुबूरौं व यस्ला सईरा। इन्नहू का न फ़ी अह्लही मस्रूरा। इन्नहू ज़न्न न अल्लैंयहू र, बला! इन्न न रब्बहू का न बिही बसीरा।

'ऐ इंसान! अपने रब के पास पहुंचने तक काम में कोशिश कर रहा

है। फिर (उस काम के बदले) से तू मिलेगा सो वह शख़्स जिसका आमालनामा उसके दाहिने हाथ में दे दिया गया सो उससे आसान हिसाब लिया जाएगा और वह (हिसाब से फ़ारिग़ होकर) अपने मुतअ़ल्लिक़ लोगों के पास ख़ुश-ख़ुश आएगा और जिस शख़्स का आमालनामा (बायें हाथ में) उसकी पीठ के पीछे से दिया जाएगा सो वह मौत को पुकारेगा और जहन्नम में दाख़िल होगा। दुनिया में उसका यह हाल था कि (आख़िरत में बेफ़िक्र होकर) अपने बाल बच्चों में ख़ुश-ख़ुश रहा करता था और यह ख़्याल कर रखा था (उसको ख़ुदा की तरफ़) लौटना नहीं है। लौटना क्यों न होता। उसका रब उसको ख़ूब देखता था।'

जो शख़्स दुनिया में ख़ुश-ख़ुश रहा। दुनिया की ज़िंदगी को असल समझकर उसी में मस्त रहा और आख़िरत की ज़रा फ़िक्र न की और आख़िरत की बातों को झूठा समझा। क़ियामत के दिन सख़्त मुसीबत और रंज व ग़म में पड़ा रहेगा। इसके ख़िलाफ़ जो लोग दुनिया में रहते हुए, आख़िरत की फ़िक्र में घुले जाते थे और मरने के बाद वाली हालत की उन को फ़िक्र लगी रहती थी, वे क़ियामत के दिन दाहिने हाथ में आमालनामा लेकर ख़ूब ख़ुश होंगे। बदअ़मल यहां ख़ुश हैं और नेक अ़मल वहां ख़ुश होंगे।

आमालनामों के मिलने पर नेक बंदों को बेहद ख़ुशी और बुरों का बेहद रंज

सूरः हाक़्क़ः में इसे और ज़्यादा खोल दिया गया है, चुनांचे इर्शाद है :

يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ

यौ म इज़िन तुअ़ रज़ू न ला तख़्फ़ा मिन्कुम ख़ाफ़ियः।

'उस दिन तुम लोग पेश किये जाओगे और तुम्हारा कोई भेद छिपा न रहेगा।'

इसके बाद दाहिने हाथ में किताब मिलने वालों के लिए फ़रमाया :

فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ فَيَقُولُ هَاؤُمُ اقْرَءُوا كِتَابِيَهْ ۝ إِنِّي ظَنَنْتُ
أَنِّي مُلَاقٍ حِسَابِيَهْ ۝ فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَاضِيَةٍ ۝ فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۝
قُطُوفُهَا دَانِيَةٌ ۝ كُلُوا وَاشْرَبُوا بِمَا أَسْلَفْتُمْ فِي الْأَيَّامِ الْخَالِيَةِ ۝

फ़ अम्मा मन ऊति य किता ब हु बियमीनिही फ़ यक़ूलु हाउमुक़रऊ किताबियः। इन्नी ज़नन्तु अन्नी मुलाक़िन हिसाबियः। फ़ हु व फ़ी ईशतिर्राज़ियः। फ़ी जन्नतिन आलियः। क़ुतूफ़ूहा दानियः। कुलू वश्रबू हनीअम बिमा अस्लफ़्तुम फ़िल ऐयामिल ख़ालियः।

'सो जिनके दाहिने हाथ में किताब दी जाएगी तो (खुशी में कहेगा लीजियो, पढ़ियो मेरा आमालनामा)। मेरा तो अक़ीदा ही था कि बेशक मेरा हिसाब मिलना है। सो वह शख़्स बड़ी पसंदीदा ज़िंदगी में होगा। बुलंद बहिश्त में होगा। जिसके मेवे झुके-हुए होंगे और उनसे कहा जाएगा कि खाओ और पियो रचकर। यह बदला है उन (नेक) कामों का जो तुमने पिछले दिनों में पहले से (आगे) भेज दिए थे।'

दाहिने हाथ में आमालनामे का मिलना निजात पाने और मक़बूल होने की निशानी होगी। ऐसा आदमी मारे खुशी के हर एक को दिखाता फिरेगा कि लो! आओ मेरा आमालनामा पढ़ो और यह भी कहेगा कि मैंने दुनिया में यह समझ रखा था कि हिसाब पेश होना है। इस ख़्याल से मैं डरता रहा और फ़िक्र में घुलता रहा। आज दिल खुश करने वाला नतीजा देख रहा हूं।

इसके बाद बाएं हाथ में किताब मिलने वालों की हालत का इस तरह ज़िक्र फ़रमाया :

وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِشِمَالِهِ فَيَقُولُ يَا لَيْتَنِي لَمْ أُوتَ كِتَابِيَهْ ۝ وَلَمْ
أَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ ۝ يَا لَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ۝ مَا أَغْنَىٰ عَنِّي مَالِيَهْ ۝
هَلَكَ عَنِّي سُلْطَانِيَهْ ۝

व अम्मा मन ऊति य किता बहूबशिमालिहि फ़ यक़ूलु या

लैतनी लम ऊ त किताबियः व लम अद्रि मा हिसाबियः।
या लै त हा कानतिल क़ाज़ियः। मा अग्ना अन्नी मालियः।
ह ल क अन्नी सुलतानियः।

'और जिसके बाएं हाथ में किताब दी जाएगी, सो वह कहेगा कि काश! मुझे मेरा आमालनामा न मिलता और मुझे ख़बर ही न होती कि मेरा क्या हिसाब है। काश! वही मौत (मेरा) काम तमाम करने वाली होती (और मुझे दोबारा ज़िंदगी न मिलती)। कुछ मेरे काम न आया मेरा माल। मुझसे जाती रही, मेरी हुकूमत।'

सूरः इन्शिक़ाक़ में फ़रमाया कि पीठ के पीछे से बदअ़मलों को आमालनामे दिए जाएंगे। दोनों को मिलाने से मालूम होता है कि बाएं हाथ में जिनको आमालनामे दिए जाएंगे, सो पीछे से दिए जाएंगे। गोया फ़रिश्ते उनकी सूरत देखना पसंद न करेंगे और मुम्किन है कि मशकें बंधी हों, इसलिए आमालनामा पीठ की तरफ़ से बाएं हाथ में देने की नौबत आये।

अमल का वज़न

अल्लाह तआला हमेशा से सारी मख़्लूक़ के अमल को जानता है। अगर क़ियामत के मैदान में सिर्फ़ अपनी जानकारियों की बुनियाद पर अमल का बदला व सज़ा दें तो उनको इसका भी हक़ है। लेकिन हश्र के मैदान में ऐसा न किया जाएगा। बल्कि बन्दों के सामने उनके आमालनामे पेश कर दिए जाएंगे। वज़न होगा, गवाहियां होंगी, मुज्रिम इंकारी भी होंगे और दलील से जुर्म भी साबित किया जाएगा ताकि सज़ा भुगतने वाले यों न कह सकें कि हमपर ज़ुल्म करके बेवजह अज़ाब में डाला गया।

सूरः अन्आम में फ़रमाया :

وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذٍ الْحَقُّ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝
وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُم بِمَا كَانُوا
بِآيَاتِنَا يَظْلِمُونَ ۝

वल् वज़्नु यौ म-इज़ि निल-हक़्क़ु फ़ मन सक़ुलत मवाज़ीनुहू फ़ उलाइ क हुमुल मुफ़्लिहून। व मन ख़फ़्फ़त मवाज़ीनुहू फ़ उलाइ क ल्लज़ी न ख़सिरू अन्फ़ुसहुम बिमा कानू बिआयातिना यज़्लिमून।

'और तौल उस दिन ठीक होगी सो जिन की तौलें भारी पड़ीं, वही लोग बामुराद होंगे और जिनकी तौलें हल्की पड़ीं, सो वही हैं जिन्होंने अपना आप नुक़सान किया। इस वजह से कि वे हमारी आयतों का इंकार करते थे।'

हज़रत सल्मान رضي الله عنه से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन (आमाल तौलने की) तराज़ू रख दी जाएगी (और वह इतनी-ही लम्बी-चौड़ी होगी कि) अगर उसमें सारे आसमान व ज़मीन रखकर वज़न किए जाएं तो सब उसमें आ जाएं। उसको देखकर फ़रिश्ते ख़ुदा के दरबार में अ़र्ज़ करेंगे कि यह किसके लिए तौलेगी। यह सुनकर फ़रिश्ते अ़र्ज़ करेंगे कि ऐ अल्लाह! आप पाक हैं। जैसा इबादत का हक़ है, हमने ऐसी इबादत आप की नहीं की। —अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब

हज़रत अनस رضي الله عنه सैयदे आलम ﷺ से रिवायत करते हैं कि आप ने इर्शाद फ़रमाया (क़ियामत के दिन) तराज़ू पर एक फ़रिश्ता मुक़र्रर होगा (अ़मल का वज़न करने के लिए) इंसान इस तराज़ू के पास लाये जाते रहेंगे। जो आएगा, तराज़ू के दोनों पलड़ों के दर्मियान खड़ा कर दिया जाएगा। पस अगर उसके तौल भारी हुए। तो वह फ़रिश्ता ऐसी बुलंद आवाज़ से पुकार कर एलान करेगा जिसे सारी मख़्लूक़ सुनेगी कि फ़्लां हमेशा के लिए सआ़दतमंद[1] हो गया। अब कभी इसके बाद बदनसीब न होगा और अगर उसके तौल हल्के रहे तो वह फ़रिश्ता ऐसी बुलंद आवाज़ से पुकार कर एलान करेगा, जिसे सारी मख़्लूक़ सुनेगी कि फ़्लां हमेशा के लिए नामुराद हो गया, अब इसके बाद ख़ुशनसीब न होगा। —तर्ग़ीब व तर्हीब

हज़रत शाह अ़ब्दुल क़ादिर साहब रहमतुल्लाह अ़लैहि 'मौज़िहुल क़ुरआन' में लिखते हैं कि हर शख़्स के अमल वज़न के मुवाफ़िक़ लिखे जाते हैं। एक

1. सौभाग्यवान

ही काम है। अगर इख़्लास व मुहब्बत से शरई हुक्म के मुवाफ़िक़ किया गया और सही मौक़े पर किया गया तो उसका वज़न बढ़ गया और दिखावे को किया या हुक्म के मुवाफ़िक़ न किया था ठिकाने पर न किया तो वज़न घटा लिया, आख़िरत में वे काग़ज़ तुलेंगे, जिसके नेक काम भारी हुए तो बुराइयों से माफ़ी मिली और (जिसके नेक काम) हल्के हुए तो पकड़ा गया।

कुछ उलमा का कहना है कि क़ियामत के दिन आमाल को जिस्म देकर हाज़िर किया जाएगा और ये जिस्म तुलेंगे और इन जिस्मों के वज़नों के हल्का या भारी होने पर फ़ैसले होंगे। काग़ज़ों का तुलना या आमाल को जिस्म देकर तौला जाना भी नामुम्किन नहीं है और आमाल को बग़ैर वजन दिए यूँ ही तौल देना भी क़ादिरे मुतलक़ की क़ुदरत से बाहर नहीं है। आज जब कि साइंस का दौर है। आमाल को तौल में आ जाना बिल्कुल समझ में आ जाता है ये आजिज़ बन्दे, जिनको अल्लाह जल्ल जलालुहू व अम्म म नवालुहू ने थोड़ी-सी समझ दी है, थर्मामीटर के ज़रिए जिस्म की गर्मी की मिक़दार बता देते हैं और इसी तरह के बहुत-से आले (यंत्र) हैं जो जिस्मों के अलावा दूसरी चीज़ों की मिक़दार मालूम करने के लिए बनाए गए हैं तो उस एक ख़ुदा की क़ुदरत से यह कैसे बाहर माना जाए कि अमल तौल में न आ सकेंगे। अगर किसी को यह शुब्हा हो कि अमल तो महसूस होने वाला वुजूद नहीं रखते और वुजूद में आने के साथ ही फ़िना होते रहते हैं फिर उनका आख़िरत में जमा होना और तौला जाना क्या मानी रखता है? तो इसका जवाब यह है कि जिस तरह तक़रीरों को रिकार्ड कर लिया जाता है तो वह रेडियो स्टेशन से फैलायी जाती रहती हैं। हालांकि बंद कमरे में जब मुक़र्रिर (वक्ता) तक़रीर करता है तो एक दम आन की आन में सब नहीं कह देता, बल्कि एक-एक हर्फ़ अदा होता है, इसके बावजूद भी सारी तक़रीर महफ़ूज़ (सुरक्षित) हो जाती है। तो जबकि अल्लाह जल्ल ल जलालुहू ने अपने बन्दों को लफ़्ज़ों और बातों की पकड़ में लाकर इकट्ठा करने और रिकार्ड में लाने की ताक़त दी है तो वह ख़ुद इसकी क़ुदरत क्यों न रखेगा कि अपनी मख़्लूक़ के अमल व हरकत का पूरा रिकार्ड तैयार रखे जिसमें से एक ज़र्रा और शूशा भी ग़ायब न हो और महसूस तौर पर क़ियामत के दिन

उनका वज़न सबके सामने ज़ाहिर हो जाए।

لِيَجْزِيَ اللّٰهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ ۞ إِنَّ اللّٰهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۞

लियज्ज़ियल्लाहु कुल्लु ल नफ़्सिम्मा क स बत। इन्नल्ला ह सरीउल हिसाब।

एक बंदे के अमल का वज़न

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बिलाशुब्हा कियामत के दिन सारी मख़्लूक़ के सामने अल्लाह तआला मेरे एक उम्मती को (पूरे मज्मे से) अलग करके उसके समाने निन्नानवे दफ़्तर खोल देंगे। हर दफ़्तर वहां तक होगा जहां तक निगाह पहुंचे। (इन दफ़्तरों में सिर्फ़ गुनाह होंगे) इसके बाद अल्लाह जल्ल ल शानुहू उनसे सवाल फ़रमायेंगे कि क्या तू इन आमालनामों में से किसी चीज़ का इंकार करता है? क्या मेरे (मुक़र्रर किए हुए) लिखने वालों ने तुझ पर कोई ज़ुल्म किया है (कि कोई गुनाह किए बग़ैर लिख लिया हो या करने से ज़्यादा लिख दिए हों)? वह अर्ज़ करेगा कि ऐ परवरदिगार! नहीं!! (न इंकार है, न ज़ुल्म का दावा है) इसके बाद अल्लाह जल्ल ल शानुहू सवाल फ़रमायेंगे कि क्या तेरे पास इन बदआमालियों का कोई उज़्र है? वह अर्ज़ करेगा कि ऐ परवरदिगार! मेरे पास कोई उज़्र नहीं!

इसके बाद अल्लाह का इर्शाद होगा कि हां बेशक तेरी एक नेकी हमारे पास महफ़ूज़ है (वह भी तेरे सामने आती है) इसके बाद एक पुर्ज़ा निकाला जाएगा जिसमें———

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

अश्हदु अल्लाइला ह इल्लल्लाहु व अन्न न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुह।

लिखा होगा और उस बन्दे से फ़रमाया जाएगा कि जा! अपने आमाल

का वज़न होता देख ले। वह बन्दा अ़र्ज़ करेगा कि ऐ मेरे रब! (तौलना-न-तौलना बराबर है। मेरी हलाकत ज़ाहिर है, क्योंकि) इन दफ़्तरों की मौजूदगी में इस पुर्ज़े की क्या हक़ीक़त है? अल्लाह जल्ल ल शानुहू फ़रमायेंगे कि यक़ीन जान। तुझ पर आज ज़ुल्म न होगा (तौलना ज़रूरी है)। चुनांचे वह सारे दफ़्तर (इंसाफ़ की तराज़ू के एक पलड़े में और वह पुर्ज़ा दूसरे पलड़े में रख दिया जाएगा और (नतीजे के तौर पर) वे दफ़्तर हल्के रह जाएंगे और वह पुर्ज़ा (इन सब दफ़्तरों से) भारी निकलेगा, इसके बाद सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि बात (असल यह है कि) अल्लाह के नाम की मौजूदगी मे कोई चीज़ वज़नी न हो सकेगी। —तिर्मिज़ी, इब्ने माजा

यह इख़्लास और दिल में अल्लाह का डर और अल्लाह तआ़ला से मुहब्बत व तअ़ल्लुक़ के साथ पढ़ने की बरकत है। अल्लाह का नाम लेना भी उसी वक़्त नेकी बनता है जबकि ख़ुलूस के साथ पढ़ा जाए। यूँ काफ़िर भी कभी-कभी कलिमा पढ़ देते हैं लेकिन उनका यह नामे इलाही ख़ाली ज़ुबान से ले लेना आख़िरत में उनको निजात न दिलायेगा। ईमान भी हो; इख़्लास भी; तभी नेकी में जान पड़ती है और वज़नदार बनती है।

सबसे ज़्यादा वज़नी अ़मल

हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ से रिवायत है आंहज़रत ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुब्हा सबसे ज़्यादा वज़नी चीज़ जो क़ियामत के दिन मोमिन की तराज़ू में रखी जाएगी, वह अच्छे अख़्लाक़ होंगे फिर फ़रमाया कि बिला शुब्हा अल्लाह गंदगी और बेहयाई वाले से बुग्ज़ (कपट) रखते हैं। —मिश्कात शरीफ़

काफ़िरों की नेकियाँ बेवज़न होंगी

सूरः कहफ़ के आख़िरी रकूअ़ में इर्शाद है :

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْاَخْسَرِيْنَ اَعْمَالًا ۝ اَلَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَلِقَآئِهٖ فَحَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيْمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا ۝

क़ुल हल नुनब्बिउकुम बिलअख़्सरी न अअ्माला। अल्लज़ी न ज़ल्ल न सअ्युहुम फ़िल हयातिद्दुन्या व हुम यहसबू न अन्नहुम युहि्सनू न सुन्आ। उलाइकल्लज़ी न क फ़रू बिआयाति रब्बिहिम व लिक़ाइही फ़ हबितत अअ् मालुहुम फ़ ला नुक़ीमु लहुम यौमल क़ियामति वज़्ना।

'आप फ़रमा दीजिए, क्या हम तुमको ऐसे लोग बताएं जो आमाल के एतबार से बड़े घाटे में हैं। (ये) वे लोग हैं जिनकी कोशिश अकरात गयी दुनिया की ज़िंदगी में और वे समझते रहे कि ख़ूब बनाते हैं काम! ये वही हैं, जो इंकारी हुए अपने रब की आयतों के और उसकी मुलाक़ात के सिवा अकरात गए उनके अमल। पस हम क़ियामत के दिन उनके लिए तौल क़ायम करेंगे।'

यानि सबसे ज़्यादा टूटे और ख़सारे वाले हक़ीक़त में वे लोग हैं, जिन्होंने वर्षों दुनिया जोड़कर खुश हुए और यह यक़ीन करते रहे कि हम बड़े कामयाब और बामुराद हैं। कल हज़ारपति थे। आज लखपति हो गए। पिछले साल म्युनिस्पिल बोर्ड के मेम्बर थे। इस चुनाव में मेम्बर पार्लियामेंट बन गये ग़रज़ कि इसी फेर में ज़िंदगी गुज़ारी अल्लाह को न माना। उसकी आयतों का इन्कार किया, क़ियामत के दिन अल्लाह के सामने हाज़िरी से झुठलाया। मरने के बाद क्या बनेगा, इसको कभी न सोचा, सिर्फ़ दुनिया की तरक़्क़ियों और कामयाबियों को बड़ा कमाल समझते रहे। जब क़ियामत के दिन हाज़िर होंगे तो कुफ़्र और दुनिया की मुहब्बत और दुनिया की कोशिश ही उनके आमालनामों में होगी, वहां ये चीज़ें बेवज़न होंगी और दोज़ख़ में जाना पड़ेगा। उस वक़्त आँखें खुलेंगी कि कामयाबी क्या है?

यहूदी और ईसाई, मुश्रिक और काफ़िर, जो दुनिया की ज़िंदगी में अपने ख़्याल में नेक काम करते हैं। जैसे पानी पिलाने कि लिए जगह का इंतिज़ाम करते हैं और मजबूर की मदद कर गुज़ारते हैं यह अल्लाह के नामों का विर्द (बार-बार पढ़ना) रखते हैं 'इला ग़ैरि ज़ालिक'। इस क़िस्म

के काम भी आख़िरत में उनको निजात न दिलाएंगे। साधू और राहिब (योगी, संसार-त्यागी) जो बड़ी-बड़ी रियाज़तें (तपस्या) करते हैं और मुजाहिदा करके नफ़्स को मारते हैं और यहूदियों और ईसाइयों के राहिब और पादरी जो नेकी के ख़्याल से शादी नहीं करते। इस क़िस्म के तमाम काम बेफ़ायदा हैं। आख़िरत में कुफ़्र की वजह से कुछ न पाएंगे। काफ़िर की नेकियां मुर्दा हैं, वे क़ियामत के दिन नेकियों से ख़ाली हाथ होंगे। सूरः इब्राहीम में इर्शाद है——————

مَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ اَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِ نِ اشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ يَوْمٍ عَاصِفٍ ۞ لَا يَقْدِرُوْنَ مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰى شَيْءٍ ۞ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ۞

म स लुल्लज़ी न क फ़ रू बिरब्बिहिम अअ़्मालुहुम क र मादि निश-तद्दत बिहिर्रीहु फ़ी यौमिन आ़सिफ़ि। ला यक़्दिरू न मिम्मा क स बू अ़ला शैइ। ज़ालि क हुवज़्ज़ालुल बईद।

यानी (इन काफ़िरों को अगर अपनी निजात के मुतअ़ल्लिक़ यह ख़्याल हो कि हमारे आमाल हमको नफ़ा देंगे तो इसके मुतअ़ल्लिक़ सुन लो कि) जो लोग अपने परवरदिगार के साथ कुफ़्र करते हैं। उनकी हालत (अ़मल के एतबार से) यह है कि जैसे राख हो, जिसे तेज़ आंधी के दिन में तेज़ी के साथ उड़ा ले जाए (कि इस शख़्स में राख का नाम व निशान न रहेगा, इसी तरह) इन लोगों ने जो अ़मल किए थे, उनका कोई हिस्सा उनको हासिल न होगा (बल्कि राख की तरह सब ज़ाय व बर्बाद हो जाएंगे और कुफ़्र व गुनाह ही क़ियामत के दिन साथ होंगे। यह काफ़ी दूर की गुमराही है) कि गुमान तो यह है कि हमारे अ़मल नफ़ा देने वाले होंगे और फिर ज़रूरत के वक़्त कुछ काम भी न आएंगे।[1]

साहिबे तफ़सीरे मज़्हरी **'फ़ ला नुक़ीमु लहुम यौमल क़ियामति वज़्ना'** की तफ़सीर में लिखते हैं कि अल्लाह तआ़ला के नज़दीक काफ़िरों के अ़मल का कोई एतबार या अहमियत न होगी। फिर हुज़ूरे अक़्दस ﷺ का

1. ब्यानुल क़ुरआन मअ़् ज़्यादतुत्तौज़ीह वत्तफ़्हीम

इर्शाद, हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से नक़ल फ़रमाया है (जो इस किताब में पहले गुज़र भी चुका है) कि (क़ियामत के दिन) कुछ लोग भारी- भरकम (पोज़ीशन के एतबार से या जिस्म की मोटाई के लिहाज़ से) मोटे- ताज़े आएंगे, जिनका वज़न अल्लाह के नज़दीक मच्छर के पर के बराबर भी न होगा। इसके बाद सैयदे आलम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि (मेरी ताईद के लिए) तुम चाहो तो यह आयत पढ़ लोः **'फ़ ला नुक़ीमु लहुम यौमल क़ियामति वज़्ना'**

फिर साहिबे तफ़सीरे मज़्हरी आयत के इन लफ़्ज़ों की दूसरी तफ़सीर करते हुए फ़रमाते हैं इन (काफ़िरों) के लिए तराज़ू खड़ी भी न की जाएगी और तौलने का मामला उनके साथ होना ही नहीं, क्योंकि उनके (नेक) अमल वहां पर अकारत हो जाएंगे, इसलिए सीधे दोज़ख़ में डाल दिए जाएंगे। आयत में आये लफ़्ज़ों के तीसरा मानी ब्यान करते हुए फ़रमाते हैं, या यह मानी है कि काफ़िर अपने जिन अमल को नेक समझते हैं, क़ियामत की तराज़ू में उनका कुछ वज़न न निकलेगा। (क्योंकि वहां इस नेक काम में वज़न होगा जिन्हें ईमान की दौलत हासिल करते हुए, इख़्लास के साथ (अल्लाह की ख़ुशी हासिल करने के लिए) दुनिया में किया गया था।

इसके बाद अ़ल्लामा सुयूती (रह०) से नक़ल फ़रमाते हैं कि इल्म वालों का इसमें इख़्तिलाफ़ है कि ईमान वालों के अ़मल का सिर्फ़ वज़न होगा या काफ़िरों के अ़मल भी तौले जाएंगे। एक जमाअ़त का कहना है कि सिर्फ़ मोमिनों के अ़मल तौले जाएंगे (क्योंकि काफ़िरों की नेकियां तो अकरत हो जाएंगी, फिर जब नेकी के पलड़े में रखने के लिए कुछ न रहा तो एक पलड़ा क्या तौला जाए?) इस जामअ़त ने **'फ़ ला नुक़ीमु लहुम यौमल क़ियामति वज़्ना'** से दलील ली है। दूसरी जमाअ़त कहती है कि काफ़िरों के अ़मल भी तौले जाएंगे। (लेकिन वह बेवज़न निकलेंगे)। उनकी दलील आयत **'व मन ख़फ़्फ़त मवाज़ीनुहू फ़ उलाइ कल्लज़ी न ख़सिरू अन्फ़ुसहुम फ़ी जहन्नम म ख़ालिदून'** से है, जिसका तर्जुमा यह है, 'और जिनकी तौल हल्की निकली, तो ये वे लोग हैं जो हार बैठे अपनी जान। ये दोज़ख़ में हमेशा रहेंगे। दलील **'हुम फ़ीहा ख़ालिदून'** से है। मतलब यह है कि अल्लाह

तआ़ला ने इस आयते करीमा में हल्की तौल निकलने वालों के बारे में फ़रमाया है कि वह दोज़ख़ में हमेशा रहेंगे। इससे मालूम हुआ कि काफ़िरों के आ़माल भी तौले जाएंगे क्योंकि इस पर सब का इत्तिफ़ाक़ है कि मोमिन कोई भी दोज़ख़ में हमेशा न रहेगा।

इसके बाद साहिबे तफ़्हीरे मज़्हरी अ़ल्लामा क़ुर्तबी का क़ौल नक़ल फ़रमाते हैं कि हर एक के आ़माल नहीं तौले जाएंगे (बल्कि इसमें तफ़सील है और वह यह है कि) जो लोग बग़ैर हिसाब जन्नत में जाएंगे या जिनको दोज़ख़ में बग़ैर हिसाब हश्र का मैदान क़ायम होते ही जाना होगा इन दोनों जमाअ़तों के आ़माल न तौले जाएंगे और इनके अ़लावा बाक़ी मोमिनों व काफ़िरों के अ़मल का वज़न होगा।

साहिबे तफ़सीरे मज़्हरी इसके बाद फ़रमाते हैं कि अ़ल्लामा क़ुर्तबी का यह इर्शाद दोनों जामअ़तों के मस्लकों और दोनों आयतों (आयत सूरः कहफ़ और आयत सूरः मूमिनून) के मतलबों को जमा कर देते हैं।

हज़रत हकीमुल उम्मत क़ुद्दुस सिर्रहू (ब्यानुल क़ुरआन में) सूरः आराफ़ के शुरू में एक मुफ़ीद तम्हीद के बाद इर्शाद फ़रमाते हैं कि, 'पस इस मीज़ान में ईमान व कुफ़्र भी वज़न किया जाएगा और इस वज़न में एक पलड़ा ख़ाली रहेगा और एक पलड़े में अगर वह मोमिन व काफ़िर अलग-अलग हो जाएंगे (तो) फिर ख़ास मोमिनों के लिए एक पल्ले में उनके हसनात[1] और दूसरे पल्ले में उनके सैयिआत[2] रखकर उन अ़मल का वज़न होगा और जैसा कि दुर्रे मंसूर में हज़रत इब्ने अ़ब्बास ؓ से रिवायत किया गया है कि अगर हसनात ग़ालिब हुए तो जन्नत और अगर सैयिआत ग़ालिब हुए तो दोज़ख़ और अगर दोनों बराबर हुए तो आराफ़ तज्वीज़ होगी। फिर चाहे शफ़ाअ़त से पहले सज़ा या सज़ा के बाद मग़्फ़िरत हो जाएगी (और दोज़ख़ वाले और आराफ़ वाले जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे)।

1. नेकियाँ 2. गुनाह

अल्लाह की रहमत से बख़्शे जायेंगे

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने फ़रमाया कि हरगिज़ कोई जन्नत में अल्लाह की रहमत के बग़ैर दाख़िल न होगा? सहाबा किराम ﷺ ने सवाल किया कि या रसूलल्लाह! आप भी अल्लाह की रहमत के बग़ैर जन्नत में न जाएंगे? इसके जवाब में सैयदे आलम ﷺ ने अपना मुबारक हाथ सर पर रखकर फ़रमाया और न मैं जन्नत में दाख़िल हूंगा, मगर यह कि अल्लाह मुझे अपनी रहमत से ढांप ले। —तर्ग़ीब व तर्हीब

इस हदीस मुबारक में नेक अमल करने वालों को और ख़ास तौर से उन इबादत करने वालों, दुनिया से चाव न रखने वालों, अल्लाह का ज़िक्र करने वालों और जिहाद करने वालों को तंबीह फ़रमायी गयी है जो हर वक़्त भलाई और नेकी में लगे रहते हैं कि अपने अमल पर नाज़ न करें और यह न समझें कि हम जन्नत के हक़दार वाजबी तौर पर हो चुके बल्कि चाहिए कि अपने आमाल को कमतर समझते रहें और डरते रहें कि शायद क़ुबूल न हों। अगर अल्लाह तआला आमाल क़ुबूल न फ़रमायें तो किसी की उन पर क्या ज़बदरस्ती है जो नेक आमाल लोग करते हैं, उनको क़ुबूल फ़रमा कर सवाब से नवाज़ें और जन्नत में दाख़िल फ़रमायें यह उनकी सिर्फ़ रहमत है, उनकी मामूली नेमत के बदला भी सारी उम्र के अमल नहीं हो सकते हैं (जैसा कि नेमतों के सवाल के सिलसिले में रिवायत गुज़र चुकी है) जब आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि कोई भी अल्लाह की रहमत के बग़ैर जन्नत में दाख़िल न होगा तो सहाबा किराम ﷺ ने यह समझकर कि आप तो अल्लाह तआला के हुक्मों पर पूरी तरह क़ायम हैं और सख़्त मेहनत और मुजाहिदा इबादत और तब्लीग़ के लिए बर्दाश्त करते हैं और आपके किसी भी अमल में ज़रा खोट का शुब्हा भी नहीं हो सकता, तो तश्रीह (व्याख्या) चाही कि आप जन्नत में आमाल की वजह से जा सकेंगे या नहीं। आप ﷺ ने साफ़ फ़रमा दिया कि मैं भी अल्लाह की रहमत का मुहताज हूं, उसकी रहमत के बग़ैर जन्नत में न जाऊंगा। हैं तो अल्लाह के बन्दे ही। आख़िर आप रहमत के मुहताज क्यों न होंगे। सहाबा किराम ﷺ पर बेइंतिहा रहमत

व रिज़्वान की बारिशें हों जिन्होंने सवाल करके बाद में आने वालों के लिए अच्छी तरह दीन समझने के लिए नबी करीम ﷺ के इर्शादात का ज़ख़ीरा जमा कर दिया और फिर उसको बाद वालों के सुपुर्द कर गये। जो लोग हुज़ूरे अक़्दस ﷺ को ख़ुदाई अख़्तियारात देते हुए कहते हैं कि जो लेना है, वह लेंगे मुहम्मद से। इस मुबारक हदीस को ग़ौर से पढ़ें।

हर एक शर्मिंदा होगा

हज़रत मुहम्मद बिन अबी उमैरा ؓ से रिवायत है कि आंहज़रत ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुब्हा अगर कोई बन्दा पैदाइश के दिन से मौत आने तक अल्लाह की फ़रमांबरदारी में चेहरे के बल गिरा पड़ा रहे तो वह क़ियामत के दिन इस सारे अ़मल को हक़ीर (तुच्छ) समझेगा और यह तमन्ना करेगा कि उसको दुनिया की तरफ़ वापस कर दिया जाए ताकि और ज़्यादा बदला व सवाब (भले काम करके) हासिल करे। —अहमद

हज़रत अबू हुरैरः ؓ से रिवायत है कि आंहज़रत ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम में से जिसको भी मौत आएगी, ज़रूर शर्मिंदा होगा। सहाबा किराम ؓ ने अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लह के रसूल! किस चीज़ की शर्मिंदगी होगी। फ़रमाया, अगर अच्छे अ़मल करने वाला था तो यह सोच कर शर्मिंदा होगा कि और अ़मल कर लेता तो क्या अच्छा होता और अगर बुरे अ़मल करने वाला था तो यों सोचेगा कि काश! मैं बुराइयों से अपनी जान को बचाये रखता। —तिर्मिज़ी शरीफ़

शफ़ाअ़त

क़ियामत में शफ़ाअ़त भी अल्लाह जल्ल ल शानुहू क़ुबूल फ़रमाएंगे और उससे ईमान वालों को बड़ा नफ़ा पहुंचेगा। आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया है कि क़ियामत के दिन तीन गिरोह शफ़ाअ़त करेंगे।

(1) अंबिया किराम अ़लैहिमुस्सलातु वस्सलाम, (2) उलमा और (3)

शुहदा[1]। लेकिन शफ़ाअ़त वही कर सकेगा, जिसे अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से शफ़ाअ़त करने की इजाज़त होगी। जैसा कि आयतल कुर्सी में फ़रमाया :

مَنْ ذَالَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَہٗ اِلَّا بِاِذْنِہٖ

मन ज़ल्लज़ी यशफ़उ इन द हु इल्ला बिइज़्निह।

'कोई है जो उसके दरबार में शफ़ाअ़त करे बग़ैर उसकी इजाज़त के।'

और सूरः ताहा में फ़रमाया :

یَوْمَئِذٍ لَّا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَہٗ اِلَّا لِمَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَ رَضِیَ لَهٗ قَوْلًا ۔

यौ म इज़िल्ला तन्फ़उश्शफ़ाअ़तु इन द हु इल्ला मन अज़ि न लहुर्रहमानु व रज़ि य लहू क़ौला।

'उस दिन सिफ़ारिश नफ़ा न देगी मगर ऐसे शख़्स को जिसके वास्ते अल्लाह ने इजाज़त दे दी है और इसके वास्ते बोलना पसन्द कर लिया हो।'

जिसको अल्लाह जल्ल ल शानुहू की तरफ़ से शफ़ाअ़त की इजाज़त होगी, वही शफ़ाअ़त कर सकेगा और जिसके लिए शफ़ाअ़त की इजाज़त होगी, इसी के बारे में शफ़ाअ़त करने वाले शफ़ाअ़त करने की हिम्मत करेंगे।

काफ़िरों के हक़ में शफ़ाअ़त करने की इजाज़त न होगी और न कोई उनका दोस्त और सिफ़ारिशी होगा। अल्लाह का इर्शाद है :

مَا لِلظّٰلِمِیْنَ مِنْ حَمِیْمٍ وَّلَا شَفِیْعٍ یُّطَاعُ ۝ (مومن: ١٨)

मा लिज़्ज़ालिमी न मिन हमीमिंव्व ला शफ़ीइंयुताअ़।

—सूरः मोमिन

'ज़ालिमों का न कोई दोस्त होगा और न कोई सिफ़ारिशी, जिसका कहा माना जाए।'

1. इब्ने माजा

मिर्क़ात शरह मिश्कात में लिखा है कि क़ियामत के दिन पांच तरह की शफ़ाअ़तें होंगी। सबसे पहली शफ़ाअ़त हश्र के मैदान में जमा होने के बाद हिसाब-किताब शुरू कराने के लिए (जिसका ज़िक्र तफ़सील से गुज़र चुका है) तमाम नबी अल्लाह के दरबार में शफ़ाअ़त करने से इंकार कर देंगे और आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ तमाम अगले-पिछले मुस्लिमों और काफ़िरों के लिए शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे। दूसरी शफ़ाअ़त बहुत से ईमान वालों को जन्नत में बग़ैर हिसाब दाख़िल कराने के बारे में होगी। यह सिफ़ारिश भी आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ फ़रमायेंगे। तीसरी शफ़ाअ़त उन लोगों के लिए होगी जो बदआमालियों की वजह से दोज़ख़ के हक़दार हो चुके होंगे। यह शफ़ाअ़त आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ भी फ़रमायेंगे और आपके अ़लावा मोमिन और शहीद, आ़लिम भी उनकी शफ़ाअ़त करेंगे। चौथी शफ़ाअ़त उन गुनाहगारों के बारे में होगी जो दोज़ख़ में दाख़िल हो चुके होंगे। उनको दोज़ख़ से निकालने के लिए नबीयों और फ़रिश्ते शफ़ाअ़त करेंगे। पांचवी शफ़ाअ़त जन्नतियों के दर्जे बुलन्द कराने के लिए होंगीं।

हज़रत औ़फ़ बिन मालिक ؓ से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरे रब के पास से एक क़ासिद ने आकर (अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से) मुझे यह पैग़ाम दिया कि या तो मैं इस बात को अख़्तियार कर लूं कि मेरी आधी उम्मत बिला हिसाब व अ़ज़ाब जन्नत में दाख़िल हो जाए या इसको आख़्तियार कर लूं कि (अपनी उम्मत में से जिसके लिए भी चाहूं, शफ़ाअ़त कर सकूं। इसलिए मैंने शफ़ाअ़त को अख़्तियार कर लिया और मेरी शफ़ाअ़त उन लोगों के लिए होगी, जो अल्लाह के साथ किसी को शरीक नहीं करते। —मिश्कात शरीफ़

चूंकि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने उम्मत का ज़्यादा नफ़ा उसी में समझा कि हर शख़्स के लिए शफ़ाअ़त करने का हक़ ले लें। इसलिए आपने उसी को अख़्तियार फ़रमाया।

हज़रत अबू हुरैरः ؓ से रिवायत है कि आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि (अल्लाह की तरफ़ से हर नबी को) एक मक़बूल दुआ़ दी गयी। पस हर नबी

ﷺ ने दुनिया में मांग कर क़ुबूल करा ली और मैंने (इस दुआ को दुनिया में मांगकर ख़त्म नहीं कर दी, बल्कि उस दुआ को क़ियामत के दिन तक के लिए छिपा रखी है, ताकि उस दिन अपनी उम्मत की शफ़ाअत में उसको काम में लाऊं। पस मेरी शफ़ाअत इन्शाअल्लाह मेरे हर उस उम्मती को ज़रूर पहुंचेगी जो इस हाल में मर गया हो कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करता था। —मुस्लिम शरीफ़

इस मुबारक हदीस के अन्दाज़ से साफ़ मालूम होता है कि अल्लाह जल्ल ल शानुहू की यह आदत थी कि हर नबी को ख़ास तौर पर यह अख़्तियार देते थे कि एक दुआ ज़रूर ही क़ुबूल होती ही थी। लेकिन ख़ास एजाज़ के लिए अल्लाह जल्ल ल शानुहू ने हर नबी को अख़्तियार दिया कि एक बार तुम जो चाहो, मांग लो। प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया कि वह ख़ास दुआ हर नबी ने दुनिया ही में मांग ली। मैंने यहां नहीं मांगी। बल्कि क़ियामत के दिन के लिए रख छोड़ी है। उसे अपनी उम्मत की शफ़ाअत के लिए इस्तेमाल करूंगा।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्रू बिन आस رضي الله عنه से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आलम ने इर्शाद फ़रमाया कि (हमारे) इस क़िब्ले के मानने वालों में इतनी ज़्यादा तादाद दोज़ख़ में दाख़िल होगी कि जिसका इल्म अल्लाह ही को है (और यह दोज़ख़ का दाख़िला) अल्लाह की नाफ़रमानियों की वजह से और नाफ़रमानियों पर जुर्अत (दुस्साहस) करने और अल्लाह के हुक्म के ख़िलाफ़ चलने की वजह से (होगी)। पस मैं सज्दा में पड़कर अल्लाह की तारीफ़ में लग जाऊंगा जैसा कि खड़े होकर उसकी तारीफ़ ब्यान करूंगा। इसके बाद (अल्लाह तआला की तरफ़ से) हुक्म होगा कि अपना सर उठाओ और सवाल करो। तुम्हारा सवाल पूरा किया जाएगा और शफ़ाअत करो, तुम्हारी शफ़ाअत मानी जाएगी। —मुस्लिम शरीफ़

हज़रत अली बिन अबी तालिब رضي الله عنه से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं अपनी उम्मत के लिए शफ़ाअत करता रहूंगा और अल्लाह मेरी शफ़ाअत क़ुबूल फ़रमाते रहेंगे, यहां तक कि अल्लाह

तआ़ला मुझसे पूछेगा कि ऐ मुहम्मद! क्या राज़ी हो गये, मैं अ़र्ज़ करूंगा कि ऐ रब! मैं राज़ी हो गया। —तर्ग़ीब व तर्हीब

हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि नबियों के लिए (क़ियामत के दिन) नूर के मिंबर रख दिए जाएंगे, जिन पर वे तशरीफ़ फ़रमा होंगे और मेरा मिंबर ख़ाली रहेगा। मैं उस पर इस डर से न बैठूंगा कि कहीं जन्नत में मुझे न भेज दिया जाए और मेरे बाद, मेरी उम्मत (शफ़ाअ़त से महरूम) न रह जाए। मैं अ़र्ज़ करूंगा कि ऐ रब! मेरी उम्मत!! मेरी उम्मत!!! अल्लाह जल्ल ल शानुहू फ़रमाएंगे कि ऐ मुहम्मद! तुम अपनी उम्मत के बारे में मुझसे क्या चाहते हो? मैं अ़र्ज़ करूंगा कि उनका हिसाब जल्दी कर दिया जाए। चुनांचे उम्मते मुहम्मदी को बुलाकर उनका हिसाब जल्दी कर दिया जाएगा। नतीजे के तौर पर कुछ तो उनमें अल्लाह की रहमत से और कुछ मेरी शफ़ाअ़त से जन्नत में दाख़िल होगा। मैं सिफ़ारिश करता ही रहूंगा। यहां तक कि जो लोग दोज़ख़ में भेज दिए गए होंगे। उनके निकालने के लिए भी (अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से) मुझे (उनके लिखे हुए नामों की) एक किताब दे दी जाएगी। यहां तक कि (मालिक ﷺ) दोज़ख़ के दारोग़ा मुझसे कहेंगे कि आपने अपनी उम्मत में से किसी को भी अल्लाह के ग़ुस्से के लिए नहीं छोड़ा जो अ़ज़ाब में पड़ा रहा चला जाता (बल्कि सबको निकलवा लिया)। —तर्ग़ीब व तर्हीब

तंबीह

आंहज़रत ﷺ की शफ़ाअ़त ज़रूर होगी और हदीसों में जो कुछ आया है, सब सही और दुरुस्त है। लेकिन शफ़ाअ़त के भरोसे पर भले काम न करना और गुनाहों में पड़े रहना बड़ी नादानी है। यह तो शफ़ाअ़त की हदीसों से ही मालूम हुआ और आगे आने वाली हदीसों से भी यह बात साफ़ हो जाएगी कि इस उम्मत के आदमी बुहत बड़ी तादाद में दोज़ख़ में जाएंगे। दोज़ख़ में जाने और फिर कितनी मुद्दत अ़ज़ाब भुगतने के बाद शफ़ाअ़त से निकलना होगा। यह ख़ुदा ही बेहतर जाने! अब कौन-सा गुनाहगार और नेक अ़मल से ख़ाली यह कह सकता है कि मैं दोज़ख़ में हरगिज़ न जाऊंगा? कोई

भी यह दावा नहीं कर सकता फिर गुनाहों पर जुर्अत करना और नेकियों से ख़ाली हाथ रहना कौन-सी समझदारी है? इन ही सफ़्हों (पृष्ठों) में अभी क़रीब ही गुज़र चुका है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि (हमारे) इस क़िब्ले को मानने वालों में से इतनी बड़ी तादाद दोज़ख़ में दाख़िल होगी कि जिसका इल्म अल्लाह ही को है और यह दोज़ख़ का दाख़िला अल्लाह की नाफ़रमानियों और नाफ़रमानियों पर जुर्अत करने और ख़ुदा के हुक्म के ख़िलाफ़ करने की वजह से होगा।

मोमिनों की शफ़ाअ़त

आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ की शफ़ाअ़त उम्मत के लिए रहमत होगी और आप के तुफ़ैल में आप के बहुत-से उम्मतियों को भी शफ़ाअ़त करने का एजाज़ (श्रेय) मिलेगा। हज़रत अबू सईद رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि बिला शुब्हा मेरी उम्मत के कुछ लोग पूरी जमाअ़तों के लिए शफ़ाअ़त करेंगे और कुछ एक क़बीले के लिए और कुछ लोग उस्बा[1] के लिए और कुछ एक शख़्स के लिए सिफ़ारिश करेंगे। यहां तक कि सारी उम्मत जन्नत में दाख़िल हो जाएगी और एक हदीस में है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत के एक शख़्स की शफ़ाअ़त के क़बीला बनू तमीम के आदमियों से भी ज़्यादा लोग जन्नत में दाख़िल होंगे। —मिश्कात शरीफ़

हज़रत अनस رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि (जन्नतियों के रास्ते में) दोज़ख़ में जाने वालों की लाइन बनी खड़ी होगी। इसी बीच एक जन्नती वहां से गुज़रेगा। दोज़ख़ियों की लाइन वालों में से एक शख़्स उस जन्नती से कहेगा कि ऐ साहब! क्या आप मुझे पहचानते नहीं? मैंने आप को दुनिया में एक बार पानी पिलाया था। इसलिए मेहरबानी फ़रमाकर मेरी शफ़ाअ़त कर दीजिए और दोज़ख़ियों की इन लाइन वालों में से कोई गुज़रने वाला जन्नती से कहेगा कि मैंने आप को वुज़ू का

1. दस से चालीस तक की तादाद के गिरोह को उस्बा कहते हैं।

पानी दिया था (मेहरबानी फ़रमाकर शफ़ाअ़त कर दीजिए) चुनांचे जन्नती शफ़ाअ़त करके जन्नत में दाख़िल कर देगा। —इब्ने माजा

लानत करने वाले शफ़ाअ़त नहीं कर सकेंगे

हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि लानत करने की आदत वाले क़ियामत के दिन न गवाह बनेंगे, न शफ़ाअ़त करने के अहल होंगे यानी उनकी इस बुरी आदत की वजह से गवाही और शफ़ाअ़त का ओहदा न दिया जाएगा जो बड़ी सआ़दत और इज़्ज़त का रुत्बा है। —मुस्लिम शरीफ़

मुजाहिद की शफ़ाअ़त

तिर्मिज़ी शरीफ़ की एक लम्बी रिवायत में है, जिसे हज़रत मिक़्दाम बिन मअ़दीकर्ब ﷺ ने रिवायत की है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने शहीद की बड़ाईयां ब्यान करते हुए भी यह फ़रमाया कि सत्तर रिश्तेदारों के बारे में उसकी शफ़ाअ़त क़ुबूल की जाएगी। —मिश्कात शरीफ़

मां-बाप के हक़ में नाबालिग़ बच्चे की शफ़ाअ़त

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि जिसने तीन बच्चे (पहले से अपने) आगे (आख़िरत में) भेज दिए थे जो बालिग़ न हुए थे वे बच्चे उसके लिए मर्द हो या औरत, दोज़ख़ से बचाने के लिए मज़बूत क़िले (की तरह) काम आने वाले बन जाएंगे। यह सुनकर हज़रत अबूज़र ﷺ ने अ़र्ज़ किया कि मैंने तो सिर्फ़ दो बच्चे आगे भेजे हैं। मेरे बारे में क्या फ़रमाते हैं? नबी करीम ﷺ का इर्शाद हुआ कि दो बच्चे जो आगे भेजे हैं, उनके बारे में भी यही बात है। हज़रत उबई बिन कअ़ब ﷺ ने अ़र्ज़ किया कि मैंने तो एक ही बच्चा आगे भेजा है। आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि एक के बारे में भी यही बात है। —मिश्कात शरीफ़

आगे भेजने का मतलब यह है कि मां-बाप या दोनों में से एक की

मौजूदगी में बच्चे का इंतिक़ाल हो जाए। बच्चे की मौत पर जो मां-बाप को ग़म होता है। उसके बदले में अल्लाह जल्ल ल शानुहू ने यह ख़ुशी रखी है कि वह बच्चा मां-बाप के बख़्शवाने के लिए ज़ोर लगायेगा। अगर अधूरा बच्चा गिर गया तो वह भी मां-बाप को बख़्शवाने के लिए ज़ोर लगायेगा। जैसा कि हज़रत अ़ली ﷺ ने आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ का इर्शाद नक़्ल फ़रमाया है कि बिला शुब्हा अधूरा रह गया बच्चा भी उस वक़्त अपने रब से बड़ी ज़बरदस्त सिफ़ारिश मां-बाप के लिए करेगा जबकि उसके मां-बाप दोज़ख़ में दाख़िल कर दिए जाएंगे। उसकी ज़ोरदार सिफ़ारिश पर उससे कहा जाएगा कि ऐ अधूरे बच्चे जो अपने रब से (मां-बाप की बख़्शिश के लिए) ज़ोर लगा रहा है। अपने मां-बाप को जन्नत में दाख़िल कर दे। इसके बाद वह अपनी नाफ़ के ज़रिए खींचता हुआ ले जाकर उन दोनों को जन्नत में दाख़िल कर देगा। —इब्नेमाजा शरीफ़

क़ुरआन के हाफ़िज़ की शफ़ाअ़त

हज़रत अ़ली ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसने क़ुरआन पढ़ा और उसको अच्छी तरह याद कर लिया और क़ुरआन ने जिन चीज़ों और कामों को हलाल बताया है, उनको (अपने अ़मल और अ़क़ीदे में) हलाल रखा और जिन चीज़ों को उसने हराम बताया है, उनको (अपने अ़मल और अ़क़ीदे में) हराम ही रखा तो उसको अल्लाह जन्नत में दाख़िल फ़रमायेंगे और उसके घर वालों में से ऐसे दस आदमियों के बारे में उसकी शफ़ाअ़त क़ुबूल फ़रमायेंगे जिन के लिए (बुरे आ़माल की वजह से) दोज़ख़ में जाना ज़रूरी हो चुका होगा। —तिर्मिज़ी शरीफ़ वग़ैरह

तंबीह

जिसे क़ुरआन मजीद याद हो। उसकी शफ़ाअ़त दस आदमियों के हक़ में क़ुबूल होगी। जैसा कि अभी ऊपर की हदीस में गुज़रा। लेकिन इसी के साथ हदीस शरीफ़ में यह शर्त भी है कि क़ुरआन पाक पर अ़मल करने वाला हो। क़ुरआन मजीद के मुतालबों और तक़ाज़ों को पूरा करता हो। हराम से

बचता हो, हलाल पर अ़मल करता हो। लेकिन जिसने क़ुरआन शरीफ़ के उस तक़ाज़ों और मुतालबों को पीठ पीछे डाला तो ख़ुद क़ुरआन शरीफ़ उस पर दावा करेगा और दोज़ख़ में दाख़िल कर देगा। बहुत-से लोग गुनाह करते जाते हैं और नेक अ़मल से कतराते हैं और नसीहत करने पर कहते हैं कि साहब! हमारा बेटा या भतीजा या फ़्लां रिश्तेदार हाफ़िज़ है। वह बख़्शवा लेगा। हालांकि यह नहीं देखते कि क़ुरआन शरीफ़ पर वह अ़मल भी करता है या नहीं। आजकल तो अ़मल करने वाला कोई-कोई है। दूसरे के भरोसे पर ख़ुद गुनाहों में पड़ना नादानी है। हां, नेक अ़मल करते हुए अपने रिश्तेदार हाफ़िज़ की शफ़ाअ़त की उम्मीद रखे और साथ-ही-साथ उसे क़ुरआन शरीफ़ के मुताबिक़ भी चलाते रहें।

रोज़ा और क़ुरआन की शफ़ाअ़त

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि हज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि रोज़े और क़ुरआन बन्दे के लिए शफ़ाअ़त करेंगे। रोज़े अ़र्ज़ करेंगे कि ऐ रब! मैंने उसको दिन में खाने से और दूसरी ख़्वाहिशों से रोक दिया था। इसलिए इसके हक़ में मेरी शफ़ाअ़त क़ुबूल फ़रमाइए और क़ुरआन अ़र्ज़ करेगा कि ऐ रब! मैंने उसको रात को सोने से रोक दिया था। क्योंकि यह रात को मुझे पढ़ता या सुनता था, इसलिए मेरी शफ़ाअ़त उसके हक़ में क़ुबूल फ़रमाइए। इसके बाद सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि आख़िर में दोनों की शफ़ाअ़त क़ुबूल कर ली जाएगी। —मिश्कात

हज़रत अबू उमामा ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि रोज़े रखो और क़ुरआन शरीफ़ पढ़ो। क्योंकि वह क़ियामत के दिन अपने आदमियों के लिए शफ़ाअ़त करने वाला बनकर आएगा। (फिर फ़रमाया कि) दोनों सूरतों बक़रः और इम्रान को पढ़ा करो जो बहुत ज़्यादा रौशन हैं। क्योंकि वे क़ियामत के दिन दो बादलों या दो सायबानों या परिंदों की दो जमाअ़तों की तरह जो लाइन बनाये हुए हों, आयेंगी और अपने पढ़ने वालों के लिए बड़ी ज़ोर से सिफ़ारिश करेंगी। —मुस्लिम शरीफ़

तजल्ली-ए-साक़, पुलसिरात, तक़सीमे नूर

काफ़िरों, मुश्रिकों और मुनाफ़िक़ों की बेपनाह मुसीबत

क़ियामत का दिन इंसाफ़ का दिन होगा। हर शख़्स अपनी आँखों से अपने अ़मल का वज़न देखकर जन्नत या दोज़ख़ में जाएगा। किसी को यह कहने की ताक़त होगी ही नहीं कि मुझपर ज़ुल्म हुआ, मैं बेवजह दोज़ख़ में जा रहा हूं।

وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُوْنَ۝

व वुफ़्फ़ियत कुल्लु नफ़्सिम मा अ़मिलत व हु व अअ़् लमु बिमा यफ़्अलून।

अल्लाह जल्ल ल शानुहू ने ईमान और भले कामों के बदले के लिए जन्नत तैयार फ़रमाई है और कुफ़्र व शिर्क और दूसरे गुनाहों की सज़ा के लिए जन्नत तैयार फ़रमायी है। अपने आ़माल के नतीजे में इन दोनों में से जिसको जहां जाना होगा, जाएगा। जन्नत में जाने के लिए दोज़ख़ के ऊपर से रास्ता होगा। जिसे हदीसों में 'सिरात' फ़रमाया गया है और आम तौर से हमारे देश वाले उसे **पुलसिरात** कहते हैं। ख़ुदा से डरने वाले मोमिन अपने-अपने दर्जे के मुताबिक़ सही सलामत उस पर से गुज़र जाएंगे और बदअ़मल चल न सकेंगे और दोज़ख़ के अंदर से बड़ी-बड़ी संडासियां निकली होंगी जो गुज़रने वालों को पकड़कर दोज़ख़ में गिराने वाली होंगी। उनसे छिल-छिलाकर गुज़रते हुए बहुत से (बदअ़मल) मुसलमान पार हो जाएंगे और जिनको दोज़ख़ में गिराना ही मंज़ूर होगा तो वे संडासियां उनको गिरा कर ही छोड़ेंगी। फिर कुछ मुद्दत के बाद अपने-अपने अ़मल के मुताबिक़ और नबियों और फ़रिश्तों और नेक बंदों की शफ़ाअ़त से और आख़िर में सीधे-सीधे अल्लाह तआ़ला की मेहरबानी से वे सब लोग दोज़ख़ से निकाल लिए जाएंगे, जिन्होंने सच्चे दिल से कलिमा पढ़ा था और दोज़ख़ में सिर्फ़ काफ़िर व मुश्रिक व मुनाफ़िक़ ही रह जाएंगे।

नूर की तक़सीम

पुलसिरात पर गुज़रने से पहले नूर तक़सीम होगा। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ ने फ़रमाया कि ईमान वाले मर्दों और औरतों को उनके अपने-अपने आ़माल के बराबर नूर तक़सीम होगा (जिसकी रौशनी में) पुल सिरात पर गुज़रेंगे और यह नूर अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से जन्नत का रास्ता बताने वाला होगा। उनमें से किसी का नूर पहाड़ के बराबर होगा और किसी का नूर खजूर के पेड़ के बराबर होगा और सबसे कम नूर उस शख़्स का होगा, जिसका नूर सिर्फ़ अंगूठे पर (टिमटिमाते चिराग़ की तरह) का होगा, जो कभी बुझ जाएगा और कभी रौशन हो जाएगा।

सूरः हदीद में अल्लाह जल्ल ल शानुहू ने फ़रमाया :

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى نُوْرُهُمْ بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَ
بِاَيْمَانِهِمْ بُشْرٰكُمُ الْيَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خَالِدِيْنَ
فِيْهَا ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝

यौ म तरल मुअ्मिनी न वल मुअ्मिनाति यस्आ नूरुहुम बै न ऐदीहिम व बिऐमानिहिम बुशराकुमुल यौ म जन्नातुन तज्री मिन तह्तिहल अन्हारु ख़ालिदी न फ़ीहा ज़ालि क हुवल फ़ौज़ुल अज़ीम।

'जिस दिन आप मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को देखेंगे कि उनका नूर उनके आगे और उनकी दाहिनी तरफ़ दौड़ता होगा (और फ़रिश्ते उनसे कहेंगे कि) आज तुमको ख़ुशख़बरी है ऐसे बाग़ों की जिनके नीचे नहरें जारी होंगी (वे) उनमें हमेशा रहेंगे। यह बड़ी कामयाबी है।'

नूर मिलने के बाद मोमिन मर्द और औरतें पुलसिरात पर गुज़रने लगेंगे और उनके नूर की रोशनी में मुनाफ़िक़ मर्द और औरत भी पीछे-पीछे हो लेंगे लेकिन जब मोमिन मर्द व औरत आगे बढ़ जाएंगे और मुनाफ़िक़ मर्द व औरत पीछे रह जाएंगे तो ईमान वालों को आवाज़ दे कर कहेंगे कि ज़रा

इंतिज़ार करो हम भी आ रहे हैं। तुम्हारी रौशनी से हमें भी फ़ायदा पहुंच जाएगा और हम भी आगे बढ़ चलेंगे। ईमान वाले जवाब देंगे (यहां अपना ही नूर काम देता है, दूसरे के नूर से फ़ायदा पहुंचाने का क़ानून नहीं है, जाओ)। वापस अपने पीछे जहां नूर तक़सीम हुआ था, वहीं ढूंढो। चुनांचे मुनाफ़िक़ मर्द व औरत नूर लेने के लिए वापस होंगे, लेकिन वहां कुछ न मिलेगा। इसलिए फिर ईमान वालों का सहारा लेने के लिए दौड़ेंगे लेकिन उनको पा न सकेंगे। एक दीवार दोनों फ़रीक़ के दर्मियान रुकावट बन जाएगी जिसमें एक दरवाज़ा होगा। उसके अंदरूनी हिस्से में (जिधर मुसलमान हों) रहमत हागी और बाहर की तरफ़ अज़ाब होगा। (जिधर मुनाफ़िक़ होंगे) उसका ज़िक्र ऊपर की आयत के बाद सूरः हदीद में इस तरह है :

يَوْمَ يَقُولُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُّوْرِكُمْ قِيْلَ ارْجِعُوْا وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ بَابٌ بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ

यौ म यक़ूलुल मुनाफ़िक़ू न वल मुनाफ़िक़ाति लिल्लज़ी न आमनुन ज़ुरूना नक़तबिस मिन नूरिकुम। क़ीलरजिऊ वराअकुम फ़ल्तमिसू नूरन फ़ज़ुरि ब बैनहुम बिसूरिल्ल हू बाब। बातिनुहू फ़ीहिर्रहमतु फ़ ज़ाहिरुहू मिन क़ि ब लिहिल अज़ाब।

'जिस दिन मुनाफ़िक़ मर्द और औरतें ईमान वालों से कहेंगे कि हमारा इंतिज़ार कर लो ताकि हम भी तुम्हारे नूर से रौशनी हासिल करें। उनका जवाब मिलेगा कि तुम अपने पीछे लौट जाओ। फिर (वहां से) रौशनी तलाश कर लो। फिर दोनों फ़रीक़ के दर्मियान एक दीवार क़ायम कर दी जाएगी, जिसमें एक दरवाज़ा भी होगा, उसके अंदरूनी हिस्से में रहमत होगी और बाहर की तरफ़ अज़ाब होगा।'

इस बेपनाह मुसीबत और हैरानी व परेशानी में फंसकर कोई बचने की शक्ल मुनाफ़िक़ न पाएंगे और ईमान वालों को आवाज़ देकर मेहरबानी करने

की दलील ब्यान करते हुए कहेंगे कि हम तो दुनिया में तुम्हारे साथी थे। तुम्हारे साथ नमाज़ पढ़ते और रोज़े रखते थे। अब दोस्ती और साथ का हक़ आप हज़रात को अदा करना चाहिए। क़ुरआन मजीद में मुनाफ़िक़ों की इस बात को इस तरह ब्यान फ़रमाया है :

يُنَادُونَهُمْ أَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ

युनादू न हुम अलम नकुम म अ कुम।

'मुनाफ़िक़ ईमान वालों को पुकारेंगे कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे।'

मुसलमान जवाब देंगे कि :

بَلَىٰ وَلَٰكِنَّكُمْ فَتَنتُمْ أَنفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْأَمَانِيُّ
حَتَّىٰ جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ وَغَرَّكُم بِاللَّهِ الْغَرُورُ

बला, वला किन्ननकुम फ़तन्तुम अन्फ़ु सकुम व तरब्बस्तुम वर्तब्तुम व ग़र्रत कुमुल अमानीय्यु हत्ता जा अ अमुल्लाहि व ग़र्रकुम बिल्लाहिल ग़रूर।

'हां (यह तो सही है कि तुम दुनिया में हमारे साथ थे) लेकिन (सियासत व मस्लहत की वजह से साथ हो गये, दिल के साथ न थे) तुम ने अपनी जानों को (निफ़ाक़ के) फ़िले में डालकर हलाक किया और तुम इंतिज़ार में रहा करते थे कि (देखिए, मुहम्मद ﷺ और उनके साथी कब ख़त्म हों) और तुम को (इस्लाम के हक़ होने में) शक रहा और तुमको बेहूदा तमन्नाओं ने धोखे में डाल रखा था; यहां तक कि तुम तक अल्लाह का हुक्म (यानी मौत) आ पहुंचा और तुमको धोखा देने वाले (यानी शैतान) ने अल्लाह के बारे में धोखा में डाल रखा था।'

आगे इर्शाद फ़रमाया :

فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنكُمْ فِدْيَةٌ وَلَا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ مَأْوَاكُمُ النَّارُ
هِيَ مَوْلَاكُمْ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ

फ़ल यौ म ला युअ्ख़ज़ु मिन्कुम फ़िद्यतुंव्व ला मिनल्लज़ी न क फ़ रू। मअ् वाकुमुन्नारु हि य मौलाकुम व बिअ्सल मसीर।

'तो आज न क़ुबूल किया जाएगा तुमसे जान का बदला और न तुम्हारे अ़लावा उनसे, जो एलानिया काफ़िर थे तुम सबका ठिकाना दोज़ख़ है वही तुम्हारा साथी है और वह बुरा ठिकाना है।'

साक़ की तजल्ली

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ؓ रिवायत फ़रमाते हैं कि हमने रसूले अकरम ﷺ के दरबार में अ़र्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! क्या क़ियामत के दिन हम अपने रब को देखेंगे? जवाब में आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि हां, (ज़रूर देखोगे) क्या दोपहर के वक़्त सूरज के देखने में तुमको तकलीफ़ होती है, जबकि सूरज बिल्कुल साफ़ हो (और) उसपर ज़रा बादल न हो? और क्या चौदहवीं रात के चांद को देखने में तुमको कई तकलीफ़ होती है, जबकि वह बिल्कुल साफ़ हो और उस पर कुछ भी बादल न हो? सहाबा ؓ ने जवाब में अ़र्ज़ किया कि अल्लाह के रसूल! नहीं (कोई तकलीफ़ नहीं होती, आसानी से देख लेते हैं)। इसी तरह क़ियामत के दिन तुम अल्लाह को ख़ूब अच्छी तरह देखोगे और कोई तकलीफ़ न होगी जैसा कि चांद-सूरज के देखने में (ज़िक्र की गयी हालत में) कोई तकलीफ़ नहीं होती है। इस के बाद इर्शाद फ़रमाया कि—

'जब क़ियामत को दिन होगा तो एक पुकारने वाला पुकारेगा कि जो जिसको पूजता था, वह अपने माबूद के पीछे लग जाए, पस जो लोग ग़ैरुअल्लाह यानी बुतों और स्थानों के पत्थरों को पूजते थे। वे सबके सब दोज़ख़ में गिर पड़ेंगे (क्योंकि उनके बातिल के माबूद[1] भी दोज़ख़ का

1. जैसा कि क़ुरआन मजीद में आया है: 'इन्नकुम वमा तअ्बुदू न मिन दूनिल्लाहि ह स बु जहन्नम' —सूरः अंबिया

ईंधन बनेंगे)। यहां तक कि जब अहले किताब और वे लोग रह जाएंगे जो सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करते थे तो यहूद को बुलाकर सवाल किया जाएगा कि तुम किस की इबादत करते थे। वे जवाब में कहेंगे कि हम अल्लाह के बेटे उज़ैर की पूजा करते थे। इस जवाब पर (उन पर डांट पड़ेगी और उनसे कहा जाएगा कि) यह जो तुमने उज़ैर को अल्लाह का बेटा बताया, इस कहने में तुम झूठे हो। अल्लाह ने किसी को अपनी बीवी या औलाद क़रार नहीं दिया। इसके बाद उनसे सवाल होगा कि तुम क्या चाहते हो? वह अ़र्ज़ करेंगे कि ऐ परवरदिगार! हम प्यासे हैं। हमें पिला दीजिए। उनके इस कहने पर दोज़ख़ की तरफ़ इशारा करके उनसे कहा जाएगा कि वहां जाकर क्यों नहीं पी लेते। चुनांचे वे लोग दोज़ख़ की तरफ़ (चलाकर) जमा कर दिये जाएंगे (और वह दूर से ऐसा मालूम हो रहा होगा) गोया कि वह रेत है[1] और हक़ीक़त में वह आग होगी, जिसके हिस्से आपस में एक दूसरे को जला रहे होंगे। पस वे लोग उसमें गिर पड़ेंगे। फिर नसारा (ईसाई) को बुलाया जाएगा और उनसे सवाल किया होगा कि तुम किस की इबादत करते थे? उनके इस जवाब पर (डांटने के लिए) कहा जाएगा कि (यह जो तुमने मसीह को अल्लाह का बेटा बताया, इस कहने में) तुम झूठे हो। अल्लाह ने किसी को अपनी बीवी या औलाद क़रार नहीं दिया। इसके बाद उनसे सवाल होगा कि तुम क्या चाहते हो? वह अ़र्ज़ करेंगे कि ऐ परवरदिगार! हम प्यासे हैं, हमको पिला दीजिए। उनके इस कहने पर दोज़ख़ की तरफ़ इशारा करके उनसे कहा जाएगा कि वहां जाकर क्यों नहीं पी लेते। पस वे लोग उसमें गिर पड़ेंगे (मतलब यह है कि तमाम यहूदी व ईसाई दोज़ख़ में गिर पड़ेंगे)। यहां तक कि जब सिर्फ़ वही लोग रह जाएंगे, जो अल्लाह ही की इबादत करते थे (यानी मुसलमान) नेक भी और बद भी तो अल्लाह तआ़ला की उनके सामने एक तजल्ली होगी (और) अल्लाह तआ़ला फ़रमाएंगे कि तुमको क्या इंतिज़ार है? हर जमाअ़त को उसके माबूद के पीछे जाने का हुक्म है! मोमिन अ़र्ज़ करेंगे कि (जाने वाले जा चुके, हमारा उनका क्या साथ, हमको अपने माबूद

1. रेत दूर से देखने में पानी मालूम होती है।

का इंतिज़ार है, जब तक हमारा माबूद न आए, हम यहीं रहेंगे। जब हमारा रब हमारे पास पहुंचेगा, हम पहचान लेंगे) ऐ परवरदिगार! हम दूसरी जमाअतों और गिरोहों से दुनिया में अलग रहे। जबकि उनके साथ रहने के बहुत ज़्यादा मुहताज थे और (बहुत ज़्यादा मुहताज होने की हालत में भी) उनका साथ न दिया (अब उनके साथ कैसे हो सकते हैं) अल्लाह जल्ल ल शानुहू फ़रमायेंगे कि मैं तुम्हारा रब हूं। मोमिन (चूंकि साक़ की तजल्ली से अल्लाह को पहचानने के ध्यान में होंगे। इसलिए अल्लाह की उस तजल्ली को, जो उस वक़्त होगी, ग़ैरु ल्लाह रब मानकर क्या मुश्रिक हो जाएं) हम अल्लाह के साथ किसी भी चीज़ को शरीक नहीं बनाते। दो या तीन बार ऐसा ही कहेंगे। उनके इस जवाब पर अल्लाह जल्ल ल शानुहू सवाल फ़रामाएंगे कि क्या तुम्हारे रब और तुम्हारे दर्मियान कोई निशानी (मुक़र्रर) है जिससे तुम अपने रब को पहचान लोगे? मोमिन अर्ज़ करेंगे जी हां। निशानी ज़रूर हैं! इसके बाद साक़[1] की तजल्ली होगी जिसे देख कर तमाम वे लोग जो ख़ुलूस के साथ अल्लाह को सज्दा करते थे, अल्लाह के हुक्म से सज्दों में गिर पड़ेंगे और जो लोग दिखावे या (मस्लहतों की वजह से दुनिया में मुश्किलों से) बचने के लिए (यानी निफ़ाक़ के साथ) सज्दा करते थे, अल्लाह उन सबकी कमर को तख़्ता बना देंगे (जिसकी वजह से सज्दा न कर सकेंगे)। जो भी कोई उनमें से जब भी सज्द का इरादा करेगा गुधी के बल गिर पड़ेगा। फिर मोमिनीन सज्दों से सिर उठाएंगे और अब जो अल्लाह को देखेंगे तो इसी तजल्ली में जो तजल्ली साक़ से पहले थी, अब अल्लाह फ़रमाएंगे कि मैं तुम्हारा रब हूँ तो मोमिनीन मान लेंगे कि हाँ आप हमारे रब हैं।

इसके बाद दोज़ख की पुश्त पर पुलसिरात क़ायम की जायेगी (उस पर

1. साक़ पिंडली को कहते हैं और अल्लाह जल्ल ल शानुहू जिस्म और जिस्म के अंगो से पाक-साफ़ है। फिर यहां पिंडली का क्या मतलब है? इसके बारे में उलमा किराम ने बताया कि यह कोई ख़ास मुनासबत में साक़ फ़रमाया है। जैसे क़ुरआन में 'यदुल्लाह' (अल्लाह का हाथ) 'वज्हुल्लाह' (अल्लाह का चेहरा) का लफ़्ज़ आया है। ये और ऐसी ही लफ़्ज़ों पर, बग़ैर समझे और अक़्ल लड़ाए और अल्लाह को जिस्म के होने से पाक समझते हुए बिला शर्त ईमान रखना लाज़िम है।

से गुज़रने का हुक्म होगा) और इस वक़्त (शफ़ाअ़त के जो अह्ल होंगे उनको) शफ़ाअ़त की इजाज़त दी जाएगी और *अल्लाहुमम सल्लिम सल्लिम* (ऐ अल्लाह! सलामत रख, सलामत रख) कहते होंगें। अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! पुलसिरात की क्या सिफ़त है? इर्शाद फ़रमाया वह चिकनी और फिसलने की जगह है इस में (दोज़ख़ से निकली हुई) उचकने वाली चीज़ें और संडासियाँ होगीं और बड़े-बड़े कांटे भी होंगे जिनकी सूरत के कांटे नज्द में होते हैं जिनको सदान कहा जाता है। पस मोमिनीन पुलसिरात पर (जल्दी-जल्दी) गुज़रेंगे (और ये गुज़रना आ़माल सालिहा की बक़द्र जल्दी होगा) कोई पल झपकने में और कोई बिजली की तरह और कोई हवा की तरह और कोई परिंदों की तरह और कोई बेहतरीन तेज रफ़्तार घोड़ों की तरह और कोई ऊँटों की तरह (गुज़र जाएगा और दोज़ख़ के अंदर से जो संडासियाँ और काँटे निकले हुए होंगे वह खींच कर दोज़ख़ में गिरने की कोशिश करेंगे नतीजा यह होगी कि) बहुत से मोमिनीन सलामती के साथ नजात पा कर पार हो जाएंगे और बहुत से अह्ले ईमान (गुज़रते हुऐ) छिल-छिला कर छूट जाऐंगे और बहुत से दोज़ख की आग में ढकेल दिए जायेंगे यहाँ तक कि जब (नेक) ईमान वाले दोज़ख से बच जाएंगे तो मै उस ज़ात की क़सम खाकर कहता हुँ जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है कि तुम (यहाँ उस दुनिया में) अल्लाह से हक़ लेने के बारे में ऐसे मज़बूती के साथ बात करने वाले नहीं हो जैसा कि (दोज़ख़ से बच कर पुलसिरात पर हो जाने वाले मोमिनीन अपने इन भाईयों के लिए जो दोज़ख में (गिर चुके) होंगे। अल्लाह से मज़बूती के साथ सिफारिश करेंगे। दूसरी रिवायत में है कि आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने उस मौक़ा पर यूँ फ़रमाया कि (दुनिया में) जो हक़ तुम्हारा किसी के जिम्मे मालुम हो जाए तो उस हक़ को हासिल करने के लिए जैसी सख़्ती से मुतालिबा करते हो उस रोज़ अल्लाह से जो ईमान वाले अपने दोज़खी भाईयों के लिए ज़िस ज़ोर से मुतालिबा करेंगे तुम्हारे दुन्यावी मुतालिबा से बहुत ज़ोरदार होगा जब कि मोमिनीन ये देख लेंगे कि हम नजात पा चुके। बारगाह ईलाही में अ़र्ज़ करेंगे कि ऐ हामारे परवरदिगार ये लोग (जो दोज़ख़ में गुनाहों की वजह से गिर गये) हमारे साथ रोज़े रखते थे

और हमारे साथ नमाज़ पढ़ते थे और हज करते थे, (अब भी हमारे साथ उनको जन्नत में दाख़िल फ़रमा दीजिए) इर्शाद होगा कि तुम जिसे पहचानते हो, निकाल लो! चुनांचे (वे उनको निकालने के लिए रवाना होंगे और (उनके जिस्म दोज़ख़ की आग पर हराम कर दिए जाएंगे यानि दोज़ख़ की आग इन निकालने वालों को न जला सकेगी)। नतीजा यह होगा कि वे लोग दोज़ख़ से भारी तादाद में लोगों को निकालेंगे और इन दोज़ख़ियों में से किसी को आग ने आधी पिंडली तक और किसी को घुटने तक पकड़ा होगा।

फिर मोमिन ख़ुदा के दरबार में अर्ज़ करेंगे कि हमारे रब! आपने जिन लोगों के निकालने के मुतअ़ल्लिक़ हुक्म दिया था, उनमें से अब कोई भी दोज़ख़ में बाक़ी नहीं रहा। अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगा कि जाओ दोज़ख़ में कोई ऐसा भी मिले कि जिसके दिल में दीनार[1] के बराबर भी भलाई हो, उसको भी निकाल लो। चुनांचे मोमिन अल्लाह के इस इर्शाद के बाद भारी तादाद में लोगों को निकालेंगे। फिर अ़र्ज़ करेंगे कि ऐ रब! दोज़ख़ में हमने इनमें से कोई भी नहीं छोड़ा जिनके निकालने के बारे में आपने हुक्म फ़रमाया था। इसके बाद अल्लाह का इर्शाद होगा कि जाओ, जिसके दिल में आधे दीनार के बराबर भी भलाई देखो, उसको भी निकाल लो। चुनांचे इर्शाद के बाद मोमिन भारी तादाद में लोगों को दोज़ख़ से निकालेंगे। फिर अ़र्ज़ करेंगे कि ऐ रब! हमने दोज़ख़ में उनमें से कोई भी नहीं छोड़ा जिनके निकालने के बारे में आप ने हुक्म फ़रमाया था। इसके बाद अल्लाह का इर्शाद होगा कि जाओ जिसके दिल में ज़र्रा बराबर भी भलाई देखो उसको भी निकाल लो। चुनांचे वे भारी तादाद में लोगों को निकालेंगे। फिर अ़र्ज़ करेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार! हमने दोज़ख़ में (कोई ज़रा) ख़ैर (वाला) नहीं छोड़ा।

अब अल्लाह जल्ल ल शानुहू फ़रमाएंगे कि फ़रिश्तों ने शफ़ाअ़त कर ली और नबियों ने शफ़ाअ़त कर ली और ईमान वालों ने शफ़ाअ़त कर ली। अब बस अर्हमुर्राहिमीन (अल्लाह) ही बाक़ी है। अल्लाह जल्ल ल शानुहू यह फ़रमा कर दोज़ख़ में से एक मुट्ठी भरेंगे। पस उसमें से ऐसे लोगों को निकाल

1. दीनार सोने की अशर्फ़ी को कहते थे जो अ़रब में होती थी।

लेंगे जिन्होंने कभी कोई भलाई की ही नहीं थी (और ईमान ही की छिपी दौलत उनके पास थी। ये लोग जलकर कोयला हो चुके होंगे)। उनको अल्लाह जल्ल ल शानुहू एक नहर में डाल देंगे कि जन्नत के शुरू हिस्से में होगी जिसको **'नहरुल हयात'** (ज़िंदगी की नहर) कहा जाता है। (नहर में पड़कर उनकी हालत बदल जाएगी)। पस ऐसे निकलेंगे जैसे बीज बहते पानी के घास-तिनकों पर (बहुत जल्द उगकर) निकल आता है। (फिर फ़रमाया कि) इस हाल में उस नहर से निकलेंगे कि जैसे मोती हैं। उनकी गरदनों पर निशानियां होंगी (जिनके ज़रिए दूसरे) जन्नती उनको पहचानेंगे (कि ये अल्लाह के आज़ाद किए हुए हैं जिनको अल्लाह ने जन्नत में बग़ैर किसी (नेक) अ़मल के और बग़ैर किसी भलाई के, जो उन्होंने आगे भेजी हो, जन्नत में दाख़िल फ़रमाया।

फिर अल्लाह तआ़ला उनसे फ़रमाएंगे कि जन्नत में दाख़िल हो जाओ। वहां जो नज़र पड़े, वह तुम्हारे लिए है। वे अ़र्ज़ करेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार! आपने हमको वह अ़ता फ़रमाया है जो आपने दुनिया में से किसी को भी नहीं दिया। अल्लाह तआ़ला फ़रमाएंगे कि मेरे पास तुम्हारे लिए इससे भी अफ़ज़ल नेमत है। वे अ़र्ज़ करेंगे या रब्बना, इससे अफ़ज़ल कौन होगा? अल्लाह जल्ल ल शानुहू फ़रमाएंगे (कि इससे अफ़ज़ल) मेरी ख़ुशी है। सो मैं तुम पर कभी भी नाराज़ नहीं हूंगा।[1]

यह एक लंबी हदीस है जो अभी ख़त्म हुई इसमें बताया गया है कि साक़ की तजल्ली के बाद पुलसिरात क़ायम होगी। इससे यह भी समझ में आता है कि नूर की तक़सीम तजल्ली साक़ और पुलसिरात पार करने के दर्मियान होगी। क्योंकि पुलसिरात पार करने के लिए नूर तक़सीम किया जाएगा। लेकिन तर्तीब में हमने पूरी हदीस को एक ही जगह एक सिलसिले में रखने के लिए नूर की तक़सीम को तजल्ली-ए-साक़ से पहले ब्यान कर दिया है।

इस हदीस मुबारक से पुलसिरात और उस पर से गुज़रने वालों का तफ़सीली हाल मालूम हुआ। दूसरी रिवायतों में और ज़्यादा तफ़सील आयी

1. मिश्क़ात शरीफ़, तर्ग़ीब व तर्हीब (बुख़ारी व मुस्लिम)

है। चुनांचे एक हदीस में है कि आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने फ़रमाया कि पैग़म्बरों में से सबसे अव्वल मैं अपनी उम्मत के साथ पुलसिरात से गुज़रूंगा और उस दिन पैग़म्बरों के सिवा कोई बोलता न होगा और पैग़म्बरों का बोलना उस दिन *'अल्लाहुम म सल्लिम सल्लिम'*[1] होगा।[2] इसी को बार-बार कहेंगे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رضي الله عنه ने फ़रमाया कि दोज़ख़ पर पुलसिरात रखी जाएगी, जो तेज़ की हुई तलवार की तरह होगी।[3]

मुस्लिम शरीफ़ की एक हदीस में है कि (पुलसिरात पर) लोगों के आमाल लेकर चलेंगे जैसे जिसके अमल होंगे, उसी अन्दाज़े से तेज़ और सुस्त रफ़्तार होगा और सुस्त रफ़्तारों की हालत यहां तक पहुंच जाएगी कि कुछ गुज़रने वाले इस हाल में होंगे कि घिसटते हुए चलेंगे।

एक रिवायत में है कि दोज़ख़ में से संडासियां निकली हुई होंगी, उनमें से एक-एक की लम्बाई व चौड़ाई और उनके पकड़ गिराने का यह हाल होगा कि एक ही के बार में क़बीला रबीआ और मुज़र[4] के लोगों से भी ज़्यादा पकड़कर दोज़ख़ में डाले जाएंगे। —तर्ग़ीब व तर्हीब

प्यारे नबी ﷺ जन्नत खुलवाएंगे

आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन तमाम पैग़म्बरों से ज़्यादा मेरे तरीक़े पर चलने वाले मौजूद होंगे और मैं सबसे पहले जन्नत का दरवाज़ा (खुलवाने के लिए) खटखटाऊंगा।[5] यह भी इर्शाद फ़रमाया कि मैं क़ियामत के दिन जन्नत के दरवाज़े पर आकर खोलने के लिए कहूंगा। जन्नत का दारोग़ा सवाल करेगा कि आप कौन हैं? मैं जवाब दूंगा कि मुहम्मद हूं! यह सुनकर वह कहेगा कि मुझे यही हुक्म हुआ है कि आपके लिए खोलूं (और) आपसे पहले किसी के लिए न खोलूं।[6] यह भी

---

1. ऐ अल्लाह! सलामत रख, सलामत रख
2. बुख़ारी व मुस्लिम
3. तर्ग़ीब
4. अरब के दो क़बीलों के नाम
5. मुस्लिम शरीफ़
6. मुस्लिम शरीफ़

इर्शाद फ़रमाया कि मैं सबसे पहले जन्नत के (दरवाज़े के) हल्कों को हिलाऊंगा। पस अल्लाह मेरे लिए जन्नत खोलकर मुझे दाख़िल फ़रमा देंगे और मेरे साथ फ़कीर मोमिन होंगे और यह मैं फख़्र के साथ नहीं ब्यान कर रहा हूं (फिर फ़रमाया कि) मैं अल्लाह के नज़दीक तमाम अगलों -पिछलों से ज़्यादा इज़्ज़त वाला हूं।
—तिर्मिज़ी शरीफ़

जन्नत व दोज़ख़ में गिरोह-गिरोह जायेंगे

दोज़ख़ियों पर मलामत और जन्नतियों का स्वागत। दोज़ख़ के दरवाज़े जेल की तरह पहले से बन्द होंगे और जन्नत के दरवाज़े पहले से खुले होंगे।

तमाम काफ़िरों को धक्के देकर बड़ी ज़िल्लत व ख़्वारी के साथ दोज़ख़ की तरफ़ हांका जाएगा और चूंकि कुफ़्र की क़िस्में और दर्जे बहुत हैं इसलिए हर क़िस्म और हर दर्जे के काफ़िरों का गिरोह अलग-अलग कर दिया जाएगा। अल्लाह का इर्शाद है :

وَسِيْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْآ اِلٰى جَهَنَّمَ زُمَرًا

व सीक़ल्लज़ी न क फ़ रू इला जहन्न म ज़ु म रा।

'और जो काफ़िर हैं, वह जन्नत की तरफ़ गिरोह-गिरोह बनाकर हांके जाएंगे।'

जब वे दोज़ख़ के दरवाज़ों पर पहुचेंगे तो दरवाज़े खोलकर उसमें दाख़िल कर दिए जाएंगे और दोज़ख़ के दरवाज़ों पर जो फ़रिश्ते मुक़र्रर होंगे, वह मलामत करने के लिए सवाल करेंगे क्या तुम्हारे पास रसूल नहीं आए थे?

चुनांचे इर्शाद फ़रमाया है :

حَتّٰى اِذَا جَآءُوْهَا فُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا اَلَمْ يَاْتِكُمْ
رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَتْلُوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ رَبِّكُمْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ
هٰذَا قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ، قِيْلَ
ادْخُلُوْآ اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ

हत्ता इज़ा जाऊहा फ़ुतिहत अब्वाबुहा व क़ा ल लहुम ख़ ज़ नतुहा अलम यअ्तिकुम रुसुलुम मिन्कुम यत्लू न अ़लैकुम आयाति रब्बिकुम व युन्ज़िरू नकुम लिक़ा अ यौमिकुम हाज़ा। क़ालू बला, वला किन हक़्क़त कलिमतुल अ़ज़ाबि अ़लल काफ़िरून। क़ीलद् ख़ुलू अब्वा ब जहन्न न म ख़ालिदीन फ़ीहा। फ़ बिअ् स मस्वल मु त कब्बिरीन।

'यहां तक कि दोज़ख़ के पास पहुंचेंगे तो उसके दरवाज़े खोल दिए जाएंगे और उनसे दोज़ख़ के निगरां (देख-भाल करने वाले) कहेंगे क्या तुम्हारे पास तुम में से पैग़म्बर नहीं आये थे जो तुमको तुम्हारे रब की आयतें पढ़कर सुनाते थे और तुमको आज के दिन पेश आने से डराया करते थे? दोज़ख़ी जवाब देंगे कि हां (पैग़म्बर आये थे) लेकिन अ़ज़ाब का वादा काफ़िरों पर पूरा होकर रहा। (फिर उनसे) कहा जायेगा कि जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ (और) उसमें हमेशा के लिए रहो ग़रज़ यह कि घमंडियों का बुरा ठिकाना होगा।'

जन्नत वालों के बारे में फ़रमाया :

وَسِيقَ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا

व सीक़ल्लज़ी न त क़ौ रब्बहुम इलल जन्नति ज़ु म रा०

'और जो लोग अपने रब से डरते थे। गिरोह-गिरोह होकर जन्नत की तरफ़ रवाना किए जाएंगे।'

ईमान व तक़्वा के मर्तबे और दर्जे कम और ज़्यादा हैं। हर दर्जे और मर्तबे के मोमिनों की जमाअ़त अलग-अलग होगी और उन सब जमाअ़तों को एज़ाज़ व इकराम के साथ जन्नत की तरफ़ रवाना किया जायेगा। उनके स्वागत के लिए जन्नत के दरवाज़े पहले से खुले होंगे और दरवाज़ों पर पहुंचते ही जन्नत के निगरां उनको सलामती और ख़ुश ज़िंदगी गुज़ारते रहने की ख़ुशख़बरी सुनायेंगे। चुनांचे इर्शाद है :

حَتّٰى إِذَا جَاءُوهَا وَفُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوهَا خَالِدِينَ○

हत्ता इज़ा जाऊहा व फ़ुतिहत अब्वाबुहा व का ल लहुम ख़ ज़ न तुहा सलामुन अ़लैकुम तिब्तुम फ़दख़ुलूहा ख़ालिदीन।

'यहां तक कि जन्नत के पास पहुंचेंगे और उसके दरवाज़े खुले होंगे और उसके निगरां कहेंगे कि तुम पर सलाम हो। तुम मज़े में रहे सो जन्नत में हमेशा रहने के लिए दाख़िल हो जाओ।'

दोज़ख़ियों की आपस में एक-दूसरे पर लानत

दोज़ख़ी आपस में यहां बड़ी मुहब्बतें रखते थे और एक दूसरे के उकसाने और फुसलाने पर कुफ़्र व शिर्क के काम किया करते थे, लेकिन जब सब अपने बुरे किरदार (चरित्र) का नतीजा दोज़ख़ में जाने की शक्ल में देखेंगे तो एक दूसरे पर लानत की बौछार करेंगे।

सूरः अअ्राफ़ में इर्शाद है:

كُلَّمَا دَخَلَتْ أُمَّةٌ لَعَنَتْ أُخْتَهَا حَتّٰى إِذَا ادَّارَكُوا فِيهَا جَمِيعًا قَالَتْ أُخْرٰهُمْ لِأُولٰهُمْ رَبَّنَا هٰؤُلَاءِ أَضَلُّونَا فَآتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا مِنَ النَّارِ

कुल्लमा द ख़ लत उम्मतुल्ल अ़ नत उख़्त हा हत्ता इज़द्द र कू फ़ीहा जमीआ़। क़ालत उख़्राहुम लि उलाहुम रब्बना हा उलाइ अज़ल्लूना फ़ आतिहिम अ़ज़ाबन ज़िअ़्फ़म मिनन्नार।

'जिस वक़्त भी कोई जमाअ़त दोज़ख़ में दाख़िल होगी अपनी जैसी दूसरी जमाअ़त को लानत करेगी। यहां तक कि जब सब उसमें जमा हो जाएंगे तो पिछले लोग पहले लोगों के बारे में कहेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार! हमको इन लोगों ने गुमराह किया था। सो इनको दोज़ख़ का अ़ज़ाब दो गुना दीजिए।'

दोज़ख़ियों को अनोखी हैरत

दुनिया में काफ़िर ईमान वालों के मज़ाक़ बनाते थे और उनका ठट्ठा करते थे। जब दोज़ख़ में पहुंचेंगे तो अल्लाह के इन क़रीबी लोगों को अपने साथ न देखकर हैरत में पड़ जाएंगे जैसा कि सूरः साद में फ़रमाया :

وَقَالُوْا مَالَنَا لَا نَرٰی رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِّنَ الْاَشْرَارِ، اَتَّخَذْنٰهُمْ سِخْرِيًّا اَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْاَبْصَارُ○

व क़ालू मा लना ला नरा रिजालन कुन्ना नउद्दुहुम मिनल अश्रार। अत्तख़ज़्नाहुम सिख़्रीय्यन अम ज़ाग़त अन्हुमुल अब्सार।

'और ये दोज़ख़ी कहेंगे कि क्या बात है। वे लोग हमें दिखायी नहीं देते जिनको हम बुरे लोगों में गिना करते थे, क्या हमने उन लोगों की ग़लती से हँसी कर रखी थी या उनके देखने से आंखें चकरा रही हैं।

यानी जबकि वे लोग यहां यहां नज़र नहीं आते तो उसके बारे में यही कहा जा सकता है हम उनको बुरा समझने और शरारत वाले गिनने और उनका मज़ाक बनाने में ग़लती पर थे और वे हकीक़त में अच्छे लोग थे जो आज यहां नहीं हैं या यह है कि वे हैं यहीं, मगर हमारी आंखें चूक गयी हैं। वे लोग देखने में नहीं आ रहे हैं।

अपने मानने वालों के सामने शैतान का सफ़ाई पेश करना

दुनिया में शैतान ने अपने गिरोह के साथ इंसानों को ख़ूब बहकाया और हक़ के रास्ते से हटाकर कुफ़्र व शिर्क में फांसा। मगर क़ियामत के दिन इंसानों को ही इल्ज़ाम देगा कि तुमने मेरी बात क्यों मानी। मेरा तुम पर क्या ज़ोर था। चुनांचे अल्लाह का इर्शाद है :

وَقَالَ الشَّيْطٰنُ لَمَّا قُضِيَ الْاَمْرُ اِنَّ اللّٰهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُّكُمْ فَاَخْلَفْتُكُمْ وَمَاكَانَ لِيَ عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّا اَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِيْ فَلَا تَلُوْمُوْنِيْ وَلُوْمُوْٓا اَنْفُسَكُمْ مَآ اَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ اِنِّيْ كَفَرْتُ بِمَآ اَشْرَكْتُمُوْنِ مِنْ قَبْلُ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ○ (سورة ابراهيم)

व कालश्शैतानु लम्मा कुज़ियल अम्रु इन्नल्ला ह व अ़ द कुम वअ़दल हक़्कि य व अ़त्तुकुम फ़अख़्लफ़्तुकुम व मा का न लि य अ़लैकुम मिनसुल्तानिन इल्ला अन् दअ़ौतुकुम फ़स्तजब्तुम ली फ़ ला तलूमूनी व लूमू अन्फ़ुसकुम मा अना बिमुस्रिख़िकुम वमा अन्तुम बिमुस्रिख़ीय्य इन्नी कफ़र्तु बिमा अशरक्तुमूनि मिन क़ब्ल इन्नज़्ज़ालिमी न लहुम अ़ज़ाबुन अ़लीम। —सूरः इब्राहीम

'और जब फ़ैसले हो चुकेंगे, शैतान कहेगा कि (मुझे बुरा कहना नाहक़ है) क्योंकि बिला शुब्हा अल्लाह ने तुमसे सच्चे वादे किये थे, और मैंने (भी) तुमसे वायदे किये थे। सो मैंने जो वादे के ख़िलाफ़ किये थे और तुम पर मेरा कुछ ज़ोर इससे ज़्यादा तो चलता न था कि मैंने तुमको दावत दी। सो तुमने (ख़ुद ही) मेरा कहना मान लिया। सो तुम मुझ पर मलामत न करो और अपने को मलामत करो। न मैं तुम्हारा मददगार हूं न तुम मेरे। मैं तुम्हारे इस फ़ेल (काम) से ख़ुद बेज़ार हूं कि तुमने इससे पहले (दुनिया में) मुझे ख़ुदा का शरीक क़रार दिया। यक़ीनन ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।'

शैतान के कहने का मतलब यह है कि मैंने तुमको बहकाया। सच्चे रास्ते से हटाने की कोशिश की। यह तो मेरा काम था। तुमने मेरी बात क्यों मानी? तुम ख़ुद मुज्रिम हो? पैग़म्बरों की दावत छोड़कर जो मुअ्जिज़ा, हुज्जत और दलील के ज़रिए होती थी। मेरे झूठे और बातिल बुलावे पर तुमने क्यों कान धरा। कोई ज़बरदस्ती हाथ पकड़ के तो मैंने तुमसे कुफ़्र व शिर्क के काम कराये नहीं। मुझे बुरा कहने से क्या बनेगा। ख़ुद अपने नफ़्सों को

मलामत करो। हम आपस में एक दूसरे की मदद नहीं कर सकते। अब तो अज़ाब चखना ही है। दुनिया में जो तुमने मुझे ख़ुदा का शरीक बनाया मैं उससे बेज़ारी ज़ाहिर करता हूं।

शैतान के कहने पर चलने वाले की हसरत व अफ़सोस का जो उस वक़्त हाल होगा, ज़ाहिर है। *'अ आज़नल्लाहु मिन तस्वीलिही व शर्रिहि'*

जन्नत में सबसे पहले उम्मते मुहम्मदिया दाख़िल होगी और सबसे ज़्यादा होगी

मुस्लिम शरीफ़ में है कि आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने फ़रमाया कि हम दुनिया में आख़िर में आये और क़ियामत के दिन दूसरी मख़्लूक़ से पहले हमारे फ़ैसले होंगे और यह भी फ़रमाया कि हम (यहां) आख़िर में आये (और) क़ियामत के दिन पहले होंगे और सबसे पहले जन्नत में हम दाख़िल होंगे। —मिश्कात शरीफ़, बाबुल जुमुअः

एक रिवायत में है कि आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने फ़रमाया कि जन्नतियों की 120 सफ़ें होंगी (यानी क़ियामत के दिन मैदान में) जिनमें 80 इस उम्मत की और 40 सब उम्मतों की मिलाकर होंगी। —मिश्कात शरीफ़

मालदार हिसाब की वजह से जन्नत में जाने से अटके रहेंगे

हज़रत अबू हुरैरः ؓ से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने फ़रमाया कि तंगदस्त लोग जन्नत में मालदारों से पांच सौ वर्ष पहले दाख़िल होंगे।[1]। और यह भी इर्शाद फ़रमाया कि मैंने जन्नत के दरवाज़े पर खड़े होकर देखा तो उसमें जो दाख़िल हो चुके थे ज़्यादा तर मिस्कीन लोग थे और माल वाले (हिसाब देने के लिए) अटके हुए थे। मगर दोज़ख़ियों को दोज़ख़ में पहुंचाने का हुक्म हो चुका था और मैंने दोज़ख़ के दरवाज़े पर खड़े होकर देखा, तो उसमें अकसर औरतें थीं। —बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़

इस मुबारक हदीस में आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने क़ियामत के दिन

1. तिर्मिज़ी शरीफ़

का एक मंज़र फ़रमाया है जो आपको दिखा दिया गया था। इस हदीस पाक से जहां यह भी मालूम हुआ कि मालदारों को जन्नत में जाने में देर लगेगी। वहां यह भी मालूम हुआ कि तंगदस्ती और तंगी वाले पांच सौ वर्ष मालदारों से पहले जन्नत में जाएंगे। उस दिन तंगी की क़ीमत मालूम होगी। मगर यह भी नहीं भूलना चाहिए कि तंगदस्ती ख़ुद से जन्नत में ले जाने वाली चीज़ नहीं है। इसके साथ नेक अ़मल भी होने चाहिएं। बदअ़मल तंगदस्त यह न समझें कि हम ज़रूर ही जन्नती हैं और हमारी बड़ी बड़ाई है। बड़ाई आख़िरत में नेक आमाल से होगी। हां, जिसके नेक अ़मल जन्नत के लायक़ होंगे, वह तंगदस्ती की वजह से मालदार से पहले जन्नत में चला जाएगा बहुत से लोग तंगदस्त भी हैं और बदअ़मल भी, नमाज़-रोज़े से ग़ाफ़िल हैं। गुनाहों में लिथड़े हुए हैं। ऐसे लोग सख़्त नुक़्सान में हैं और दोनों जगह की बदनसीबी के लिए दुनिया गुज़ार रहे हैं। आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि बदनसीबों का बद-नसीब वह है जो तंगदस्त भी रहा और आख़िरत का अ़ज़ाब भी भुगता। —तर्ग़ीब

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्रू رضي الله عنه से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि (लोग) क़ियामत के दिन जमा होंगे। इसके बाद पुकार होगी कि इस उम्मत के तंगदस्त कहां हैं? फिर उनसे सवाल होगा कि तुम ने क्या किया? (हिसाब दो) वे अ़र्ज़ करेंगे कि आप ने हमको तंगदस्ती देकर जांच में डाला। सो हमने सब्र किया (और आप की ख़ुशी पर ख़ुश रहे) और आपने माल और हुकूमत हमारे सिवा दूसरों को दे दिया। अल्लाह जल्ल ल शानुहू फ़रमाएंगे कि तुमने सच कहा। इसके बाद (और लोगों से पहले) जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे। हिसाब की सख़्ती मालदारों और हुकूमत वालों पर रहेगी। सहाबा رضي الله عنهم ने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल! मोमिन उस दिन कहां होंगे? नबी करीम ﷺ का इर्शाद हुआ कि उनके लिए नूर की कुर्सियां रख दी जाएंगी और उन पर बादलों का साया कर दिया जाएगा। (पहाड़ों से भी बड़ा) दिन ईमान वालों के लिए दिन के एक छोटे-से हिस्से से भी कम होगा। —तर्ग़ीब अ़नितबरानी इब्ने हब्बान

दोज़ख़ में अकसर औरतें और मालदार जाएंगे

हज़रत इब्ने अ़ब्बास ؓ से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि मैंने जन्नत में झांका तो देखा, उसमें अकसर तंगदस्त हैं और मैंने दोज़ख़ में झांका तो देखा कि उसमें अकसर माल वाले और औरतें हैं। —तर्ग़ीब

एक रिवायत में है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि मैं जन्नत में दाख़िल हुआ तो ऊंचे मर्तबे वाले जन्नती, तंगदस्त मुहाजिर और मोमिनों के नाबालिग़ बच्चे थे और जन्नत में सबसे कम मालदारों और औरतों की तादाद थी। उस वक़्त मुझे बताया गया कि मालदारों का हिसाब दरवाज़े पर हो रहा है और उनको पाक व साफ़ किया जा रहा है और औरतों को (दुनिया में) सोने और रेशम ने (ख़ुदा और ख़ुदा के दीन से) ग़ाफ़िल रखा। इसलिए यहां उनकी तादाद कम है। —तर्ग़ीब

माल बड़े वबाल की चीज़ है। उसको ध्यान करके हलाल के ज़रिए कमाया और फिर उसमें से अल्लाह के और अल्लाह के बंदों के हुक़ूक़ अदा करना और गुनाहों में न ख़र्च करना बड़ा कठिन काम है। इसमें अकसर लोग फ़ेल हो जाते हैं और माल होने पर अपनी ख़्वाहिश या औलाद व बीवी की फ़रमाइश पर या दुनिया की रस्म व रिवाज से दबकर गुनाह के कामों में रुपये को लगाते हैं। ज़कात का सही हिसाब करके अकसर मालदार नहीं देते, हज़ारों आदमी, जिन पर हज फ़र्ज़ हो चुका था, बग़ैर हज किये मर जाते हैं। और मालदारों के लिए गुनाहों के मौक़े बहुत हैं जिनमें माल लुटाते और लगाते हैं। दोज़ख़ में मालदार ज़्यादा हों और हिसाब की वजह से अटके रहें, इसमें कोई तअ़ज्जुब की जगह नहीं है।

दोज़ख़ में औरतों की तादाद भी बहुत भारी होगी। उनके दोज़ख़ में जाने की वजह अभी-अभी हदीस शरीफ़ से यह मालूम हुई कि दुनिया में रेशम और सोने के फेर में रहकर अल्लाह तआ़ला से ग़ाफ़िल रही। औरतों को कपड़े और ज़ेवर का लालच जो होता है, इसको कौन नहीं जानता? कपड़े और ज़ेवर के लिए शौहर को हराम कमाने, रिश्वत लेने, क़र्ज़-उधार करने पर

मजबूर करती हैं और दिखावे कि लिए पहनती हैं। एक महिफ़ल में एक जोड़ा पहनकर गयी थीं, तो अब दूसरी महिफ़ल में उसी जोड़े को पहनकर जाने में शर्म समझती हैं। ज़ेवर पहनकर कहीं गर्मी के बहाने गला खोलकर दिखाती हैं, कहीं ज़ेवर की डिज़ाइनों पर बहस चलाकर अपने ज़ेवर के अनोखा होने की बड़ाई हांकती हैं। दिखावा बहुत बड़ा गुनाह है। इर्शाद फ़रमाया नबी अकरम ﷺ ने, जो भी औरत दिखावे कि लिए सोने के ज़ेवर पहनेगी, अ़ज़ाब पाएगी। —मिश्कात शरीफ़

जो ज़ेवर हराम कमाई का है, उसका अ़ज़ाब की वजह होना ज़ाहिर है लेकिन जो हलाल कमाई से बनता है, उसकी ज़कात न औरतें अदा करती हैं, न उनके शौहर अदा करते हैं। जिस माल की ज़कात न दी जाएगी, वह आख़िरत में वबाल और अ़ज़ाब बनेगा।

बुख़ारी व मुस्लिम की एक रिवायत में है कि औरतों ने सवाल किया कि या रसूलुल्लाह! औरतें दोज़ख़ में ज़्यादा जाने वाली क्यों होंगीं? इर्शाद फ़रमाया, (इसिलए कि) तुम लानत (फिटकार) भेजने का मश्ग़ला (काम) बहुत रखती हो और शौहर की नाशुक्री करती हो। —मिश्कात शरीफ़

जन्नतियों को दोज़ख़ और दोज़ख़ियों को जन्नत दिखायी जाएगी

हज़रत अबू हुरैरः ؓ ने रिवायत है कि आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि जन्नत में जो कोई दाख़िल होगा उसका दोज़ख़ में मुक़र्रर किया हुआ वह ठिकाना ज़रूर उसको दिखला दिया जाएगा, जो बुरे अ़मल करने पर उसको मिलता ताकि ज़्यादा दिया जाएगा। जो बुरे अ़मल करने पर उस को मिलता, ताकि ज़्यादा शुक्र अदा करे और जो कोई दोज़ख़ में दाख़िल होगा, उसको जन्नत में मुक़र्रर किया हुआ वह ठिकाना ज़रूर उसको दिखला दिया जाएगा जो अच्छे अ़मल करने पर मिलता ताकि उसको ज़्यादा हसरत हो।

जन्नत और दोज़ख़ दोनों भर दी जाएंगी

सूरः क़ाफ़ में फ़रमाया :

يَوْمَ نَقُوْلُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأْتِ وَتَقُوْلُ هَلْ مِنْ مَّزِيْدٍ○

यौ म नक़ूलु लिजहन्न न म हलिम्तलअ्ति व तक़ूलु हल मिम मज़ीद।

'जिस दिन कि हम दोज़ख़ से कहेंगे कि क्या तू भर गयी? वह कहेगी क्या कुछ और भी है?'

हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने फ़रमाया कि दोज़ख़ में दोज़ख़ी डाले जाते रहेंगे और वह कहती रहेगी कि क्या और भी है? यहां तक कि अल्लाह उसमें अपना क़दम रख देंगे जिसकी वजह से[1] सिमट जाएगी और कहेगी आपकी इज़्ज़त की क़सम, बस! बस!! और जन्नत में भी फ़ाज़िल जगह बाक़ी ही रह जाएगी। यहां तक कि अल्लाह तआ़ला नयी मख़्लूक़ पैदा फ़रमाकर उस फ़ाज़िल जगह में बसा देंगे।

—बुख़ारी व मुस्लिम

दूसरी हदीस में है कि अल्लाह जल्ल ल शानुहू ने जन्नत व दोज़ख़ दोनों को भर देने का ज़िम्मा लिया है।[2] दोज़ख़ ख़ाली रह जाएगी तो नयी मख़्लूक़ पैदा फ़रमाकर उसे भरेंगे नहीं। क्योंकि वे बेक़सूर[3] होंगे और जन्नत में जो जगह बच जाएगी, उसको नयी मख़्लूक़ पैदा फ़रमाकर भर देंगे। हमारे एक बुज़ुर्ग से किसी ने कहा कि वही मज़े में रहे जो पैदा होते ही जन्नत में होंगे। उन्होंने फ़रमाया कि उनको क्या ख़ाक मज़ा आएगा। न दुनिया में आये, न दुख-दर्द सहने की मुसीबत पड़ी। आराम का मज़ा उसी को ख़ूब महसूस होता है जिसे दुख के बाद नसीब हुआ हो।

दोज़ख़ में जाने वालों का अन्दाज़ा

हज़रत रसूले करीम ﷺ ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला हज़रत आदम ﷺ को ख़िताब करके फ़रमाएंगे, 'ऐ आदम!' वह अर्ज़ करेंगे :

1. अल्लाह तआ़ला हाथ या क़दम तमाम अंग और देहत्त्व से पाक हैं। क़ुरआन व हदीस में जहां ऐसा ज़िक्र आए, उसके मुताबिक़ यही अक़ीदा रखें कि इसका जो मतलब अल्लाह के नज़दीक है, वही हमारे नज़दीक है।
2. मिश्कात शरीफ़
3. मिश्कात

لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ وَالْخَيْرُ كُلُّهُ فِي يَدَيْكَ

लब्बैक व सअ्देक वल ख़ैरु कुल्लुहू फी यदैक।

'मैं हाज़िर हूं और हुक्म का ताबेअ् हूं और सारी बेहतरी आप ही के हाथ में है।'

अल्लाह जल्ल ल शानुहू फ़रमाएंगे, (अपनी औलाद में से) दोज़ख़ी निकाल दो। वह अ़र्ज़ करेंगे, दोज़ख़ी कितने हैं? इर्शाद होगा कि हर हज़ार में 999 है। (यह सुनकर आदम ﷺ की औलाद को सख़्त परेशानी होगी और रंज व ग़म की वजह से) उस वक़्त बच्चे बूढ़े हो जाएंगे और हामिला औरतों का हमल गिर जाएगा और लोग होश खो बैठेंगे। जबकि हक़ीक़त में बेहोश न होंगे, लेकिन अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त होगा (जिसकी वजह से होश खो बैठेंगे) यह सुनकर हज़रात सहाबा किराम ﷺ ने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल! वह एक जन्नती हममें से कौन होगा? आप ﷺ ने फ़रमाया कि (घबराओ नहीं) खुश हो जाओ, क्योंकि यह तादाद इस तरह है कि एक तुम में से है और हज़ार याजूज माजूज हैं। —मिश्कात

मतलब यह है कि याजूज-माजूज की तादाद बहुत ही ज़्यादा है कि अगर तुम में और उनमें मुक़ाबला हो तो तुममें से एक शख़्स के मुक़ाबले में याजूज-माजूज एक हज़ार आएंगे और चूंकि वे भी आदम ﷺ की नस्ल से हैं, उनको मिलाकर हर हज़ार में 999 दोज़ख़ में जाएंगे। वे ज़मीन में बिगाड़ पैदा करने वाले और खुदा का इन्कार करने वाले हैं।

क़ियामत के दिन की लंबाई

क़ियामत का दिन बहुत लंबा होगा। हदीस शरीफ़ में इसकी लंबाई 50,000 वर्ष बतायी गयी है।[1] यानी पहली बार सूर फूंकने के वक़्त से लेकर बहिश्तियों के बहिश्त में जाने और दोज़ख़ियों के दोज़ख़ में क़रार पकड़ने तक पचास हज़ार वर्ष की मुद्दत होगी। इतना बड़ा दिन मुश्रिकों, काफ़िरों और

1. मिश्कात शरीफ़ 'किताबुज़्ज़कात' पेज 156-157

मुनाफ़िक़ों के लिए बड़ा सख़्त होगा। ईमान वाले बंदों के लिए अल्लाह तआला आसानी फ़रमा देंगे। चुनांचे हदीस शरीफ़ में है कि आंहज़रत ﷺ ने उस दिन के बारे में सवाल किया गया जिसकी लंबाई पचास हज़ार वर्ष की होगी कि उस दिन की लंबाई का क्या ठिकाना है (भला वह कैसे कटेगा?)

आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि क़सम उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, बिला शुब्हा वह दिन मोमिन पर इतना आसान कर दिया जाएगा कि फ़र्ज़ नमाज़ जो दुनिया में पढ़ा करता था, उससे भी हल्का होगा।[1] खट से गुज़र भी जाएगा और हौल व मुसीबत होने की वजह से परेशानी भी न होगी।

मौत की मौत

दोज़ख़ में हमेशा के लिए काफ़िर और मुश्रिक मुनाफ़िक़ ही रहेंगे और उनको उसमें कभी मौत न आयेगी, न अज़ाब हल्का किया जाएगा। जैसा कि सूरः फ़ातिर में इर्शाद है :

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوْتُوْا وَلَا يُخَفَّفُ
عَنْهُمْ مِّنْ عَذَابِهَا، كَذٰلِكَ نَجْزِىْ كُلَّ كَفُوْرٍ○

वल्लज़ी न क फ़रू लहुम नारु जहन्न म ला युक़्ज़ा
अलैहिम फ़ यमूतू व ला युख़फ़्फ़ु अन्हुम मिन अज़ाबिहा।
कज़ालि क नज्ज़ी कुल ल कफ़ूर।

'और जो लोग काफ़िर हैं, उनके लिए दोज़ख़ की आग है न तो उनको क़ज़ा आयेगी कि मर ही जाएं और न दोज़ख़ का अज़ाब ही उनसे हल्का किया जाएगा। हम हर काफ़िर को ऐसी ही सज़ा देते हैं।' —मिश्कात शरीफ़

गुनाहगार मुसलमान जो दोज़ख़ में जाएंगे। सज़ा भुगतने के बाद जन्नत में दाख़िल कर दिए जाएंगे। जो जन्नत में दाख़िल होगा, उसमें हमेशा रहेगा। जन्नत में किसी को मौत न आएगी। न उससे निकाले जाएंगे, न निकलना चाहेंगे।

1. मिश्कात शरीफ़

خَالِدِيْنَ فِيْهَا لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا ۝

ख़ालिदी न फ़ीहा ला यब्यू न अन्हा हि व ला।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने फ़रमाया कि जब (सारे) जन्नती जन्नत में और (सारे) दोज़ख़ी दोज़ख़ में पहुंच चुकेंगे तो मौत हाज़िर की जाएगी, यहां तक कि जन्नत और दोज़ख़ के दर्मियान लाने के बाद ज़बह कर दी जाएगी। फिर एक पुकारने वाला ज़ोर से पुकारेगा कि ऐ जन्नतियो! (अब) मौत नहीं और ऐ दोज़ख़ियो! (अब) मौत नहीं! इस एलान की वजह से जन्नतियों की ख़ुशी बढ़ जाएगी और दोज़ख़ियों के रंज पर रंज की बढ़ोत्तरी हो जाएगी। —मिश्कात शरीफ़ (बुख़ारी व मुस्लिम)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने (सूरः मरयम की आयत) **'व अन्ज़िरहुम यौमल हसरति'** पढ़ी (और इसके बाद हसरत की तफ़सीर में) फ़रमाया कि मौत (जिस्म व शक्ल देकर) लायी जाएगी। गोया कि वह शक्ल व सूरत में सफ़ेद मेंढा होगी जिसमें काले धब्बे भी होंगे और वह जन्नत और दोज़ख़ के दर्मियान वाली दीवार पर खड़ी की जाएगी। फिर जन्नत वालों को आवाज़ दी जाएगी कि ऐ दोज़ख़ वालो! यह सुनकर वे (भी) नज़र उठाकर देखेंगे। इसके बाद उन (तमाम जन्नतियों और दोज़ख़ियों) से सवाल होगा कि क्या तुम इसको पहचानते हो? वे सब जवाब देंगे कि हां (पहचानते हैं) यह मौत है। इस के बाद (इन सबके सामने यह एलान करने के लिए कि अब मौत न आएगी) मौत को ज़बह कर दिया जाएगा (उस वक़्त जन्नत वालों की ख़ुशी और दोज़ख़ वालों का रंज बहुत ज़्यादा होगा)। पस अगर जन्नत वालों के लिए हमेशा ज़िन्दा और बाक़ी रहने का फ़ैसला अल्लाह की तरफ़ से न हो चुका होता तो उस वक़्त की ख़ुशी में मर जाते और अगर दोज़ख़ वालों के लिए हमेशा के लिए मौत न आने और दोज़ख़ में हमेशा पड़े ही रहने का फ़ैसला अल्लाह की तरफ़ से न हो चुका होता तो उस वक़्त के रंज से मर जाते। —तिर्मिज़ी शरीफ़

आराफ़ वाले

जन्नत वालों और दोज़ख़ वालों के दर्मियान एक आड़ यानी एक दीवार होगी। इस दीवार का या इस दीवार के ऊपरी हिस्से का नाम आराफ़ है। आराफ़ पर थोड़ी-सी मुद्दत के लिए उन मुसलमानों को रखा जाएगा, जिनकी नेकियां और बुराईयां वज़न में बराबर उतरेंगी। आराफ़ के ऊपर से ये लोग जन्नती और दोज़ख़ी दोनों को देखते और पहचानते होंगे और दोनों फ़रीक़ से बातचीत करेंगे जिसकी तफ़सील सूरः आराफ़ में आयी है। चुनांचे अल्लाह का इर्शाद है :

وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ وَعَلَى الْأَعْرَافِ رِجَالٌ يَعْرِفُونَ كُلًّا بِسِيمَاهُمْ
وَنَادَوْا أَصْحٰبَ الْجَنَّةِ أَنْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ لَمْ يَدْخُلُوهَا وَهُمْ يَطْمَعُونَ

व बै न हुमा हिजाबुंव्व अ़लल आराफ़ि रिजालैं.यअ़्रिफ़ू न कुल्लम बिसीमाहुम व नादौ अस्हाबल जन्नति अन् सलामुन अ़लैकुम लम् यद् ख़ुलूहा व हुम यत्मऊन।

'और इन दोनों (फ़रीक़) जन्नतियों और दोज़ख़ियों के दर्मियान एक आड़ (यानी दीवार) होगी और उस दीवार या उसके ऊपरी हिस्से का नाम आराफ़ है। उस पर से जन्नती और दोज़ख़ी सब नज़र आएंगे। आराफ़ के ऊपर बहुत से आदमी होंगे वे (जन्नतियों और दोज़ख़ियों में से) हर एक को उनकी निशानी से पहचानते होंगे और ये (आराफ़ वाले) जन्नत वालों को पुकार कर कहेंगे कि **'अस्सलामु अलैकुम'**। अभी ये आराफ़ वाले जन्नत में दाख़िल न हुए होंगे और उसके उम्मीदवार होंगे।[1]'

आगे फ़रमाया :

وَإِذَا صُرِفَتْ أَبْصَارُهُمْ تِلْقَاءَ أَصْحٰبِ النَّارِ ۝ قَالُوا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا
مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِينَ ۝

1. बाद में उनकी उम्मीद पूरी कर दी जाएगी

व इज़ा सुरिफ़त अब्सारुहुम तिल्का अ अस्हाबिन्नार। क़ालू रब्बना ला तज्अ़ल्ना मअ़ल क़ौमिज़्ज़ालिमीन।

'और जब इन (आराफ़) वालों की निगाहें दोज़ख़ वालों की तरफ़ जा पड़ेंगी, तो उस वक़्त (हौल खाकर) कहेंगे कि ऐ हमारे रब! हम को इन ज़ालिम लोगों के साथ अ़ज़ाब में शामिल न कीजिए।'

फिर आराफ़ वालों का दोज़ख़ वालों को मलामत करने का ज़िक्र फ़रमाया :

وَنَادٰى اَصْحٰبُ الْاَعْرَافِ رِجَالًا يَّعْرِفُوْنَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ قَالُوْا مَاۤ اَغْنٰى عَنْكُمْ جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ اَهٰۤؤُلَاۤءِ الَّذِيْنَ اَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللّٰهُ بِرَحْمَةٍ اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَاۤ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ ۝

व नादा अस्हाबुल आराफ़ि रिजालैंयअ़्रिफ़ूनहुम बिसीमाहुम क़ालू मा अग़्ना अन्कुम जमृउकुम वमा कुन्तुम तस्तक्बिरून। अ हाउला-इल्लज़ी न अक़सम्तुम ला यनालुहुमुल्लाहु बिरहमः उद्ख़ुलुल जन्न त ला ख़ौफ़ुन अलैकुम व ला अन्तुम तहज़नून।

'और आराफ़ वाले (दोज़ख़ियों में से) बहुत-से आदमियों को जिनको कि वे उनकी निशानियों से पुकारेंगे और कहेंगे कि तुम्हारी जमाअ़त और तुम्हारा अपने को बड़ा समझना तुम्हारे कुछ काम न आया। (अब देखो) क्या ये (जो जन्नत में मज़े उड़ा रहे हैं)। वही (मुसलमान) हैं जिनके बारे में तुम क़समें खा कर कहा करते थे कि इन पर अल्लाह (अपनी) रहमत न करेगा। (हालांकि इन पर रहमत यह हुई कि) इनसे कह दिया गया कि जाओ जन्नत में, तुम पर न कुछ डर है, न तुम रंजीदा होगे।' —बयानुल क़ुरआन

आराफ़ वाले आख़िर में जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे।—बयानुल क़ुरआन

जन्नत और दौज़ख़ दो ही जगहें आमाल के बदले के लिए अल्लाह तआ़ला ने मुक़र्रर फ़रमाए हैं। जन्नत में जाना सच्ची कामयाबी है और

दोज़ख़ में जाना असली घाटा और सच्चा नुक़सान है। जिससे बड़ा कोई नुक़सान नहीं। इस दुनिया में लोग कामयाबी और बामुरादी की कोशिश करते हैं और तरह-तरह की मुसीबतों को अलग-अलग इरादों में कामयाब होने के लिए ख़ुशी-ख़ुशी बरदाश्त करते हैं। अल्लाह तआला ने अपने रसूलों और किताबों के ज़रिए हश्र व नश्र और हिसाब व क़िसास, मीज़ान, पुलसिरात, जन्नत-दोज़ख़ के हालात से और सच्चे नफ़ा-नुक़सान और वाक़ई कामयाबी से ख़बरदार फ़रमा दिया है और नेक आमाल के अच्छे बदले से कभी तफ़सील से, कभी बेतफ़सील बताकर भले कामों के करने पर उभारा और उसकी ताकीद फ़रमा दी है। दुनिया में जो आता है। ज़रूर मेहनत व कोशिश और अमल करता है, भले-बुरे सभी दौड़-धूप करते और जान व माल और वक़्त ख़र्च करते हैं। उसमें ज़्यादा बदक़िस्मत कोई भी नहीं है, जिसने ज़िंदगी की बेहतरीन पूंजी और जान व माल के सरमाए को दोज़ख़ के कामों में ख़र्च करके बेइंतिहा घाटा ख़रीदा और अपनी जान को आख़िरत के अज़ाब में डाला। मरना तो सब ही को है। मगर बेहतर मरने वाले वे हैं जो जन्नत के लिए जीते और मरते हैं। यही बन्दे कामयाब और बामुराद हैं।

सूरः आले इमरान में फ़रमाया :

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ۗ وَإِنَّمَا تُوَفَّوْنَ أُجُورَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۖ فَمَنْ
زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ۗ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ إِلَّا مَتَاعُ
الْغُرُورِ ○

कुल्लु नफ़्सिन ज़ाइक़तुल मौत। व इन्नमा तुवफ़्फ़ौ न उजू र कुम यौमल क़ियामति फ़ मन ज़ुह्ज़ि ह अ़निन्नार। व उद्ख़िलल जन्न न त फ़ क़द फ़ा ज़ व मल हयातुद्दुन्या इल्ला मताउल ग़ुरूर।

'हर जान को मौत का मज़ा चखना है और तुमको पूरे बदले क़ियामत ही के दिन मिलेंगे। सो जो आदमी दोज़ख़ से बचा लिया गया और जन्नत में दाख़िल किया गया, पस वह कामयाब हुआ और दुनिया की ज़िंदगी धोखे

के सिवा कुछ भी नहीं है।'

अल्लाह तआला ने जब हज़रत आदम ﷺ व हज़रत हौवा को ज़मीन पर भेजा था तो फ़रमा दिया था कि जो मेरी हिदायत की पैरवी करेगा, सो वह गुमराह न होगा, न बदक़िस्मत होगा और यह फ़रमा दिया था कि जो मेरी हिदायत की पैरवी करेगा तो ऐसों पर न कुछ डर होगा, न ऐसे लोग दुखी होंगे और जो कुफ़्र करेंगे और झुठलाएंगे हमारे हुक्मों को, ये दोज़ख़ वाले होंगे, उसमें हमेशा रहेंगे। सूरः ताहा और सूरः बक़रः में यह एलान मौजूद है। जिसने दुनिया में इस एलान पर कान धरा और अल्लाह की हिदायत को माना। बेशुब्हा न यहां राह से भटका हुआ है, न आख़िरत में नामुराद और बदक़िस्मत होगा और जिसने अल्लाह की हिदायत को पीठ पीछे डाला, उसने हुक्मों को झुठलाया; दोज़ख़ में जा कर अपने किरदार (चरित्र) का बदला पाएगा।

اَدْخَلَنَا اللّٰهُ الْجَنَّةَ دَارَ النَّعِيْمِ وَاَعَاذَنَا مِنْ عَذَابِ الْجَحِيْمِ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ، سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ○

अद ख़ ल नल्लाहुल जन्न न त दारन्न नईम व अआ ज़ना मिन अज़ाबिल जहीम। इन्नहू हुवत्तव्वाबुर्रहीम। सुब्हा न रब्बि क रब्बिल इज़्ज़ति अम्मा यसिफ़ून व सलामुन अलल मुर्सलीन। वलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन।

ख़ुदा की जन्नत

मौलाना मुहम्मद आशिक इलाही बुलन्दशहरी (रह०)

www.idaraimpex.com

खुदा की जन्नत

Khuda ki Jannat

मौलाना मुहम्मद आशिक़ इलाही बुलन्दशहरी (रह०)

प्रकाशन : 2014

ISBN: 81-7101-481-X

TP-308-14

Published by Mohammad Yunus for

IDARA IMPEX

D-80, Abul Fazal Enclave-I, Jamia Nagar
New Delhi-110 025 (India)
Tel.: +91-11-2695 6832 & 085888 33786
Fax: +91-11-6617 3545 Email: **info@idara.in**
Online Store: **www.idarastore.com**

Retail Shop: **IDARA IMPEX**
Shop 6, Nizamia Complex, Gali Gadrian, Hazrat Nizamuddin
New Delhi-110013 (India) Tel.: 085888 44786

विषय-सूची

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ

नह्मदुहू व नुसल्ली अ़ला रसूलिहिल करीम।

जन्नत, मरने के बाद की तमाम मंज़िलों में से आख़िरी मंज़िल है। जो इसमें दाख़िल हो जाएगा, फिर उसी में रहेगा और हमेशा जन्नत की नित (रोज़ाना) नयी नेमतों से मालामाल होता रहेगा। आप ने बर्ज़ख़ के हालात भी पढ़े और जहन्नम के भी और क़ियामत के भयानक मंज़र भी आप के मुताले (अध्ययन) में आए। अब अगले सफ्हों में जन्नत की सैर कीजिए जो मुत्तक़ियों और मोमिनों के लिए तैयार की गयी है।

सच यह है कि लेखक ने खुदा के इंकार के इस फ़ित्ने भरे दौर में हज़ारों भटके हुए लोगों को हिदायत व सच्चाई का सबक़ दिया है। अब चूंकि हिंदी का ज़ोर बराबर बढ़ता जा रहा है, इसलिए हिन्दी जानने वालों तक भी यह सीधी और सच्ची बात पहुंचे। इस ज़रूरत को पूरा करने के लिए इसे हिंदी में छापा जा रहा है।

अल्लाह तआ़ला इस कोशिश को कामयाब फ़रमाये और दुनिया व आख़िरत की सुर्ख़रूई का इस किताब को ज़रिया बनाये। (आमीन)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

जन्नत किस चीज़ से बनी है?

हज़रत अबू हुरैरः ﵁ का ब्यान है कि मैंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के (रसूल)! जन्नत किस चीज़ से बनी है? इसके जवाब में आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि एक ईंट सोने की है और एक ईंट चांदी की है और उसका मसाला (जिस से ईंटें जोड़ी गयी है) तेज़ ख़ुश्बूदार मुश्क है; उसकी कंकरियां मोती और याक़ूत हैं और उसकी मिट्टी ज़ाफ़रान है। जो शख़्स जन्नत में दाख़िल होगा; हमेशा नेमत में रहेगा और (कभी किसी चीज़ का) मोहताज न होगा; हमेशा (ज़िंदा) रहेगा; और मौत न आएगी; न जन्नतियों के कपड़े बोसीदा (फटे-पुराने) होंगे; न उनकी जवानी ख़त्म होगी।

—अहमद व तिर्मिज़ी शरीफ़

जन्नत का फैलाव

सूरः हदीद में इर्शाद है :

سَابِقُوْٓا اِلَى اللهِ مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّتٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَآءِ
وَالْاَرْضِ اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ

साबिक़ू इला मग़्फ़िरतिम मिर्रब्बिकुम व जन्नतिन अर्ज़ुहा क

अर्ज़िस्समाइ वल अर्ज़ि उइद्दत लिल्लज़ी न आमनू बिल्लाहि व रुसुलिह। *(अलहदीद)*

'अपने परवरदिगार की मग़्फ़िरत की तरफ़ और जन्नत की तरफ़ दौड़ो जिसका फैलाव आसमान व ज़मीन के फैलाव के बराबर है, उन लोगों के लिए तैयार की गयी है जो अल्लाह पर और उसके रसूलों पर ईमान रखते हैं'।

जन्नत बहुत बड़ी जगह है। इसके फैलाव का अन्दाज़ा छोटे दर्जे के जन्नती को जो कुछ मिलेगा; उसके फैलाव को सामने रखकर लगाया जा सकता है। कुछ रिवायतों में है कि छोटे दर्जे के जन्नती को जो जगह मिलेगी; पूरी दुनिया और दुनिया जैसी दस गुनी जगह के बराबर होगी। यह सब सामने के लोगों के समझाने के लिए है।

सूरः हदीद में है : आम इंसानों के ज़ेहन और समझ के क़रीब लाने के लिए जन्नत के फैलाव को आसमान व ज़मीन के फैलाव के बराबर बताया गया है। और सूरः आले इमरान में '**अर्ज़ुहस्समावातु वल अर्ज़**', फ़रमाया है जिसमें समा (आसमान की जमा इस्तेमाल की गयी है यानी जन्नत का फैलाव तमाम आसमानों और ज़मीन के बराबर है)।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﵁ से रिवायत है कि रसूल अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जन्नत में सौ दर्जे हैं। सारी दुनिया अगर उनमें से एक में जमा हो जाए तो सब समा जाएं।[1]

जन्नत के दरवाज़े

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﵁ से रिवायत है कि रसुलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम में से जो कोई भी मुसलमान वुज़ू करे और अच्छी तरह पानी पहुंचाये (और) फिर (वुज़ू के बाद) यह कहे :

---

1. इसकी और ज़्यादा तश्रीह और इसके बारे में सवाल व जवाब कम दर्जे के जन्नती के ज़िक्र में देखें।

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا
عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔

अश्हदु अल्लाइला ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी क लहू व अश्हदु अन्न न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुह।

तो उसके लिए जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिए जाएंगे, जिससे चाहे दाख़िल हो जाए। —मुस्लिम शरीफ़

इस हदीस से जन्नत के आठ दरवाज़े मालूम हुए।

हज़रत अबू हुरैरः ؓ से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसने अल्लाह के रास्ते में (यानी अल्लाह की ख़ुशी हासिल करने के लिए) एक क़िस्म की दो चीज़ें (जैसे दो दिरहम, दो दीनार, दो रूपये, दो कपड़े) ख़र्च किए तो जन्नत में उसको बुलाया जाएगा कि ऐ अल्लाह के बन्दे! यह बेहतर है। जो शख़्स नमाज़ वाला[1] था, उसे नमाज़ के दरवाज़े से बुलाया जाएगा और जो शख़्स जिहाद वाला था, उसे जिहाद के दरवाज़े से बुलाया जाएगा और जो शख़्स रोज़े वाला था, वह बाबुर्रैयान से बुलाया जायेगा। यह सुनकर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ ؓ ने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान हों, सब दरवाज़ों से किसी को पुकारा जाए, इसकी ज़रूरत तो है नहीं (क्योंकि असल मक़्सद यानी जन्नत में दाख़िला तो एक दरवाज़े से दाख़िल होने में हासिल हो जाता है, लेकिन फिर भी पूछता हूं कि) क्या कोई ऐसा भी होगा जिसे (इज़्ज़त देने के लिए) तमाम दरवाज़ों से बुलाया जाये।

आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि हां! (ऐसे भी लोग होंगे) और मैं उम्मदी करता हूं कि तुम उन्हीं में से होगे। —तिर्मिज़ी शरीफ़

1. यानी वह शख़्स जो फ़र्ज़ों को अदा करने के साथ-साथ नमाज़ (फ़र्ज़, नफ़्ल और सुन्नत) का ख़ास ध्यान और एहतमाम रखता था, उसे नमाज़ के दरवाज़े से बुलाया जाएगा, यह मतलब नहीं है कि सिर्फ़ नमाज़ पढ़ता था और बाक़ी फ़र्ज़ छोड़े हुए थे। इसी तरह 'जिहाद वाले' और 'सद्क़े वाले' और 'रोज़ों वाले' का मतलब समझ लो।

साहिबे फ़त्हुलबारी लिखते हैं कि इस हदीस में चार दरवाज़ों का इल्म हुआ।

1) **बाबुस्सलात** (नमाज़ का दरवाज़ा),
2) **बाबुस्सद्क़ा** (सद्क़ा का दरवाज़ा),
3) **बाबुल जिहाद** (जिहाद का दरवाज़ा),
4) **बाबुर्रैयान** (रोजा का दरवाजा),

इसके बाद लिखते हैं कि एक बाबुल (हज्ज) यक़ीनी तौर पर होगा और एक दरवाज़ा उन लोगों के लिए होगा जो ग़ुस्से को पी जाते हैं, जिसके बारे में मुस्नद अहमद में एक हदीस आयी है और एक दरवाज़ा (**बाबुल ऐमन**) तवक्कुल (अल्लाह पर पूरा भरोसा) करने वालों के लिए होगा, जो बग़ैर हिसाब और बग़ैर अज़ाब उस दरवाज़े से दाख़िल होंगे। और एक **बाबुज़्ज़िक्र** (ज़िक्र यानी अल्लाह की याद का दरवाज़ा) होगा जिसकी तरफ़ तिर्मिज़ी (की एक हदीस) में इशारा है और यह भी हो सकता है कि बाबुज़्ज़िक्र न हो, बल्कि **बाबुल इल्म** हो। (ख़ुदा ही बेहतर जानता है)

—फ़त्हुलबारी

फ़िर लिखते हैं कि (यह भी) हो सकता है कि हज़रत अबूबक्र ﷺ की बड़ाई में जिन-जिन ख़ूबियों का ज़िक्र है, ये जन्नत के असल (शुरू के बड़े) फाटकों के अलावा अंदर के दरवाज़े हों, क्योंकि नेक अमल आठ से बहुत ज़्यादा है। हर (नेक अमल) का अगर एक दरवाज़ा हो तो बहुत दरवाज़े होने चाहिएं। इसलिए ज़्यादा सही अन्दाज़ा यही होता है कि नेक अमलों के दरवाज़े अंदरूनी दरवाज़े हों।

एक बार बसरा के अमीर (गवर्नर) हज़रत उत्बा बिन ग़ज़्वान ﷺ ने ख़ुत्बा देते हुए इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुब्हा तुम ऐसी दुनिया की तरफ़ कूच करने वाले हो, जहां से और कहीं जाना न होगा इसलिए तुम यहां से बेहतरीन अमल लेकर रवाना होना। फिर फ़रमाया कि हमको यह बताया गया है कि जन्नत के किवाड़ों में से दो किवाड़ के दर्मियान चालीस साल के सफ़र की दूरी है और यह यक़ीनी बात है कि एक दिन ऐसा आयेगा कि

दाख़िल होने वालों की भीड़ की वजह से इतना बड़ा दरवाज़ा (भी) तंग पड़ जाएगा।

—मुस्लिम

बुख़ारी व मुस्लिम की एक हदीस में है कि आंहज़रत ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि क़सम उस ज़ात की, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, जन्नत के किवाड़ों में से दो किवाड़ों के दर्मियान इतनी दूरी है, जितना शहर मक्का और हिज्र के दर्मियान है।

—अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब

साहिबे मज्म्मउल बह्हार लिखते हैं कि हिज्र बहरैन की राजधानी है।

दोनों हदीसों से जन्नत के दरवाज़ों का फैलाव और चौड़ाई मालूम हुई। पहली हदीस में दोनों किवाड़ों के दर्मियान की दूरी चालीस साल की दूरी बतायी जाती है और दूसरी हदीस में मक्का और हिज्र की दूरी बतायी है। मौजूद लोगों की समझ को क़रीब लाने के लिए उन्हीं के मुहावरे और बोल-चाल में कभी इस तरह फ़रमाया और कभी उस तरह समझाया। इससे यह बात पक्की है कि दरवाज़ों का फैलाव बहुत ही ज़्यादा है। जैसा मकान है, वैसे ही दरवाज़े हैं।

हज़रत सह्ल बिन साद رضي الله عنه का ब्यान है कि रसूल अकरम ﷺ ने फ़रमाया कि ज़रूर ही ऐसा होगा कि मेरी उम्मत के सत्तर हज़ार या (फ़रमाया) सात लाख आदमी आपस में एक दूसरे को पकड़े हुये दाख़िल होंगे। उनकी (लाइन) का पहला शख़्स दाख़िल न होगा, जब तक कि उनका आख़िरी शख़्स न दाख़िल हो जाये (मतलब यह कि एक ही वक़्त में उनकी पूरी लाइन की लाइन दाख़िल होगी) फिर फ़रमाया कि उनके चेहरे इस तरह चमकते होंगे जैसे चौदहवीं का चांद होता है।

—बुख़ारी व मुस्लिम (तर्ग़ीब के हवाले से)

जन्नत के दाख़िल होने वाले लोगों की दो जमाअतें

सूरः वाक़िअः में तीन जमाअतों को ज़िक्र फ़रमाया है यानी यह बताया है कि क़ियामत के दिन तीन जमाअतों में लोग बंट जाएंगे।

1) अस्हाबुल यमीन या अस्हाबुल मैमनः (दाहिने हाथ वाले),

2) मुक़र्रबीन (ख़ुदा के ख़ास क़रीबी बन्दे यानी नबी और सच्चे वली, शहीद और तक़्वा वाले लोग), और

3) अस्हाबुश्शिमाल या अस्हाबुल मश्अमः (बायें हाथ वाले), जिनके बायें हाथ में आमाल नामे दिये जाएंगे।

पहले दो गिरोह तो जन्नती होंगे लेकिन उनके दर्जों में फ़र्क़ होगा। 'मुक़र्रबीन' ख़ास बड़े दर्जों वाले होंगे और 'अस्हाबुल यमीन' यानी आम मोमिन उनसे कम दर्जे में होंगे और तीसरा गिरोह यानी 'अस्हाबुश्शिमाल' दोज़ख़ियों का गिरोह होगा।

पहले अल्लाह तआ़ला ने 'मुक़र्रबीन' के बदले का ज़िक्र फ़रमाया है और यह बताया है कि उनमें का एक बड़ा गिरोह अपने लोगों में से होगा और एक छोटी-सी जमाअ़त पिछले लोगों में से होगी। ये 'अगले लोग' कौन हैं और 'पिछले लोगों' का मतलब क्या है? इसके बारे में साहिबे 'ब्यानुल क़ुरआन' लिखते हैं कि अगलों से मतलब पहले वाले लोग हैं यानी हज़रत आदम (ﷺ) से लेकर हुज़ूर अक़दस ﷺ तक और पिछलों से मुराद हुज़ूर अक़दस ﷺ के उम्मती (यानी आपके ज़माने से लेकर क़ियामत तक आने वाले मुसलमान) मुराद हैं। —दुर्र

फिर लिखते हैं :

शुरू के लोगों में भलाई में आने वालों की ज़्यादती और बाद के लोगों में आगे जाने वालों की कमी की वजह यह है कि ख़ास लोग हर ज़माने में कम होते हैं और शुरू के लोगों का ज़माना बेशक उम्मते मुहम्मदिया के ज़माने से बहुत लंबा है, पस जितने ख़ास लोग उस लम्बे ज़माने में हुए हैं, जिनमें लाख या दो लाख या कम व ज़्यादा नबी भी हैं। इसलिए होना भी यही चाहिए कि छोटी मुद्दत में उनसे कम ही होंगे।

मुफ़स्सिर (तफ़्सीर लिखने वाले) इब्ने कसीर ने अगलों और पिछलों के बारे में दूसरा क़ौल नक़ल फ़रमाया है।

अब क़रीबी लोगों का बदला मालूम कीजिए। ख़ुदा का इर्शाद है :

وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ۝ فِیْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَقَلِيْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ۝ عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ ۝ مُّتَّكِئِيْنَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِيْنَ ۝ يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۝ بِاَكْوَابٍ وَّاَبَارِيْقَ ۝ وَكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ۝ لَّا يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُوْنَ ۝ وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُوْنَ ۝ وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ۝ وَحُوْرٌ عِيْنٌ ۝ كَاَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ ۝ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا تَاْثِيْمًا ۝ اِلَّا قِيْلًا سَلٰمًا سَلٰمًا ۝

वस्साबिक़ूनस्साबिक़ून। उलाइकल मुक़र्रबून। फ़ी जन्ननातिन्नईम। सुल्लतुम मिनल अव्वलीन। व क़लीलुम मिनल आख़िरीन। अ़ला सुरुरिम मौज़ूनतिम्मुत्तकिई न अ़लैहा मु त क़ाबिलीन यतूफ़ु । अ़लैहिम विल्दानुम्मुख़ल्लदून। बिअक्वाबिंव्व अबा री क़ व कअ्सिम मिम् मईनिल्ला युसद्दऊ न अन्हा व ला युन्ज़िफ़ून। व फ़ाकिहतिम मिम्मा य त ख़ैयरून। व लह्मि तैरिम्मिम्मा यश्हतहून। व हूरुन ईन। क अम्सालिल लुअ्लुइल मकनून। जज़ाअम बिमा कानू यअ्मलून। ला यस्मऊ न फ़ीहा लग्वौं वला तअ्सीमा। इल्ला क़ीलन सलामन सलामा।

'और सब्क़त ले जाने वाले, वे तो सब्क़त ले जाने वाले हैं। वे (ख़ुदा से ख़ास) क़ुर्ब रखने वाले हैं। ये लोग आराम के बाग़ों में होंगे। उनका एक बड़ा गिरोह अगले लोगों में से होगा और छोटी-सी जमाअ़त उनमें पिछले लोगों में से होगी। वे लोग (सोने के तारों से) बने हुए तख़्तों पर तकिया लगाये आमने-सामने बैठे होंगे। उनके पास ऐसे लड़के जो हमेशा लड़के ही रहेंगे। ये चीज़ें लेकर आया जाया करेंगे। आबख़ोरे और आफ़्ताबे और ऐसी शराब का जाम जो बहती हुई शराब से भरा जाएगा। न इससे उनको सरदर्द होगा और न अक़्ल में फ़ुतूर आएगा और मेवे, जिनको वे पसन्द करेंगे और परिंदों का गोश्त जो उनको पसन्द हो और उनके लिए बड़ी आंखों वाली हूरें होंगी जैसे छिपाकर रखा हुआ मोती। यह उनके अ़मल के बदले में

मिलेगा। वहां न बक-बक सुनेंगे और न कोई और बेहूदा बात। बस सलाम ही सलाम की आवाज़ आयेगी।'

इसके बाद 'अस्हाबुल यमीन' का ज़िक्र फ़रमाते हुए इर्शाद है :

وَاَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۞ مَآ اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۞ فِيْ سِدْرٍ مَّخْضُوْدٍ ۞ وَّطَلْحٍ مَّنْضُوْدٍ ۞ وَّظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ ۞ وَّمَآءٍ مَّسْكُوْبٍ ۞ وَّفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ ۞ لَّا مَقْطُوْعَةٍ وَّلَا مَمْنُوْعَةٍ ۞ وَّفُرُشٍ مَّرْفُوْعَةٍ ۞ اِنَّآ اَنْشَاْنٰهُنَّ اِنْشَآءً ۞ فَجَعَلْنٰهُنَّ اَبْكَارًا ۞ عُرُبًا اَتْرَابًا ۞ لِّاَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ۞ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ۞ وَثُلَّةٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ۞

व अस्हाबुल यमीनि मा अस्हाबुल यमीन। फ़ी सिद्रिम्मख़्ज़ू दिंव्व तल्हिम मंज़ू दिंव्व ज़िल्लिम मम्दूदिंव्व माइम मस्कूबिंव्व फ़ाकिहतिन कसीरतिल ला मक़्तूअतिंव्व ला मम्नूअतिंव्व फ़ुरुशिम मर्फ़ूअः। इन्ना अन्शानाहुन्न न इन्शाअ्। फ़ जअ़लन हुन्न न अब्कारा। उरुबन अत्राबल्लि अस्हाबिल यमीन। सुल्लतुम मिनल अव्वलीन। व सुल्लतुम मिनल आख़िरीन।

'और जो दाहिने हाथ वाले हैं, वे दाहिने हाथ वाले कैसे हैं। वे उन बाग़ों में होंगे, जहां बेकांटे की बेरियां होंगी और तह-ब-तह केले होंगे और लम्बा-लम्बा साया होगा और चलता हुआ पानी होगा और ख़ूब ज़्यादा मेवे होंगे, जो ख़त्म न होंगे और न उनकी रोक होगी और ऊंचे-ऊंचे बिछौने होंगे। हमने इन औरतों को ख़ास तौर पर बनाया है कि वे कुंवारियां हैं। शौहरों के लिए प्यारी हैं और उनकी हमउम्र हैं। ये सब कुछ 'अस्हाबुल यमीन' के लिए है, उनका एक बड़ा गिरोह अगले लोगों में से होगा और एक बड़ा गिरोह पिछले लोगों में से होगा।'

इसके बाद क़ुरआन शरीफ़ में '**अस्हाबुश्शिमाल**' (यानी दोज़ख़ वालों) का और उनकी सज़ा का ज़िक्र है।

फ़ायदा : मुक़र्रिबीन (क़रीबी लोगों) के बदले में आराम के उन सामानों के ज़्यादा ज़िक्र किया गया है जो शहर वालों को ज़्यादा पसन्द हैं

और 'अस्हाबुल यमीन' के बदले में आराम के उन सामानों का ज़्यादा ज़िक्र है, जो देहात वालों को ज़्यादा पसन्द है। पस इशारा इस तरफ़ हो गया कि उनमें इतना फ़र्क़ हो, जैसा शहर वालों और गांव वालों में होता है। —ब्यानुल क़ुरआन (रूहुलमआनी से)

यानी यह मतलब नहीं कि मुक़र्रिबीन के बदले में जिन नेमतों का ज़िक्र है, उनसे 'अस्हाबुल यमीन' महरूम रहेंगे और 'अस्हाबुल यमीन' के बदले में जिन चीज़ों का ज़िक्र है, वे 'मुक़र्रिबीन के लिए न होंगी, क्योंकि नेमतों में तो सभी शरीक होंगे और विल्दान और गिल्मान[1] और शराब का जाम, फल, मेवे वग़ैरह सभी को मिलेंगे। हां, मगर 'मुक़र्रिबीन' और 'अस्हाबुल यमीन' के दर्जे और रुत्बे में अलग-अलग तरीक़ों में फ़र्क़ होगा। जिसकी तरफ़ ब्यान के अन्दाज़ में इशारा फ़रमाया गया है।

दूसरा फ़ायदा:— आम जन्नती मोमिनों को 'अस्हाबुल यमीन' फ़रमाया है, क्योंकि उनके दाहिने हाथ में आमालनामा दिया जाएगा और चाहे यह मतलब 'मुक़र्रिबीन' के लिए भी हो, लेकिन आम मोमिनों को ख़ास तौर से इस नाम से ज़िक्र करने में इशारा है कि उनमें 'अस्हाबुल यमीन' होने की ख़ूबी 'ख़ास नज़दीकी' की नहीं पायी जाती।

—ब्यानुल क़ुरआन

जन्नत में इज़्ज़त के साथ दाख़िला और फ़रिश्तों की तरफ़ से सलाम और मुबारकबाद, साथ ही अमन व सलामती के साथ हमेशा-हमेशा के लिए ठहरने का सलाम।

सूरः हिज्र में फ़रमाया :

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّٰتٍ وَعُيُونٍ ۝ ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ آمِنِينَ ۝

इन्नल मुत्तक़ी न फ़ी जन्नातिंव्व उयून। उद्ख़ुलूहा बिसलामिन आमिनीन।

1. जन्नती लड़के और सेवा करने वाले

'बिला शुब्हा ख़ुदा से डरने वाले बाग़ों और चश्मों में होंगे। उनसे कहा जाएगा कि तुम उनमें सलामती और अम्न व अमान के साथ दाख़िल हो जाओ।'

सूरः ज़ुमर में इर्शाद है :

حَتّٰى اِذَا جَآءُوْهَا وَفُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ
طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خٰلِدِيْنَ

हत्ता इज़ा जाऊहा व फ़ुतिहत अब्वाबुहा व क़ाल लहुम ख़ ज़ न तुहा सलामुन अ़लैकुम तिब्तुम फ़द्ख़ुलूहा ख़ालिदीन।

'यहां तक कि जब वह जन्नत में क़ियाम करने के लिए पूरी इ़ज़्ज़त के साथ दाख़िल किया जाएगा। उनके स्वागत के लिए पहले से दरवाज़े खुले होंगे और जन्नत के हिफ़ाज़त करने वाले फ़रिश्ते सलाम करेंगे और आराम की ज़िंदगी की मुबारकबादी देंगे और यह सुना देंगे कि आप लोग ऐसी जगह ठहर रहे हैं जहां अमन व आमान व सलामती ही सलामती है। यहां हमेशा और चैन के साथ रहेंगे। न डर होगा, न किसी तरह की घबराहट होगी। रंज व ग़म, दुखन, घुटन और थकन का नाम न होगा।

दाख़िले के बाद मुबारकबादी

सूरः रअ़्द में इर्शाद है :

وَالَّذِيْنَ صَبَرُوا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً وَّيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ ○ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ ○ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ○

वल्लज़ी न सबरुब्तिग़ा अ वज्हि रब्बिहिम व अक़ामुस्सला त

अन्फ़िक़ू मिम्मा रज़क़नाहुम सिर्रौं व अ़लानियतौं व यद्‌रऊ न बिल ह स न तिस्सैयिअ:। उलाइ क लहुम उक़्बद्दार। जन्नातु अ़द्‌निंयद् खुलू न हा व मन स ल ह मिन आबाइहिम व अज़्वाजिहिम व ज़ुर्रीयातिहिम वल् मलाइकतु यद्‌ख़ुलू न अ़लैहिम मिन कुल्लि बाब। सलामुन अ़लैकुम बिमा सबर्तुम फ़निअ्‌ म उक़बद्दार।

'और ऐसे लोग हैं (जिनका ऊपर से आयत में ज़िक्र है) कि जिन्होंने अपने रब की ख़ुशी हासिल करने के लिए सब्र किया और नमाज़ क़ायम की और यह हमने जो उनको दिया, उसमें से खुले और छिपे तरीक़े पर ख़र्च करते हैं और अच्छे सुलूक के ज़रिए बुरे सुलूक को दूर करते हैं। उनके लिए इस दुनिया में अच्छा अन्जाम है यानी हमेशा रहने की जन्नतें हैं, जिनमें वे दाख़िल होंगे और उनके मां-बाप और अज़्वाज (यानी बीवियां) और औलाद में से जो लायक़ होंगे, वे भी दाख़िल होंगे और हर दरवाज़े से उनके पास फ़रिश्ते (यों) कहने को आएंगे कि तुम पर सलाम हो इस वजह से कि तुमने दुनिया में सब्र किया, सो इस दुनिया में तुम्हारा अंजाम बहुत अच्छा है।'

मुफ़स्सिर इब्ने कसीर (रह०) इस आयत की तफ़सीर करते हुए लिखते हैं कि जन्नत वालों को जन्नत में दाख़िले की मुबारकबादी देने के लिए हर तरफ़ से फ़रिश्तों की जमाअतें सलाम करती हुई दाख़िल होंगी। उनको अल्लाह के क़रीब होने, इनाम पाने में और सुकून के घर (दारुस्सलाम) में ठहरने और नबियों और सिद्दीक़ों (सच्चों) के पड़ोस में रहने की जो बड़ाई हासिल होगी, उस पर मुबारकबादी देंगे।

जन्नत में दाख़िले पर जन्नतियों के शुक्रिए के लफ़्ज़

सूरः ज़ुमर में फ़रमाया :

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ صَدَقَنَا وَعْدَهٗ وَاَوْرَثَنَا الْاَرْضَ نَتَبَوَّاُ مِنَ
الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَآءُ فَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ

व कालुल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी स द क़ ना वअ् द हू व औ र स नल अरज़ न त बव्वउ मिनल जन्नति हैसु नशाअ्। फ़निअ् म अजरुल आमिलीन।

'और जन्नती (जन्नत में दाख़िल होकर) कहेंगे कि सब तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है, जिसने हमसे अपना वादा सच्चा किया और हमको इस धरती का मालिक बनाया कि जन्नत में जहाँ चाहें ठहरें, सो अच्छा बदला है अमल करने वालों का।'

'जहाँ चाहें जन्नत में ठहरें' इसका मतलब यह है कि अल्लाह पाक ने हर जन्नती को बहुत बड़ी लंबी-चौड़ी जगह दी, जिसमें पूरा-पूरा अख़्तियार हासिल है कि जहां चाहे ठहरे। कोई रोकटोक नहीं है और कोई जगह ऐसी भी नहीं है जो ठहरने के क़ाबिल न हो और अपनी जगह से जब किसी दूसरे जन्नती से मिलने का इरादा करेंगे तो उसका भी अख़्तियार होगा।

सूरः आराफ़ में फ़रमाया :

وَنَزَعْنَا مَافِيْ صُدُوْرِهِمْ مِنْ غِلٍّ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ ۚ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ هَدٰنَا لِهٰذَا ۚ وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا اَنْ هَدٰنَا اللّٰهُ ۚ لَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ وَنُوْدُوْا اَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝

व नज़अ्ना मा फ़ी सुदूरिहिम मिन ग़िल्लिन तज्री मिन तह्तिहिमुल अन्हार। व क़ालुल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी हदाना लिहाज़ो वमा कुन्ना लिनह्तदि य लौ ला अन हदानल्लाह। लक़द जाअत रुसुलु रब्बिना बिल हक़्क़। व नूदू अन तिल्कुमुल जन्नतु ऊरिस्तुमूहा बिमा कुन्तुम तअ्मलून।

'और उनके दिलों में (जो एक दूसरे की तरफ़ से कुछ) ग़ुबार (द्वेष भाव) था, उसे हम निकाल देंगे। उनके नीचे नहरें जारी होंगी और वे कहेंगे कि सब तारीफ़ अल्लाह ही के लिए हैं जिसने हमको इस जगह तक पहुंचाया

और हमारी पहुंच न होती, अगर हम को अल्लाह तआला न पहुंचाते। वाक़ई सच तो यह है कि हमारे रब के पैग़म्बर हक़ लेकर आए थे और उनको पुकार कर कहा जाएगा कि जन्नत तुमको तुम्हारे आमाल के बदले दी गयी है।'

दाख़िले के बाद जन्नतियों का पहला नाश्ता

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन ज़मीन एक रोटी बन जाएगी जिसको जब्बार (व क़ह्हार) अपने ताक़त भरे हाथ से लेकर उल्टे-पलटेगा। जैसे तुम में से कोई शख़्स सफ़र में रोटी को उलटता-पलटता है, (उलट-पलट हमवार बनाकर) अल्लाह तआला ज़मीन को जन्नत वालों की पहली मेहमानी क़रार देगा।

प्यारे नबी ﷺ ने यह फ़रमाया था कि एक यहूदी आ पहुंचा और कहने लगा, ऐ अबुल क़ासिम![1] ख़ुदा आप पर बरकत नाज़िल फ़रमाये। क्या आप को यह बताऊं कि क़ियामत के दिन जन्नतियों की पहली मेहमानी किस से होगी? आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि हां बता दे। उसने इसी तरह ब्यान किया, जिस तरह आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया था कि ज़मीन की एक रोटी बन जाएगी (जिसे जन्नत वाले सबसे पहले नाश्ते की जगह खाएंगे)। रिवायत करने वाले कहते हैं कि उस यहूदी की बात सुनकर आंहज़रत ﷺ हमारी तरफ़ देखकर इस तरह हँसे कि आपकी आख़िरी दाढ़ें ज़ाहिर हो गयीं (यह हँसना इस ख़ुशी में था कि अल्लाह तआला ने जो इल्म पिछले नबियों को दिए थे मुझे भी दिए, जिनमें से कुछ चीज़ें नक़ल पर नक़ल होकर यहूदियों में मशहूर हैं)। इसके बाद उस यहूदी ने कहा, क्या आपको यह (भी) बताऊं कि जन्नतियों का सालन क्या होगा? (जिससे पहली मेहमानी की वह रोटी खाएंगे जो ज़मीन से बनी होगी)। आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया (वह भी) बता दे। उस यहूदी ने कहा कि बैल होगा और मछली होगी जिसकी कलेजी के ज़्यादा हिस्से से सत्तर हज़ार आदमी खाएंगे।

---

1. अबुल क़ासिम आंहज़रत ﷺ को कहते थे। जमउल फ़वाइद (बुख़ारी व मुस्लिम)

जन्नत में खाने-पीने के लिए बेइंतिहा नेमतें होंगी। जब जन्नत में रहने लग जाएंगे, तो बराबर खाते-पीते रहेंगे। मगर सबसे पहले शुरू के मेहमान के तौर पर जो नाश्ता पेश किया जाएगा। वह ज़मीन की रोटी का होगा और उस नाश्ता के खिलाने में यह मस्लहत है कि ज़मीन में तरह-तरह के मज़े दे रखे हैं जो अलग-अलग इलाक़ों और मुल्कों में फलों, ग़ल्लों, तरकारियों और दूसरी चीज़ों में पाये जाते हैं और चूंकि किसी भी आदमी ने ज़मीन से पैदा होने वाली हर नेमत नहीं खायी है बल्कि कोई इस फल से महरूम है और किसी को वह फल नसीब नहीं हुआ है इसलिए ज़मीन की रोटी बनाकर जन्नत वालों को पहले उसके तमाम मज़े मिलाकर एक साथ चखा दिए जाएंगे, ताकि जन्नत की नेमतों को जब खाएं-पिएं तो हर आदमी का यक़ीन इस तरह का यक़ीन हो जाए कि दुनिया में जो कुछ भी मैंने या किसी दूसरे ने खाया-पिया है, वह सब जन्नत की हर नेमत के सामने कुछ भी नहीं।

फ़ायदा : यहूदी ने जो रोटी के साथ मछली और बैल का नाश्ता बताया, हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने उसे कुछ नहीं फ़रमाया, जिससे मालूम हुआ कि उसने सही बात कही है। यह जो कहा कि मछली की कलेजी के बढ़े हिस्से से सत्तर हज़ार आदमी खाएँगे। इसके बारे में मुस्लिम की शरह लिखने वाले अ़ल्लामा नव्वी रहमतुल्लाहि अ़लैह लिखते हैं कि जिगर में एक टुकड़ा लटका हुआ होता है जो खाने में बेहतरीन हिस्सा है। कलेजी का ज़्यादा हिस्सा इसी को फ़रमाया है।

सवाल : ज़मीन की रोटी किस तरह खाई जा सकेगी। हम तो देखते हैं ज़मीन के ज़र्रे (कण) खाने के मिल जाते हैं तो खाया नहीं जाता और किरकिरापन ज़ाहिर हो जाता है?

जवाब : दुनिया में जितने भी ग़ल्ले, फल, मेवे, सब्ज़ियां, तरकारियां और खाने हैं, सब ज़मीन ही से निकलते हैं। जिस क़ुदरत वाले ने ज़मीन से ऐसी लज़्ज़तदार चीज़ें निकाल दीं, उसकी क़ुदरत है कि

ख़ास ज़मीन ही को खाने की चीज़ बना दे और उसमें ऐसी बात भर दे, जिससे ज़ुबान भी मज़ा ले और हलक़ में भी आसानी से उतर जाए।

इन्नहू अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर० انه علی کل شئ قدیر٥

जन्नतियों का जिस्म और ख़ूबसूरती

हज़रत अबू हुरैरः ؓ से रिवायत की है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि पहला गिरोह जो जन्नत में दाख़िल होगा, उनकी शक्लें चौदहवी रात के चांद की तरह (चमकती-दमकती) होंगी ओर जो लोग उनके बाद (दूसरे नम्बर पर) दाख़िल होंगे, उनकी शक्लें बहुत ज़्यादा रौशन सितारे की तरह से (रौशन) होंगी। सब जन्नतियों के दिल एक ही दिल पर होंगे। (यानि उनके आपस में ऐसी मुहब्बत होगी जैसे जिस्म बहुत और दिल एक हो) उनमें आपस में इख़्तिलाफ़ होगा, न कपट होगा। हर एक के लिए (बड़ी आंखों वाली हूरों में से कम-से-कम) दो बीवियाँ होंगी। उनमें से हर बीवी की पिंडली का गूदा ख़ूबसूरती की वजह से (हड्डी और) गोश्त के बाहर से नज़र आएगा। ये लोग सुबह-शाम अल्लाह की तस्बीह ब्यान करेंगे। न बीमार होंगे, न नाक से रेंट आएगा और न थूकेंगे। उनके बर्तन सोने-चांदी के होंगे और उनकी कंघियां सोने की होंगी। उनकी अंगीठियों में ख़ुश्बू फैलने के लिए जो चीज़ जलेगी वह ऊद होगी और उनका पसीना मुश्क (की तरह ख़ुश्बूदार) होगा। —बुख़ारी शरीफ़

इस हदीस से जन्नतियों के हुस्न व जमाल और उनकी बीवियों की ख़ुबसूरती का हाल मालूम हुआ। साथ ही उनकी सफ़ाई सुथराई का भी पता चला कि उनको न नाक-साफ़ करने की ज़रूरत होगी और न थूकने की ज़रूरत होगी।

दूसरी रिवायतों में यह भी है कि **'ला यबूलू न वला य त ग़व्व तू न'** (यानि जन्नती न पेशाब करेंगे, न पाख़ाने की ज़रूरत होगी)। पसीना जो

आएगा, वह गर्मी की वजह से न होगा, बल्कि खाना हज़्म हो जाने का ज़रिया होगा (जिसका ब्यान आगे आयेगा) और वह पसीना ख़ुश्बूदार और ख़ुशगवार होगा।

ऊपर की हदीस में है कि जन्नतियों की अंगीठियों में जलने वाली ऊद होगी। ज़ेहन में लाने के 'ऊद' को अगर कुल लकड़ी समझ लीजिए जिसके बुरादे से अगतबत्तियां बनती हैं। चूंकि अगर क़ीमती चीज़ है। इसलिए दूसरी लकड़ी की पतली-पतली सलाइयों पर उसका बुरादा लपेटकर अगर बत्ती बनायी जाती है। जन्नत में किसी चीज़ की कमी न होगी, इसलिए ख़ुश्बू के लिए ऊद होगा। यहां कि ऊद पर इसे न सोचें। ये अंगीठियां आग से जल रही होंगी या किसी दूसरी चीज़ से? इसके बारे में कोई तशरीह[1] नहीं देखी।

फ़ायदा : बुख़ारी शरीफ़ में है कि जब अल्लाह तआला ने हज़रत आदम (अलैहि०) को पैदा फ़रमाया तो उनका क़द साठ हाथ का था और जन्नत में जो भी दाख़िल होगा, आदम (अलैहि०) की शक्ल पर साठ हाथ का होगा। —बुख़ारी शरीफ़ बाबख़ुलि क़ आदम

सवाल : इतने लंबे-लंबे आदमी भला अच्छे क्यों मालूम होंगे?

जवाब : जब सब ही एक क़द के होंगे तो किसी का क़द भी दर्मियानी क़द से बाहर मालूम न होगा और सब ही को पसंद आएगा।

दूसरा फ़ायदा :— हदीस में जो लफ़्ज़ 'बुकरतौ व अ़शीय्या' (सुबह व शाम) फ़रमाया, उसके मुतअ़ल्लिक़ हदीस की शरह (टीका) लिखने वाले लिखते हैं कि इससे सच्ची सुबह व शाम मुराद नहीं हैं क्योंकि वहां न निकलना होगा, न डूबना होगा, बल्कि एक ही तरह का मंज़र होगा। रात-दिन का आना जाना न होगा। फ़त्हुलबारी में एक कमज़ोर रिवायत नक़ल की है कि अ़र्शे इलाही के नीचे एक परदा लटका हुआ होगा। उसका लपेट दिया जाना शाम का निशान होगा और उसका फैल जाना सुबह की

---

1. तफ़सील

निशानी होगी। यानि मुक़र्रर की हुई मुद्दत गुज़र जाने पर उस परदे की तस्बीह में लगे रहने के वक़्त होंगे। और अगरचे जन्नत में हर वक़्त बेअख़्तियार सांस की तरह तस्बीह जारी होगी, मगर अपने अख़्तियार से भी सुबह व शाम तस्बीह में लगे रहने को पसंद करेंगे। —हाशिया बुख़ारी

जन्नतियों के दाढ़ी न होगी और उनकी सुरमई आंखें होंगी

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि रसूले अकरम ﷺ ने फ़रमाया कि जन्नती 'अजरद और अमरद' होंगे। उनकी आंखें ऐसी ख़ूबसूरत होंगी कि (बग़ैर सुर्मा लगाये ही) सुर्मई मालूम होंगी, न उनकी जवानी ख़त्म होगी, न कपड़े पुराने होंगे। —तिर्मिज़ी

जन्नती 'अजरद व अमरद' होंगे। यानी उनके जिस्म पर बाल न होंगे और सब (मर्द व औरत) बेदाढ़ी होंगे। जिस्म पर बाल न होने के दो मतलब हो सकते हैं: एक तो यह कि सर के बालों के अलावा किसी भी जगह बाल न हों और दूसरा मतलब यह कि जिन जगहों के बालों को दूर करना पड़ता है (जैसे नाफ़ के नीचे के बाल और बग़लें, वहां तो बिल्कुल ही बाल न होंगे और सीने और पिंडलियों वग़ैरह पर जो बाल होंगे, बहुत हल्के होंगे, ख़ूब भरे हुए न होंगे, जिनसे खाल की खुबसूरती दब जाए। सर के बालों का अलग से ज़िक्र किसी रिवायत में नहीं पाया गया लेकिन बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में जो यह फ़रमाया कि उनकी कंघियां सोने की होंगी। इससे साफ़ ज़ाहिर हैं कि उनके सर पर बाल होंगे।

चेहरे पर दाढ़ी न होने की तमन्ना जन्नत में पूरी हो जाएगी। हमारे एक बुज़ुर्ग से किसी ने सवाल किया कि दाढ़ी न होने से क्या फ़ायदा होगा? फ़रमाया कि इसका जवाब उनसे मालूम करे जो दाढ़ी मुंडाते हैं। बहरहाल जन्नत में तो हर चीज़ ख़ूबसूरत होगी। दाढ़ी न होने पर भी मर्दों की खुबसूरती बढ़ी हुई होगी और अंदर से बाल निकलकर न आएंगे, जिनको मूंडना पड़े और उसकी वजह से खाल ख़राब हो।

जन्नतियों की तंदुरुस्ती और जवानी

हज़रत अबू सईद खुदरी ﷺ और हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि रसूले अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि एक (खुदाई) मुनादी (जन्नतियों में) पुकार कर एलान कर देगा कि ऐ जन्नत वालो! तुम्हारे लिए यह बात तय है कि हमेशा तंदुरुस्त रहोगे, कभी बीमार न होगे और यह (भी) तय है कि हमेशा ज़िंदा रहोगे, कभी मौत न आएगी और (यह कि) हमेशा जवान रहोगे, कभी बूढ़े न होगे और (यह कि) हमेशा नेमतों में रहोगे, कभी मुहताज न होगे। —मुस्लिम शरीफ़

जन्नतियों की उम्रें

हज़रत अबू सईद ﷺ से रिवायत है कि रसूले पाक ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जन्नत में जाने वाला जो शख़्स इस दुनिया से विदा होगा, छोटा हो या बड़ा (जन्नत में दाख़िले के वक़्त) सब तीस साल के कर दिए जाएंगे, इससे कभी आगे न बढ़ेंगे। —तिर्मिज़ी

तीस साल की उम्र दर्मियानी उम्र है। उसमें न बचकाना नादानी होती है, न जवानी दीवानी होती है, न बुढ़ापा आता है, न बुढ़ापे की निशानियां होती हैं। उस उम्र में पूरी जवानी और पूरी समझ दोनों होते हैं। होशहवास बजा और अंग सही-सालिम होते हैं। इसीलिए यह उम्र जन्नतियों के लिए रखी गयी हैं। छोटा हो या बड़ा, हर शख़्स तीस साल का कर दिया जाएगा यानी तीस साल की उम्र की जो ख़ूबियां व हालात होते हैं (जिनका ज़िक्र ऊपर हुआ) तमाम जन्नत वाले उनके मालिक होंगे। हमेशा-हमेशा जन्नत में रहेंगे। मगर न बुढ़ापा आएगा; न जवानी में कमज़ोरी आएगी; न होश व हवास में ख़लल पैदा होगा; न दांत उखड़ेंगे; न रौशनी में फ़र्क़ आएगा। कुछ रिवायतों में जन्नतियों की उम्र 33 साल भी आयी हैं।

जन्नत के बाग़ और पेड़

सूरः नबा में फ़रमाया :

إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا حَدَآئِقَ وَأَعْنَابًا وَّكَوَاعِبَ أَتْرَابًا وَّكَأْسًا دِهَاقًا ۞

इन्न न लिल मुत्तीक़ी न मफ़ाज़न हदाइ क़ व अअ़्नाबौं व कवा इ ब अत्राबौं व कअ्सन दिहाक़ा।

'बेशक परहेज़गारों के लिए बड़ी कामयाबी है, बाग़ हैं और अंगूर हैं और नयी हमउम्र औरतें हैं और लबालब भरे हुए शराब के जाम हैं।

और सूरः ज़ारियात में इरशद है—

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِى جَنّٰتٍ وَّعُيُونٍ ۞ اٰخِذِينَ مَآ اٰتٰهُمْ رَبُّهُمْ ۞ إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذٰلِكَ مُحْسِنِينَ ۞

इन्नल मुत्तीक़ी न फ़ी जन्नातिंव्व उयून आख़िज़ी न मा आता- हुम रब्बुहुम। इन्नहुम कानू क़ब ल ज़ालि क मुह्सिनीन०

'बेशक परहेज़गार लोग बाग़ों और चश्मों में होंगे। उनके रब ने उनको जो अ़ता फ़रमाया होगा, वे इसे ले रहे होंगे। बिला शुब्हा वे इससे पहले (दुनिया) में अच्छे काम करने वाले थे।'

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूले अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बेशक जन्नत में एक पेड़ है जिसके साए में बेहतरीन तेज़ रफ़्तार हल्के-फुल्के घोड़े पर सवार होकर गुज़रने वाला सौ वर्ष तक चलता रहेगा तो उसके साए को तय न कर सकेगा। —बुख़ारी व मुस्लिम

इसके बाद फ़रमाया *'व ज़ालि क ज़िल्लुम मम्दूद,'* यानी सूरः वाक़िअः में *'वज़िल्लिम ममदूद'* (फैला हुआ साया) फ़रमाया है, वह यही (पेड़ का साया) है। —अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने इर्शाद

फ़रमाया कि जन्नत में कोई पेड़ ऐसा नहीं जिसका तना सोने का न हो।

—तिर्मिज़ी शरीफ़

हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह ﷺ का ब्यान है कि मैं हज़रत सलमान फ़ारसी ﷺ के पास गया। उन्होंने बात जारी रखते हुए एक बहुत छोटा-सा लकड़ी का टुकड़ा लिया जो उनकी उंगलियों के बीच में ठीक तरह दिखायी भी न देता था। उसको हाथ में लेकर फ़रमाया कि ऐ जरीर! अगर तुम जन्नत में इतनी-सी लकड़ी भी तलाश करोगे तो न पाओगे। मैंने अ़र्ज़ किया कि नख़्ल[1] और शज्र[2] कहां जाएंगी (जिनका क़ुरआन शरीफ़ व हदीस में ज़िक्र है?) फ़रमायाः नख़्ल व शज्र तो वहां होंगे, लेकिन खजूरें लगी होंगी

—बैहक़ी

सूरः रहमान के तीसरे रुकूअ़ में पहले आधे में दो बाग़ों का ज़िक्र है जो ख़ास मुक़र्रिबीन के लिए दूसरे बाग़ों का ज़िक्र है जो ईमान वालों के लिए होंगे और हर आदमी को दो-दो मिलेंगे, मगर मुक़र्रिबीन के बाग़ों से दर्जे में कम होंगे। चुनांचे इर्शाद हैः

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِۚ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّکُمَا تُکَذِّبٰنِۙ ذَوَاتَاۤ
اَفْنَانٍۚ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّکُمَا تُکَذِّبٰنِۚ فِیْهِمَا عَیْنٰنِ تَجْرِیٰنِۚ فَبِاَیِّ
اٰلَآءِ رَبِّکُمَا تُکَذِّبٰنِۚ فِیْهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجٰنِۚ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ
رَبِّکُمَا تُکَذِّبٰنِۚ مُتَّكِـِٕیْنَ عَلٰی فُرُشٍۭ بَطَآئِنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍؕ
وَجَنَا الْجَنَّتَیْنِ دَانٍۚ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّکُمَا تُکَذِّبٰنِۚ فِیْهِنَّ قٰصِرٰتُ
الطَّرْفِۙ لَمْ یَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّۚ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّکُمَا
تُکَذِّبٰنِۚ كَاَنَّهُنَّ الْیَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُۚ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّکُمَا تُکَذِّبٰنِۚ
هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُۚ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّکُمَا تُکَذِّبٰنِ

व लिमन ख़ा फ़ मक़ा म रब्बिही जन्नतान। फ़बि ऐइ आलाइ

---

1. खजूर का पेड़   2. पेड़

रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान। ज़वा ता अफ़्नान। फ़बि ऐइ आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान। फ़ीहिमा ऐनानि तज़्रियान। फ़बि ऐइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान। फ़ीहिमा मिन कुल्लि फ़ाकिहतिन ज़ौजान। फ़बि ऐइ आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान। मुत्तकिई न अ़ला फ़ुरुशिम बताइनुहा मिन इस्तब्रक़। व जनल जन्नतैनि दानिन फ़बि ऐइ अलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान। फ़ीहिन्न न क़ासिरातुत्तर्फ़ि लम्यत्मिस हुन्न न इन्सुन क़ब्लहुम व ला जान्न। फ़बिऐइ आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान। क अन्न न हुन्न ल याक़ू त वल मर्जानि फ़बिऐइ आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान हल जज़ाउल एह-सानि इल्लल एहसानु फ़बिऐइ आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान।

'और जिसने अपने रब के सामने खड़े होने से ख़ौफ़ रखा; उसके लिए (यानी हर परहेज़गार के लिए) दो बाग़ होंगे। सो ऐ इन्स व जिन्न! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों से इंकारी हो जाओगे? वे दोनों बाग़ ज़्यादा शाख़ों वाले होंगे सो ऐ इंस व जिन्न! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों से इंकारी हो जाओगे? इन बाग़ों में दो चश्मे होंगे जो बहते चले जाएंगे। सो ऐ इंस व जिन्न! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों से इंकारी हो जाओगे? इन दोनों बाग़ों में हर मेवे की दो-दो क़िस्में होंगी। सो ऐ इंस व जिन्न! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों से इंकारी हो जाओगे? वे लोग तकिया लगाये हुए ऐसे बिछौनों पर बैठे होंगे, जिन के अस्तर ख़ूब मोटे रेशम के होंगे और इन दोनों बाग़ों का फल नज़दीक होता। सो ऐ इंस व जिन्न! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों से इंकारी हो जाओगे? उनमें नीची निगाह वालियां होंगी। जिन पर इन लोगों से पहले न किसी इंसान ने तसर्रुफ़ (उपभोग) किया होगा; न किसी जिन्न ने। सो ऐ इंस व जिन्न! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों से इंकारी हो जाओगे? गोया ये याक़ूत और मरजान हैं। सो ऐ इंस व जिन्न! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों से इंकारी हो जाओगे? भला एहसान का बदला एहसान के सिवा क्या है? सो ऐ इंस व जिन्न! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी

नेमतों से इंकारी हो जाओगे?'

यह जो फ़रमाया कि इन बाग़ों में हर मेवे की दो क़िस्में होंगी। इन के मुतअल्लिक़ मुआ़लिमुत्तंज़ील में कुछ उलमा का क़ौल नक़ल किया है कि एक क़िस्म तर मेवों की (यानी फलों की) और एक क़िस्म सूखे मेवे की होगी।

इसके बाद आम मोमिनों के बाग़ों का ज़िक्र है। चुनांचे इर्शाद है :

وَمِنْ دُوْنِهِمَا جَنَّتٰنِ○ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ○ مُدْهَآمَّتٰنِ○ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ○ فِيْهِمَا عَيْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ○ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ○ فِيْهِمَا فَاكِهَةٌ وَّنَخْلٌ وَّ رُمَّانٌ○ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ○ فِيْهِنَّ خَيْرٰتٌ حِسَانٌ○ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ○ حُوْرٌ مَّقْصُوْرٰتٌ فِی الْخِيَامِ○ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ○ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ○ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ○ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰی رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّعَبْقَرِیٍّ حِسَانٍ○ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ○ تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِی الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ○

व मिन दुनिहिमा जन्नतान। फ़बि ऐइ आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान। मुद् हाम्मतान। फ़बि ऐइ आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान। फ़ीहिमा ऐनानि नज़्ज़ाख़तान फ़बि ऐइ आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान। फ़ीहिमा फ़ाकिहतुंव्व नख़्लुंव्व रुम्मान। फ़बि ऐइ आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान। फ़ीहिन्न न ख़ैरातुन हिसान। फ़बि ऐइ आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान। हूरुम मक़्सूरातुन फ़िल ख़ियाम। फ़बि ऐइ आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान। लम यत्मिस्हुन्न न इन्सुन क़ब्लहुम व ला जान्न। फ़बि ऐइ आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान। मुत्तकिईं न अ़ला रफ़रफ़िन ख़ुज़्रिंव्व अ़ब्क़रीयिन हिसान। फ़बि ऐइ आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान। तबारकस्मु रब्बि क ज़िल जलालि वल इकराम।

'और उन बाग़ों से कम दर्जे के दो बाग़ और होंगे। सो ऐ जिन्न व इंस! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इंकारी हो जाओगे? वे दोनों बाग़ गहरे हरे होंगे। सो ऐ जिन्न व इंस! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इंकारी हो जाओगे? इन दोनों बाग़ों में मेवे और खजूरें और अनार होंगे। सो ऐ जिन्न व इंस! तुम अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों के इंकारी हो जाओगे? इनमें अच्छे अख़्लाक़ वाली खुबसूरत औरतें होंगी। सो ऐ जिन्न व इंस! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इंकारी हो जाओगे? वे हूरें होंगी जो ख़ेमों में हिफ़ाज़त से होंगी। सो ऐ जिन्न व इंस! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इंकारी हो जाओगे? इन लोगों से पहले इन पर न तो किसी इंसान ने तसर्रुफ़ किया होगा, न किसी जिन्न ने। सो ऐ जिन्न व इंस! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इंकारी हो जाओगे? वे लोग बेल-बूटे वाले अजीब खुबसूरत हरे कपड़ों पर तकिए लगाए होंगे। सो ऐ जिन्न व इंस! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इंकारी हो जाओगे? बड़ा बरकत वाला नाम है तेरे रब का जो जलाल और इकराम वाला है।'

जन्नत के फल और मेवे

जन्नती मज़े और स्वाद लेने के लिए फल और मेवे खाएंगे। क़ुरआन शरीफ़ में इसका ज़िक्र आया है। सूरः साद में इर्शाद है :

مُتَّكِئِينَ فِيهَا يَدْعُونَ فِيهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ وَشَرَابٍ ۝

मुत्तकिई न फ़ीहा यद्‌ऊ न फ़ीहा बिफ़ाकिहतिन कसीरतिंव्व शराब।

'वे उन बाग़ों में तकिए लगाए होंगे (और) वहां बहुत मेवे और पीने की चीज़ें मंगायेंगे।'

सूरः यासीन में फ़रमाया :

لَهُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ وَلَهُمْ مَا يَدَّعُونَ ۝

लहुम फ़ीहा फ़ाकिहतुंव्व लहुम मा यद्दऊन।

'उनके लिए वहां मेवे हैं और जो कुछ तलब करें, वह सब है।'

यानी हर क़िस्म के मेवे उनके लिए मौजूद होंगे और लज़्ज़त व ख़्वाहिश की चीज़ों में से जो कुछ भी तलब करेंगे सब हाज़िर कर दिया जाएगा।'

सूरः वाक़िअः में मेवे का ज़िक्र फ़रमाते हुए इर्शाद हैः

وَفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ لَا مَقْطُوعَةٍ وَلَا مَمْنُوعَةٍ○

व फ़ाकिहतिन कसीरतिल्ला मक़्तूअतिंव्व ला मम्नूअः।

'और (अस्हाबुल यमीन) कसीर मेवों में होंगे जो न ख़त्म होंगे, न उनकी रोक-टोक होगी।'

सूरः दह्र में इर्शाद है :

وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلَالُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوفُهَا تَذْلِيلًا○

व दानियतन अ़लैहिम ज़िलालुहा व ज़ुल्लिलत क़ुतूफ़ुहा तज़्लीला।

'और वहां यह हालत होगी कि उन पर साए झुके होंगे और जन्नत के फल उनके अख़्तियार में दे दिए जाएंगे।'

हज़रत बरा बिन आ़ज़िब ﷺ लिखते हैं कि जब कोई जन्नती फल लेना चाहेगा तो फल उसके क़रीब आ जाएगा और टहनी से इस तरह लटक आयेगा कि गोया वह सुनने वाला फ़रमांबरदार है। जन्नती खड़ा होगा तो फल उसके साथ ऊपर को उठ जाएंगे और अगर बैठे या लेटेगा तो उसके साथ चले आएंगे।

साहिबे मुआ़लिमुत्तंज़ील *'व जनल जन्नतैनि दान'* की तफ़सीर में लिखते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास ﷺ ने फ़रमाया कि जन्नत में फल का पेड़ अल्लाह के दोस्तों (यानी जन्नतियों) के क़रीब ख़ुद आ जायेगा,

चाहेंगे तो खड़े होकर फल तोड़ेंगे, चाहेंगे तो बैठ-ही-बैठे ले लेंगे।

हज़रत क़तादा ﷺ ने फ़रमाया कि जन्नतियों के हाथ न तो दूरी की वजह से फलों से महरूम होंगे, न कांटों की वजह से (क्योंकि पेड़ ख़ुद क़रीब आ जायेंगे)। और कांटेदार भी न होंगे। *'ला युरद् द ऐदीहिम अ़न्हा बुअ़्दुन व ला शौक।* क़ुरआन शरीफ़ में जन्नती खजूरों, अंगूरों, अनारों, केलों और बेरों का ज़िक्र तो नाम लेकर आया है और इनके अलावा बे-इंतिहा फलों की क़िस्में होंगी। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास ﷺ ने फ़रमाया कि दुनिया का कोई मीठा और खट्टा फल ऐसा नहीं जो जन्नत में न हो, यहां तक कि हंज़ल (यानी इन्दराइन का फल जो सख़्त कड़वा होता है) वह भी होगा, मगर वह वहां मीठा होगा। —बग़वी

सूरः मुहम्मद में इर्शाद है :

وَلَهُمْ فِيهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ

व ल हुम फ़ीहा मिन कुल्लिस्स म राति व मग्फ़ि र तुम मिर्रब्बिहिम।

यानी उनके लिए वहां हर क़िस्म के फल होंगे और उनके रब की तरफ़ से बख़्शिश होगी।

सूरः बक़रः में इर्शाद फ़रमाया :

وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ كُلَّمَا رُزِقُوا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِزْقًا ۙ قَالُوا هَٰذَا الَّذِي رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ ۖ وَأُتُوا بِهِ مُتَشَابِهًا ۖ وَلَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ ۖ وَهُمْ فِيهَا خَالِدُونَ

व बश्शिरिल्लज़ी न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति अन्न न लहुम जन्नातिन तजरी मिन तह्तिहल अन्हार। कुल्लमा रुज़िक़ू मिन्हा मिन स म रति रिज़्क़न क़ालू हाज़ल्लज़ी रुज़िक़्ना मिन क़ब्लु व उतू बिही मु तशाबिहा। व लहुम फ़ीहा अज़्वाजुम मुतह्हरतुंव्व हुम

फ़ीहा ख़ालिदून।

'और आप ख़ुशख़बरी सुना दें ऐसे लोगों को जो ईमान लाए और नेक अमल किए, इस बात की (ख़ुशख़बरी) कि इनके लिए बहिश्तें हैं। जिनके नीचे नहरें चलती होंगी। जब भी कोई फल इन बहिश्तों में से उनके खाने को मिलेगा तो हर बार कहेंगे कि यह (तो) वही है जो इससे पहले हमको मिल चुका है और इनके पास (शक्ल व सूरत में) मिलते-जुलते फल लाए जाएंगे और इनके लिए वहां पाकीज़ा बीवियां होंगी और वहां वे हमेशा रहेंगे।'

साहिबे ब्यानुल क़ुरआन लिखते हैं कि अकसर मज़े के लिए ऐसा होगा कि दोनों बार के फलों की शक्ल एक-जैसी होगी जिससे वे यों समझेंगे कि यह पहली ही क़िस्म का फल है, मगर खाने में मज़ा दूसरा होगा, जिससे लज़्ज़त और मस्ती कई गुना होगी।

मुफ़स्सिर इब्ने कसीर (रह०) ने इसकी तफ़सीर में हज़रत इब्ने अब्बास और दूसरे सहाबा ﷺ से यह क़ौल भी नक़्ल किया है कि जन्नती हज़रात फल की शक्ल देख कर कहेंगे कि यह फल तो हमने दुनिया में देखा है। लेकिन जब इसको खाएंगे तो मालूम होगा कि सिर्फ़ शक्ल व सूरत में मिलते-जुलते हैं और मज़ा कुछ और ही है।

मिश्कात शरीफ़ में 'सलातुल ख़ुसूफ़' के बाब में बुख़ारी व मुस्लिम के हवाले से नक़्ल किया है कि हुज़ूरे अक़दस ﷺ के ज़माने से सूरज ग्रहण हो गया। आप ﷺ ने ग्रहण की नमाज़ पढ़ाई जो बहुत लंबी नमाज़ थी। जब आपने सलाम फेरा तो सूरज साफ़ हो चुका था। सलाम के बाद फ़रमाया कि बेशक सूरज और चांद अल्लाह की निशानियों में से हैं। किसी के मरने-जीने की वजह से उनको ग्रहण नहीं होता है, पस जब तुम चांद-सूरज का ग्रहण देखो तो अल्लाह का ज़िक्र करो। (नमाज़ पढ़ाते में) आपने अपनी उसी जगह (खड़े-खड़े) कुछ लेना चाहा। फिर हमने देखा कि आप पीछे हटे (यह क्या बात थी)। आंहज़रत ﷺ ने जवाब में फ़रमाया कि मैंने (यहीं खड़े-खड़े)

जन्नत देखी, इसलिए मैंने उसमें से एक ख़ोशा लेने का इरादा किया और अगर मैं एक ख़ोशा ले लेता तो जब तक दुनिया बाक़ी रहती तुम उसमें से खाते रहते। इस हदीस से अन्दाज़ा हो सकता है कि जन्नत के फल कितने बड़े-बड़े हैं।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ का ब्यान है कि रसूले अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरे सामने जन्नत पेश की गयी तो मैंने तुमको दिखाने के लिए अंगूर का एक ख़ोशा लेना चाहा। पस (ख़ुदा की हिकमत) ऐसी हुई कि मेरे और ख़ोशे के दर्मियान आड़ लगा दी गई, इसलिए मैं न ले सका। एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! (जन्नत के) अंगूर के एक दाना का रस कितना होगा? फ़रमाया कि तेरी मां ने सबसे बड़ा डोल जो (कभी) चमड़ा काटकर बनाया हो (उसको ज़ेहन में लाकर ग़ौर कर ले) यानी एक दाना से बहुत बड़ा डोल भर सकता है। —तर्ग़ीब

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबि हुज़ैल ﷺ का ब्यान है कि हम हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ के साथ मुल्क शाम में या ओमान में थे। आपस में जन्नत का ज़िक्र होने लगा तो हज़रत अब्दुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि बेशक जन्नत के अंगूरों में से एक अंगूर इतना बड़ा है जितनी दूर यहां से सुनूआ़ (शहर) है। —तर्ग़ीब

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ से रिवायत है कि जन्नत की खजूरों की लम्बाई बारह हाथ है (और) इनमें गुठली नहीं है। —तर्ग़ीब

एक बार आंहज़रत ﷺ की ख़िदमत में एक सहाबी आये जो देहात के रहने वाले थे। उन्होंने अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! (क़ुरआन शरीफ़ में) अल्लाह तआ़ला ने एक ऐसे पेड़ के बारे में, जो तकलीफ़ देने वाला है, यह ख़बर दी है कि वह जन्नत में होगा। आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि वह कौन सा पेड़ है? उन्होंने अ़र्ज़ किया कि बेरी का पेड़ (जिसका सूरः वाक़िअः में ज़िक्र है) चूंकि बेरी की पेड़ में कांटे होते हैं। इसलिए तकलीफ़ देता है और फल तोड़ने में मुसीबत होती है। यह सुनकर सैयदुल मुर्सलीन ﷺ ने फ़रमाया

क्या अल्लाह तआला ने *'फ़ी सिद्रिमख़्ज़ूद'* (बग़ैर कांटों की बेरिया) नहीं फ़रमाया? बिला शुब्हा इन बेरियों से ऐसे फल निकलते हैं जिनके फट जाने से बहत्तर रंग के खाने निकल पड़ते हैं, एक रंग दूसरे से मिलता नहीं।

—इब्ने अबिद्दुन्या

मुफ़स्सिर इब्ने कसीर सूरः रअ़्द की आयत 'उकुलुहा दाइमुंव्व ज़िल्लुहा' की तफ़सीर में लिखते हैं: 'ऐइ फ़ीहल फ़वाकिहु वल मुताइमु वल मशारिबु ला इन्क़िताअ् वला फ़िना' यानी जन्नत में मेवे और खाने-पीने की चीज़ें हमेशा रहेंगी; न ख़त्म होंगी, न फ़िना होंगी। फिर एक रिवायत तब्रानी के हवाले से नक़ल की है कि जब कोई जन्नती जन्नत से फल लेगा तो उसकी जगह दूसरा फल लग जाएगा।

जन्नत में खेती

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि रसूल अकरम ﷺ की ख़िदमत में गांव के रहने वाले एक सहाबी बैठे हुए थे और आप यह बात ब्यान फ़रमा रहे थे कि जन्नतियों में से एक शख़्स अपने परवरदिगार से खेती करने की इजाज़त तलब करेगा। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेंगे कि क्या तू उन (भरपूर) नेमतों में नहीं है जो ख़्वाहिश के मुताबिक़ तुझे मिली हुई हैं? वह अ़र्ज़ करेगा कि हाँ (है तो सब कुछ) मगर मेरा दिल चाहता है (चुनांचे उसको इजाज़त दे दी जाएगी)। वह ज़मीन में बीज डालेगा तो पलक झपकने के पहले ही सब्ज़ा उग जाएगा और बढ़ जाएगा और खेत तैयार हो जाएगा और कट भी जाएगा और पहाड़ों के बराबर अंबार लग जाएंगे। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेंगे कि ऐ आदम के बेटे। यह ले ले। तेरे लोभ का पेट कोई चीज़ नहीं भरती। हुज़ूर ﷺ का यह इर्शाद सुनकर गांव वाले सहाबी ﷺ ने अ़र्ज़ किया कि ख़ुदा की क़सम वह शख़्स क़ुरैशी या अंसारी होगा। इसलिए कि यही लोग खेती-पेशा हैं। हमारा पेशा तो खेती नहीं है। भला हम क्यों ऐसी दर्ख़्वास्त करने लगे? यह सुनकर रसूलुल्लाह ﷺ को हँसी आ गयी। —बुख़ारी शरीफ

जन्नत की नहरें

सूरः मुहम्मद में अल्लाह तआला का इर्शाद है :

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ط فِيهَا أَنْهَرٌ مِّن مَّاءٍ غَيْرِ آسِنٍ ج وَأَنْهَرٌ
مِّن لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ ج وَأَنْهَرٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشَّرِبِينَ ج وَأَنْهَرٌ مِّنْ
عَسَلٍ مُّصَفًّى ط وَلَهُمْ فِيهَا مِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّن رَّبِّهِمْ ○

म स लुल जन्नतिल्लती वुइदल मुत्तक़ून। फ़ीहा अन्हारुम मिम माइन ग़ैरि आसिन। व अन्हारुम मिल्लब निल्लम य त ग़ैयर तअ्मुह। व अन्हारुम मिन ख़ म रिल्लज़्ज़तिल लिश्शारिबीन। व अन्हारुम मिन अ स लिम मुसफ़्फ़ा। व लहुम फ़ीहा मिन कुल्लिस्स म राति व मग़्फ़ि र तुम मिर्रब्बिहिम।

'जिस जन्नत का मुत्तक़ियों से वायदा किया जाता है; उसकी हालत यह है कि उसमें बहुत नहरें ऐसे पानी की हैं जिन में ज़रा भी तबदीली न होगी और बहुत-सी नहरें दूध की हैं जिसका स्वाद ज़रा न बदला होगा और बहुत-सी नहरें शराब की हैं जो पीने वालों के लिए बहुत लज़ीज़ होंगी और बहुत-सी नहरें शहद की हैं जो बिल्कुल साफ़ होगा और उनके लिए हर क़िस्म के फल होंगे और उनके रब की तरफ़ से बख़्शिश होगी।

हज़रत उबादः बिन सामित ﷺ से रिवायत है कि रसूले अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जन्नत में सौ दर्जे हैं। हर दर्जों के दर्मियान इतना फ़ासला है जितना आसमान व ज़मीन के दर्मियान में है और फ़िर्दौस सबसे ऊपर है। उसी से जन्नत की चारों नहरें निकली हैं और उसके ऊपर अल्लाह का अ़र्श होगा। इसलिए जब तुम अल्लाह से (जन्नत का) सवाल करो तो जन्नतुलफ़िर्दौस मांगो। —तिर्मिज़ी शरीफ़

इस हदीस से मालूम हुआ कि चार नहरें जन्नतुलफ़िर्दौस से निकली हैं। फिर हर नहर से बहुत-सी नहरें निकलती चली गई हैं जिनका सूरः मुहम्मद की आयत में ज़िक्र हुआ। इन चार बड़ी नहरों को एक हदीस में

चार नदी बताया गया है। चुनांचे मिश्कात शरीफ़ से तिर्मिज़ी के हवाले से हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने इर्शाद नक़ल किया है कि बेशक जन्नत में पानी का दरिया है, फिर उनसे और नहरें फूटी हैं।

क़ुरआन मजीद में जगह-जगह जन्नत और जन्नत वालों के ज़िक्र में तज्री मिन तह्तिहल अन्हार और 'तज्री मिन तह्तिहिमुल अन्हार' फ़रमाया है जिससे साफ़ ज़ाहिर है कि जन्नत में बहुत ज़्यादा नहरें होंगी जो जन्नत वालों के बाग़ों और कोठों में बह रही होंगी।

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जन्नत की नहरें मुश्क के पहाड़ों के नीचे से निकलती हैं।[1] यानी नहरों का मर्कज़ और निकलने की जगह मुश्क के पहाड़ों की जड़ है।

हज़रत सिमाक ﷺ (अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ के शार्गिद) फ़रमाते हैं कि मैंने मदीना में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ से मुलाक़ात की और अर्ज़ किया कि जन्नत की ज़मीन कैसी है? उन्होंने फ़रमाया कि चांदी की ज़मीन है जो ख़ूब सफ़ेद है। गोया कि आईना है। मैंने सवाल किया कि उसकी रौशनी कैसी है? फ़रमाया, क्या तूने वह वक़्त नहीं देखा, जिस वक़्त सूरज निकलने (के क़रीब) होता है (उस वक़्त जो दर्मियानी रौशनी होती है)। बस वही रोशनी जन्नत में है। लेकिन उस रोशनी में न धूप का असर है, न ठंढक है। मैंने अ़र्ज़ किया : उसकी नहरों का क्या हाल है? क्या वह गढ़ों के अंदर चलती हैं? फ़रमाया नहीं, (गढ़ों में नहीं चलती हैं) बल्कि ये (हमवार) ज़मीन पर चलती हैं और बिना ढलान के अपनी जगह पर इस तरह जारी हैं कि (अपनी हद से) इधर उधर नहीं फैलती हैं। अल्लाह तआ़ला ने इन नहरों से फ़रमाया कि (तैयार) हो जाओ। पस जारी हो गयीं। मैंने पूछा कि जन्नत में कपड़ों के जोड़े कैसे हैं? फ़रमाया जन्नत में एक पेड़ है जिसमें अनार की तरह के फल हैं। जब अल्लाह तआ़ला का दोस्त (यानी जन्नती) उसमें से लिबास लेने का इरादा

1. तर्ग़ीब

करेगा तो उसमें से टहनी उसके पास आकर फट जाएगी, जिसमें से रंग-बिरंग के सत्तर जोड़े निकल आएंगे। फिर वह टहनी जुड़ जाएगी और अपनी जगह लौट आएगी। —तर्ग़ीब

नहूरे कौसर

हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि रसूले अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि (मे'राज की रात को) मैं जन्नत में गुज़र रहा था। एक ऐसी नहर सामने आयी जिसके दोनों किनारों पर मोतियों कि कुब्बे थे। फ़रिश्ता (जो मेरे साथ था), से मैंने पूछा, यह क्या है? उसने जवाब दिया कि यह कौसर है जो अल्लाह ने आप को इनायत फ़रमायी है। इसके बाद फ़रिश्ते ने उसकी मिट्टी में अपना हाथ मार कर मुश्क निकाला, फिर मेरे सामने 'सिद्रतुल मुंतहा'[1] बुलंद किया गया। पस मैंने उसके पास बहुत बड़ा नूर देखा।[2] हज़रत अनस ﷺ से यह भी रिवायत है कि हुज़ूरे अक़्दस ﷺ से सवाल किया गया

---

1. 'सिदरः' कहते हैं बेरी के पेड़ को और 'मुंतहा' के मानी हैं इन्तिहा की जगह। हदीस में आया है कि यह एक पेड़ है बेरी का सातवें आसमान में। ऊपरी दुनिया से जो (हुक्म व रोज़ियां वग़ैरह) आती हैं, वे पहले सिदरतुल मुंतहा तक पहुंचते हैं, फिर वहां से फ़रिश्ते ज़मीन पर लाते हैं। इसी तरह जो आमाल यहां से चढ़ते हैं, वे भी सिद्रतुल मुंतहा तक पहुंचते हैं, फिर वहां से उठाये जाते हैं। —बयानुल क़ुरआन

   हदीसे मे'राज में है कि आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि मैं सिद्रतुल मुंतहा की तरफ़ उठाया गया तो देखता हूं कि उसके फल (यानी बेर) हिज्र के मटकों के बराबर हैं और उसके पत्ते हाथी के कानों के बराबर हैं (मिश्कात पेज 527) साथ ही आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि सिद्रतुल मुंतहा की शाख़ के साए में सौ वर्ष सवार चल सकता है या यों फ़रमाया कि उसके साए में सौ सवार साया ले सकते हैं।

   —तिर्मिज़ी शरीफ़ बाब 'मा जा अ फ़ी सिफ़ति सिमारिल जन्न नः'

2. तिर्मिज़ी

फ़ायदा : नहूरे कौसर अल्लाह पाक की ख़ास दैन है जो जन्नत में है और सिर्फ़ आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद ﷺ को मिला है। और किसी नबी को नहूरे कौसर नहीं मिली। हां तिर्मिज़ी शरीफ़ की कुछ रिवायतों में है कि क़ियामत के मैदान में हर नबी के लिए हौज़ होगा जिससे अपनी-अपनी उम्मत को पिलाएंगे। उलमा-ए-किराम ने लिखा है कि क़ियामत के मैदान में हौज़ का होना आंहज़रत ﷺ के लिए कोई नयी बात नहीं

कि कौसर क्या है? आप ﷺ ने फ़रमाया कि वह एक नहर है जो अल्लाह तआ़ला ने मुझे इनायत फ़रमायी है— दूध से ज़्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा मीठी है। —तिर्मिज़ी

जन्नत के चश्मे

सूरः मुर्सलात में इर्शाद है :

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي ظِلَالٍ وَّعُيُونٍ ○ وَّفَوَاكِهَ مِمَّا يَشْتَهُونَ ○

इन्नल मुत्तक़ी न फ़ी ज़िलालिंव्व उयूनिंव्व फ़वाकि ह मिम्मा यश्तहून।

'बेशक मुत्तक़ी लोग सायों में और चश्मों में और ख़्वाहिश के मुताबिक़ मेवों में होंगे।'

सूरः ग़ाशियः में फ़रमाया :

وُجُوهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ لَّا تَسْمَعُ فِيهَا لَاغِيَةً ○ فِيهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ○

वुजूहुंय्यौ म इज़िन नाइमतुल्लि सअ़्यिहा राज़ियतुन फ़ी जन्नतिन आ़लियतिल्ला तस्मउ फ़ीहा लाग़ियः। फ़ीहा ऐनुन जारियः।

'बहुत से चेहरे उस दिन रौनक़ वाले होंगे। अपने आमाल की वजह से खुश होंगे। ऊंची जन्नत में होंगे जिसमें कोई बकवास न सुनेंगे, उसमें बहते हुए चश्मे होंगे।'

है क्योंकि हर नबी के लिए हौज़ होने की रिवायत मौजूद है हां जन्नत में नहरे कौसर सिर्फ़ हुज़ूर ﷺ ही के लिए ख़ास है। साथ ही यह भी लिखा है कि आंहज़रत ﷺ के हौज़ के लिए जो कौसर कहा गया है, वह इसलिए है कि जन्नत की नहर कौसर से उसमें पानी आएगा।

मुफ़स्सिर इब्ने कसीर *'ऐनुन जारियः'* की तफ़सीर करते हुए लिखते हैं, *'इन्नमा हाज़ा जिंसुन यानी फ़ीहा उयूनिन जारियात'*। मतलब यह हुआ कि जन्नत में बहुत ज़्यादा चश्मे जारी हैं। ऐन वाहिद (एक वचन) जो आया है, इससे जिंस मुराद है जो कम व ज़्यादा सबके लिए बोला जाता है। जन्नत के चश्मों का ज़िक्र जन्नत के बाग़ों के तज़्किरे में गुज़र चुका है और अभी 'पीने की चीज़ों के ब्यान' में भी आता है।

फ़ायदा : सूरः ग़ाशियः की आयत में फ़रमाया कि जन्नत में कोई बकवास न सुनेंगे। यह मज़मून दूसरी आयतों में भी आया है। सूरः नबा में है *'ला यस्मउ न फ़ीहा लग्वौं व ला तअ्सीमा'* (कि वहां न कोई बेहूदा बात सुनेंगे, न झूठ) और सूरः वाकिअः में इर्शाद है *वला यस्मउ न फ़ीहा लग्वौं वला तअ्सीमा'* (यानी वे हज़रात न वहां बक-बक सुनेंगे, न कोई बेहूदा बात)। हासिल सब का यह है कि जन्नतियों का दिल व दिमाग़ और जिस्म के तमाम हिस्से हर तरह के अमन में होंगे। नागवारी लाने वाली कोई भी चीज़ न नज़रों के सामने आएगी; न कानों में पड़ेगी; न वहां बक-बक, झक-झक का कुछ काम होगा; न लड़ाई-झगड़े का मौक़ा आएगा, आपस में न तू-तू मैं-मैं होगी; न कोई किसी पर जुम्ले कसेगा; न ताने करेगा।

जन्नत में पीने की चीज़ें

सूर दह्र में फ़रमाया है :

إِنَّ الْاَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا۝ عَيْنًا يَّشْرَبُ
بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًا۝

इन्नल अब्रा र यश्रबू न मिन कअ्सिन कान मिज़ाजुहा काफ़ूरा।
ऐनैंयश्रबु बिहा इबादुल्लाहि युफ़ज्जिरू नहा तफ़्जीरा।

'बेशक नेक लोग ऐसे जाम से शराब पीएंगे जिसमें काफ़ूर की मिलावट होगी। ऐसे चश्मे से, जिससे ख़ुदा के (ख़ास) क़रीबी बन्दे पीएंगे और जिसका वे (ख़ुदा के ख़ास बन्दे जहां चाहेंगे) बहाकर ले जाएंगे।'

तफ़सीर दुर्रे मंसूर में इब्ने शौज़ब से रिवायत है कि जन्नतियों के हाथ में सोने की छड़ियां होंगी और इन छड़ियों से जिस तरफ़ इशारा करेंगे, नहरें उसी तरफ़ को चलेंगी। —ब्यानुल क़ुरआन

तफ़सीर मुआलिमुत्तंज़ील में 'युफ़ज्जिरू नहा तफ़्जीरा' की तफ़सीर करते हुए लिखा है *'ऐय यक़ूदू न हा हैसु शाऊ मिम् मनाज़िलिहिम व क़ुसूरिहिम'* यानी जन्नती हज़रात अपनी मंज़िलों और मुहल्लों में जहां चाहेंगे, ले जाएंगे।

यह जो फ़रमाया है शराब के जाम में काफ़ूर की मिलावट होगी। उससे दुनिया की काफ़ूर न समझ लिया जाए। वह जन्नती काफ़ूर होगा, जो दिल व दिमाग़ को तफ़रीह करने और क़ुव्वत पहुंचाने के लिए और शराब में एक तरह की ख़ास हालत और लज़्ज़त लाने के लिए मिलाया जाएगा। फिर कुछ आयतों के बाद इशार्द है :

وَيُسْقَوْنَ فِيهَا كَأْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنجَبِيلًا ۝ عَيْنًا فِيهَا تُسَمَّىٰ سَلْسَبِيلًا ۝

व युस्क़ौ न फ़ीहा कअ्सन का न मिज़ाजुहा ज़न्जबीला। ऐनन फ़ीहा तुसम्मा सलसबीला।

'और वहां उनको ऐसा जाम पिलाया जाएगा जिसमें सोंठ की मिलावट होगी यानी ऐसे चश्मे से उनको पिलाया जाएगा, जिसका नाम 'सलसबील' है।'

इस आयत से मालूम हुआ कि जन्नतियों की शराब में सोंठ की भी मिलावट होगी लेकिन इससे दुनिया की सोंठ न समझ ली जाए। यह वहां की सोंठ होगी जो शराब के मज़े को दोगुना कर देगी और इससे शौक़ व ख़ुशी की हालत पैदा होगी। यहां एक चश्मे का नाम 'सलसबील' फ़रमाया है। क़तादा (रह०) का क़ौल है कि उसको सलसबील कहने की वजह यह है कि जन्नतियों की मर्ज़ी के मुताबिक जिधर को वे चाहेंगे, जारी होगी।

हज़रत मुजाहिद (रह०) ने फ़रमाया कि ख़ूब तेज़ी के साथ बहने की वजह से उसका नाम यह तज्वीज़ हुआ। ज़ज्जाज का क़ौल है कि उसको सलसबील इसलिए कहा जाएगा कि उससे शराब निहायत ही आसानी और रवानी से सलामती के साथ हलक़ में उतर जाएगी। (मुआलिमुत्तन्ज़ील) मुफ़स्सिर इब्ने कसीर *'तुसम्मा सलसबीला'* की तफ़सीर करते हुए लिखते हैं कि *'ऐ यंज़जंबीलु ऐनुन फ़िल जन्नति तुसम्मा सलसबीला'* *यानी ज़ंजबील जन्नत* में एक चश्मा है जिसे सलसबील कहा जाता है :

सूरः तत्फ़ीफ़ में इर्शाद है :

إِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ○ عَلَى الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ، تَعْرِف فِيْ وُجُوْهِهِم نَضْرَةَ النَّعِيْمِ، يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِيْقٍ مَّخْتُوْمٍ، خِتَامُهُ مِسْكٌ، وَفِيْ ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُوْنَ، وَ مِزَاجُهُ مِنْ تَسْنِيْمٍ، عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ○

इन्नल अब्रा र लफ़ी नई म। अ़लल अराइकि यन्ज़ुरून। तअ़रिफ़ु फ़ी वुजूहिहिम नज़्रतन्नईम। युस्क़ौ न मिर्रहीक़िम मख़्तूम। ख़ितामुहू मिस्क। व फ़ी ज़ालि क फ़ल् य त नाफ़सिल मुताना फ़िसून व मिज़ाजुहू मिन तस्नीम ऐनैंयश्रबु बिहल मुक़र्रबून।

'बिला शुब्हा नेक लोग नेमतों में होंगे, मुसहरियों पर देखते होंगे। ऐ मुख़ातब! तू उनके चेहरों में नेमतों की बशाशत (ख़ुशी) पहचानेगा। उनको पीने के लिए ख़ालिस शराब सर बमुहर मिलेगी, जिस पर मुश्क की मुहर होगी। और लालच करने वाले को ऐसी चीज़ का लालच करना चाहिए और इस शराब की मिलावट तस्नीम से होगी यानी ऐसे चश्मे से जिससे मुक़र्रब बन्दे पीएंगे।'

'रहीक़िम मख़्तूम' यानी ख़ालिस शराब में तस्नीम की मिलावट होगी। तस्नीम जन्नतियों की सबसे ज़्यादा बेहतर और उम्दा शराब होगी। उसका चश्मा बहता होगा, उस चश्मे से मुक़र्रिबीन पीएंगे और *'अस्हाबुल यमीन'* की शराब में उस चश्मे से मिलावट की जाएगी। —मुआलिमुत्तंज़ील

जन्नत के परिंदे

जन्नतियों को खाने के लिए परिंदों का गोश्त भी मिलेगा, जैसा कि सूरः वाक़िअः में **'व लहिम तैरिम्मिम्मा यश्तहून'** फ़रमाया है। हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि रसूले अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुब्हा जन्नत में लंबी-लंबी गरदनों वाले ऊंटों के बराबर परिन्दे हैं जो जन्नत के पेड़ों में चरते-फिरते हैं। हज़रत अबू बक्र ﷺ ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! वह तो बड़ी ही अच्छी ज़िंदगी में हैं। आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि उनके खाने वाले उनसे ज़्यादा बेहतरीन ज़िन्दगी में होंगे। तीन बार यों ही फ़रमाया (फिर अबूबक्र सिद्दीक़ ﷺ को बशारत देते हुए इर्शाद फ़रमाया कि) मैं उम्मीद करता हूं कि तुम उन लोगों में से होगे जो इन परिंदों को खाएंगे।

—अहमद

हज़रत अबू उमामा ﷺ ने फ़रमाया कि (जब) किसी जन्नती को परिंद (खाने की) भूख होगी, तो (खुद-ब-खुद) परिंदे आकर उसके सामने गिर जाएगा जो पका हुआ होगा और उसके टुकड़े बने हुए होंगे। एक हदीस में है कि परिंदे जन्नती के दस्तरख़्वान पर खुद-ब-खुद गिर पड़ेगा जो बग़ैर आग और धुंए के (भुना और पका हुआ) होगी। जन्नती उसमें से इतना खाएगा कि उसका पेट भर जाएगा। बाद में वह परिंदा उड़ जाएगा।

—तर्ग़ीब अन अबिद्दुन्या

जन्नती पूरी इज़्ज़त के साथ खाएं-पीयेंगे, खाने-पीने में भरपूर लज़्ज़त महसूस करेंगे और उनके खाने-पीने का पेशाब-पाख़ाना न बनेगा।

सूरः साफ़्फ़ात में फ़रमाया :

أُولَٰئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُومٌ فَوَاكِهُ وَهُم مُّكْرَمُونَ ۝ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ۝
عَلَىٰ سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ ۝

उलाइ क लहुम रिज़्कुम मअ्लूम फ़वाकिहु व हुम मुक्रमून। फ़ी

जन्नातिन्न नईम अला सुरुरिम मु त काबिलीन।

'उनके लिए रोज़ी मालूम है यानी मेवे और वे बड़ी इज़्ज़त से आराम के बाग़ों में आमने-सामने तख़्तों पर होंगे।'

सूरः तूर में फ़रमाया :

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنّٰتٍ وَّنَعِيمٍ ۝ فَاكِهِينَ بِمَا اٰتٰهُمْ رَبُّهُمْ ۝ وَوَقٰهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۝ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓئًا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝

इन्नल मुत्तक़ी न फ़ी जन्नातिंव्व नईम। फ़ाकिही न बिमा आताहुम रब्बुहुम व वक़ाहुम रब्बुहुम अज़ाबल जहीम। कुलू वश्रबू हनीअम बिमा कुन्तुम तअ्मलून।

'बिला शुब्हा मुत्तक़ी लोग बाग़ों में और ऐश के सामानों में होंगे। उनका परवरदिगार जो कुछ उनको इनायत फ़रमाएगा, इससे ख़ुश होंगे और उनका रब उनको दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचाए रखेगा। (उनसे कह दिया जाएगा) कि मज़े के साथ खाओ-पीयो, उन (नेक) आमाल के बदले जो तुम दुनिया में करते थे।'

हज़रत जाबिर ﷺ से रिवायत है कि रसूले अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुब्हा जन्नती जन्नत में खाएंगे, पीएंगे, और न थूकेंगे; न पेशाब-पाखाना करेंगे; न नाक साफ़ करने की ज़रूरत होगी। सहाबा किराम ﷺ ने अ़र्ज़ किया, खाने का क्या होगा? (यानि जब पेशाब-पाख़ाना न होगा तो हज़म होकर फ़ुज़ला कैसे निकलेगा?) आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि डकार आएगी और मुश्क की तरह (ख़ुश्बूदार) पसीना आएगा। इस डकार और पसीने से पेट ख़ाली हो जाएगा, अल्लाह की तस्बीह और तारीफ़ इस तरह बेएख़्तयार जारी होगी, जैसे तुम को बेएख़्तयार सांस आती है।

—मुस्लिम शरीफ़

कुछ रिवायतों में तस्बीह के साथ तकबीर का भी ज़िक्र आया है।

—ज म उल फ़वाइद

यानी जिस तरह दुनिया में सांस लेने के लिए तुमको न कोई तकलीफ़ होती है; न सांस लेने का इरादा करना पड़ता है और न दूसरे कामों में लगा रहना सांस लेने से रोकता है। इसी तरह जन्नती लोग अल्लाह की तस्बीह और तह्मीद में हर वक़्त लगे होंगे। नेमतों और लज़्ज़तों में लगा रहना उनको अल्लाह की तस्बीह व तह्मीद से ग़ाफ़िल न करेगी, बेएख़्तियार तस्बीह और तह्मीद जारी होगी और तस्बीह व तह्मीद से न थकेंगे, न मन को बोझ होगा।

साहिबे फ़त्हुलबारी लिखते हैं कि जन्नतियों की ज़िंदगी का ज़रिया अल्लाह की तस्बीह को बना दिया गया है। जिस तरह दुनिया में सांस लेकर जीते हैं; इसी तरह वहां खुदा की तस्बीह से ज़िंदा रहेंगे और वजह इसकी यह है कि जन्नती लोगों के दिल अल्लाह तआला की मारफ़त से रौशन होंगे और उसकी मुहब्बत से भरपूर होंगे। यह मुहब्बत महबूब की याद का ऐसा नशा पिलाएंगी कि बेएख़्तियार ज़िक्र में लगे रहेंगे।

फ़ायदा : बुख़ारी शरीफ़ की एक रिवायत में है (जो पहले गुज़र चुकी है) कि **'युसब्बिहूनल्ला ह बुक्रतौंव्व अशीय्या'** यानी जन्नती सुबह व शाम अल्लाह की तस्बीह ब्यान करेंगे और यहां फ़रमाया कि सांस की तरह हर वक़्त तस्बीह जारी रहेगी। इसके बारे में हदीस के कुछ शरह लिखने वालों से यह नक़ल किया गया है कि सुबह-शाम के ज़िक्र करने से हर वक़्त ज़िक्र करना ही मुराद है। इसलिए दोनों का मतलब यही हुआ। लेकिन हदीस के ब्यान का ढंग बताता है कि अपने एख़्तियार से तो सुबह-शाम तस्बीह में लगे होंगे और बेएख़्तियार तस्बीह हर वक़्त जारी रहेगी और इस की ताईद व तस्दीक़ इससे होती है कि जहां सुबह व शाम का ज़िक्र है, वहां फ़ेल *(क्रिया) 'युसब्बिहुन'* इस्तेमान फ़रमाया है, जिसका फ़ाइल (कर्त्ता) जन्नती है और जहां बेएख़्तियार सांस की तरह तस्बीह का ज़िक्र है, वहां 'युल् हमून' फ़ेले मज्हूल (कर्मवाच्य) ज़िक्र किया गया है।

यों समझिए कि गो बेएख़्तियार भी तस्बीह जारी होगी, लेकिन ख़ुद अपने अख़्तियार से भी सुबह-शाम में लगे होंगे ताकि अपनी तर्बियत से अपनाई गई तस्बीह की लज़्ज़त से महरूम न रहें और अगरचे वहां इबादत और ज़िक्र व फ़रमांबरदारी के ज़िम्मदार न होंगे, मगर उनकी शराफ़त और सआदत (सौभाग्य) यह गवारा न होने देगी कि अपने महबूब और इनाम देने वाले और एहसान करने वाले की याद के लिए बाक़ायदा, जान-बूझकर वक़्त न निकालें।

जन्नतियों के बर्तन

सूरः ज़ुख़रुफ़ में फ़रमाया :

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصِحَافٍ مِّنْ ذَهَبٍ وَّاَكْوَابٍ ۝ وَفِيْهَا مَاتَشْتَهِيْهِ الْاَنْفُسُ وَتَلَذُّ الْاَعْيُنُ ۝ وَاَنْتُمْ فِيْهَا خَالِدُوْنَ ۝

युताफ़ु अलैहिम बिसिहाफ़िम मिन ज़ ह बिंव्व अक्वाब। व फ़ीहा मा तश्तहीहिल अन्फ़ुस व तलज़्ज़ुल अअ्युन। व अन्तुम फ़ीहा ख़ालिदून।

'उनके पास सोने के प्याले और गिलास लाए जाएंगे (जिनमें खाने-पीने की चीज़ें होंगी और वहां वे चीज़ें होंगी दिलों को जिनकी ख़्वाहिश हो और जिनसे आंखों को लज़्ज़त हो और (उनसे कह दिया जाएगा) कि तुम यहां हमेशा रहोगे।'

सूरः दह्‍र में फ़रमाया :

وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّاَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيْرَا ۝ قَوَارِيْرَا مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوْهَا تَقْدِيْرًا ۝

व युताफ़ु अलैहिम बिआनियतिम मिन फ़िज़्ज़तिंव्व अक्वाबिन कानत क़वारीरा। क़वारी र मिन फ़िज़्ज़तिन क़द्दरूहा तक़दीरा।

'और उनके पास (खाने-पीने की चीज़ें पहुंचाने के लिए) चांदी के बर्तन लाए जाएंगे और आबख़ोरे (भी लाए जाएंगे) जो शीशे के होंगे (और) वे शीशे-चांदी के होंगे जिनको भरने वालों ने मुनासिब अंदाज़ से भरा होगा।'

यानि इन आबख़ोरों में इस ढंग से पीने की चीज़ें भर कर पेश की जाएंगी कि उस वक़्त की ख़्वाहिश के बिल्कुल मुताबिक़ होंगी। न कुछ बचेगा, न कमी पड़ेगी।

—मुआलिमुत्तंज़ील

ऊपर की आयत से मालूम हुआ कि जन्नितयों के बर्तन सोने और चांदी के होंगे।

फ़ायदा: सूरः ज़ुख़रुफ़ की आयत से मालूम हुआ कि जन्नत में जो भी कुछ होगा, उसका अंदर-बाहर नफ़ीस और हसीन होगा; दिलों को ख़ुशगवार और आंखों के लिए मज़ेदार होगा। कोई भी ऐसी चीज़ न होगी, जिसकी शक्ल आंखों को भली न लगे।

जन्नत की शराब से नशा न होगा और न सर-दर्द होगा

जन्नती हज़रात लज़्ज़त के लिए शराब पीएंगे, लेकिन यह शराब वहां की शराब होगी जो साफ़ सुथरी होगी और जिससे न अक़्लों में ख़राबी आएगी, न नशा होगा, न पेट में दर्द होगा, न गाली-गुफ़्तार की नौबत आएगी। सूरः साफ़्फ़ात में इर्शाद है :

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَأْسٍ مِّنْ مَّعِينٍ بَيْضَآءَ لَذَّةٍ لِّلشَّارِبِينَ، لَافِيْهَا غَوْلٌ
وَّلَاهُمْ عَنْهَا يُنْزِفُوْنَ.

युताफ़ु अ़लैहिम बिकअ्सिम मिम मईनम बैज़ा अ लज़्ज़तिल्लिश्शा रिबीन। ला फ़ीहा ग़ौलुंन व ला हुम अ़न्हा युन्ज़िफ़ून।

'उनके पास शराब का ऐसा जाम लाया जाएगा जो बहती हुई शराब से भरा होगा। वह शराब सफ़ेद होगी, पीने वालों के लिए लज़्ज़तदार होगी, न उसमें सरदर्द होगा और न उससे अक़्ल में ख़राबी आएगी।'

सूरः तूर में *'ला लग्वुन फ़ीहा वला तअ्सीम'* फ़रमाया है। यानी इस शराब की वजह से न बक-बक करने और बेकार की बकवास करने की नौबत आएगी और न गुनाह के काम होंगे।

सूरः दहर में फ़रमाया :

وَسَقَاهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُورًا

व सक़ाहुम रब्बुहुम शराबन तहूरा।

'और उनका रब ख़ूब पाकीज़ा शराब पिलायेगा।'

साहिबे मुआलिमुत्तंज़ील 'तहूरा' की तफ़सील करते हुए लिखते हैं कि

طاهر من الاقذار و الا قذاء لهم تدنسه الايدى و الا رجل كخمر الدنيا

ताहिरुम मिनल अक्ज़ारि वल् अक्ज़इ लहुम तद्नसहुलऐदी वल अर्जुल क ख़म्रिद्दुन्या।

यानी वह शराब घिनौने और नापाक हिस्सों से पाक होगी और दुनिया की शराब जो हाथ वग़ैरह पड़ने से मैली हो जाती है, इस मैलेपन से वह शराब महफ़ूज़ होगी।

फिर अबूक़ुलाबा और इब्राहीम का क़ौल नक़ल करते हैं कि जन्नत की शराब को 'तहूर' इसलिए फ़रमाया कि उसका पेशाब न बनेगा बल्कि मुश्क की तरह ख़ुश्बूदार पसीना बन जाएगा और इसकी शक्ल यह होगी कि जन्नतियों के पास खाना लाया जाएगा। उसे खाकर फ़ारिग़ हो जाने के बाद शराबे तहूर लायी जाएगी, उसको पीकर उनके पेट पाक व साफ़ हो जाएंगे और उस वक़्त का खाया हुआ खाना उन की खालों से पसीना बन कर निकल जाएगा जो तेज़ ख़ुश्बूदार मुश्क से ज़्यादा उम्दा होगा जिससे उनके पेट ख़ाली हो जाएंगे और ख़्वाहिश फिर वापस आ जाएगी। मुक़ातिल कहते हैं कि शराबे तहूर जन्नत के दरवाज़ों के बाहर पानी का एक चश्मा है, जो शख़्स इसमें से पीएगा अल्लाह जल्ल ल शानुहू उसके दिल को कीना, कपट, खोट, गंदगी और जलन से पाक व साफ़ फ़रमा देंगे।

जन्नतियों की सवारियां

हज़रत बुरैदा ﷺ रिवायत करते हैं कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! क्या जन्नत में घोड़े होंगे। आपने फ़रमाया, अगर अल्लाह तआ़ला ने तुझको जन्नत में दाख़िल फ़रमा दिया और तूने वहां सुर्ख़ याक़ूत के घोड़े पर सवार होने की ख़्वाहिश की तो ऐसा ही कर दिया जाएगा। वह घोड़ा तुझे लेकर जन्नत में उड़ेगा। जहां तू जाना चाहेगा, ले जाएगा फिर एक शख़्स ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल! जन्नत में ऊंट भी होंगे? आप ﷺ ने उस शख़्स को वह जवाब नहीं दिया जो पहले सवाल करने वाले को दिया था बल्कि यह फ़रमाया कि अगर अल्लाह तआ़ला ने तुझको जन्नत में दाख़िल फ़रमा दिया तो तुझको हर वह चीज़ मिलेगी जिस को तेरा दिल चाहेगा और जिससे तेरी आंखों को लज़्ज़त हासिल होगी।

—तिर्मिज़ी शरीफ़

देहात के रहने वाले एक सहाबी ﷺ ने हाज़िर होकर अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल! मैं घोड़ों को बहुत पसंद करता हूं, क्या जन्नत में घोड़े होंगे। आप ने फ़रमाया : अगर तुझको जन्नत में दाख़िल किया गया तो तुझको याक़ूत का घोड़ा दिया जाएगा जिसके दो बाज़ू होंगे, फिर तुझको उस पर सवार किया जाएगा और जहां तू जाना चाहेगा, यह घोड़ा तुझको उड़ाकर ले जाएगा। —तिर्मिज़ी अबू ऐय्यूब की रिवायत

जन्नतियों की आपस में मुहब्बत

सूरः हिज्र में फ़रमाया :

وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِنْ غِلٍّ إِخْوَانًا عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ۝

व नज़अ़्ना मा फ़ी सुदूरिहिम मिन ग़िल्लिन इख़्वानन अ़ला सुरुरिम मु त क़ाबिलीन।

'और उन के दिलों में जो दुनिया का कपट था, हम उसको निकाल

देंगे। सब भाइयों की तरह रहेंगे। तख़्तों पर आमने-सामने बैठा करेंगे।'

यानी दुनिया में अगर किसी वजह से आपस में कपट था, तो जन्नत में दाख़िले से पहले ही निकाल कर अलग कर दिया जाएगा ताकि जन्नत जैसी पाक जगह कपट और जन्नत से पाक व साफ़ रहे। बुख़ारी व मुस्लिम की एक हदीस में है कि—

قُلُوبُهُمْ عَلٰى قَلْبِ رَجُلٍ وَّاحِدٍ لَااخْتِلَافَ بَيْنَهُمْ وَلَاتَبَاغُضَ

क़ुलूबुहुम अ़ला क़ल्बि रजुलिन वाहिदिन ला इख़्तिला फ़ बै न हुम व ला तबाग़ुज़।

'यानी जन्नतियों के दिल एक ही शख़्स के दिल की तरह होंगे। आपस में न कोई इख़्तिलाफ़ होगा और न कपट होगा।'

दिल अलग-अलग होंगे मगर दिल की हालत एक-ही-जैसी होगी यानी सब एक दूसरे को चाहते होंगे और आपस में बे-मिसाल एका व मुहब्बत होगी। हज़रत अबू उमामा ﷺ ने फ़रमाया कि जब तक अल्लाह तआ़ला सीनों का कपट न निकाल देगा, कोई मोमिन जन्नत में दाख़िल न होगा। जिस तरह हमलावर दरिंदे को हटाकर दूर कर दिया जाता है, इसी तरह अल्लाह तआ़ला मोमिनों के दिलों से कपट को निकाल देंगे। —इब्ने कसीर

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूले अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जब मोमिन बंदे (पुलसिरात से पार होकर) दोज़ख़ से निजात पा जाएंगे तो जन्नत-दोज़ख़ के दर्मियान एक पुल पर उनको रोक दिया जाएगा और आपस में जो एक दूसरे पर दुनिया में ज़ुल्म किए थे, उनका क़िसास (बदला) दिलाया जायेगा यहाँ तक कि ज़ुल्म व ज़्यादती से पाक व साफ़ हो जाएंगे तो उनको जन्नत में दाख़िल होने की इजाज़त दे दी जाएगी। सो क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद की जान है इनमें से हर आदमी जन्नत वाली जगह को उससे ज़्यादा जानेगा जितना कि अपने दुनिया के घर के रास्ते को जानता था। —बुख़ारी शरीफ़

जबकि जन्नत में दाख़िल होने से पहले ही आपस में हक़ और ज़ुल्म व ज़्यादतियों का फ़ैसला हो जाएगा और दिलों में जो खोट और कपट था, वह बाहर निकाल दिया जाएगा तो दुश्मनी की कोई वजह बाक़ी न रहेगी और जबकि मामूली जन्नती भी इस ख़्याल में होगा कि मुझे वह कुछ मिला है जो किसी को भी न मिला तो जलन की कोई वजह न होगी।[1]

जन्नतियों की दिल्लगी

सूरः तूर में फ़रमाया :

يَتَنَازَعُونَ فِيهَا كَأْسًا لَّا لَغْوٌ فِيهَا وَلَا تَأْثِيمٌ ۝

य त ना ज़ ऊ न फ़ीहा कअ्सल्ला लग्वुन फ़ीहा व ला तअ्सीम।

'वहां आपस में शराब के जाम की छीना-झपटी करेंगे। उस शराब में (नशा न होगा, इसलिए उसके पीने से) बक-बक न होगी और न कोई बेहूदा बात (अक़्ल व संजीदगी के ख़िलाफ़ निकलेगी)।'

यह छीना-झपटी हँसी-मज़ाक़ के तौर पर होगी क्योंकि वहाँ किसी के लिए कुछ भी किसी चीज़ की कमी न होगी। दोस्तों में छीन-झपट कर खाने से मज़ा दो गुना हो जाता है जिसे एक साथ मिलकर रहने वाले ख़ूब अच्छी तरह जानते हैं।

जन्नतियों का कपड़ा-गहना

सूरः कहफ़ में इर्शाद फ़रमाया :

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ مَنْ أَحْسَنَ
عَمَلًا ۝ أُولَٰئِكَ لَهُمْ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ
فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا مِنْ سُندُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ

1. जैसा कि मुस्लिम की एक रिवायत में है कि जो जन्नत में आख़िर में पहुंचेगा, वह रुत्बे के एतबार से सबसे मामूली होगा।

مُتَّكِـِٔينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ نِعْمَ الثَّوَابُ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا

इन्नल्लज़ी न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति इन्ना ला नुज़ीउ अज्र मन अह स न अ़ म ला। उला इ क लहुम जन्नातु अ़द्निन तजरी मिन तहि्तहिमुल अन्हारु युहल्लौ न फ़ीहा मिन असावि र मिन ज़ ह बिंव्व यल्बसू न सियाबन ख़ुज़्रम मिन सुन्दुसिंव्व इस्तबरक़। मुत्तकिई न फ़ीहा अ़लल अराइक। निअ़्मस्सवाब। व हसुनत मुर्त फ़ क़ा।

'बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल किए तो ऐसे लोगों का बदला हम बर्बाद न करेंगे। जो अच्छे तरीक़े पर काम करें। ऐसे लोगों के लिए हमेशा रहने के बाग़ हैं, उनके नीचे नहरें जारी होंगी। उनको सोने के कंगन पहनाए जाएंगे और ये लोग हरे रंग के कपड़े पहनेंगे जो सुन्दुस और इस्तबूरक़ के होंगे ओर वहां मुसहरियों पर तकिए लगाए बैठेंगे। क्या ही अच्छा बदला है और (जन्नत) क्या ही अच्छी आराम की जगह है।'

इस आयत में एक तो जन्नती बन्दों के कंगनों का ज़िक्र फ़रमाया कि उनको सोने के कंगन पहनाए जाएंगे। सूरः दह्र में फ़रमाया उनको चांदी के कंगन पहनाए जाएंगे। दोनों आयतों को मिलाने से मालूम हुआ जन्नतियों के कंगन सोने के भी होंगे और चांदी के भी। दूसरे जन्नतियों के कपड़ों का ज़िक्र फ़रमाया कि सुन्दुस और इस्तबूरक़ के हरे कपड़े पहनेंगे। सुन्दुस बारीक रेशम को और इस्तबूरक़ मोटे रेशम को कहा जाता है यानी दोनों तरह के रेशम के कपड़े होंगे। ख़्वाहिश के मुताबिक़ बारीक और मोटे पेश कर दिए जाएंगे, जिस कपड़े को भी चाहेंगे पहन लेंगे।

मुफ़स्सिर बैज़ावी लिखते हैं कि दोनों क़िस्म के कपड़े का ज़िक्र फ़रमाया है ताकि मालूम हो जाए कि वहां नफ़्स की ख़्वाहिश और आँखों की लज़्ज़त के मुताबिक़ सब होगा। और यह जो फ़रमाया कि हरे रंग के कपड़े होंगे उसके बारे में मुफ़स्सिर बैज़ावी लिखते हैं 'हरे रंग को इसलिए चुना गया कि वह सब रंगों में बेहतर है और उसमें दूसरे रंगों के मुक़ाबले में ताज़गी

ज़्यादा मालूम होती है। और यह बात भी ज़िक्र के क़ाबिल है कि दूसरे रंगों का इंकार नहीं किया गया है। एक रंग का ज़िक्र है, बाक़ी रंगों के ज़िक्र से ख़ामोशी है। अगर बंदों की ख़्वाहिश होगी तो अल्लाह तआला दूसरे रंगों के कपड़े भी इनायत फ़रमाएंगे।

सूरः हज में फ़रमाया :

إِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا وَّلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ

इन्नल्ला ह युद्ख़िलुल्लज़ी न आ मनू व अमिलुस्सालिहाति जन्नातिन तजरी मिन तह्तिहल अन्हारु युहल्लौ न फ़ीहा मिन अ सावि र मिन ज़ ह बिंव्व लुअ्लुऔंव लिबासुहुम फ़ीहा हरीर।

'बेशक अल्लाह तआला उन लोगों को बाग़ों में दाख़िल फ़रमायेगा जो ईमान लाये और नेक अमल किए। उन बाग़ों के नीचे नहरें जारी होंगी। उन लोगों को सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे और वहाँ उन लोगों का लिबास रेशम का होगा।'

इस आयत से मालूम हुआ कि जन्नती सोने के कंगनों के अलावा मोतियों का ज़ेवर भी पहनेंगे।

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि रसूले अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि मोमिन का ज़ेवर वहां तक पहुंचेगा जहां तक वुज़ू का पानी पहुंचता है।[1] मालूम हुआ कि हाथों पर ज़ेवर सिर्फ़ पहुंचे ही पर न होगा बल्कि जहां तक भी वुज़ू का पानी पहुंचता है, वहां तक होगा।

हज़रत सअ़्द बिन अबी वक़्क़ास ﷺ से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जन्नत में जो कुछ है, उसमें से अगर इतनी-सी मिक़्दार (इस दुनिया में) ज़ाहिर हो जाएं जिसको एक नाख़ून उठा ले तो

1. मुस्लिम शरीफ़

इसकी वजह से आसमान व ज़मीन के दर्मियान जो कुछ है, रौनक़दार हो जाए और अगर जन्नतियों में से एक मर्द और (दुनिया की तरफ़) झांक ले जिसकी वजह से उसके कंगन ज़ाहिर हो जाएं तो सूरज की रोशनी को इस तरह बेनूर कर दे जैसे सूरज-सितारों की रोशनी को बेनूर कर देता है।

—तिर्मिज़ी शरीफ़

सवाल : कंगन तो औरतों के हाथों में अच्छे लगते हैं, मर्दों पर भला क्या सजेंगे?

जवाब : किसी भी लिबास या ज़ेवर का सजना और सजाना हर जगह के रस्म पर तय होता है। दुनिया में अगरचे आमतौर से मर्द कंगन नहीं पहनते मगर जन्नत में ख़्वाहिश करके पहनेंगे और सभी को देखने में भले मालूम होंगे। घड़ी की चेन ही को ले लीजिए तरह-तरह की बनावट, चमक और सजावट वाली पहनी जाती है और मर्दों के हाथों में अच्छी लगती है बल्कि कुछ क़ौमों में तो ब्याह-शादी के मौक़े पर दूल्हा को कंगन पहनाते हैं और बिरादरी के सब लोग देख कर ख़ुश होते हैं। चूंकि रिवाज है इसलिए सब की नज़र भी क़ुबूल करती है और सब के दिल में अच्छा समझते हैं और इस रिवाज पर इस क़दर अड़े हुए हैं कि शरीअ़त के मना करने का भी ख़्याल नहीं करते।

सवाल : पहुंचे से लेकर कोहनी तक ज़ेवर ही ज़ेवर होना भी तो अच्छा नहीं मालूम होता?

जवाब : यह भी दुनिया के रिवाज में बुरा मालूम होता है, वहां भी सबको पसंद आयेगा और ख़्वाहिश करके पहनेंगे। कुछ क़ौमों में यहां भी रिवाज है कि उनकी औरतें कुहनी तक चूड़ियां पहनती हैं जो उनकी पूरी क़ौम में पसंद की जाती है।

फ़ायदा : क़ुरआन मजीद में जन्नती के ज़ेवर के ज़िक्र में फ़रमाया है कि उनको ज़ेवर पहनाया जाएगा। *(युहल्लौ न फ़ीहा)* और लिबास के बारे में मुस्तक़्बिल (मुज़ारेअ़) का सेग़ा (यल्बसू न) लाया गया है

यानी वे ख़ुद पहनेंगे। यह तरीक़ा इस बात के समझाने के लिए अपनाया गया है कि ज़ेवर तो उनको ख़ादिम लोग पहनाते हैं और लिबास जन्नती ख़ुद पहनेंगे क्योंकि वह अपने हाथ से पहनना ठीक मालूम होता है। ख़ास तौर पर वह लिबास जो छिपाने की जगह को ढांकने के लिए हो।

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जन्नत में जो शख़्स दाख़िल होगा (हमेशा) नेमतों में रहेगा और (कभी) मुहताज न होगा। न उसके कपड़े पुराने होंगे और न जवानी फ़िना होगी। —मुस्लिम

कपड़े न पुराने होंगे, न मैले होंगे, हां जब बदलने को जी चाहेगा तो बदल लेंगे लेकिन यह बदलना फटने या मैला होने की वजह से न होगा।

जन्नतियों के ताज

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूले अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जन्नतियों के सरों पर ताज होंगे जिनमें से मामूली मोती (की चमक) इतनी ज़्यादा होगी कि वह पूरब व पच्छिम के बीच (की ख़ाली जगह) को रौशन कर सकता है।[1] इन ताजों में से अगर मामूली मोती इस दुनिया में आ जाए तो पूरब से पच्छिम तक पूरी फ़िज़ा को रौशन कर दे।

जन्नतियों के बिछौने

सूरः रहमान में फ़रमाया :

مُتَّكِئِينَ عَلَىٰ فُرُشٍ بَطَائِنُهَا مِنْ إِسْتَبْرَقٍ ۚ وَجَنَى الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ○
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ○

मुत्तकिईं न अ़ला फ़ुरुशिम बताइनुहा मिन इस्तबरक़। व जनल

1. तिर्मिज़ी शरीफ़

जन्नतैनि दान। फ़ बि ऐई आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान।

'वे ऐसे फ़र्शों पर तकिया लगाये हुए होंगे जिनके अस्तर मोटे रेशम के होंगे और दोनों बाग़ों का फल नज़दीक होगा। सो ऐ जिन्न व इंस! तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे?'

इस्तब्रक़ मोटे रेशम को कहते हैं। इसके बारे में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि उख़्बिर्तुम बिल बताइनि फ़ कै फ़ बिज़्ज़ाहाइर। (यानी यह तो तुमको बिस्तरों के अस्तर यानी नीचे के कपड़े के बारे में ख़बर दी गयी है कि वह इस्तब्रक़ का होगा। पस इसी पर सोच लो कि उनके अबरे यानी ऊपर के कपड़े कैसे खुबसूरत और ऊंचे होंगे।)

फिर सूरः रहमान के ख़त्म पर फ़रमाया :

مُتَّكِـِٔينَ عَلٰى رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ○ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبَانِ○ تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ○

मुत्तकिई न अ़ला रफ़रफ़िन ख़ुज़रिंव्व अब्क़रीयिन हिसान। फ़बि ऐइ आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान। तबारकस्मु रब्बि क ज़िल जलालि वल इकराम।

'वे लोग हरे रंग की चादरों पर (जो पलंग की तरह) बिस्तरों पर होंगी और अजीब ख़ूबसूरत बिछौनों पर तकिया लगायें होंगे। सो ऐ इंस व जिन्न! तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। बरकत वाला है नाम तेरे रब का जो जलाल और इकराम वाला है।'

ऊपर की आयतों में बुलंद दर्जों वाले जन्नतियों के बिस्तरों का ज़िक्र था। इसलिए वहां फ़रमाया कि उनके बिस्तरों के अस्तर इस्तब्रक़ के होंगे और ऊपर के अब्रों का ज़िक्र छोड़ दिया ताकि अस्तर पर सोच करके समझ लें। यहां कम दर्जे वाले बिस्तरों का ज़िक्र है जिनमें अस्तर का ज़िक्र नहीं है। ऊपर ही के कपड़ों को बता दिया है।

सूरः ग़ाशियः में फ़रमाया :

فِيْهَا سُرُرٌ مَّرْفُوْعَةٌ وَّاَكْوَابٌ مَّوْضُوْعَةٌ وَّنَمَارِقُ مَصْفُوْفَةٌ وَّزَرَابِيُّ مَبْثُوْثَةٌ○

फ़ीहा सुरुरुम मर्फ़ूअतुंव्व अक्वाबुम मौज़ूअतुंव्व नमारिकु मस्फ़ूफ़तुंव्व ज़राबिय्यु मब्सूसः।

'उसमें ऊंचे-ऊंचे तख़्त हैं और रखे हुए आबख़ोरे हैं और बराबर-बराबर लेगा हुए गद्दे हैं और सब तरफ़ क़ालीन फैले पड़े हैं।'

सूरः वाक़िअः में 'अस्हाबुल यमीन' की नेमतों के ज़िक्र में फ़रमाया है, *'व फ़ुरुशिम मर्फ़ूअः'* (ऊंचें-ऊंचे बिछौनों में होंगे)। इसकी तफ़सीर में हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ؓ से रिवायत है कि रसूले अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि इन बिछौनों की बुलंदी इतनी है जैसे आसमान व ज़मीन के बीच फ़ासला है, जो पांच सौ वर्ष की दूरी है। —तिर्मिज़ी शरीफ़

जन्नतियों के तख़्त

सूरः वाक़िअः में इर्शाद है :

وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ○ اُوْلٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ○ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ○ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ وَقَلِيْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ○ عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ مُّتَّكِـِٕيْنَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِيْنَ○

वस्साबिक़ूनस्साबिक़ून। उलाइ कल मुक़र्रबून। फ़ी जन्नातिन्नईम। सुल ल तुम मिनल अव्वलीन। व क़लीलुम मिनल आख़िरीन। अ़ला सुरुरिम मौज़ूनतिम मुत्तकिईं न अ़लैहा मु त क़ाबिलीन।

'और सबक़त (आगे बढ़ना) ले जाने वाले, वे (तो) सबक़त ले जाने वाले हैं। वे मुक़र्रबीन (ख़ास) हैं वे नेमत के बाग़ों मे होंगे। उनकी बड़ी जमाअ़त अगले लोगों में से और थोड़े लोग पिछले लोगों में से होंगे। (सोने

के तारों से) बुने हुए तख़्तों पर तकिए लगाए आमने-सामने बैठे होंगे।'

सूरः तूर में *'मुत्तकिईन अ़ला सुरुरिम मस्फ़ूफ़ः'* फ़रमाया है यानी सफ़ों के तरीक़े पर बराबर-बराबर बिछे हुए तख़्तों पर तकिए लगाये बैठे होंगे और ये सफ़ें आमने-सामने होंगी जैसा कि *'मुतक़ाबिलीन'* से ज़ाहिर है। सुरुरिन 'सरीर' (यानी तख़्त) की जमा (बहुवचन) है। 'मौज़ूनतिन' यानी मंसूजतिन यानी वे तख़्त बुने हुए होंगे।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ ने फ़रमाया कि उनकी बनावट सोने के तारों से होगी। जैसे दुनिया में कुर्सियां बांस वग़ैरह की खपचियों से या चारपाइयां बानों से बुनी हुई होती हैं। मुफ़स्सिर सुद्दी ने फ़रमाया, **'मर्मूलतुन बिज़्ज़ह बि वल्लुअ् लूअ्'** (यानि वे तख़्त सोने से और मोतियों से बने हुए होंगे)।

—इब्ने कसीर

सूरः हदीद में इर्शाद है :

إِنَّ أَصْحٰبَ الْجَنَّةِ فِي شُغُلٍ فٰكِهُوْنَ ○ هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلٰلٍ عَلَى الْأَرَائِكِ مُتَّكِئُوْنَ ○

इन्न न अस्हाबल जन्नति फ़ी शुग़ुलिन फ़ाकिहून। हुम व अज़्वाजुहुम फ़ी ज़िलालिन अ़लल अराइकि मुत्तकिऊन।

'बिला शुब्हा जन्नती उस दिन अपने कामों में ख़ुशदिल होंगे। वे और उनकी बीवियाँ पर्दे वाले सजे-सजाए तख़्तों पर तकिए लगाए होंगे।' 'अराइकि' अरीकतुन' की जमा (बहुवचन) है। अरीका उस सजे-सजाए तख़्त को कहते हैं, जिस पर परदा लटका हुआ हो। साहिबे तफ़सीरे मज़्हरी 'अराइक' की तफ़्सीर में लिखते हैं, यानी **'अस्सुरुरुल हिजाल'** (दुल्हन को बिठाने के लिए जो परदा डालकर ख़ास कोनों की सजावट करते हैं, इसमें जो तख़्त सजा करके बिछाया जाता है, वह अरीका है)। दोनों आयतों को मिलाने से मालूम हुआ कि जन्नतियों के बैठने के लिए तख़्त भी होंगे और अराइक भी होंगे। यहाँ यह बात ग़ौर के क़ाबिल है कि क़ुरआन शरीफ़ में 'सुरुरिम

मु त क़ाबिलीन' भी फ़रमाया है जिस में ख़ाली 'तख़्त' का ज़िक्र है। (यह सूरः आराफ़ और सूरः साफ़्फ़ात में है) और 'अ़ला सुरुरिम मौज़ूनतिन' भी फ़रमाया है जिसमें सुरूर की सिफ़त (गुण) 'मौज़ूनतिन' ब्यान हुई है। हो सकता है कि 'सुरुरिम मौज़ूनतिन' सिर्फ़ मुक़र्रबीन के लिए ख़ास हों और उनके अलावा दूसरे तख़्त आम जन्नत वालों के लिए हों और यह भी मुम्किन है कि सभी के लिए 'सुरुरिम मौज़ूनतिन' हों और एक जगह सिफ़त ज़िक्र कर देने पर बस कर लिया गया हो।

बहरहाल जैसे भी तख़्त हों अ़जीब व ग़रीब और पसंद और चाव के होंगे। उनकी खुबसूरती का अन्दाज़ा यहाँ नहीं लगाया जा सकता। यह जो फ़रमाया 'अ़ला सुरुरिम मुतक़ाबिलीन' के 'तख़्तों' पर आमने-सामने बैठेंगे', इसके बारे में मुफ़स्सिर इब्ने कसीर, हज़रत मुजाहिद (ताबई) से नक़ल फ़रमाते हैं कि *'ला यंज़ुरु बअ्ज़ुहुम फ़ी क़फ़ा बअ्ज़'* (यानी जन्नती आपस में एक दूसरे की पीठ न देखने पाएंगे) मतलब यह कि उठने-बैठने में और साथ देने और मज्लिस जमाने में किसी के पीछे बैठने का मौक़ा न होगा। वहां रहने-सहने का ढंग ऐसा होगा कि किसी को पीठ नज़र न आएगी। आपस में जब किसी को देखेंगे तो चेहरों ही पर नज़र पड़ेगी। मज्लिस में बैठेंगे तो दुनिया वालों की तरह (आगे-पीछे) न बैठेंगे। दुनिया में जगह की कमी है; वहां कमी न होगी और दूरी की बात सुन लेगा। साहिबे तफ़सीरे मज़्हरी 'मुतक़ाबिलीन' की तफ़सीर में लिखते हैं, *'वस्फ़हूमुल्लाहु तआ़ला बिहुस्निल अ़शीरति व तहज़ीबिल अख़्लाक़ व सफ़ाइल मुअद्दतः* (यानी अल्लाह जल्ल ल शानुहू ने जन्नतियों के अच्छे रहन-सहन, खुलूस, मुहब्बत और संवरे अख़्लाक़ का ज़िक्र फ़रमाया है) उनकी मुहब्बत और मेल-जोल की ख़ूबी इसको गवारा न करेगी कि कोई एक-दूसरे के पीछे बैठे।

विल्दान और ग़िल्मान

जन्नतियों की ख़िदमत के लिए ग़िल्मान व विल्दान होंगे जिनका ज़िक्र क़ुरआन शरीफ़ में कई जगह आया है :

وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَأَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُوْنٌ۝

व यतूफ़ु अ़लैहिम गिल्मानुल्लहुम क अन्नहुम लुअ्‌ लुउम मक्नून।

'और उनके पास (मेवे वग़ैरह लाने के लिए) ऐसे लड़के आएं-जाएंगे जो ख़ास उन्हीं की ख़िदमत के लिए होंगे (और बेइंतिहा ख़ूबसूरती की वजह से ऐसे होंगे कि) गोया वह हिफ़ाज़त से रखे हुए मोती हैं।

सूरः दहर में इर्शाद है :

وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ۝ إِذَا رَأَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنْثُوْرًا۝

व यतुफ़ू अ़लैहिम विल्दानुम मुख़ल्लदून। इज़ा रऐतहुम हसिबतहुम लुअ्‌लुअम मंसूरा।

'और उनके पास (ख़िदमत के लिए) ऐसे लड़के आएं-जाएंगे जो हमेशा एक ही हाल पर रहेंगे। ऐ मुख़ातब! जब तू उनको देखे तो यों समझे कि मोती हैं जो बिखेर दिए गये हैं।'

'विल्दान' 'वल्द' की जमा है और 'ग़िल्मान' 'ग़ुलाम' की जमा है। दोनों लगभग एक ही मानी रखते हैं। जन्नतियों के जोड़े के लिए अल्लाह तआ़ला ने 'हूर ईन' पैदा फ़रमायी हैं जो है तो मुअन्नस (स्त्री) मगर उनकी पैदाइश इन्सानों की पैदाइश की तरह नहीं है बल्कि अल्लाह ने सिर्फ़ अपनी क़ुदरत से उनको पैदा फ़रमाया है। इसी तरह जन्नतियों की ख़िदमत के लिए ग़िल्मान व विल्दान यानी ऐसे लड़के पैदा फ़रमाये हैं (या जन्नत में दाख़िले से पहले पैदा फ़रमायेंगे), जो हमेशा नौ-उम्र रहेंगे। यह भी बिल्कुल नयी मख़्लूक़ (जीव) है जिनकी पैदाइश इन्सान की तरह नहीं हुयी बल्कि अल्लाह तआ़ला ने अपनी क़ुदरत से पैदा फ़रमाया है। साहिबे तफ़सीरे मज़्हरी उसकी तफ़सीर करते हुए लिखते हैं, *'ला यमूतू न वला यहरमून वला य त ग़ैयरू न यब्क़ू न अ ब दन अ़ला शक्लिल विलदान (यानी वे लड़के न मरेंगे, न बूढ़े होंगे, न उनकी नौ-उम्री में तब्दीली आयेगी (बल्कि) हमेशा लड़कों की शक्ल पर रहेंगे।* इब्ने कसीर लिखते हैं, *'ला*

तज़ीदु अअ़्मारुहुम अ़न तिल्कस्सिन्न' (यानी उनकी उम्रें लड़कपन की उम्र से आगे न बढ़ेंगी)

सूरः दहर की तफ़सीर में विल्दान की तशरीह करते हुए साहिबे मज़्हरी लिखते हैं कि *'यन्शहुमुल्लाहु तआ़ला लिख़िदमतिल मुअ्मिनीन औ विल्दानुल क फ़ रति यज्अ़लुहुमुल्लाहु ख़ुद्दामा लहिलल जन्नतः'* (यानी उन विल्दान को अल्लाह तआ़ला मोमिनों की ख़िदमत के लिए पैदा फ़रमाएंगे या ये काफ़िरों की नाबालिग़ औलाद मोमिनों की ख़िदमत के लिए पैदा फ़रमाएंगे या ये काफ़िरों की नाबालिग़ औलाद होगी जिनको अल्लाह तआ़ला जन्नतियों का ख़िदमतगार बना देंगे)।

इससे मालूम होगा कि विल्दान के बारे में दो क़ौल हैं। एक यह कि नयी मख़्लूक़ होगी। दूसरे यह कि दुनिया में काफ़िरों के जो नाबालिग़ लड़के मर गये हैं, वे *'विल्दानुम मुख़ल्लदून'* होंगे जो जन्नतियों की ख़िदमत में लगा दिए गये हैं। लेकिन इस दूसरे क़ौल की खोज-पड़ताल करने वालों ने इसे माना नहीं है, चुनांचे ब्यानुल क़ुरआन के लिखने वाले लिखते हैं कि 'विल्दान' यानी 'ग़िल्मान' के बारे में तर्जीह देने के क़ाबिल क़ौल, जिसको ख़ाज़िन ने सही और हक़ को उस ख़्याल के तहत शामिल किया है; यह है कि वे एक मुस्तक़िल मख़्लूक़ हैं जैसे हूर और ग़िल्मान में मानी विलादत (पैदा होने) के नहीं और हिकमत उनके ख़ादिम बनाने में सिर्फ़ सुकून व ख़ुशी है बिना शहवत (जोश)। —तफ़सीर वाक़िअः (ब्यानुल क़ुरआन)

सूरः तूर में ग़िल्मान को 'लुअ् लुउम मक्नून' कहा है यानी वे लड़के हुस्न और चमक में और रंग की सफ़ाई-सुथराई में उस मोती की तरह होंगे जो सीपी में छिपा रहता है, जिस पर धूल-मिट्टी का गुज़र नहीं होता और सूरः दहर में 'लुअ् लुउम मंसूरा' फ़रमाया है यानी वे लड़के बिखरे हुए मोतियों की तरह होंगे, क्योंकि ख़िदमत में लगे हुए हर तरफ़ चल फिर रहे होंगे। हज़रत हसन ﷺ और क़तादा ﷺ से रिवायत है कि कुछ सहाबा ﷺ ने प्यारे नबी ﷺ से अ़र्ज़ किया कि ख़ादिम (की ख़ूबसूरती) का यह हाल है तो मख़्दूम (जिसकी ख़िदमत की जाए) का क्या हाल होगा? इसके जवाब में हुज़ूर

अक़दस ﷺ ने फ़रमाया कि मख़्दूम को ख़ादिम पर उस जैसी बड़ाई होगी जैसी चौदहवीं के चाँद को तमाम सितारों पर होती है। —तफ़सीरे मज़हरी

जन्नत में पाकीज़ा बीवियां

सूरः आले इमरान में फ़रमाया :

لِلَّذِينَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَرُ خَالِدِينَ فِيهَا
وَأَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ وَرِضْوَانٌ مِنَ اللَّهِ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ

लिल्लज़ीनत्तक़ौ इन द रब्बिहिम जन्नातुन तजरी मिन तह्तिहल अन्हारु ख़ालिदी न फ़ीहा व अज़्वाजुम मुतह्हरतुंव्व रिज़्वानुम मिनल्लाह। वल्लाहु बसीरुम बिल इबाद।

'ऐसे लोगों के लिए जो अल्लाह से डरते हैं, उनके रब के पास ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें जारी हैं। इनमें वे हमेशा रहेंगे और (इनके लिए वहाँ पाकीज़ा बीवियां हैं और अल्लाह की ख़ुशी है और अल्लाह तआला बंदों को देखते हैं।)

'पाकीज़ा बीवियां' यानी ऊपरी मैल-कुचैल और भीतरी बुराइयां (धोखा-फ़रेब) से और हर तकलीफ़ देने वाली आदत और बात से और हैज़ व निफ़ास वग़ैरह से बिल्कुल पाक व साफ़ होंगी। —इब्ने कसीर

हज़रत मुजाहिद (ताबई) ने पाक बीवियों की तफ़सीर करते हुए फ़रमाया कि वे हैज़ से और पाख़ाना-पेशाब से और बल्ग़म व थूक से और मनी से और बच्चा जनने से पाक होंगी (जब जनना न होगा तो उसके बाद निफ़ास का ख़ून भी न आयेगा)। हज़रत क़तादा (ताबई) ने फ़रमाया कि *'मुतह्हरतुम मिनल अज़ा वल मासिम'* (यानी वह तकलीफ़ देने वाली हर चीज़ से और नाफ़रमानी करने से पाक होंगी)। —इब्ने कसीर

ख़ुलासा यह है कि जन्नत की बीवियां ऊपरी और भीतरी ऐबों से पाक होंगी। उनको न थूक आएगा; न पाख़ाना की ज़रूरत होगी; न पेशाब

की; न मनी निकलेगी; न हैज़ आएगा; न निफ़ास होगी; न बदन और कपड़े पर मैल होगा। इस ज़ाहिरी सुथरेपन और पाकीज़गी के साथ उनकी आदतें और उनके अख़्लाक़ भी बहुत-ही अच्छे होंगे। दिल व जान से शौहरों पर न्यौछावर होंगी। उनमें नाफ़रमानी का नाम नहीं बदतमीज़ी करने का काम नहीं, धोखा-धड़ी, दग़ा, बेवफ़ाई से ख़ाली होंगी। दुनिया की औरतें, जिनका ईमान पर ख़ात्मा होगा, मोमिनों की बीवियां होंगी और उनके अलावा हूरे ईन में से बीवियां दी जाएंगी। दोनों क़िस्म की बीवियां हुस्न व जमाल और भीतरी-बाहरी अच्छाई, बेहतर अख़्लाक़ और प्रेम व मुहब्बत में और सफ़ाई-सुथराई में (जिसका ब्यान अभी हुआ) बहुत ही ऊंची होंगी।

जन्नती बीवियों की ख़ूबसूरती और दूसरी बातें

सूरः वाक़िअः में फ़रमाया :

إِنَّا أَنْشَأْنَاهُنَّ إِنْشَاءً فَجَعَلْنَاهُنَّ أَبْكَارًا ۝ عُرُبًا أَتْرَابًا لِأَصْحَابِ الْيَمِينِ ۝

इन्ना अन्शअ्ना हुन्न न इन्शाअन फ़ ज अ्ला हुन्न न अब्कारन उरुबन अत्राबल लि अस्हाबिल यमीन।

'हमने इन औरतों को ख़ास तौर पर बनाया है यानी हमने उनको ऐसा बनाया है कि वे कुंवारियाँ हैं, (शौहरों के लिए) प्यारी हैं; (उनकी) हम- उम्र हैं। (यह सब जो ऊपर ब्यान हुआ) अस्हाबुल यमीन के लिए है।'

दुनिया वाली मोमिन औरतें जिस हाल और जिस उम्र में भी दुनिया से इंतिक़ाल कर गयी हों बहरहाल जन्नत में जवान उम्र और कुंवारी बना दी जाएंगी और वहां के हुस्न व जमाल से सजा दी जाएंगी। हदीस शरीफ़ में है कि एक बड़ी बी आंहज़रत ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुईं और अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल। दुआ फ़रमा दीजिए अल्लाह जल्ल शानुहू मुझे जन्नत में दाख़िल फ़रमा दे। आपने इर्शाद फ़रमाया कि ऐ फ़्लां की मां! जन्नत में बुढ़िया दाख़िल न होगी। यह सुनकर वह रोती हुई रवाना हो गयीं। आंहज़रत ﷺ ने हाज़िर लोगों से फ़रमाया उससे कह दो कि मेरा मतलब यह

नहीं है कि तुम जन्नत में न जाओगी बल्कि बात यह है कि वह जन्नत में दाख़िल होते वक़्त बूढ़ी न होगी (क्योंकि उस वक़्त जवानी दे दी जाएगी)। बिला शुब्हा अल्लाह तआला फ़रमाते है कि 'इन्ना इन्शअ्‌ ना हुन्न न इन्शाअन फ़ जअलनाहुन्न न अब्कारा'[1] आंहज़रत ﷺ ने दिल्लगी के तौर पर ऐसे लफ़्ज़ फ़रमाये जिससे वह दूसरा मतलब समझ गयीं। कभी-कभी आंहज़रत ﷺ मज़ाक़ भी फ़रमा लेते थे जिसका एक वाक़िआ यह भी है जो ऊपर ब्यान हुआ। मज़ाक में भी आप सही और सच बात फ़रमाते थे। 'अब्कारा' बिक्र की जमा है, यानी कुंवारी जब भी उनके शौहर क़रीब होंगे, हम-बिस्तर होंगे तो हमेशा कुवांरी ही पाएंगे। —मिश्कात

साहिबे ब्यानुल क़ुरआन लिखते हैं कि क़रीब होने के बाद फिर कुंवारी हो जाएंगी[2]। 'उरुबन' हसीन व जमील और प्यारी औरतें। यह 'उरूब' की जमा है। 'अतराबन' हम उम्र हमजोली औरतें मुराद हैं इसका वाहिद (एक वचन) तुरुब है। जिस तरह मर्द सब तीस-तैंतीस वर्ष के होंगे, (जिसका मतलब ब्यान हो चुका है) इसी तरह उनकी बीवियां भी उन्हीं की उम्र की होंगी। क़द और जिस्म में और उम्र में बराबर होंगी, दानों तरफ़ से दिल मिले हुए होंगे। शक्ल व सूरत में एक तरह के होंगे। दुनिया में लोग अपने से कम उम्र वाली लड़की से शादी करना पसंद करते हैं क्योंकि कमसिन में हुस्न व जमाल और प्यार का अन्दाज़ ज़्यादा होता है लेकिन चूंकि जन्नती बीवियों में (चाहे वे दुनिया की मोमिन औरतें हों, चाहे वे हूरे ईन हों) हुस्न व जमाल और प्यार की हालत पूरी होंगी। इसलिए हमउम्री महबूब बनाने में रुकावट न डालेगी बल्कि ज़्यादा प्यार व मुहब्बत की वजह बन जाएगी। शौहर व बीवी बचकानापन से भी ख़ाली होंगी और बुढ़ापे से भी बचे रहेंगे। हमेशा दर्मियानी उम्र रहेगी जिसमें समझ-होश पूरा होता है। मुफ़स्सिर सुद्दी ने 'अतराबा' की तफ़सीर बताते हुए इर्शाद फ़रमाया कि वे आपस में अख़्लाक़ और प्यार व मुहब्बत के एतबार से

1. शमाइले तिर्मिज़ी
2. इसी तरह अबू सईद से दुर्र में भी रिवायत आती है

बराबर होंगी। बहनों की तरह मेल से रहेंगी। आपस में जलन, कपट नाम को न होगा। सौकनों वाला तनाव और लड़ाई व दुश्मनी न होगी।

—इब्ने कसीर

सूरः साद में फ़रमाया :

وَعِندَهُمْ قَٰصِرَٰتُ ٱلطَّرْفِ أَتْرَابٌ

व इन्दहुम क़ासिरातुत्तरफ़ि अतराबा।

'और उनके पास निगाह को रोक रखने वाली हमउम्र बीवियां होंगी। यानी उनकी नज़र सिर्फ़ शौहरों ही पर पड़ेगी और दिल बस शौहरों ही से लगा हुआ होगा। शौहरों के अलावा किसी ग़ैर की तरफ़ ज़रा नज़र उठाकर भी न देखेंगी।

हज़रत अनस ؓ से रिवायत है कि सरवरे आलम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि एक सुबह या एक शाम को अल्लाह के रास्ते में निकल जाना सारी दुरिया से और जो कुछ दुनिया में है, उस सबसे बेहतर है। अगर जन्नत की औरतों में से कोई औरत ज़मीन की तरफ़ को झांक ले तो आसमान व ज़मीन के दर्मियान जो कुछ है उसको रौशन कर दे और ख़ुश्बू से भर दे। फिर फ़रमाया कि हां, उसके सर का दुपट्टा सारी दुनिया से और दुनिया में जो कुछ है, उस सबसे बेहतर है। —बुख़ारी शरीफ़

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ؓ ने फ़रमाया कि बेशक जन्नत की औरत की पिंडली की सफ़ेदी सत्तर जोड़ों के अन्दर से नज़र आएगी यहां तक कि पिंडली के अन्दर का गूदा तक नज़र आएगा और यह (बात) इसलिए (हक़) है कि अल्लाह जल्ल ल शानुहू फ़रमाते हैं, *'क अन्ननहुन्नल याक़ूतु वल मर्जान'* (वे औरतें इतनी चमकीली और रंग की साफ़ होंगी कि गोया वे याक़ूत हैं या मर्जान हैं) फिर फ़रमाया कि याक़ूत तो ऐसा पत्थर है कि अगर तू उसमें लड़ी दाख़िल कर दे और फिर उसको साफ़ तरीक़े पर देखना चाहे तो पत्थर के बाहर देख सकता है। —तिर्मिज़ी

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ؓ रिवायत फ़रमाते हैं कि आंहज़रत ﷺ

ने *'क अन्न न हुन्नल याक़ूतु वल मर्जानि'* की तशरीह फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया कि जन्नती मर्द (जो जन्नती औरत का शौहर होगा) उसके चेहरे पर नज़र डालेगा तो उसका गाल आईने से ज़्यादा साफ़ नज़र आएगा और जन्नती औरत पर जो मोती होंगी, उनमें यह मामूली मोती पूरब-पच्छिम के दर्मियान को रौशन कर सकता है और उस पर सत्तर जोड़े होंगे (जो इतने साफ़-सुथरे और चमकदार होंगे) कि उनके अन्दर को नज़र पार हो जाएगी और जन्नती मर्द उसके कपड़ों के बाहर से उसकी पिंडली का गूदा देख लेगा।

—अहमद, इब्ने हब्बान, बैहक़ी

हूरे ईन

'हूर' जमा है 'हौराउ' की। यानी वह औरत जिसकी आंख की सफ़ेदी और स्याही ख़ूब गहरी और तेज़ हो। 'ईन' जमा है ऐनाउ की यानी वह औरत जिसकी आखें बड़ी-बड़ी और चौड़ी हों। क़ुरआन पाक ने अपनी क़ुदरत से जन्नती मर्दों की बीवी के लिए पैदा फ़रमाया है। ये औरतें दुनिया वाली मोमिन औरतों के अलावा होंगी। सूरः दुख़ान में फ़रमाया है **'वज़व्वज्नाहुम बिहुरिन ईन'** (और हूरें ईन के साथ हम उनका ब्याह कर देंगे)।

सूरः रहमान में फ़रमाया :

فِيهِنَّ خَيْرَاتٌ حِسَانٌ، فَبِاَىِّ اٰلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ○ حُورٌ مَّقْصُورَاتٌ فِى
الْخِيَامِ○ فَبِاَىِّ اٰلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ○ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ○
فَبِاَىِّ اٰلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ○

फ़ीहिन्न न ख़ैरातुन हिसान। फ़बिऐइ आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान। हुरुम मक़्सूरातुन फ़िल ख़ियाम। फ़बिऐइ आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान। लम यत्मिस्हुन्न न इन्सुन क़ब्लहुम व ला जान्न। फ़बिऐइ आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान।

'इन (बहिश्तों के मुहल्लों) में ख़ूबसूरत, अच्छे अख़्लाक़ वाली औरतें होंगी, सो ऐ इन्स व जिन्न! तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को

झुठलाओगे? वे हूरें ख़ेमों में हिफ़ाज़त से होंगी। सो ऐ इंस व जिन्न! तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? (वह जिनके लिए चुनी जाएंगी) उनसे पहले किसी इंसान या जिन्न ने उनको न छूआ होगा। सो ऐ इंस व जिन्न! तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे?

सूरः वाक़िअः में फ़रमाया :

وَحُوْرٌ عِيْنٌ كَاَمْثَالِ اللُّؤْلُوءِ الْمَكْنُوْنِ○

व हुरुन ईनुन क अम्सालिल्लुअ्लुइल मक्नून।

'और उनके लिए हूरे ईन होंगी छिपे रखे हुए मोती की तरह।'

सूरः साफ़्फ़ात में फ़रमाया :

وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ عِيْنٌ كَاَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُوْنٌ○

व इन्दहुम क़ासिरातुत्तर्फ़ि इनुन क अन्न न हुन्न न बैज़ुम मक्नून।

'और उनके पास नीचे निगाह रखने वाली बड़ी-बड़ी आंखों वाली औरतें होंगी (जिनकी रंगत इतनी साफ़ होगी कि) गोया अण्डे छिपे हुए।'

पहली आयत में छिपे मोती की तरफ़ फ़रमाया यानी वे औरतें सफ़ाई और सफ़ेदी में ताज़ा मोतियों की तरह चमकती होंगी और दूसरी आयत में छिपे हुए अंडे से तश्बीह (उपमा) दी गई हैं जो धूल-गर्द और दाग़ से बिल्कुल हिफ़ाज़त में रहता है। मुफ़स्सिर इब्ने कसीर (रह०) ने *'महसूनुन ला तम्सकुहल ऐदी'* (यानी वह अंडा जो हाथों में पहुंचने से पहले हिफ़ाज़त से होता है)

मुफ़स्सिर बैज़ावी लिखते हैं कि अंडे से तश्बीह जो दी गई है, वह तश्बीह सफ़ाई में भी है और ज़र्दी मिली हुई सफ़ेदी में भी है। जिस सफ़ेदी में किसी क़दर ज़रदी मिलाई गई हो वह बदन का बेहतरीन रंग माना गया है।

हूरे ईन की एक ख़ास दुआ और शौहरों से हमदर्दी

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रहमत के नबी ﷺ ने फ़रमाया कि बेशुब्हा रमज़ान के लिए शुरू साल से ख़त्म साल तक जन्नत सजायी जाती है। पस रमज़ान का पहला दिन होता है तो अर्श के नीचे हूरे ईन पर जन्नत के पत्तों की हवा चलती है जिसका असर लेकर वे यों दुआ करती हैं कि ऐ हमारे परवरदिगार! अपने बन्दों से हमारे लिए ऐसे शौहर मुक़र्रर फ़रमा जिनसे हमारी आंखें ठंढी हों और हमसे उनकी आंखें ठंढी हों।

हज़रत मुआज़ ﷺ का यह ब्यान है कि रसूल अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि दुनिया में जो कोई औरत अपने शौहर को तकलीफ़ देती है तो हूरे ईन में से उसकी बीवी दुनिया की बीवी से कहती है कि तेरा बुरा हो। उसको तकलीफ़ न दे क्योंकि वे तेरे पास कुछ दिनों तक का मेहमान है। बहुत जल्द तुझ से जुदा होकर हमारे पास पहुंच जाएगा। —तिर्मिज़ी शरीफ़

इन दोनों हदीसों से मालूम हुआ कि जिस तरह जन्नत और उसकी दूसरी नेमतें इस वक़्त मौजूद व मख़्लूक़ हैं हूरे ईन भी मौजूद व मख़्लूक़ हैं। हाफ़िज़ मुंज़िरी (रह०) ने 'अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब' में उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि०) से एक लम्बी रिवायत नक़ल किया है जिसमें यह भी है कि हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि०) ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह! (जन्नत) में दुनिया वाली (मोमिना) औरतें अफ़ज़ल होंगी या हूरे ईन? आंहज़रत ﷺ ने जवाब में इर्शाद फ़रमाया कि दुनिया वाली (मोमिन) औरतें हूरे ईन से इतनी अफ़ज़ल होंगी जैसे (लिहाफ़) का ऊपर का कपड़ा उसके अंदर वाले अस्तर से बेहतर होता है। हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि०) ने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह! यह किस वजह से? आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया, इसलिए कि दुनिया वाली औरतें नमाज़ पढ़ती हैं और रोज़े रखती हैं और अल्लाह (अज़्ज़ व जल्ल) की इबादत करती हैं। हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि०) ने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह! कभी-कभी एक औरत दुनिया में (एक के बाद एक) दो या तीन या चार मर्दों से निकाह कर लेती हैं फिर उसको मौत आ जाती है। वह जन्नत में दाख़िल होगी और उसके शौहर भी उसके साथ होंगे तो (इस शक्ल में) उनमें से

उनका शौहर कौन होगा? आंहज़रत ﷺ ने जवाब दिया कि ऐ उम्मे सलमा (रज़ि०)! उसको अख़्तियार दे दिया जाएगा जिसके साथ चाहे रहे। इसलिए वह उसको अख़्तियार कर लेगी जो उनमें अख़्लाक़ के एतबार से सबसे अच्छा होता था और कहेगी। ऐ रब! दुनिया के अंदर यह उन सबसे ज़्यादा मेरे साथ अख़्लाक़ वाला था, उसी को मेरा जोड़ा बना दीजिए। यह फ़रमा कर आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि ऐ उम्मे सलमा! अच्छा अख़्लाक़ दुनिया व आख़िरत की भलाई ले उड़ी। —मुंज़री

यह रिवायत सनद के एतबार से मज़बूत नहीं है। कुछ रिवायतों में यह भी मिलता है कि दुनिया में जिस औरत ने शौहर के बाद निकाह कर लिया वह जन्नत में आख़िरी शौहर को मिलेगी। जो भी शक्ल हो। बहरहाल यह हक़ है कि जन्नती मर्दों और औरतों में कोई भी ऐसा न होगा जो बग़ैर जोड़े के रह जाए। कुछ लोग अकसर पूछते फिरते हैं कि दो शौहरों वाली का क्या होगा? इस मसले पर ईमान तो टिका हुआ है नहीं जो बहस बनाया जाए। अल्लाह तआ़ला जो तज्वीज़ फ़रमाएंगे। सबके हक़ में बेहतर ही होगा।

जन्नत में हूरों का तराना

हज़रत अ़ली मुर्तज़ा ؓ से रिवायत है कि रसूले अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जन्नत में हूरे ईन के जमा होने की एक जगह है जिसमें आवाज़ बुलंद करती हैं और यह कहती हैं कि हम हमेशा रहने वाली हैं। कभी हलाक न होंगी; हम हमेशा आराम व चैन में रहेंगी; कभी मुहताज न होंगी। हम (अपने शौहरों से हमेशा) ख़ुश रहेंगी; कभी नाराज़ न होंगी। उसके क्या कहने जो हमारे लिए है और हम उसके लिए हैं (यह तराना ऐसे मन-भावन अंदाज़ में गाती हैं कि) ऐसी आवाज़ें मख़्लूक़ में से किसी ने नहीं सुनी हैं। —तिर्मिज़ी

मर्दों के लिए बहुत-सी बीवियां

जन्नत में एक मर्द को कितनी बीवियां मिलेंगी। इसके बारे में बहुत सी रिवायतें आयी हैं। बुख़ारी शरीफ़ की एक रिवायत में है, **'लि कुल्लिम रिइ मिन्हु ज़ौजतानि मिनल हुरिल ईन।'** (यानी हूरे ईन में से हर शख़्स को दो बीवियां होंगी)।

हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह०) ने फ़त्हुलबारी में इस पर तफ़सील से बहस की है और बहुत-सी रिवायतें जमा की हैं। मुस्नद अहमद की एक रिवायत नक़ल की है कि मामूली जन्नती के लिए दुनिया की बीवियों के अलावा बहत्तर बीवियां होंगी। अबू यअ़्ला की एक रिवायत में है कि दो बीवियां बनी आदम में से होंगी और बहत्तर बीवियां वे होंगी जिन्हें अल्लाह तआ़ला (उस दुनिया में) पैदा फ़रमाएंगे।

इब्ने माजा (रह०) की एक रिवायत में है कि बहत्तर बीवियां हूरे ईन से और बहत्तर दुनिया की औरतों में से मिलेंगी। इनके अलावा और भी रिवायतें साहिबे फ़त्हुलबारी ने नक़ल की हैं। इस सिलसिले की रिवायत सनद के एतबार से मज़बूत भी है और कमज़ोर भी है। कुल मिलाकर यह ज़रूर मालूम होता है कि जन्नतियों को दूसरी नेमतों के साथ ज़्यादा बीवियों की नेमत से भी नवाज़ा जाएगा और ऐसा तो कोई भी न होगा जिसको कम-से-कम दो बीवियां न मिलें। बाक़ी रही तादाद में इख़्तिलाफ़ की बात, तो यह अ़मल की बड़ाइयों के एतबार से सोचा जा सकता है यानी यों कह सकते हैं कि अपने-अपने भले कामों के हिसाब से दर्जों में जो इख़्तिलाफ़ होगा। दर्जों के इस इख़्तिलाफ़ की वजह से बीवियों की तादाद भी मुख़्तलिफ़ होगी।

कुछ लोग यह भी सवाल किया करते हैं कि एक मर्द को बहुत-सी बीवियां मिलेंगी तो एक बीवी को कितने मर्द मिलेंगे? यह सवाल बहुत बेहूदा है। क्योंकि मर्द के लिए बहुत-सी बीवियां होना नेमत है और औरत के लिए बहुत-से शौहर होने शरीफ़ों, शर्मदारों और ग़ैरत वालों के नज़दीक बहुत ऐब की बात है। जबकि ऐसी बेइज़्ज़ती दुनिया में नहीं की जाती तो जन्नत में

कौन गवारा करेगा? जन्नती औरतों की ख़ूबी क़ुरआन शरीफ़ में 'क़ासिरातुत्तर्फ़' ब्यान हुई है। वे नज़रें पस्त रखने वाली और अपने शौहर के अलावा दूसरे पर नज़र डालने से बचने वाली होंगी। यों कहिए कि वह तो एक ही शौहर पर राज़ी होंगी और दिल व जान से निछावर हो रही होंगी और यहां के लोग ख़्वाहमख़्वाह उनको ज़्यादा शौहर दिलाने की वकालत कर रहे हैं। जबकि एक शौहर से जी भरा हुआ है और दिल लगा हुआ है तो दूसरे की ज़रूरत ही क्या? अफ़सोस कि नादान एतराज़ करने वालों ने जन्नती औरतों को गंदी औरतों पर और यूरोप की नई तहज़ीब वाली हरजाई लौंडियों पर सोच लिया। चाहिए तो यह था कि जन्नती औरतों के ढंग पर अपने यहां की औरतों को परदे में बिठाकर 'क़सिरातुत्तर्फ़' और 'मक़्सूरातुन फ़िलख़ियाम' बनाते। मगर नादानों ने हूरों से पर्दे का सबक़ लेने के बजाए उल्टा यह किया कि जन्नती औरत के लिए बेइज़्ज़ती तज्वीज़ कर दी।

मर्दाना ताक़त

जन्नतियों की बीवियां, चूंकि बहुत-सी होंगी। इसलिए उनकी मर्दाना ताक़त भी बढ़ा दी जाएगी। हज़रत ज़ैद बिन अरक़म ؓ से रिवायत है कि किताब वालों (यानी यहूदियों) में से एक शख़्स रसूले ख़ुदा ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उसने सवाल किया कि ऐ अबुल क़ासिम! क्या आप फ़रमाते हैं कि जन्नत वाले खाएंगे और पिएंगे? आंहज़रत ﷺ ने फ़रमायाः हां, क़सम उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, एक जन्नती को खाने-पीने और (बीवियों से) हम-बिस्तर होने में सौ मर्दों की ताक़त दे दी जाएगी। यह सुनकर उस यहूदी ने सवाल किया कि जो खाता- पीता है, उसको (पेशाब-पाख़ाने की) ज़रूरत होती है। इसलिए जब जन्नती खाएं, पीएंगे तो पेशाब-पाख़ाना की ज़रूरत होती होगी। हालांकि जन्नत ऐसी जगह नहीं है जिसमें कोई चीज़ तकलीफ़ देने वाली हो। (फिर वहां पेशाब-पाख़ाना-जैसी घिनौनी चीज़ कैसे होगी) इसके जवाब में आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया (खाने-पीने के बाद) उनको पाख़ाना-पेशाब करने की ज़रूरत न होगी, बल्कि

भरे हुए पेट को ख़ाली करने की ज़रूरत पसीने से (पूरी) हो जाया करेगी (यानी) उनके खाने से मुश्क की तरह पसीना बहेगा जिससे पेट हल्का हो जाएगा। —अहमद, नसाई

इस हदीस से मालूम हुआ कि जन्नतियों को सौ मर्दों की ताक़त दे दी जाएगी। तिर्मिज़ी शरीफ़ में भी इस मज़मून की एक हदीस रिवायत की गयी है, जिसको इमाम तिर्मिज़ी ने सही हदीस फ़रमाया है और साथ ही हज़रत ज़ैद बिन अरक़म ﷺ की हदीस का भी हवाला दिया है (जो अभी गुज़र चुकी है)। जन्नत चूंकि पाकीज़ा जगह है और वहां के मर्द व औरत सब पाकीज़ा होंगे। इसलिए हर तरह गंदगी और घिनौनी चीज़ से बचे होंगे। जिस तरह पेशाब-पाख़ाना की ज़रूरत न पड़ेगी, उसी तरह मनी भी न निकलेगी। जमउल फ़वाइद में मुहद्दिस तब्रानी ने मुअ्जमुल कबीर से नक़ल किया है कि जन्नती हम-बिस्तर भी होंगे (लेकिन) न तो ख़ास अंग में कमज़ोरी आएगी; न शहवत ख़त्म होगी और न मर्द की मनी निकलेगी; न औरत की।

इस दुनिया की लज़्ज़तों में कदूरतें[1] मिली हुई हैं। जन्नत की लज़्ज़त में चूंकि कदूरत न होगी, इसलिए बिस्तर और जिस्म को लथेड़ देने वाला माद्दा[2] निकलेगा नहीं और इंज़ाल के वक़्त जो लज़्ज़त यहां महसूस होती है, उससे कहीं ज़्यादा बढ़-चढ़कर बग़ैर इंज़ाल के जन्नत में लज़्ज़त महसूस होगी और चूंकि जन्नत में हर चीज़ नफ़्स की ख़्वाहिश के मुताबिक़ होगी, इसलिए जब तक जी चाहेगा मुबाशरत (हम-बिस्तरी करेंगे और जब जी चाहेगा छोड़ देंगे)।

फ़ायदा : हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि मोमिन जब जन्नत में बच्चे की ख़्वाहिश करेगा तो उसका हमल और बच्चे के पैदाइश और उसकी (पूरी) उम्र जो (जन्नत वालों के लिए) मुक़र्रर है यानी 30 साल या 33 साल, यह सब कुछ ख़्वाहिश के मुताबिक़ एक घड़ी में हो जाएगा। —तिर्मिज़ी शरीफ़

1. गंदगी, गदला पन 2. पदार्थ

कुछ विद्वानों ने फ़रमाया कि जन्नत में जिमाअ् होगा (मगर) औलाद न होगी। ताऊस, मुजाहिद और इब्राहीम नख़ई (रह०) से यही रिवायत है। इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने ऊपर की हदीस नक़ल करके फ़रमाया जन्नती औलाद की ख़्वाहिश न करेगा। हज़रत अबू रिज़ीन अक़ीली ॐ से रसूले खुदा ﷺ ने इर्शाद रिवायत किया है कि जन्नत में जन्नतियों की औलाद न होगी। –तिर्मिज़ी

मतलब यह है कि जन्नत हर ख़्वाहिश के पूरा होने की जगह है। अगर जन्नतियों में से किसी की ख़्वाहिश औलाद होने के लिए होगी तो ख़्वाहिश का क़ानून के मुताबिक़ पूरा हो जाना ज़रूरी होगा, लेकिन चूंकि जन्नत में बच्चों के पैदा होने का सिलसिला मुनासिब न होगा इसलिए जन्नत वालों के दिलों मे अल्लाह तआ़ला औलाद की ख़्वाहिश पैदा न फ़रमायेंगे। रही यह बात कि जन्नत में बच्चों का पैदा होना क्यों मुनासिब नहीं है, इसकी वजह वहीं मालूम हो सकेगी।

जन्नत का बाज़ार जिसमें दिदारे इलाही होगा और हुस्न व जमाल में बढ़ोतरी होगी

हज़रत सईद बिन मुसैयिब (रह०) ताबई का ब्यान है कि मैंने हज़रत अबू हुरैरः ॐ से मुलाक़ात की। उन्होंने कहा कि मैं अल्लाह से सवाल करता हूँ कि मुझे और तुझे जन्नत के बाज़ार में इकट्ठा कर दे। हज़रत सईद (रह०) ने पूछा, क्या जन्नत में बाज़ार (भी) होगा? हज़रत अबू हुरैरः ॐ ने फ़रमाया कि हां रसूले खुदा ﷺ ने मुझे बताया है कि बिला शुब्हा जन्नती जब जन्नत में दाख़िल होंगे। तो अपने-अपने आमाल के मुताबिक़ दर्जों और मंज़िलों में उतरेंगे। उसके बाद दुनिया के दिनों में से जुमा के दिन की मिक़्दार में उनको इजाज़त दी जाएगी कि अपने रब की ज़ियारत करें। पस वे अपने परवरदिगार की ज़ियारत करेंगे। उस वक़्त अल्लाह तआ़ला अपने अ़र्श को ज़ाहिर फ़रमा देंगे और अपना दीदार

कराने के लिए जन्नत के एक बड़े बाग़ में ज़ाहिर होगी (जो लोग दीदारे इलाही के लिए जमा होंगे) उनके लिए नूर के, और मोतियों के, और याक़ूत के, और ज़बरजद के, और सोने के, और चांदी के मिंबर बिछाए जाएंगे (और रुत्बों के हिसाब से जन्नती उन पर बैठेंगे, नेमतों और नवाज़िशों की वजह से उनमें कोई घटिया और कम दर्जे का तो) न होगा (लेकिन) रुत्बे के एत्बार से जो सबसे कमतर होगी, मुश्क और ज़ाफ़रान के टीलों पर बैठेंगे और ये टीलों पर बैठने वाले कुर्सियों पर बैठने वालों को अपने से बेहतर ख़्याल न करेंगे (क्योंकि अगर ऐसा ख़्याल आ गया कि हम घटिया हैं तो रंज होगा और जन्नत में रंज का नाम नहीं)।

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या हम अपने परवरदिगार को देखेंगे? फ़रमाया, हां सूरज को और चौदहवीं रात के चाँद को देखने में कोई शुब्हा रखते हो? हमने अर्ज़ किया, नहीं। फ़रमाया, इसी तरह तुम अपने परवरदिगार को देखने में कोई शक न करोगे और उस मज्लिस में कोई शख़्स ऐसा बाक़ी न होगा, जिससे आमने-सामने होकर अल्लाह तआला की बात-चीत न हो। यहां तक कि हाज़िर लोगों में से कुछ को मुख़ातब करके अल्लाह तआला फ़रमायेगा ऐ फ़्लां के बेटे फ़्लां! क्या तुझे याद है कि फ़्लां दिन तू ने ऐसा-ऐसा कहा था। इस तरह अल्लाह तआला उसकी कुछ वादा-ख़िलाफ़ियां याद दिला देंगे जो उसने दुनिया में की थीं। वह शख़्स अर्ज़ करेगा कि ऐ परवरदिगार! क्या आपने मुझे बख़्श नहीं दिया? अल्लाह तआला फ़रमाएंगे हां, मैंने तुझे बख़्श दिया और मेरी बख़्शिश की फैलाव की वजह से आज तू इस रुत्बे को पहुंचा है? सब लोग इसी हाल में होंगे कि एक बादल आएगा और उन पर छा जाएगा और ऐसी ख़ुश्बू बारसाएगा कि उस-जैसी ख़ुश्बू उन्होंने कभी न पायी होगी। अल्लाह तआला का इर्शाद होगा कि उठो और उस चीज़ की तरफ़ चलो जो मैंने इज़्ज़त को बढ़ाने के लिए तैयार की है और जो तुमको पसंद आये उसको ले लो। फिर हम एक बाज़ार में आएंगे, जिसको फ़रिश्तों ने घेर रखा होगा। उस बाज़ार में वे चीज़ें होंगी कि उन-जैसी चीज़ों को न आंखों

ने देखा, न कानों ने सुना, न दिलों पर उनका गुज़र हुआ। बस जिस चीज़ को हमारा जी चाहेगा, हमारे लिए उठा लिया जाएगा (और यह सब कुछ बग़ैर मोल- तोल और बग़ैर क़ीमत के होगा) क्योंकि वहां न बेचा जाएगा, न ख़रीदा जाएगा।

बात आगे जारी रखते हुए इर्शाद फ़रमाया कि इस बाज़ार में जन्नती एक दूसरे से मुलाक़ात करेंगे। ऊंचे रुत्बे का (एक आदमी) किसी कम रुत्बे वाले से मुलाक़ात करेगा हालांकि अपने-अपने एहसास के मुताबिक़ उनमें कोई कमतर न होगी, तो उस शख़्स को बुलंद मर्तबे वाले का लिबास बहुत पसंद आ जाएगा लेकिन अभी उसकी बात ख़त्म न होने पायेगी कि उसका लिबास उस बुलंद मर्तबा वाले के लिबास से अच्छा मालूम होने लगेगा और यह इस वजह से कि जन्नत में यह मौक़ा नहीं रखा गया है कि कोई शख़्स (ज़रा भी) रंजीदा हो। इसके बाद हम अपने-अपने मकानों को रवाना हो जाएंगे। वहां पहुंचने पर हमारी बीवियां हमारा स्वागत करेंगी और **'मरहबा व अहलन'**[1] के बाद कहेंगी कि तुम उस हुस्न व जमाल को लेकर वापस हुए हो जो कि उस वक़्त न था, जबकि तुम हमसे जुदा हुए थे। हम जवाब में कहेंगे कि आज हमने अपने परवरदिगार के साथ हमनशीनी[2] की इज़्ज़त हासिल की है और हम इसी शान के साथ आने के लायक़ हैं।

—तिर्मिज़ी शरीफ़

हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि सरवरे आलम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुब्हा जन्नत में एक बाज़ार है जिसमें जन्नती हर जुमा को जाया करेंगे वहां उत्तरी हवा चलेगी जो जन्नतियों के चेहरों और कपड़ों को ख़ुश्बू से भर देगी और उनके हुस्न व जमाल में बढ़ोतरी हो जाएगी। पस वे ख़ूब ज़्यादा हसीन व जमील होकर अपने घर वालों के पास वापस जाएंगे। घर के लोग कहेंगे कि क़सम है ख़ुदा की, हमसे जुदा होने के बाद तुम्हारा हुस्न व जमाल बढ़ गया। इसके बाद वे कहेंगे कि ख़ुदा की क़सम! हमारे बाद तुम्हारे हुस्न व जमाल में (भी) बढ़ोतरी हो गयी है। —तिर्मिज़ी शरीफ़

1. मुबारक हो, मुबारक हो 2. साथ बैठना

जन्नत की सबसे बड़ी नेमत दीदारे इलाही

हज़रत सुहैब ﷺ से रिवायत है कि रसूले अकरम ﷺ ने फ़रमाया कि जब जन्नती जन्नत में दाख़िल हो जाएगा तो (उनसे) अल्लाह तआला सवाल फ़रमाएंगे। क्या तुम और कुछ चाहते हो जो मैं तुमको दूं? वे अर्ज़ करेंगे कि (हमको और क्या चाहिए, जो आप ने दिया है बहुत कुछ है) क्या आपने हमारे चेहरे रौशन नहीं कर दिए? और क्या आप ने हमको जन्नत में दाख़िल नहीं फ़रमा दिया? और क्या हमको दोज़ख़ से निजात नहीं दे दी? हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने फ़रमाया कि उनके इस जवाब के बाद पर्दा उठाया जाएगा, इसलिए वह अल्लाह तआला का दीदार करेंगे। जो कुछ उनको दिया जा चुका होगा। उस सबसे बढ़कर उनके नज़दीक अपने परवरदिगार की तरफ़ देखना प्यारा होगा। इसके बाद आंहज़रत ﷺ ने यह आयत तिलावत फ़रमायी :

للذين احسنوا الحسنى وزياده

'लिल्लज़ी न अहसनुल हुस्ना व ज़ियादः' —*मुस्लिम शरीफ़*

हज़रत अबू रिज़ीन अक़ीली ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या क़ियामत के दिन हम में से हर शख़्स अपने रब को इस तौर पर देखेगा कि (इतनी भारी भीड़ में एक साथ सबके देखने की वजह से) किसी के देखने में फ़र्क़ न आये? आप ने फ़रमाया, हां, (हर शख़्स) ख़ूब अच्छी तरह से देखेगा। मैंने अर्ज़ किया कि दुनिया की मख़्लूक़ में इसकी कोई मिसाल है? आप ﷺ ने फ़रमाया कि ऐ अबू रिज़ीन! क्या चौदहवीं के चांद को तुम में से हर शख़्स (पूरी भीड़ में) बे रोक-टोक नहीं देखता है? मैंने कहा, हां देखता है। फ़रमाया, चांद अल्लाह तआला की मख़्लूक़ में से एक मख़्लूक़ है, (जिसको एक साथ सब देख लेते हैं और किसी के देखने में कोई रुकावट नहीं होती) और अल्लाह (तो) बहुत ही बुज़ुर्गतर और बड़ा है (उसको एक ही वक़्त में सब क्यों न देख सकेंगे)। —अबूदाऊद

हज़रत जाबिर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया

कि इस बीच में कि जन्नती अपनी नेमतों में होंगे, अचानक ऊपर से एक नूर रौशन होगा। चुनांचे सरों को ऊपर उठाएंगे। अचानक क्या देखते हैं कि उन के ऊपर परवरदिगार आ़लम (जल्ल ल मज्दुहू) हैं। इन हज़रात के देखने पर रब तबारक व तआ़ला फ़रमाएंगे कि **'अस्सलामु अलैकुम या अहलल जन्न:'** (ऐ जन्नतियो! तुम पर सलाम हो!) बात आगे बढ़ाते हुए फ़रमाया कि (क़ुरआन में) जो अल्लाह जल्ल ल शानुहू ने **'सलामुन क़ौलम मिर्रब्बिरहीम'** फ़रमाया है। इसमें इसी का ज़िक्र है। इसके बाद फ़रमाया कि (सलाम के बाद) अल्लाह तआ़ला शानुहू जन्नतियों को और जन्नती अपने परवरदिगार को देखते रहेंगे यहां तक कि अल्लाह तआ़ला परदे में हो जाएंगे और उसका नूर बाक़ी रह जाएगा।

आंहज़रत ﷺ ने यह फ़रमाया कि जन्नती जब तक अपने रब को देखते रहेंगे, दूसरी किसी भी नेमत की तरफ़ ध्यान न देंगे। —इब्ने माजा

हज़रत इब्ने उमर ؓ से रिवायत है कि रसूले खुदा ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया है कि जन्नत में रुत्बे के एतबार से मामूली शख़्स वह होगा जो अपने बाग़ों और तख़्त और बीवियों और ख़िदमतगुज़ारों और (दूसरी) नेमतों को एक साल की दूरी में फैला हुआ देखेगा (यानी ये चीज़ें इतनी दूरी में फैली हुई होंगी कि दुनिया में कोई आदमी चीज़ों को देखने के लिए निकले तो हज़ार वर्ष तक चलता रहे) और अल्लाह तआ़ला के नज़दीक सबसे बड़े रुत्बे का जन्नती वह होगा जो सुबह-शाम दीदार इलाही का शर्फ़ हासिल करेगा। इसके बाद आप ﷺ ने यह आयत तिलावत फ़रमाई **'वुजूहुंय्यौ म इज़िन नाज़िर: इला रब्बिहा नाज़िर:'** (बहुत से चेहरे उस दिन (तर-व-ताज़ा) खुश होंगे, अपने रब की तरफ़ देखते हुए। —तिर्मिज़ी शरीफ़

यह सूर: क़ियाम: की आयत है। इसकी तिलावत से दीदारे इलाही को क़ुरआन शरीफ़ से साबित करना मक़सूद है। एक हदीस में है कि मामूली दर्जे का जन्नती अपने मुल्क को दो हज़ार साल की दूरी में फैला हुआ देखेगा और उसके आख़िरी हिस्से को (बेतकल्लुफ़ बिल्कुल) उसी तरह देखता होगा जिस तरह उसके क़रीब वाले हिस्से को देखता होगा। —अत्तग़ीब वत्तर्हीब

हदीस शरीफ़ में छोटे और ऊंचे जन्नती के मर्तबे का ज़िक्र है, उसके दर्मियान में और ख़ुदा जाने कितने दर्जे होंगे और मर्तबों के एतबार से कितनी नेमतों से मालामाल होंगे। दीदारे इलाही तो सब ही जन्नतियों को नसीब होगा, लेकिन सबसे ज़्यादा एज़ाज़ व इकराम जिसका होगा उसको यह सआदत नसीब होगी कि सुबह-शाम दीदारे इलाही से नवाज़ा जाएगा। (जअ़ल्नीयल्लाहु मिन्हुम)

फ़ायदा : अल्लाह तआ़ला को दुनिया में नहीं देख सकते, जन्नत में मोमिन लोग देखेंगे और काफ़िर व मुनाफ़िक़ इस नेमत से महरूम होंगे। जिससे बढ़कर कोई नेमत नहीं। यहां यह जान लेना ज़रूरी है कि अल्लाह तआ़ला जिस्म और जेहत (दिशा) से पाक है। अल्लाह को जन्नती देखेंगे। यह हक़ है। जिस पर ईमान लाना फ़र्ज़ है लेकिन कैफ़ियत (स्थिति) मालूम नहीं।

गुनाहगार मुसलमानों का दोज़ख़ से निकल कर जन्नत में दाख़िल होना

भारी तादाद में वे मुसलमान भी दोज़ख़ में चले जाएंगे जो बड़े-बड़े गुनाह करते थे। यह तो ज़रूरी नहीं है कि बड़े गुनाहों का हर करने वाला दोज़ख़ में ज़रूर ही जाए क्योंकि अल्लाह तआ़ला बहुतों को बख़्श देंगे और दोज़ख़ में डालने से बचाए रखेंगे और यह भी ज़रूरी नहीं है कि सब ही बख़्श दिए जाएं क्योंकि रिवायत से साबित होता है कि बहुत से गुनाहगार मुसलमान दोज़ख़ में जाएंगे और फिर सज़ा भुगतकर दोज़ख़ से निकाल कर जन्नत में दाख़िल कर दिए जाएंगे। जन्नत से कभी कोई न निकलेगा; न निकाला जाएगा और दोज़ख़ से गुनाहगार मुसलमानों को निकाल कर जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा। और दोज़ख़ में सिर्फ़ मुशिरक व काफ़िर ही रह जाएंगे जो हमेशा दोज़ख़ में रहेंगे।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ۝

वल्लज़ी न क फ़ रू व कज़्ज़बू बिआयातिना उलाइ क अस्हाबुन्नार। हुम फ़ीहा ख़ालिदून।

बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत अबू हुरैरः ؓ से रिवायत है कि रसूले खुदा ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि दोज़ख़ की पीठ पर पुलसिरात रख दी जाएगी और रसूलों में से अपनी उम्मत को लेकर सबसे पहले मैं उसके ऊपर से गुज़रूंगा। उस दिन रसूलों के सिवा कोई न बोलता होगा और उनका बोलना उस दिन यह होगा कि 'अल्लाहुम्म म सल्लिम-सल्लिम' (ऐ अल्लाह! सलामत रख, सलामत रख) और दोज़ख़ में सादान[1] के कांटों की तरह बड़ी-बड़ी संडासियां होंगी जिनकी बड़ाई का अल्लाह ही को इल्म है (इन संडासियों के सर ज़ंबूर की तरह मुड़े हुए होंगे और दोज़ख़ से निकल-निकल कर) लोगों को उनके (बद) आमाल की वजह से उचक रही होंगी। पस उनके उचकने की वजह से कोई तो (पुलसिरात से दोज़ख़ में गिर कर) हलाक हो जाएगा। (ये काफ़िर होंगे) और कोई कट कर दोज़ख़ में गिर जाएगा फिर बाद में निजात पाएगा (ये गुनाहगार मुसलमान होंगे)। यहां तक कि जब अल्लाह तआ़ला अपने बंदों के दर्मियान फ़ैसला फ़रमा कर फ़ारिग़ हो जाएगा और **'ला इला ह इल्लल्लाह'** की गवाही देने वालों को दोज़ख़ से निकालने का इरादा फ़रमाएगा, तो फ़रिश्तों को हुक्म होगा कि जो शख़्स अल्लाह की इबादत करता था उसको निकाल लो। चुनांचे ऐसे लोगों को फ़रिश्ते निकाल लेंगे और उनको सज्दों के निशानों से पहचानेंगे (क्योंकि) अल्लाह तआ़ला ने दोज़ख़ की आग पर यह हराम फ़रमा दिया है कि सज्दे के निशान को जलाए (जो माथे पर होते हैं)।

चुनांचे ये लोग दोज़ख़ से निकाल लिए जाएंगे, जो जल-भुन चुके होंगे। दोज़ख़ से निकाल कर उन पर आबे-हयात (जीव-अमृत) डाल दिया जाएगा जिसकी वजह से वे इस तरह उग जाएंगे जैसे बहते हुए पानी के घास-तिन्के पर (जल्द-से-जल्द) बीज उग जाता है।[2] मतलब यह है कि

1. सादान अरब मे एक पेड़ का नाम है
2. मिश्कात शरीफ़

अचानक उनकी हालत बदल जाए और एक दम भले-चंगे ख़ूबसूरत हो जाएंगे।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जब जन्नत वाले जन्नत में और दोज़ख़ वाले दोज़ख़ में दाख़िल हो जाएंगे तो अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि जिसके दिल में राई के दाने के बरादर (भी) ईमान हो, उसको दोज़ख़ से निकाल लो। चुनांचे निकाल लिए जाएंगे जो जलकर कोयला हो चुके होंगे, इसलिए उनको फिर नहरुल हयात[1] में डाल दिया जाएगा। —अल-हदीस बुख़ारी व मुस्लिम

एक हदीस में है कि वे हज़रात मोती की तरह नरुहल हयात से निकल कर जन्नत में दाख़िल होंगे। —बुख़ारी व मुस्लिम

हज़रत अनस ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम ﷺ ने फ़रमाया कि गुनाह करने की सज़ा में बहुत-से लोगों को (दोज़ख़ की आग) के झुलसने का असर पहुंचेगा। फिर अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल व रहमत से जन्नत में दाख़िल फ़रमा देंगे। पस उनको 'जहन्नमी' कहा जाएगा।

इन हज़रात को जहन्नमी कहना इनकी बुराई करने के लिए न होगा बल्कि अल्लाह तआला की रहमत और मेहरबानी याद दिलाने के लिए होगा ताकि दोज़ख़ की तकलीफ़ को याद करके जन्नत के लुत्फ़ में बढ़ोतरी होती रहे।

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि रसूले अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि दोज़ख़ में दाख़िल होने वालों में से दो शख़्स बहुत चीख़ व पुकार शुरू कर देंगे। अल्लाह तआला हुक्म देंगे कि इनको निकाल लो। फिर उनसे

1. नहरुल हयात यानी ज़िंदगी की नहर। पहली रिवायत से मालूम हुआ कि उन पर 'आबे हयात' डाला जाएगा और इस रिवायत से मालूम हुआ कि वे 'नहरुल हयात' में डाल दिए जायेंगे। लेकिन यह इख़्तिलाफ़ हक़ीक़ी नहीं है। दोनों बातें एक ही हैं, जब नहर में पूरा ग़ोता दे दिया जाएगा तो उनका नहर में डाला जाना भी सही हुआ और उन पर पानी का पड़ना भी सही हुआ।

फ़रमायेंगे कि तुम दोनों इतना क्यों चीख़ रहे हो? वे अर्ज़ करेंगे कि हमने इसलिए किया कि आप हम पर रहम फ़रमाएं। अल्लाह जल्ल ल शानुहू का इर्शाद होगा कि बेशक मेरी रहमत तुम्हारे लिए यह है कि दोज़ख़ में जिस जगह थे वहीं (वापस) जाकर अपनी जानों को डाल दो। चुनांचे उनमें से एक अपनी जान को दोज़ख़ में डाल देगा, जिस पर अल्लाह तआला दोज़ख़ को ठंढा और सलामती वाला बना देगा और दूसरा शख़्स रह जाएगा जो अपने को दोज़ख़ में न डालेगा। उससे अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि तुझे इस चीज़ से किसने रोका कि तू अपने को दोज़ख़ में न डाले? वह अर्ज़ करेगा कि ऐ रब! मैं उम्मीद करता हूं कि जब मुझे आप ने दोज़ख़ से निकाल दिया तो अब उसमें वापस न करेंगे। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे-जा! तेरी उम्मीद पूरी कर दी गई। इसके बाद दोनों शख़्स अल्लाह की रहमत से जन्नत में दाख़िल कर दिए जाएंगे। –तिर्मिज़ी

जन्नत में सबसे आख़िर में जाने वाला

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ का ब्यान है कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं उस शख़्स को अच्छी तरह जानता हूं जो सबसे आख़िर में दोज़ख़ से निकलेगा और जन्नत में जाने वालों में सबसे आख़िरी होगा। यह शख़्स पेट के बल घिसटता हुआ दोज़ख़ से निकलेगा। पस हक़ तआला फ़रमाएगा कि जा जन्नत में दाख़िल हो जा। वह जन्नत के पास आएगा तो उस को ऐसा मालूम होगा कि भरी हुई है (कहीं जगह नहीं)। अर्ज़ करेगा कि ऐ रब! मैंने इसे भरी हुई पाया (जगह तो नहीं फिर अंदर कैसे जाऊं?) हक़ तआला फ़रमाएगा कि जा जन्नत में दाख़िल हो जा। (तुझे) दुनिया के बराबर जगह दी गई और उसी क़दर दस गुना ज़मीन और दी! यह सुनकर वह अर्ज़ करेगा। क्या आप मुझ से मज़ाक़ फ़रमाते हैं, हालांकि आप (सबके) बादशाह हैं। (हज़रत इब्ने मस्ऊद ﷺ का ब्यान है कि) मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को देखा (कि यह फ़रमाकर) हँसे, यहां तक कि आप की आख़िरी दाढ़ें भी ज़ाहिर हो गयीं (कि बेचारा इतनी भारी देन को, जिसका उसने कभी सपना भी

नहीं देखा था, मज़ाक़ समझा) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ फ़रमाते हैं कि सहाबा किराम ﷺ के माहौल में यह बात कही जाया करती थी कि यह शख़्स सबसे कम दर्जे का जन्नती होगा, जो सबसे आख़िर में दाख़िल होगा और दुनिया और दुनिया जैसी दस गुना जगह पा ली। —बुख़ारी शरीफ़

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ से आख़िरी जन्नती के दाख़िले का वाक़िआ इससे ज़्यादा तफ़सील के साथ भी रिवायत किया गया है। फ़रमाते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि सबसे आख़िरी शख़्स जो जन्नत में जाएगा। वह वह होगा जो दोज़ख़ से निकलने की हिम्मत करके (कभी) पांव चलेगा और कभी गिर पड़ेगा और कभी उसको आग की लपट झुलसेगी। पस जब (गिरता-पड़ता) दोज़ख़ से निकल कर आगे बढ़ जाएगा तो उसकी तरफ़ देखकर कहेगा कि बरकत वाला है (वह सबसे बड़ा ख़ुदा) जिसने मुझे तुझ से निजात बख़्शी। सच तो यह है कि अल्लाह तआला ने मुझे वह नेमत दी है जो पहलों-पिछलों में से किसी को भी न दी। इसके बाद एक पेड़ के क़रीब कर दीजिए ताकि उसका साया हासिल करूँ और पानी पीयूं (जो इसके नीचे बह रहा है)। हक़ तआला फ़रमाएगा- अजब नहीं, अगर मैं तुझे यह नेमत दे दूं तो इसके बाद तो और कोई दरख़्वास्त करने लगे? वह अर्ज़ करेगा कि ऐ रब! नहीं ऐसा न करूंगा और अहद करेगा कि इसके बाद और कुछ न मांगूंगा। और अल्लाह उसको मजबूर समझेगा (कि इस वक़्त इसकी नीयत यही है, मगर निबाह न सकेगा) क्योंकि उसको वह चीज़ नज़र आएगी, जिसके बिना सब्र ही न कर सकेगा, चुनांचे पानी पीएगा। इसके बाद उनकी नज़र के सामने दूसरा पेड़ बुलंद कर दिया जाएगा जो पहले पेड़ से बहुत अच्छा होगा। पस (उस पर नज़र पड़ेगी तो) अर्ज़ करेगा कि ऐ रब! मुझे उसके नज़दीक पहुंचा दे, ताकि उसके नीचे बहने वाला पानी पीयूं और उसके साए में बैठूं (और उसके अलावा आप से कुछ न मांगूंगा)। इर्शाद होगा कि ऐ इब्ने आदम! क्या तुने मुझ से अहद नहीं किया था कि और कुछ न मागूंगा अजब नहीं, अगर मैं तुझे उसके क़रीब कर दूं तो फिर और कुछ मांगने लगे? पस वह अहद करेगा कि इसके सिवा और कुछ न मांगूंगा। अल्लाह तआला उसको मजबूर समझेगा क्योंकि इसके बाद उस चीज़ पर

नज़र पड़ेगी जिसके बग़ैर सब्र ही न कर सकेगा, पस उस पेड़ के पास अल्लाह तआला पहुंचा देगा और वह उसका साया लेगा और पानी पीएगा। इसके बाद जन्नत के दरवाज़े के क़रीब एक पेड़ उसके सामने कर दिया जाएगा जो पहले दोनों पेड़ों से ज़्यादा ख़ूबसूरत होगा। पस वह अर्ज़ करेगा कि ऐ रब! मुझे उस पेड़ के क़रीब पहुंचा दीजिए ताकि उसका साया ले लूं और पानी पी लूं। इसके सिवा आप से कुछ न मांगूंगा। इर्शाद होगा कि ऐ इब्ने आदम! क्या तूने मुझसे पक्का वायदा न किया था कि और कुछ न मांगूंगा। अर्ज़ करेगा कि बेशक! ऐ रब अहद किया था (मगर इस बार और सवाल पूरा कर दीजिए) इसके सिवा आपसे कुछ न मांगूंगा और हक़ तआला उसे मजबूर समझेगा क्योंकि उसे वह चीज़ नज़र आयेगी जिसके बग़ैर सब्र कर ही न सकेगा। चुनांचे उस पेड़ के क़रीब कर दिया जाएगा, जब उसके क़रीब हो जायेगा तो जन्नतियों की आवाज़ें सुनाई देंगी। (फिर ललचाएगा) और कहेगा कि ऐ रब! मुझे इसके अदंर पहुंचा दीजिए। इर्शाद होगा कि ऐ इब्ने आदम! आख़िर तेरा सवाल करना किसी तरह ख़त्म भी होगा? क्या तू इससे राज़ी होगा कि तुझे दुनिया के बराबर और दे दूं और उसके साथ उतना ही और दे दूं। वह अर्ज़ करेगा- आप मुझसे मज़ाक़ फ़रमा रहे हैं हालांकि आप रब्बुल आलमीन हैं? इस वाक़िए को ब्यान करते हुए हज़रत इब्ने मस्ऊद ﷺ हँसे और (हाज़िर लोगों से) फ़रमाया कि तुम मुझ से मालूम नहीं करते कि मैं किस लिए हँसा? हाज़िर लोगों ने अर्ज़ किया फ़रमाइए आप क्यों हँसे? फ़रमाया कि इसी तरह अल्लाह के रसूल ﷺ (इस हदीस को ब्यान करके) हँसे थे। सहाबा किराम ﷺ ने पूछा! ऐ अल्लाह के रसूल! आप क्यों हँसे? फ़रमाया कि अल्लाह के हँसने पर मुझे हँसी आ गई जबकि बन्दे ने कहा क्या आप मुझ से मज़ाक़ फ़रमाते हैं हालांकि आप पूरी दुनिया के रब हैं। हक़ तआला फ़रमाएंगे कि तुझ से मज़ाक़ नहीं करता (बल्कि वाक़ई तुझे इतना ही दिया) जो भी चाहूं उस पर क़ुदरत रखता हूं। —मुस्लिम शरीफ़

यह वक़िआ क़रीब-क़रीब इसी तरह हज़रत अबू हुरैरः ﷺ और हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है। हज़रत अबू हुरैरः ﷺ की रिवायत के

आख़िर में है कि (वह शख़्स बार-बार अपने अहद तोड़कर आख़िरकार जन्नत में दाख़िल हो जाएगा तो) अल्लाह तआला फ़रमाएंगे जो तेरी आरज़ू हो, ले ले (वह आरज़ूएं ज़ाहिर करता जाएगा और मुराद पाता जाएगा) यहां तक कि उसकी आरज़ूएं ख़त्म हो जाएंगी। अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाएंगे कि (और) तमन्ना कर ले। (देख) फ़्लां नेमत रह गयी है (उस) की आरज़ू कर ले (और) फ़्लां चीज़ (बाक़ी है उस) की तमन्ना कर ले। उस तरह से अल्लाह तआला उसकी आरज़ूएं याद दिलाते जाएंगे (और हर आरज़ू पूरी करते रहेंगे) यहां तक कि (जब) आरज़ूएं ख़त्म हो जाएंगी (तो) अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि जो कुछ तूने तमन्नाएं की हैं, वह सब तुझको दिया और इतना ही और दिया। —मिश्कात (बुख़ारी और मुस्लिम से)

हज़रत अबू सईद ﷺ की रिवायत में है कि अल्लाह जल्ल ल शानुहू उससे फ़रमाएंगे कि तूने जो-जो तमन्नाएं की हैं, वह सब तुझे दिया और उसका दस गुना और दिया। इसके बाद अपने (जन्नती) घर में दाख़िल होगा और हूरे ईन में से उसकी दो बीवियां उसके पास आएंगी और कहेंगी **'अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अह्या क लना व अह्याना लक'** सब तारीफ़ अल्लाह के लिए हैं जिसने हमारे लिए तुझको जन्नत दी। हमेशा की ज़िंदगी बख़्श दी और जिसने हमको तेरे लिए ज़िंदगी दी। वह शख़्स कहेगा कि जो कुछ मिला है किसी को भी नहीं मिला। —मिश्कात (मुस्लिम)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ ने फ़रमाया कि बिला शुब्हा सबसे आख़िरी शख़्स जो जन्नत में जाएगा, उससे परवरदिगार फ़रमाएंगे कि खड़ा हो, जन्नत में दाख़िल हो जा। यह सुनकर वह शख़्स ग़ुस्से की तरह मुंह बनाकर कहेगा कि (जन्नत में जगह है कहां कि दाख़िल हो जाऊँ?) मेरे लिए आपने कुछ बाक़ी रखा भी है? अल्लाह जल्ल ल शानुहू फ़रमाएंगे कि हां (तेरे लिए बहुत कुछ है) जितने फैलाव और दूरी पर सूरज निकलता या छिपता है, उतना ले ले।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ने इर्शाद फ़रमाया कि सबसे कम दर्जे का जन्नती वह होगा जिसके लिए अस्सी हज़ार-

ख़ादिम और बहत्तर बीवियां होंगी और इसके लिए मोतियों और ज़बरजद व याक़ूत से बनाया हुआ एक क़ुब्बा होगा जिस की लंबाई- चौड़ाई इतनी होगी जितनी जाबिया की जगह से सन्आ तक की दूरी है। (इन दोनों जगहों में मीलों का फ़ासला है।) —तिर्मिज़ी

हज़रत अबूज़र ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूल अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुब्हा मैं उस शख़्स को जानता हूं जो सबसे आख़िर में जन्नत में दाख़िल होगा और सबसे आख़िर में दोज़ख़ से निकलेगा। उस शख़्स को क़ियामत के दिन लाया जाएगा और कहा जाएगा कि उसके सामने उसके छोटे गुनाह पेश करो और बड़े गनाहों को छिपाए रखो, चुनांचे उसके छोटे गुनाह उस पर पेश किए जाएंगे और कहा जाएगा कि तूने फ़्लां दिन फ़्लां-फ़्लां अमल किया था। वह इक़रार करेगा, इंकार न कर सकेगा और (दिल-ही-दिल में) डरता रहेगा कि कहीं मेरे बड़े गुनाह न पेश कर दिए जाएं। पस उससे कहा जाएगा कि (जा) तेरे लिए हर गुनाह के बदले एक नेकी है (यह बख़्शिश और नवाज़िश देखकर) वह कह उठेगा कि ऐ रब! मैंने और बहुत से गुनाह किए हैं जिनको यहां (फ़िहरिस्त में) नहीं देख रहा हूं (उनके बदले में भी एक-एक नेकी मिलना चाहिए)। रावी ब्यान करते हैं कि मैंने रसूले ख़ुदा ﷺ को देखा कि इस बात को ब्यान फ़रमाते हुए आपको हँसी आ गयी जिससे आपकी मुबारक दाढ़ें ज़ाहिर हो गयीं। —मुस्लिम शरीफ़

ऊपर की रिवायतों से छोटे दर्जे के जन्नती की इज़्ज़त और शान मालूम हुई। जब छोटे जन्नती की यह इज़्ज़त है और उसके लिए नेमत व दौलत की यह नवाज़िश है तो छोटे से बड़े तक कि दर्मियान के दर्जे वालों को और ख़ुद सबसे बड़े जन्नती को क्या मिलेगा, इसका अंदाज़ा इसी से कर लिया जाए। छोटे जन्नती को जो कुछ मिलेगा उसका ज़िक्र रिवायतों में कहीं इस तरह है कि एक हज़ार साल की दूरी में अपनी नेमतों को देखेगा और किसी रिवायत में है कि दो हज़ार साल की दूरी में उसकी नेमतें फैली हुई होंगी और किसी रिवायत में है कि छोटे जन्नती को जो जगह मिलेगी, पूरी दुनिया और दुनिया जैसी दस गुनी जगहों के बराबर होगी और किसी

रिवायत में दूसरे तरीक़े पर छोटे जन्नती की नेमतों का ज़िक्र फ़रमाया है। यह सब सामने के लोगों को समझाने के लिए है। यह फ़र्क़ हक़ीक़तों का फ़र्क़ नहीं है। हाज़िर लोगों में से उनकी अपनी क़ाबलियत के मुताबिक़ जिन लफ़्ज़ों में मुनासिब समझा, इर्शाद फ़रमा दिया और यह भी कहा जा सकता है कि 'छोटे' से 'छोटा' मुराद नहीं है, बल्कि चूंकि छोटे दर्जे में भी बहुत से दर्जे होंगे, इसलिए रुत्बे के मुताबिक़ फैली जगह और बड़ी नेमतों का ज़िक्र फ़रमा दिया।

यहां यह बात ज़िक्र के क़ाबिल है कि दुनिया वाले दुनिया में जो कुछ देखते और समझते हैं, उसी के मुताबिक़ समझाने ही से कुछ ग़ैब की चीज़ों का अन्दाज़ा लगा सकते हैं। इसलिए उन्हीं की बात-चीत के अंदाज़ जिसे हर शख़्स अपनी आंख से देख लेगा और ख़्याल व गुमान और अंदाज़ से बढ़कर और सुनकर जो कुछ समझता था, उससे कहीं ज़्यादा पाएगा।

ख़ुदा का इंकार करने वाले जन्नत के फैलाव के बारे में शक करते हैं और पूछते हैं कि इतनी बड़ी जन्नत कहां होगी? हम कहते हैं कि वह तो अब भी मौजूद है और अल्लाह पाक की मख़्लूक़ है। हमारे बाप हज़रत आदम (ﷺ) उस में रह कर आए हैं। कम इल्म और कम नज़र लोगों के इल्म और पकड़ के दायरे से अगर बाहर है ते क्या अ़जब है। अभी तो इल्म व अक़्ल का दावा करने वाले तो पूरी ज़मीन की मख़्लूक़ का पता नहीं चला सके और सैयारों (ग्रहों) तक नहीं पहुंच सके। अगर ऐसी मख़्लूक़ का इल्म नहीं जो ज़मीनी व आसमानी निज़ाम से बाहर है तो ताज्जुब की कोई बात नहीं है। कुछ सौ साल पहले तक तो इंसान को अमरीका तक का पता नहीं था। जब कायनात के पैदा करने वाले ने ज़ाहिर कर दिया तो इसांन यहां अपनी दुनिया बसाने लगा। वह क़ादिर (अल्लाह) 'कुन' (हो जा) से सब कुछ बना सकता है, उसके बारे में यह राय रखना कि सिर्फ़ आसमान व ज़मीन के अंदर ही पैदा फ़रमा सकता है, यह बड़ी नादानी की बात है। दुनिया के इल्म के दावेदारों पर कुंए के मेंढक की मिसाल पूरी होती है, जिस तरह मेंढक अपने इल्म के मुताबिक़ सिर्फ़ कुंए ही को सबसे बड़ी जगह

समझता है और बड़े-बड़े समुद्रों को नहीं जानता। इसी तरह कायनात की खोज लगाने वाले इन चीज़ों के इंकारी हैं जो उनके इल्म से बाहर हैं। जन्नत के इंकारी अपनी बदबख़्ती की वजह से जन्नत से महरूम होंगे और दोज़ख़ में दाख़िल होंगे। **'ला यस्लाहा इल्लल अश्क़ल्लज़ी कज़्ज़ ब व त वल्ला'** (बेशक जन्नत बहुत बड़ी जगह है, ज़मीन और आसमान और उनके अंदर की तमाम कायनात उसके फैलाव और नेमतों के सामने कुछ भी नहीं है, वहां के फैलाव का क्या ठिकाना है?

क़ुरआन शरीफ़ में फ़रमाया :

وَإِذَا رَأَيْتَ ثَمَّ رَأَيْتَ نَعِيمًا وَّمُلْكًا كَبِيرًا (الدهر)

व इज़ा र ऐ त सम्म म र ऐ त नईमौंव्व मुल्कन कबीरा।

'और (ऐ मुख़ातिब!) जब तू वहां देखेगा तो बड़ी नेमत और बड़ा मुल्क देखेगा।'

इस मुल्क की लम्बाई-चौड़ाई कितनी होगी। छोटे जन्नती की जगह का ख़्याल करके इसका अंदाज़ा लगा लो।

जन्नत में हमेशा रहेंगे

क़ुरआन शरीफ़ में इर्शाद है :

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ أُولٰئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ○ جَزَاؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِينَ فِيهَا أَبَدًا رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ، ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهُ ○

इन्नल्लज़ी न आम नू व अमिलुस्सालिहाति उलाइ क हुम ख़ैरुल बरीयः। जज़ाउहुम इन द रब्बिहिम जन्नातु अद्निन तजरी मिन तह्तिहल अन्हारु ख़ालिदी न फ़ीहा अ ब दा। रज़ियल्लाहु अन्हुम

व रज़ू अ़न्हु। ज़ालि क लिमन ख़शि य रब्बः।

'बिला शुब्हा जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया और भले काम अंजाम दिए, ये लोग बेहतरीन मख़्लूक़ हैं। उनका बदला उनके रब के पास हमेशा रहने की जन्नतें हैं, जिनके नीचे नहरें जारी होंगी। इनमें वे हमेशा रहेंगे। अल्लाह उनसे राज़ी और वे अल्लाह से राज़ी रहेंगे। (यह जन्नत व रज़ामंदी उसके लिए हैं जो अपने रब से डरता है।)

यह जो फ़रमाया कि वे अपने रब से राज़ी होंगे, उसका मतलब यह है कि अपने परवरदिगार की दी हुई नेमतों में मग्न होंगे। हर ख़्वाहिश पूरी होगी। अल्लाह जल्ल ल शानुहू की देन पर दिल की गहराई से ख़ुश और शुक्रगुज़ार होंगे, किसी चीज़ की कमी न होगी।

सूरः दुख़ान में इर्शाद फ़रमाया :

يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ اٰمِنِيْنَ لَايَذُوْقُوْنَ فِيْهَا الْمَوْتَ اِلَّا الْمَوْتَةَ الْاُوْلٰى
وَوَقٰهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ○ فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكَ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ○

यद्‌ऊ न फ़ीहा बिकुल्लि फ़ाकिहतिन आ मि नी न ला यज़ूक़ू न फ़ीहल मौ त इल्लल मौततल ऊला व वक़ाहुम अ़ज़ाबल जहीम। फ़ज़्लम मिर्रब्बि क ज़ालि क हुवल फ़ौज़ुल अ़ज़ीम।

'उसमें अमन-चैन से हर क़िस्म के मेवे मंगाते होंगे (और) वहां मौत का मज़ा न चखेंगे। वह पहली मौत जो दुनिया में आ चुकी (उसके बाद मौत न होगी) और अल्लाह उनको दोज़ख़ के अ़ज़ाब से महफ़ूज़ फ़रमाएगा कि (जब) अल्लाह तआ़ला जन्नतियों को जन्नत में और दोज़ख़ियों को दोज़ख़ में दाख़िल फ़रमा चुकेगा (और दोज़ख़ में ऐसा कोई शख़्स न रहेगा, जिसे सज़ा भुगतने के बाद जन्नत में जाना हो) तो एक ऐलान करने वाला ज़ोर से पुकार कर ऐलान कर देगा कि ऐ जन्नत वालो! मौत नहीं और ऐ दोज़ख़ वालो! मौत नहीं! हर एक को उसी में रहना है जिसमें अब है।

—तर्ग़ीब (बुख़ारी व मुस्लिम)

हज़रत जाबिर ﷺ से रिवायत है कि एक शख़्स ने सवाल किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! क्या जन्नती सोएंगे? आंहज़रत ﷺ ने जवाब दिया कि नींद मौत का भाई है और जन्नतियों को मौत न आयेगी (इसलिए नींद भी न आयेगी)। –मिश्कात

रोग या कमज़ोरी या थकन और मेहनत करने की वजह से नींद आती है। चूंकि जन्नत में न मेहनत है, न मर्ज़ है, न थकन है, न कमज़ोरी। इसलिए नींद आने की ज़रूरत न होगी, न नींद का तक़ाज़ा होगा। दुनिया में भी नींद असली मक़सद नहीं है चूंकि थकन के बाद सो जाने से तबीयत हल्की हो जाती है और इंसान मुस्तैद हो जाता है इसलिए नींद को पसंद करता है। अगर नींद न आये तो दवा खा कर नींद लाने की कोशिश की जाती है, लेकिन जहां थकन ही न होगी, वहां सोना पसंद न होगा क्योंकि अगर सो जाएं तो जितनी देर सोएंगे, ख़्वाहमख़्वाह उतनी देर नेमतों से महरूम रहेंगे।

जन्नत में वह सब कुछ होगा जिसकी चाह होगी

सूरः ज़ुख़रुफ़ में फ़रमाया :

وَفِيهَا مَا تَشْتَهِيهِ الْأَنْفُسُ وَتَلَذُّ الْأَعْيُنُ ۚ وَأَنْتُمْ فِيهَا خَالِدُونَ

व फ़ीहा मा तश्तहीहिल अन्फ़ुसु व त लज़्ज़ुल अअ़्युन। व अन्तुम फ़ीहा ख़ालीदून।

'और वहां वह है नफ़्सों को जिसकी ख़्वाहिश होगी और जिससे आंखों को लज़्ज़त होगी और उनसे कह दिया जाएगा, तुम उसमें हमेशा रहने वाले हो।'

जब सब कुछ नफ़्स की ख़्वाहिश के मुताबिक़ होगा तो किसी तरह की रूह या जिस्म की तकलीफ़ का नाम भी न होगा। दुनिया में कोई शख़्स जितना भी बड़ा हो जाए, बहरहाल उसको तबीयत के ख़िलाफ़ बातें पेश आती हैं। कोई कैसा भी दौलतमंद हो और कितना ही बड़ा बादशाह हो हर

ख़्वाहिश पूरी नहीं होती। न यह दुनिया इस क़ाबिल है कि इसमें हर ख़्वाहिश पूरी हो जाए। पाख़ाना जाने को किस की ख़्वाहिश होती है मगर मजबूर होकर हर शख़्स को जाना पड़ता है।

यह जन्नत ही में नवाज़िश होगी कि नफ़्स की ख़्वाहिश के ख़िलाफ़ कुछ भी न होगा। '**व लकुम फ़ीहा मा तश्तही अन्फ़ुसुकुम व लकुम फ़ीहा मा तद्दऊन**' का एलान कर दिया जाएगा।

जन्नती न जन्नत से निकाले जाएंगे न खुद वहां से कहीं जाना पसंद करेंगे

सूरः हिज्र में इर्शाद है :

لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا نَصَبٌ وَّمَا هُمْ مِّنْهَا بِمُخْرَجِيْنَ ۝

ला यमस्सुहुम फ़ीहा नसबुंव मा हुम मिन्हा बिमुख़्रजीन।

'न उनको ज़रा कोई तकलीफ़ पहुंचेगी और न वे वहां से निकाले जाएंगे।'

सूरः कहफ़ के आख़िर में फ़रमाया :

إِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ۝
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا ۝

इन्नल्लज़ी न आमनू व अमिलुस्सालिहाति कानत लहुम जन्नातुल फ़िर्दौसि नुज़ुला। ख़ालिदी न फ़ीहा ला यब्गू न अन्हा हि व ला०

'बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए उनकी मेहमानी के लिए फ़िर्दौस (बहिश्त) के बाग़ होंगे, जिनमें वे हमेशा रहेंगे। वहां से कहीं जाना न चाहेंगे।'

चूंकि कोई तकलीफ़ ही न होगी और हर ख़्वाहिश पूरी की जाएगी इसलिए वहां से कहीं जाने को जी न चाहेगा और न कहीं जाने की ज़रूरत होगी। सब कुछ वहीं मौजूद होगा। करोड़ों और अरबों मील जन्नत का फैलाव होगा। आपस में मिलना-जुलना होगा, और बेतकल्लुफ़ी होगी। नाते-

रिश्तेदार, दोस्त-अहबाब सब वहीं मौजूद होंगे। कायनात का पैदा करने वाला राज़ी होगा। फिर इस शक्ल में वहां से बाहर जाने का इरादा करना बेकार है।

अल्लाह की तरफ़ से रज़ामंदी का ऐलान

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﵁ से रिवायत है कि रसूले अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बेशक अल्लाह जन्नत वालों से फ़रमाएंगे कि ऐ जन्नत वालो! वे अ़र्ज़ करेंगे कि लब्बैक रब्बना व सअ़्दैक वल ख़ैरु फ़ी यदैक (ऐ रब! हम हाज़िर हैं और हुक्म पूरा करने के लिए मौजूद हैं और भलाई आप ही के क़ब्ज़े में है) इसके बाद अल्लाह जल्ल ल शानुहू उनसे मालूम करेंगे, क्या तुम राज़ी हो? वे अ़र्ज़ करेंगे कि ऐ परवरदिगार! जब कि आप ने हमको वह-वह नेमतें दी हैं जो अपनी मख़्लूक़ में से और किसी को नहीं दीं तो इसके बावजूद हम राज़ी क्यों नहीं होते? अल्लाह जल्ल ल शानुहू फ़रमाएंगे क्या तुमको इससे (भी) अफ़ज़ल नेमत दे दूं? वे अ़र्ज़ करेंगे कि (या अल्लाह!) इससे अफ़ज़ल और क्या होगा? इसके जवाब में अल्लाह जल्ल ल शानुहू फ़रमाएंगे कि ख़ूब समझ लो। मैं हमेशा के लिए तुम पर रज़ामंदी नाज़िल करता हूं। पस कभी भी तुमसे नाराज़ न हूंगा[1]।

जन्नत में जो कुछ होगा, उससे बढ़कर यह होगा कि अल्लाह तआ़ला उनसे राज़ी होंगे और हमेशा के लिए अपनी रज़ामंदी का ऐलान फ़रमा देंगे। एक शरीफ़ ग़ुलाम के लिए सबसे बड़ी नेमत यह है कि आक़ा उसका राज़ी हो। अगर सब कुछ मौजूद हो और आक़ा नाराज़ हो या उसकी नाराज़गी का डर हो, तो नेमतों के इस्तेमाल से कुढ़न होती है और तबीयत में परेशानी रहती है। अल्लाह जल्ल ल शानुहू अपनी रज़ामंदी का ऐलान फ़रमा कर जन्नतियों को हमेशा के लिए मुत्मइन फ़रमा देंगे कि हम तुमसे हमेशा के लिए राज़ी हैं। इस ऐलान पर जो ख़ुशी होगी, इस दुनिया में उसकी मिसाल नहीं दी जा सकती है। **'व रिज़्वानुम मिनल्लाहि अकबर।'** क़ुरआन शरीफ़ में जगह-जगह **'रज़ियल्लाहु अ़न्हुम व रज़ू**

1. तिर्मिज़ी की रिवायत में हज और ज़कात का भी ज़िक्र है।

अन्ह' का ऐलान फ़रमाया है, जिसका मतलब यह है कि अल्लाह तआला जन्नतियों से राज़ी होंगे। और जन्नती अल्लाह तआला से राज़ी होंगे यानी वहां किसी भी चीज़ की कोई कमी न होगी। दिलों पर किसी बात का ज़रा भी मैल न आएगा जो कुछ भी मिला होगा उससे नफ़्स राज़ी होगा। अल्लाह तआला की दैन और इनाम व इकराम पर दिल व जान से ख़ुश होंगे। जअ़ल्नाहु मिन्हुम।

जन्नत के दर्जे

हज़रत अबू हुरैरः ﵁ से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स ईमान लाया और नमाज़ क़ायम की और रोज़े रखे, तो उसके लिए यह ज़रूरी है कि अल्लाह तआला उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएंगे, अल्लाह के रास्ते में हिजरत करे या उसी ज़मीन में क़ियाम किए रहे जहां पैदा हुआ है। सहाबा किराम ﵃ ने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह! क्या हम इसकी ख़ुशख़बरी लोगों को सुना दें? आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि बिला शुब्हा जन्नत में सौ दर्जे हैं जो अल्लाह ने अपने रास्ते में जिहाद करने वालों के लिए तैयार फ़रमाए हैं। हर दो दर्जे के दर्मियान इतना फ़ासला है, जितना कि आसमान व ज़मीन के दर्मियान है। पस जब तुम अल्लाह से सवाल करो तो फ़िर्दौस का सवाल करो, क्योंकि वह जन्नत का सबसे बेहतर और बुलंद दर्जा है और उसके ऊपर रहमान का अ़र्श है और इससे जन्नत की (चारों) नहरें फूटती हैं। —बुख़ारी शरीफ़

साहिबे फ़त्हुलबारी लिखते हैं कि इस हदीस से मालूम हुआ कि जन्नत में सौ दर्जे अल्लाह की राह में जिहाद करने वालों के लिए हैं। (लेकिन) इसमें इसका इंकार नहीं है कि ग़ैर-मुजाहिदों के लिए इस सौ दर्जों के अलावा दूसरे दर्जे हों जो मुजाहिदों के दर्जों से कम हों।[1] इस हदीस को बुख़ारी ने 'किताबुत्तौहीद' में भी ज़िक्र किया है। वहां साहिबे फ़त्हुलबारी लिखते हैं कि मिअ़तु द र जः (यानी सौ दर्जे) जो फ़रमाया है,

1. फ़त्हुलबारी किताबुलजिहाद

उसके कहने का ढंग यह नहीं है कि जन्नत के दर्जे सौ ही हैं, क्योंकि सौ दर्जों के ज़िक्र से भी ज़्यादा का इंकार नहीं होता है और इसकी ताईद इस हदीस से होती है, जिसकी रिवायत अबूदाऊद और तिर्मिज़ी और इब्ने हब्बान ने की है कि---

يقال لصاحب القرآن اقرأ وارتق ورتل كما كنت ترتل فى الدنيا
فان منزلتك عند اخر اية تقرأها (قال الترمذى حديث حسن صحيح)

युक़ालु लिसाहिबिल क़ुरआनि इक़्रअ् वर्तक़ि व रत्तिल कमा कुन त तुरत्तिल फ़िद्दुन्या फ़ इन्न न मंज़िलत क इन द आख़िरि आयः तक़्रउहा *(क़ालतिर्मिज़ी हदीस हसनुन सहीहुन)*

'क़ुरआन वाले से (क़ियामत के दिन) कहा जाएगा कि पढ़ता जा और इस तरह तर्तील के साथ तिलावत करता जा क्योंकि तेरी मंज़िल वहीं है जहां तू आख़िरी आयत पढ़कर ख़त्म करे।'

इस हदीस से मालूम हुआ कि साहिबे क़ुरआन (यानी क़ुरआन की तिलावत से लगाव रखने वाला) जितनी आयतें पढ़ता जाएगा, उतना ही चढ़ता जाएगा और क़ुरआन शरीफ़ की आयतें 6200 तो सबके यहां हैं (और वक़्फ़ व वस्ल के मौक़ों में इख़्तिलाफ़ होने की वजह से) इस तादाद पर जो ज़्यादती है, उसमें इख़्तिलाफ़ हो गया है। वह बहरहाल यह तो मालूम हुआ कि जन्नत के दर्जे क़ुरआन की आयतों के बराबर ज़रूर हैं।

जन्नत के बालाख़ाने

सूरः फ़ुर्क़ान में इर्शाद है :

أُولَٰئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوا وَيُلَقَّوْنَ فِيهَا تَحِيَّةً وَسَلَامًا○
خَالِدِينَ فِيهَا حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا○

उलाइ क युज्ज़ौनल गुर्फ़ त बिमा स ब रू व युलक़्क़ौ न फ़ीहा तहीय्यतौं व सलामा। ख़ालिदी न फ़ीहा हसुनत मुस्तक़र्रौं व मुक़ामा।

'ऐसे लोगों को (जिनका शुरू रुकूअ् से ज़िक्र चला आ रहा है) बालाख़ाने (कोठे) मिलेंगे। उनके जमे रहने की वजह से और (फ़रिश्तों की तरफ़ से) बक़ा की दुआ और सलाम मिलेगा और इसमें वे हमेशा रहेंगे। वह क्या ही अच्छा ठिकाना है और ठहरने की जगह है।'

सूरः ज़ुमर में फ़रमाया :

لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ مِّنْ فَوْقِهَا غُرَفٌ مَّبْنِيَّةٌ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ

ला कि निल्लज़ी न त्तक़ौ रब्बहुम लहुम गु र फ़ुम मिन फ़ौक़िहा गु र फ़ुम मुब्नीयतुन तज्री मिन तह्तिहल अन्हार।

'लेकिन जो लोग अपने रब से डरते हैं, उनके लिए कोठे हैं, जिनके ऊपर और कोठे हैं जो बने-बनाये तैयार हैं; उनके नीचे नहरें जारी हैं।'

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷛ से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़्दस ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बेशक जन्नती अपने ऊपर कोठे वालों को इस तरह देखेंगे जैसे तुम उस रौशन सितारे को देखते हो जो (सुबह की पौ फटने के बाद) आसमान की पूर्वी या पच्छिमी किनारे पर बाक़ी रह जाता है और यह मंज़ीलों का फ़र्क़ उनके आपसी मर्तबों के फ़र्क़ की वजह से होगा (कि बुलंद मर्तबे वाले हज़रात ऐसे ऊंचे कोठों में होंगे कि आम जन्नती को बहुत दूर ही पर नज़र आने वाले सितारे की तरह नज़र आएंगे) सहाबा ﷛ ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल! ये तो नबियों ही की जगहें होंगी जहां उनके अलावा कोई न पहुंच सकेगा। प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया कि हां! क़सम उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है (नबियों के अलावा) बहुत से लोग (भी उन कोठों में) होंगे जो अल्लाह पर ईमान लाये और रसूलों की तस्दीक़ की[1]। लेकिन इससे यह न समझा जाए कि नबियों को बरतरी न होगी क्योंकि कोठों में भी दर्जों का फ़र्क़ होगा इसलिए कि कोठों पर भी कोठे होंगे जैसा का सूरः ज़ुमर की आयत में गुज़रा।

1. बुख़ारी व मुस्लिम

सूरः फ़ुर्क़ान में पहले नेक लोगों ओर अल्लाह से डरने वालों की ख़ूबियां ब्यान फ़रमायी हैं। आख़िर में इन हज़रात के बारे में बालाख़ानों की ख़ुशख़बरी दी है और सूरः ज़ुमर में भी मुत्तक़ियों के लिए कोठों का ज़िक्र फ़रमाया है। मालूम हुआ कि बालाख़ाने बड़े मर्तबे वाले हज़रात को नसीब होंगे।

हज़रत अबू मालिक अश्अ़री ﷺ से रिवायत है कि रसूले अक़दस ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया है कि बिला शुब्हा जन्नत में बालाख़ाने हैं (जो ऐसे चिकने हैं कि) उनका ज़ाहिरी हिस्सा अंदर से और अंदरूनी हिस्सा बाहर से नज़र आता है। (ये बालाख़ाने) अल्लाह तआला ने उसके लिए बनाये हैं जो नर्मी से बात करें और मेहमानों और ज़रूरतमंदों को खाना खिलाएं और अकसर रोज़े रखा करें और रात को तहज्जुद की नमाज़ पढ़ें जबकि लोग सो रहे हों।

—बैहक़ी फ़ी शोबिल ईमान

जन्नत के ख़ेमे और क़ुब्बे

हज़रत अबू मूसा अश्अ़री ﷺ से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुब्हा जन्नत में मोमिनों का ऐसा ख़ेमा होगा कि एक ही मोती से बना हुआ होगा। (मोती बहुत बड़ा होगा) जो अंदर से ख़ोल की तरह होगा। इस ख़ेमे की लंबाई (और एक रिवायत में है कि इस की चौड़ाई) साठ मील की होगी। इसके हर कोने में मोमिनों के मुतअल्लिक़ लोग (बीवियां, नौकर-चाकर) होंगे (और कोनों के दर्मियानी फ़ासले की वजह से) इस कोने के लोग दूसरे कोनों के लोगों को नज़र न आएंगे। उनके पास मोमिन आया-जाया करेंगे। (इसके बाद फ़रमाया कि मोमिन के लिए) दो बाग़ ऐसे होंगे कि उनके बर्तन और जो कुछ उनमें है, वह सब सोने का है। —बुख़ारी व मुस्लिम

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूले अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि मामूली जन्नती वह होगा जिसके अस्सी हज़ार ख़ादिम और बहत्तर बीवियां होंगी और उसके लिए एक क़ुब्बा नस्ब किया जाएगा, जो मोतियों से और ज़बुर्जद और याक़ूत से बना होगा और जितना फ़ासला जाबिया से सुन्आ़ तक है' उतनी ही दूरी में उसकी लंबाई-चौड़ाई होगी।—तिर्मिज़ी शरीफ़

जन्नत का मौसम

सूरः दह्‌र में इर्शाद है :

وَجَزَاهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّحَرِيْرًا ۝ مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ ۝
لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا ۝

व जज़ाहुम बिमा स ब रू जन्नतौं व हरीरा मुत्तकिई न फ़ीहा अ़लल अराइक। ला यरौ न फ़ीहा शम्सैं व ला ज़म्हरीरा।

'और उनका रब सब्र व (जमाव) के बदले में उन्हें बाग़ और रेशमी लिबास अ़ता फ़रमाएगा और वहां मुसहरियों पर तकिया लगाये होंगे। वहां न गर्मी महसूस करेंगे, न सर्दी।'

साहिबे तफ़्सीर मज़्हरी इस आयत की तफ़्सीर में लिखते हैं :

لاحر فيها ولا برد ليدوم فيها هواءٌ معتدل ۝

ला हर्र फ़ीहा व ला बर्द लियदू म फ़ीहा हवाउ मुअ़्तदिल।

यानी 'जन्नत में सर्दी-गर्मी न होगी ताकि फ़िज़ा (वातावरण) समान रहे।

फिर लिखते हैं :

ان الجنّة مضيئة بنفسها ومشرقة بنور ربها لايحتاج الى شمس
ولا الى قمر

इन्नल जन्न त मुज़ीअतुन बिनफ़्सिहा व मुश्रिक़तुन बिनूरि रब्बिहा ला यहताजु इला शम्स व ला इला क़मर०

'बेशक जन्नत ख़ुद रौशन है और अपने रब के नूर से मुनव्वर है। रौशनी के लिए वहां चांद-सूरज की ज़रूरत नहीं।'

इसके बाद बैहक़ी के हवाले से शुऐब बिन जैहान का ब्यान नक़्ल

1. जाबिया शाम देश में एक जगह है और सन्‌आ़ यमन में एक जगह है। दोनों में सैंकड़ों मीलों का फ़ासला है।

किया है कि मैं और अबुल आ़लिया रह० (फ़ज्र की नमाज़ के बाद) सूरज उगने से पहले आबादी से बाहर गये, उस वक़्त का मंज़र देखकर हज़रत अबू आ़लिया रह० ने फ़रमाया कि 'यन्सबु इलल जन्नति हाकज़ा' यानी इस वक़्त जो फ़िज़ा में मस्ती, एतदाल और रौशनी है, जन्नत के बारे में इसी तरह की फ़िज़ा ब्यान की जाती है। यह बात कहकर हज़रत अबू आ़लिया रह० ने 'व ज़िल्लिम मम्दूद' की तिलावत की।

साहिबे मज़्हरी लिखते हैं कि हज़रत अबुल आ़लिया रह० ने जो जन्नत के फ़िज़ा को सुबह का नूर कहा है तो यह असल रौशनी से मिलाना नहीं हुआ क्योंकि सुबह की रौशनी कमज़ोर होती है जिसमें अंधेरी मिली हुई होती है बल्कि हज़रत अबुल आ़लिया रह० के इर्शाद का मतलब यह है कि 'जिस तरह सुबह की रौशनी हर तरफ़, जहां तक नज़र जाये वहां तक फैली हुई होती है (ख़ास तौर से जबकि आबादी से बाहर निकल कर देखा जाये) इसी तरह जन्नत का नूर बराबर हर तरफ़ फैला होगा।'

लेकिन सही यह है कि यह तश्बीह (उपमा, बराबरी) सुबह के वक़्त से है, सुबह की रौशनी से नहीं है। और हज़रत अबुल आ़लिया रह० के इर्शाद का मतलब यह है कि जिस तरह सुबह के वक़्त में (निकलने से पहले-पहले) एक सुहावनापन और मस्ती होती है और अच्छी दर्मियानी हवा के झोंके आते हैं और हर तरफ़ रौशनीदार साया ही साया नज़र आता है, मगर रौशनी ऐसी नहीं होती जो आंखों को चुंधिया दे। इसी तरह हर वक़्त जन्नत में गहरा साया रहेगा और फ़िज़ा दर्मियानी रहेगी और एक अजीब तरह का सुहावनापन और मस्ती महसूस होती रहेगी। रौशनी में गर्मी और जलन न होगी और वह रौशनी जितनी भी तेज़ हो उसकी वजह से साया ख़त्म न होगा और न आंखों को तकलीफ़ होगी।

सूरः रअ्द में इर्शाद है :

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِىْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ○ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ○ اُكُلُهَا دَآئِمٌ وَّظِلُّهَا○

म स लुल जन्नतिल्लती वुइदल मुत्तक़ून। तजरी मिन तहितहल अन्हार। उकुलुहा दाइमुंव्व ज़िल्लुहा।

'जिस जन्नत का मुत्तकियों से वादा किया गया है, उसका हाल यह है कि उसकी (इमारतों व पेड़ों) के नीचे नहरें जारी होंगी। उसका फल और साया हमेशा रहेगा।'

इस आयत से साफ़ ज़ाहिर है कि जन्नत में हमेशा साया रहेगा। सूरः निसा में जन्नत के साए को 'ज़िल्लन ज़लीला' फ़रमाया। चुनांचे इर्शाद है :

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ○ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ○ لَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيْلًا ○

वल्लज़ी न आमनू व अमिलुस्सालिहाति सनुद् ख़िलुहुम जन्नातिन तजरी मिन तहितहल अन्हार। ख़ालिदीना फ़ीहा अ ब दा। लहुम फ़ीहा अज़्वाजुम मुतह्ह र तुंव्व नुद् ख़िलहुम ज़िल्लन ज़लीला।

'और जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किए, बहुत जल्द हम उनको ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे, जिनके नीचे नहरें जारी होंगी। उनमें हमेशा रहेंगे। वहां उनके लिए पाकीज़ा बीवियां होंगी और हम उनको गंजान साए में दाख़िल करेंगे।'

मुफ़स्सिर इब्ने कसीर 'ज़िल्लन ज़लीला' की तफ़सीर करते हुए लिखते हैं कि 'एय ज़िल्लन अमीक़न कसीरन अज़ीज़न तैयिबन अनीक़ा' यानी ऐसा साया जो बहुत गंजान, अच्छा और रौनक़दार होगा।

जन्नत में आराम ही आराम है, थकन और दुख का कुछ काम नहीं

सूरः फ़ातिर में इर्शाद है :

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْٓ اَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ ○ اِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ○ نِالَّذِيْٓ اَحَلَّنَا دَارَالْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖ ○ لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّلَا يَمَسُّنَا فِيْهَا لُغُوْبٌ ○

व क़ालुल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अज़्ह ब अन्नल हज़न। इन्न न रब्बना लग़फ़ूरुन शकुर। अल्लज़ीन अहल्लना दारल मुक़ामति मिन फ़ज़्लिः। ला यमस्सुना फ़ीहा न स बुंब्व ला यमस्सुना फ़ीहा लुग़ूब।

'और जन्नती कहेंगे कि सब तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए ख़ास हैं जिसने हमसे ग़म को दूर फ़रमाया। बिला शुब्हा हमारा रब बड़ा बख़्शने वाला (और) बड़ा क़द्रदां है जिसने हमको अपने फ़ज़्ल से रहने की जगह उतारा जहां हमको न कोई तकलीफ़ पहुंचेगी और न ज़रा थकान महसूस हो सकेगी।'

मुआलिमुत्तंज़ील में लिखा है कि जन्नत में दाख़िल होकर जन्नती यह बात कहेंगे जिसका अभी ऊपर ज़िक्र हुआ।

'अल्लाह ने हमसे रंज व ग़म दूर फ़रमा दिया यानी दुनिया में जो रंज व ग़म आने की वजहें थीं, वे सब ख़त्म हो गयीं। यहां कभी किसी वजह से कोई रंजीदा करने वाली बात और चिंता व परेशानी में डालने वाली चीज़ें पेश न आएंगी। दुख-तकलीफ़ के ख़तरे और उनके मौक़े सब ख़त्म हो चुके। अब न रोज़ी कमाने की चिंता है, न रोज़ी की खोज है, न मौत का डर है, न बुढ़ापे का खौफ़ है, न हर्ज है, न मर्ज़ है, न क़ब्र का मरहला सामने है, न हश्र के मैदान का हौल है, न बुरे ख़ात्मे का ख़तरा है, न नेमतों के ख़त्म होने का तरद्दुद है, न दुनिया संवारने के लिए कुछ करना है, न अंजाम बनाने के लिए इबादत में लगने का हुक्म है। बस हर तरह से आराम ही आराम और अमन व इत्मीनान है। दुनिया व आख़िरत से मुतअल्लिक़ जो डर और चिंता और नागवारी और परेशानी की वजहें, मौक़े और मंज़िलें थीं, इन सबसे गुज़र कर 'दारुल मुक़ामः' में आ गये, जहां न कोई मुसीबत है, न परेशानी है, न मेहनत है, न मशक़्क़त है, न थकन है, न दुखन है। सच तो यह है कि यही जगह इस क़ाबिल है जिसे 'दारुल मुक़ामः' (रहने की जगह) कहना मुनासिब है, जहां से न कभी कोई निकलेगा, न निकलने को कभी दिल चाहेगा। हर एक इज़्ज़तदार है, भरपूर लज़्ज़तें हैं, बेइंतिहा नेमत हैं, जो किसी भी ख़राबी से पाक है।

जन्नतियों की मज्लिसें

सूरः साफ़्फ़ात में इर्शाद है :

فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَ لُوْنَ○ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ اِنِّىْ كَانَ لِىْ قَرِيْنٌ يَّقُوْلُ ءَاِنَّكَ لَمِنَ الْمُصَدِّقِيْنَ○ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَدِيْنُوْنَ○

फ़ अक़्ब ल बअ्ज़ुहुम अ़ला बअ्ज़िंय त साअलून। क़ा ल क़ाइलुम मिनहुम इन्नहू का न ली क़रीनुंयक़ूलु अ इन्न क ल मिनल मुसद्दिक़ीन। अ इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबा व इज़ामन अ इन्ना ल मदीनून।

'पस (जब वे एक मज्लिस में बैठेंगे तो) एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह होकर बात-चीत करेंगे। उनमें से एक कहने वाला कहेगा कि (दुनिया में) मेरा एक मुलाक़ाती था जो मुझसे (तअज्जुब के साथ यों) कहता था कि क्या तू भी क़ियामत के मानने वालों में से है? क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी और हड्डियाँ बन जाएंगे तो क्या अपने कामों के बदले पाएंगे?'

قَالَ هَلْ اَنْتُمْ مُّطَّلِعُوْنَ○ فَاطَّلَعَ فَرَاٰهُ فِىْ سَوَآءِ الْجَحِيْمِ○

क़ा ल हल अन्तुम मुत्तलिऊन। फ़त्त ल अ फ़ र आ हु फ़ी सवाइल जहीम।

'(फिर) वह जन्नती अपने साथ बैठने वालों से कहेगा क्या तुम उसे (दोज़ख़) में झांक कर देखना चाहते हो? फिर (ख़ुद ही) झांकेगा और अपने मुलाक़ाती को दोज़ख़ में देख लेगा।'

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास ﷺ ने फ़रमाया है कि जन्नत में रौशनदान की तरह झरोखे होंगे जिनमें जन्नत वाले दोज़ख़ वालों को देखेंगे और जन्नती शख़्स अपने मुलाक़ाती को दोज़ख़ में देखकर कहेगा कि--

قَالَ تَاللّٰهِ اِنْ كِدْتَّ لَتُرْدِيْنِ○ وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّىْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ○

का ल तल्लाहि इन कित त। लतुर्दी न व लौ ला निअ्मतु रब्बी लकुन्तु मिनल मुहज़रीन।

'खुदा की क़सम! तू तो मुझ को तबाह ही करने को था और अगर मेरे रब का फ़ज़्ल न होता तो मैं (भी तेरी तरह) दोज़ख़ में हाज़िर कर दिए जाने वालों में होता।

सूरः तूर में जन्नतियों की एक बात-चीत इस तरह नक़ल फ़रमायी है :

وَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَتَسَآءَ لُوْنَ قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِيْٓ اَهْلِنَا مُشْفِقِيْنَ○ فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَوَقٰنَا عَذَابَ السَّمُوْمِ○ اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوْهُ اِنَّهٗ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيْمُ○

व अक़्ब ल बअ्ज़ुहुम अ़ला बअ्ज़िं य त साअ लू न। क़ालू इन्ना कुन्ना क़ब्लु फ़ी अह्लिना मुश्फ़िक़ीन। फ़ मन्नल्लाहु अ़लैना व वक़ाना अ़ज़ाबस्समूम। इन्ना कुन्ना मिन क़ब्लु नद्ऊहु इन्नहु हु वल बर्रुर्रहीम।

'और वह एक दूसरे की तरफ़ मतुवज्जह होकर बात-चीत करेंगे। कहेंगे कि हम इससे पहले (दुनिया के) घर-बार में रहते हुए (अंजामकार से) बहुत डरा करते थे सो अल्लाह पाक ने हम पर एहसान फ़रमाया और हमको दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा लिया इससे पहले हम उससे दुआएं मांगा करते थे। सच में वह बड़ा मुह्सिन (एहसान करने वाला) और मेहरबान है।'

तहीय्यतुहुम फ़ीहा सलाम

सूरः यूनुस में फ़रमाया :

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ يَهْدِيْهِمْ رَبُّهُمْ بِاِيْمَانِهِمْ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ○ دَعْوٰهُمْ فِيْهَا سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ○ وَاٰخِرُ دَعْوٰهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ○

इन्नल्लज़ी न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति यह्दीहिम रब्बुहुम बिईमानिहिम तज्री मिन तह्तिहिमुल अन्हारु फ़ी जन्नातिन्नईम। दअ़्वाहुमु फीहा सुब्हा न कल्लाहुम्म म व तहीय्यतुहुम फ़ीहा सलाम। व आख़िरु दअ़्वाहुम अनिल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन।

'बिला शुब्हा जो लोग ईमान लाये और नेक अ़मल किए उनके ईमान की वजह से उनका रब उन्हें उनके मक़सद को (यानी जन्नत में) पहुंचा देगा। उनके नीचे नहरें जारी होंगी, आराम के बाग़ों में। (और वे जन्नत में) दाख़िल होंगे तो यकायक जन्नत की अजीब-अजीब चीज़ों को देख कर वहां (बेएख़्तियार) यों कहेंगे कि सुब्हानल्लाह! क्या नेमतें हैं और कैसी उम्दा जगह है और फिर एक दूसरे को वहां (देखेंगे) तो उनका आपसी सलाम 'अस्सलामु अ़लैकुम' होगा और जब इत्मीनान से वहां जा बैठेंगे और पुरानी मुसीबतों और परेशानियों का उस वक़्त के साफ़-सुथरे हमेशा वाले आराम से मुक़ाबला करेंगे तो (उनकी उस वक़्त की) आख़िरी बात यह होगी कि 'अलहम्दुलिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन' (यानी सब तारीफें अल्लाह ही के लिए खास हैं जो तमाम जहानों का परवरदिगार है)'

तर्जुमे से इस आयत की जो तफ़सीर मालूम हो रही है। यह साहिबे ब्यानुल क़ुरआन की तफ़सीर है और साहिबे मुआलिमुत्तंज़ील इसकी तफ़सीर में लिखते हैं कि जन्नती जब खाने की ख़्वाहिश करेंगे तो *'सुब्हान कल्लाहुम्मा'* कह देंगे। इस कलिमे को सुनकर उनके ख़ादिम दस्तरख़्वानों पर खाने लगा देंगे। जब खाकर फ़ारिग़ हो जाएंगे तो वे *'अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन'* कहेंगे और तहीय्यतुहुम फ़ीहा सलाम की तफ़्सीर करते हुए लिखा है कि जन्नती हज़रात मुलाक़ात के वक़्त एक दूसरे को सलाम करेंगे और यह भी नक़ल किया है कि फ़रिश्ते जन्नतियों को सलाम करेंगे और यह भी नक़ल किया है कि फ़रिश्ते उनके पास अल्लाह का सलाम लेकर आएंगे और तीनों तरह 'तहीय्यतुहुम फ़ीहा सलाम' की तफ़सीर हो सकती है।

मुफ़स्सिर इब्ने कसीर इब्ने जुरैज से नक़ल फ़रमाते हैं कि जन्नतियों के पास जब कोई परिंदा गुज़रेगा तो *'सुब्हानकल्लाहुम्म म'* कहेंगे, इस पर

फ़रिश्ते उनकी ख़्वाहिश के मुताबिक़ (परिंदे को) लेकर आएंगे और सलाम करेंगे, जिसका वह जवाब देंगे, *'तहीय्यतुम फ़ीहा सलाम'* में इसी का ज़िक्र है। जब खाकर उठेंगे तो *'अलहम्दु लिल्लाह'* कहेंगे, जिसका *'आख़िरु दअ़्वाहुम अनिल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन'* में ज़िक्र है। इसके बाद इब्ने कसीर लिखते हैं कि सुफ़ियान सौरी (रह०) ने फ़रमाया है कि जन्नती जब किसी चीज़ को मंगाने का इरादा करेंगे तो *'सुब्हान कल्लाहुम्म म'* कह देंगे (पस वह हाज़िर हो जाएगी) इससे मालूम हुआ कि इब्ने जुरैज ने आयत की तफ़्सीर फ़रमाते हुए जो परिंदे का ज़िक्र किया है, मिसाल के तौर पर है। वरना हर नेमत की ख़्वाहिश के ज़ाहिर करने के लिए जन्नती लोग 'सुब्हान कल्ला हुम्म म' कहेंगे। यह जो फ़रमाया कि परिंदे को फ़रिश्ता लेकर हाज़िर होगा। मालूम होता है कि यह कभी-कभी की बात है क्योंकि रिवायतों में पहले गुज़र चुका है कि परिंदा ख़ुद जन्नतियों के सामने आ गिरेगा।

जन्नत की नेमतें जो दुनिया में नहीं समझी जा सकतीं

जन्नत के बारे में जो कुछ सुनकर और पढ़ कर समझ में आता है। जब जन्नत में जाएंगे तो इससे बहुत बुलंद और बाला पाएंगे। एक तो इस वजह से कि जन्नत के जिन नेमतों का ज़िक्र क़ुरआन व हदीस में मौजूद है, वहां इनके अलावा बहुत ज़्यादा नेमतें हैं। दूसरे इस वजह से कि किसी चीज़ के देखने और इस्तेमाल करने से जो पूरी जानकारी होती है, वह सिर्फ़ सुनने से नहीं होती। इसलिए इस दुनिया में रहते हुए जन्नत की नेमतों को सच्ची हक़ीक़त को समझा नहीं जा सकता है।

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया कि अल्लाह जल्ल ल शानुहू इर्शाद फ़रमाते हैं कि मैंने अपने नेक बंदों के लिए वे-वे चीज़ें तैयार की हैं जिनको न किसी आंख ने देखा न किसी कान ने सुना और न किसी इंसान के दिल पर उनका गुज़र हुआ। फिर आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि (क़ुरआन) से इस बात की तस्दीक़ करना चाहो तो यह आयत पढ़ लो *'फ़ ला तअ़्लमु नफ़्सुम मा उख़्फ़ि या लहुम मिन क़ुर्रति*

अअ्युन।' —बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़

मुस्लिम शरीफ़ की एक रिवायत में है कि हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने ऊपर वाला मज़्मून इर्शाद फ़रमा कर आख़िर में फ़रमाया कि *'बल ह मा अत ल अ कुमुल्लाहु अ़लैहि'* यानि अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआनी आयतों के ज़रिए या नबी करीम ﷺ की ज़ुबानी जिन जन्नत की नेमतों का ज़िक्र फ़रमा दिया है इनके अलावा जो नेमतें हैं, बहुत ज़्यादा हैं।

हज़रत अबू हुरैरः ؓ से रिवायत है कि रसूले अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जन्नत में एक घोड़े की जगह सारी दुनिया से और दुनिया में जो कुछ है, सबसे बेहतर है।[1] साथ ही यह भी इर्शाद फ़रमाया कि जितनी जगह आधी कमान रखी जाती है, जन्नत में उतनी-सी जगह उन सब चीज़ों से बेहतर है जिन पर सूरज उगता या डूबता है।[2]

जब सवारी से सवार उतरने लगता है तो जगह पर क़ब्ज़ा करने के लिए पहले अपना कोड़ा ज़मीन पर गिरा देता है और पैदल चलने वाला जब बैठने लगता है तो पहले अपनी कमान डाल देता है फिर बैठता है। आंहज़रत ﷺ ने जन्नत की बड़ाई और क़ीमत समझाने के लिए इर्शाद फ़रमाया कि जन्नत की इतनी-सी जगह जिसमें एक कोड़ा या आधी कमान रखी जा सके, सारी दुनिया की लंबी-चौड़ी और फैली जगह से अफ़ज़ल है। कहां यह कि पूरी दुनिया जिसके फैलाव के सामने हज़ारों दुनियाएं भी छोटी और कम हैं।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास ؓ ने फ़रमाया कि दुनिया की चीज़ों में से कोई चीज़ भी जन्नत में नहीं है, सिर्फ़ नाम मिलते-जुलते हैं।

मतलब यह है कि जन्नत की नेमतों के तज़्किरे में जो सोना-चांदी, मोती, रेशम, पेड़, मेवे, तख़्त, गद्दे, कपड़े वग़ैरह आये हैं, ये चीज़ें वहां की चीज़ें होंगी और इसी के एतबार से उनकी ख़ूबी और बेहतरी होगी। दुनिया की कोई भी चीज़ जन्नत की किसी भी चीज़ के पासंग के बराबर नहीं है।

1. बुख़ारी व मुस्लिम 2. बैहक़ी

जन्नत की ख़ुश्बू

जन्नत ख़ुश्बू से भरपूर है और उसकी ख़ुश्बू की हालत इस दुनिया में समझ में नहीं आ सकती है। वहां की ख़ुश्बू बेमिसाल है। उम्दा, बढ़िया और ख़ूब तेज़ है।

एक हदीस मे इर्शाद है कि जन्नत की ख़ुश्बू सौ साल की दूरी से सूंघी जाती है। दूसरी हदीस में है कि पांच सौ बरस की दूरी से महसूस होती है। दूसरी रिवायतों में इससे कम व बेश दूरी का भी ज़िक्र आया है।

हदीस के आ़लिमों ने लिखा है कि दूरी कम व बेश लोगों के रुत्बों व मंज़िलों के फ़र्क़ के एतबार से है।

सुब्हानल्लज़ी बियदि ही म ल कूतु कुल्लि शैइ।

क्या कोई जन्नत के लिए तैयारी करने वाला है?

जन्नत के हालात आपने पढ़ लिए। वहां की नेमतों की तफ़सीलात मालूम कर लीं। वहां रहने को दिल भी चाहता होगा। जन्नत में दख़िले के लिए बार-बार अल्लाह तआ़ला से आप ने दुआ़ भी की होगी और बिला शुब्हा हर मुसलमान के दिल में जन्नत का शौक़ और वहां ठहरने की जगह मिलने की तड़प होना ज़रूरी है। लेकिन तड़प और तलब और ज़ौक़ व शौक़ के साथ भले कामों की पूंजी का एहतमाम करना भी ज़रूरी है। जन्नत-जैसी चीज़ के तलब रखने वाला भले कामों से ख़ाली नहीं हो सकता। बेवक़ूफ़ हैं वे लोग जो जन्नत की तमन्ना करते हैं मगर गुनाहों में लत-पत हैं और भले कामों की पूंजी से ग़ाफ़िल है। क़ुरआन मजीद के मुताबिक़ अल्लाह तआ़ला ने जन्नत के बदले मोमिनों से उनकी जानों और मालों को ख़रीद फ़रमा लिया, इसलिए मोमिन बन्दों पर लाज़िम है कि शरीअ़त के तक़ाज़ों पर जान व माल लगाकर जन्नत के हक़दार बनें।

इन्नल्लाहश्तरा मिनल मुअ् मि नी न अन्फ़ुसहुम व अम्वा ल हुम बि अन्न न लहुमुल जन्नः।

नमाज़ के लिए अज़ान देने वाला पुकारे तो सोते रह जाएं या कारोबार पर नमाज़ को क़ुर्बान कर डालें। ज़कात का हुक्म लागू हो तो जान चुराने लगें। रमज़ान आये तो रोज़े खा जाएं। हज फ़र्ज़ हो तो माल की मुहब्बत में बे-हज किए मर जाएं। कारोबार में हराम व हलाल का ज़रा ख़्याल न करें, तेरा-मेरा रुपया मार लेने को कमाल जानें। क़ुरआन व हदीस पढ़ने-पढ़ाने को ऐब का काम समझें। बूढ़ों-कमज़ोरों पर ज़ुल्म करें, तंगदस्तों से बेगार लें, रिश्वतों के लेन-देन को फ़र्ज़ समझें, यतीमों का माल खा जाएं और मीरास शरीअ़त के मुताबिक़ तक़सीम न करें, नफ़्लों की अदाएगी से घबराएं और अल्लाह के ज़िक्र से बचें और फिर जन्नत के बुलंद दर्जों की तमन्ना करें, यह बहुत बड़ी नादानी है। जन्नत के बुलंद मर्तबों के लिए नफ़्स को क़ाबू में करना पड़ता है। शरीअ़त के हुक्मों पर अ़मल करने में जो नफ़्स को नागवारी होती है। उसे सहना पड़ता है। हदीस शरीफ़ में इर्शाद है कि

حُفَّتِ النَّارُ بِالشَّهَوَاتِ وَحُفَّتِ الْجَنَّةُ بِالْمَكَارِهِ

हुफ़्फ़तिन्नारु बिश्शहवाति व हुफ़्फ़तिल जन्नतु बिल मकारिः।

'दोज़ख़ को ख़्वाहिशों से घेर दिया गया है और जन्नत को नागवारियों से घेर दिया गया है।'

मतलब यह है कि इबादतों में मेहनत करने और बराबर अल्लाह का फ़रमांबरदार रहने और हराम ख़्वाहिशों से परहेज़ करने में जो नफ़्स को नागवारी होती है, इसी नागवारी के पीछे जन्नत है। नागवारी को बर्दाश्त करना जन्नत में पहुंचने का ज़रिया है और इसके ख़िलाफ़ जो शख़्स नफ़्स की ख़्वाहिशों का पाबंद बन गया और हराम व हलाल के सवाल से बे-नियाज़ हो गया तो शहवतें और ख़्वाहिशें उसे दोज़ख़ में पहुंचा देंगी।

एक हदीस में इर्शाद है :

اَلْكَيِّسُ مَنْ دَانَ نَفْسَهُ وَعَمِلَ لِمَا بَعْدَ الْمَوْتِ وَالْعَاجِزُ مَنْ اَتْبَعَ
نَفْسَهُ هَوَاهَا وَتَمَنّٰى عَلَى اللّٰهِ (ترمذی)

अल कैयसु मन दा न नफ़्सहू व अ़मि ल लिमा बअ़्दल मौति वल आजिज़ु मन अत् ब अ़ नफ़्सहू हु व हा व तमन्ना अ़लल्लाहः।

—तिर्मिज़ी

'होशियार वह है जो अपने नफ़्स पर क़ाबू करे और मौत के बाद के लिए अ़मल करे और बेवक़ूफ़ वह है जो अपने नफ़्स को ख़्वाहिशों को पीछे लगाये रहे और बेअ़मल अल्लाह से उम्मीद रखे।'

जिसे दोज़ख़ से बचने और जन्नत में पहुंचने की फ़िक्र हो दुनिया को आख़िरत पर तर्जीह नहीं देगा और जान व माल को जन्नत के मुक़ाबले में प्यारा न जानेगा, जितनी नेकियां करेगा, कम समझेगा। और बदलों व दर्जों के बढ़ाने के लिए फ़र्ज़ों व नफ़्लों का एहतमाम करेगा। हक़ीक़त में आख़िरत की फ़िक्र रही ही नहीं, जन्नत जैसी बेमिसाल और अनमोल चीज़ का यक़ीन होते हुए ताअ़त व इबादत में कोताही करना बड़ी नासमझी है। फ़रमाया रसूले ख़ुदा ﷺ ने कि----

مَارَأَيْتُ مِثْلَ النَّارِ نَامَ هَارِبُهَا وَلَامِثْلَ الْجَنَّةِ نَامَ طَالِبُهَا (ترمذی شریف)

मा रऐतु मिस्लन्नारि ना म हारिबुहा व ला मिस्लुल जन्नति ना म तालिबुहा। *—तिर्मिज़ी शरीफ़*

'दोज़ख़ जैसी चीज़ मैं ने नहीं देखी, जिसके (अ़ज़ाब व मुसीबत से) भागकर बचने वाला सो रहे, और (इसी तरह) जन्नत जैसी मज़े की चीज़ मैंने नहीं देखी जिस का तलबगार सोता रहे।'

मतलब यह है कि दोज़ख़ की मुसीबतों व तकलीफ़ों का यक़ीन करने पर दोज़ख़ ही के काम करता चला जाए और जन्नत की नेमतों का चाव रखने वाला ग़फ़लत की नींद सोया करे और नेक कामों की फ़िक्र न करे यह बड़े तअ़ज्जुब की बात है। यों दुनिया में ऐसे लोग भी हैं जो सुस्ती की वजह से तकलीफ़ें उठाते हैं और अपनी चाव की चीज़ों को हासिल कर लेने से महरूम हैं लेकिन दोज़ख़ से बचने का इरादा रखने वाला ग़फ़लत में पड़ा रहे

और जन्नत का तलब करने वाला सुस्ती में उम्र गुज़ार दे, यह बहुत ज़्यादा तअ़ज्जुब की चीज़ है।

दुनिया की ज़िंदगी एक सफ़र है जिसकी आख़िरी मंज़िल मोमिन बन्दों के लिए जन्नत है। मगर जन्नत के लिए मेहनत की ज़रूरत है क्योंकि जो चीज़ें जितनी उम्दा और बेहतरीन होती हैं, उनकी उतनी ही क़ीमत होती है। हदीस शरीफ़ में इर्शाद है :

مَنْ خَافَ اَدْلَجَ وَمَنْ اَدْلَجَ بَلَغَ الْمَنْزِلَ اَلَا اِنَّ سِلْعَةَ اللّٰهِ غَالِيَةٌ اَلَا اِنَّ سِلْعَةَ اللّٰهِ الْجَنَّةُ (ترمذی)

मन ख़ा फ़ अद् ल ज व मन ब ल ग़ल मंज़ि ल अला इन्न न सिलअ़तल्लाहि ग़ालियतुन अला इन्न न सिल् अ़तल्लाहिल जन्नः।

—तिर्मिज़ी

'जिस शख़्स को (सफ़र की दूरी और कठिनाई से) ख़तरा होता है तो काफ़ी पहले से चल देता है और आराम व राहत को क़ुर्बान करके ठीक वक़्त पर, बल्कि वक़्त से पहले मंज़िल को जा लेते हैं। आख़िरत के मुसाफ़िर को इस से सबक़ लेना चाहिए और नफ़्स की फ़रमांबरदारी के बजाए शरीअ़त के हुक्मों को ख़ूब अच्छी तरह पाबंदी करके आख़िरत के सफ़र को ज़्यादा-से-ज़्यादा कामयाब बनाना चाहिए ताकि मंहगा सौदा (यानी जन्नत) हाथ से जाने न पाए। दुनिया के साज़ व सामान मकान व दुकान पर कितनी रक़में लगती हैं और कैसी-कैसी जवानियां फ़िना होती हैं और कैसे-कैसे तंदुरुस्त इंसान बर्बाद होते हैं। एक औरत से निकाह करने के लिए खड़ा किए जाते हैं और कितनी दौलतें लुटायी जाती हैं। जब इस बेक़ीमत दुनिया के लिए धन व दौलत, सेहत व जवानी बरबाद हो रही है और बड़ी-बड़ी कोशिशें की जा रही हैं, हालांकि वह फ़ानी है और उसे छोड़ कर चल देना है तो जन्नत जैसे 'दारुल मुक़ामः' के लिए और वहां की नेमतों और मज़े के पाने के लिए तो बहुत ज़्यादा जानी व माली क़ुर्बानी और हिम्मत व मेहनत की ज़रूरत है।

बह्‌रे ग़फ़लत यह तेरी हस्ती नहीं
देख जन्नत इस क़दर सस्ती नहीं
रहगुज़र दुनिया है, यह बस्ती नहीं
जाए ऐश व इश्रत व मस्ती नहीं

—मजज़ूब

(यह तेरी ज़िंदगी ग़फ़लत के लिए नहीं है। समझ ले, जन्नत इतनी सस्ती नहीं है कि तु ग़फ़लत करे। यह दुनिया एक रास्ता है, इसे आबादी न समझो, यह आराम, सुख और मस्ती की जगह नहीं है।)

واخر دعونا عن الحمد لله رب العالمين

व आख़िरु दअ़्वाना अ़निल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन

अब हम किताब को ख़त्म करते हैं और अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करते हैं कि जिसकी मेहरबानी और दैन से यह किताब पूरी हुई। अल्लाह तआ़ला से दुआ है कि हमें और हमारे मां-बाप और हमारे पीर व उस्ताद और तमाम मुस्लिम मर्दों और औरतों को जन्नत में दाख़िल फ़रमा दे और इस किताब को क़ुबूल फ़रमाए। (आमीन)

وَمَا ذٰلِكَ عَلَيْهِ بِعَزِيْزٍ○ سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ○
وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ○ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ○

व मा ज़ालि क अ़लैहि बिअज़ीज़ सुब्हान रब्बि क रब्बिल इ़ज़्ज़ति अ़म्मा यसिफ़ूनव सलामुन अ़लल मुर्सलीन वलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन